"संस्कृत साहित्य में इन्दिरा गाँधी पर आधृत शतककाव्यों का साहित्यिक अध्ययन"

(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की संस्कृत में पी०एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत)

शोध-प्रबन्ध
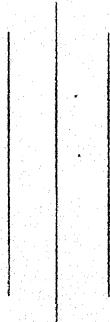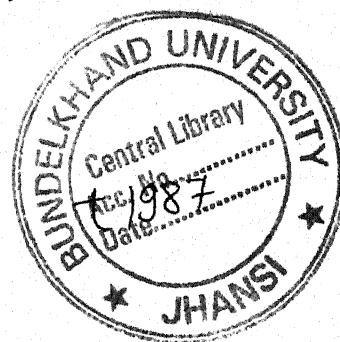
शोधकर्त्री

***कु0 ज़ेबा खान**, एम0ए0*

प्रवक्ता संस्कृत विभाग,

म0प्र0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंच (जालौन)

पर्यवेक्षक

डॉ0 कैलाश नाथ द्विवेदी,

एम0ए0, साहित्याचार्य, सा0रत्न, पी0एच0डी0, डी0लिट्

पूर्व प्राचार्य

म0प्र0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंच (जालौन)

२००४-०५

डॉ0 कैलाश नाथ द्विवेदी,
एम0ए0, साहित्याचार्य, सा0रत्न, पी0एच0डी0, डी0लिट्
पूर्व प्राचार्य, म0प्र0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कोंच (जालौन) २८५२०५

कुसुम कुलाय,
शास्त्री नगर, अजीतमल (औरैया) २०६१२१
फोन नं0- ०५६८३ - २८४०६५
दिनांक - 29 - 12 - 04

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु० ज़ेबा खान ने मेरे पर्यवेक्षण में शोधकार्य करते हुये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की संस्कृत में पी०एच०डी० उपाधि हेतु पंजीकृत शोधविषय - ''संस्कृत साहित्य में इन्दिरा गाँधी पर आधृत शतककाव्यों का साहित्यिक अध्ययन'' शीर्षक शोध-प्रबन्ध तैयार किया है।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के शोध अधिनियम के अन्तर्गत वांछित निर्धारित अवधि तक शोधार्थिनी ने महाविद्यालय के संस्कृतविभागीय शोध केन्द्र एवं मेरे सान्निध्य में उपस्थित रहकर यह शोधकार्य सम्पन्न किया है।

कु० ज़ेबा खान का यह शोध कार्य मौलिक है।

मैं शोध छात्रा की भावी सफलता की कामना करता हुआ, इस शोध-प्रबन्ध की परीक्षाणार्थ विश्वविद्यालय को सहर्ष अग्रसारित करता हूँ

— (**कैलाश नाथ द्विवेदी**)
पर्यवेक्षक

- आत्मकथ्य -

संस्कृत साहित्य रूपी उपवन में खिले हुये पुष्पों ने समस्त संसार को अपनी सुरभि से सुवासित किया है। संसार में शायद ही कोई ऐसा पुरुष हो जो इसकी सुरभि से अछूता रहा हो। कालिदास, बाणभट्ट, भासप्रभृति कवियों ने अपनी लेखनी से इस उपवन को और भी सुवासित बना दिया। आज भी ऐसे साहित्यकार इस धरती पर विराजमान हैं जो संस्कृत साहित्य में अपना विशेष योगदान दे रहे हैं।

संस्कृत साहित्य विश्व वाङ्मय में विविध विधाओं से विलसित है। संस्कृत खण्डकाव्य की व्यापक विधा में शतककाव्य परम्परा अतिदीर्घकाल से संस्कृत साहित्य में प्रचलित है। समृद्ध शतककाव्य का स्वरूप बहुआयामी होकर लोकमानस की सुन्दर मीमांसा करता है। कुछ शतककाव्य देवस्तोत्रात्मक है तो कुछ इन्दिरा गांधी प्रभृति महापुरुषों के भव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व के निरूपक हैं। अनेक शतककाव्य राष्ट्रीयता पर आधारित स्वदेश प्रेम पर आधृत हैं तो अनेक प्रकृति सौन्दर्यपरक। ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र में अनेक शतकाव्य विभिन्न राष्ट्रों के वैशिष्ट्य का निरूपण करते हैं।

लोकजीवन के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नाना पक्षों पर भी शतककाव्यों की प्राचीनकाल तक सुन्दर रचना हुयी है। अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं पर तो पर्याप्त कार्य अनुसंधानकों द्वारा किया गया है, किन्तु इन्दिरा गांधी चरितात्मक अस्पृष्ट काव्यविधा पर अनुसंधान करना ही मेरे शोधकार्य का परम् उद्देश्य है, जिसमें इससे सम्बन्धित अन्धकारग्रस्त अनेक महान् रचनाकारों और उनकी उत्कृष्ट इन्दिरा शतककाव्य सम्बन्धी रचनाओं को प्रकाश में ला सकूं तथा संस्कृत साहित्य के इस अधूरे इतिहास का पुनरुत्थान आगे हो सके।

प्राचीनकाल से अद्यावधि विविध वर्ण्यविषयक शतककाव्यों की रचनायें प्राप्त होती हैं। जिनमें लोकजीवन का बहुआयामी चारुचित्रण हुआ है। परिणामतः शतककाव्यों का सामान्य वर्गीकरण अथवा स्वरुप निर्धारण भी विभिन्न रूप से किया जा सकता है। कतिपय शतककाव्य स्तोत्रात्मक हैं तो कतिपय राष्ट्रीय

महापुरुषों के चरित्र चित्रण से सम्बन्धित सरस शतककाव्य प्राप्त होते हैं। प्रकृति चित्रण परक शतककाव्यों के अतिरिक्त शैक्षिक विषयों काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, शिक्षा, सदाचार आदि से संबंधित शतककाव्य ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं। कतिपय शतककाव्यों में वैदेशिक राष्ट्रों यवद्वीप (जावा) बाली आदि का अच्छा परिचय प्राप्त होता है। लोकजीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक स्तरीय महाकाव्य महत्वपूर्ण हैं।

अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्य के अन्तर्गत श्रीमती इन्दिरा गांधी पर आधृत शतककाव्यों का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है।

मै विशेष रूप से लेखन कार्य में दिशा निर्देश के लिये साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, पी.एच.डी. एवं डी.लिट. की उपाधि से विभूषित डॉ० कैलाश नाथ द्विवेदी जी (पूर्व प्राचार्य, म०प्र० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंच) का सहृदय आभार प्रकट करती हूं जिन्होनें मुझे शोध प्रबन्ध के विषय में प्रेरणा दी एवं मुझे निर्देशन सहयोग प्रदान किया। मै डा० रमाकान्त शुक्ल (सम्पादक, अर्वाचीन संस्कृतम्) एवं श्रीकृष्ण सेमवाल जी (सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी) का भी हृदय से आभार प्रकट करती हूं जिनके माध्यम से मुझे इन्दिरा गांधी से सम्बन्धित शतककाव्य कृतियां उपलब्ध हुयीं। अपने शोधकेन्द्र के अतिरिक्त आदरणीय पर्यवेक्षक महोदय के व्यक्तिगत समृद्ध पुस्तकालय से भी यथेष्ट रूप से मैं लाभान्वित हुई हूं, इनके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूं। मै मथुराप्रसाद महाविद्यालय कोंच के प्राचार्य वीरेन्द्र सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० टी.आर. निरंजन एवं समस्त शिक्षकों का हृदय से आभार प्रकट करती हूं जो कि इस शोध कार्य में मेरे प्रेरणास्रोत रहे। मै अपने माता-पिता एवं अपने भाइयों का भी हृदय से आभार प्रकट करती हूं जो मेरे इस शोधकार्य में मेरे सहायक रहे। अन्त में मै क्वालिटी कम्प्यूटर कोंच, के लोगों का भी विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने मेरे इस शोध प्रबन्ध को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया।

मुझे विश्वास है कि संस्कृत साहित्य के अधूरे इतिहास के पुनर्लेखन में इन्दिरा गांधी सम्बन्धी शतककाव्यों को समाहित करके मेरे इस शोधप्रबन्ध से पृष्ठभूमि अवश्य प्राप्त होगी।

विनयविनता

ज़ेबा खान

कु० ज़ेबा खान

विषयानुक्रम

- भूमिका -

विषय - प्रवेश

''संस्कृत साहित्य में गीति(खण्ड) काव्य तथा शतककाव्य परम्परा''

संस्कृत साहित्य में प्रारम्भ से ही गीतिकाव्य की प्रधानता रही है। भारतवर्ष की संगीतात्मक भाषा योजना सहृदयों को अपनी ओर आकृष्ट करने में पूर्णतया सक्षम रही है। अंग्रेजी में गीतिकाव्य को (Lyric Poetry) कहा जाता है। "Lyric" शब्द की निष्पत्ति ग्रीक भाषा के लायर वाद्य से हुई है। लायर पर प्रायः एक ही व्यक्ति के द्वारा गीत गाये जाते थे। गीतिकाव्य के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों की धारणा भी विचारणीय है -

According to Balpol -

" The heart Can not be told in words, so it has to be demonstarted in words that is to write poetry of fine order."

According to wordsworth -

" Poetry is the spontaneouns overflow of powerful feelings."

गीतिकाव्य का लक्षण-

''खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च''- साहित्यदर्पण ६/२३६ अर्थात् जिन काव्यों में महाकाव्य के सम्पूर्ण गुण या लक्षण दृष्टिगत नहीं होते, उन्हें खण्डकाव्य या गीतिकाव्य कहा जाता है। इसमें प्रायः मुक्तक पद्यों का प्रयोग होता है, जिसमें इसका पूर्ण अभिव्यक्त या किसी विषय का सांगोपांग वर्णन होता है। उसे हृदयङ्गम करने के लिये पूर्वापर प्रसंग की उपेक्षा नही होती -

''पूर्वापर निरपेक्षणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्''

(आनन्दवर्धन, ध्वन्यालोक)

जनजीवन का एकदेशीय तन्मयता अथवा मानव अन्तरात्मा के किसी एक ही पटल का चित्रण लालित्य एवं माधुर्यपूर्ण भाषा के स्वरूप में अभिव्यक्त हो तो उसे गीतिकाव्य की संज्ञा दी जाती है। इसमें मानव जीवन की समग्रता का प्रसार न होकर एक ही पक्ष (श्रंगारिक, धार्मिक या नैतिक) का उद्घाटन होता है।

गीतिकाव्य का उद्भव एवं विकास -

गीतिकाव्य के आधारभूत तत्वों के दर्शन हमें ऋग्वेद से ही होने लगते हैं। ऋग्वेद में कतिपय ऐसे स्थल मिलते हैं जहाँ हमें गीतिकाव्य के दर्शन होते है। देवी उषा की प्रशंसा में गाये गये मन्त्र गीतिकाव्य के सुन्दर उदाहरण है। प्रस्तुत मन्त्र को देखिये -

" अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये घनानाम्।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव निरीणीते अप्सः।।"

अर्थात् उषा अपने शुभ्र उज्जवल रूप को धारण करती हुई स्नान करने वाली सुन्दरी की भाँति आकाश में प्रकट होती है। कभी वह भाई से रहित बहन के समान अपने दायभाग को लेने के लिये पितृस्थानीय सूर्यदेव के पास आती है। कभी वह सुन्दर वस्त्रों को पहनकर पति के अपने प्रेमपाश में बाँधने के लिये मचलने वाली सुन्दरी के समान अपने प्रति के समक्ष सुन्दर रूप को प्रकट करती है।

उषा का वर्णन एक सुन्दर मानवी के रूप में इस प्रकार किया गया है-

" कन्येव तन्वा शाशदाना एषि देवि देवमियक्षमाणम्।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाति।।"

एक स्थान पर व्याकरण को जानने वाले की वाणी की तुलना सुसज्जित सुन्दरी से की गयी है -

" उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचं उत त्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे, जायेव पत्या उशती सुवासाः।।"

महर्षि पतञ्जलि ने इस मन्त्र की मीमांसा इस प्रकार की है कि व्याकरण से अनभिज्ञ व्यक्ति एक ऐसे प्राणी के समान है। जो कि वाणी को देखता हुआ भी नही देखता है। सुनता हुआ भी नही सुनता है परन्तु व्याकरणज्ञ के लिए वाणी अपना रूप प्रकट कर देती है। जिस प्रकार सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित कामिनी अपने आप को अपने पति के समक्ष समर्पित कर देती है।

वाल्मीकि रामायण में अनेक स्थानों पर सुन्दर गीतितत्व पाये जाते है। यदि गम्भीरता से विचार किया जाये तो गीतिकाव्य के द्वारा ही लौकिक कविता की उत्पत्ति सिद्ध होती है। करुणरसाक्रान्त मानस महर्षि वाल्मीकि के मार्मिक

हार्दिक भाव संगीतात्मक लयानुबद्ध होकर कविता के रूप में प्रकट होता है। अतएव शोकाभिभूत महर्षि वाल्मीकि सुन्दर गीतात्मक भाव गम्भीर श्लोक को बोलते हुये कहते है -

" मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकम् वधीः काममोहितम्।।"

महर्षि पाणिनि के द्वारा प्रणीत गीतिपद्य मिलते हैं। ये पद्य अत्यन्त ही सरस, रोचक एवं हृद्य है। राजशेखर ने पाणिनि की अत्यन्त ही प्रशंसा की है। क्षेमेन्द्र ने उपजाति छन्द की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उनकी गीति रचनायें सरस, मधुर, ललित, मनोरम एवं अलंकृत हैं। उदाहरण के लिये उनके द्वारा रचित निम्नलिखित श्लोकों को अवलोकन करें -

"निरीक्ष्य विद्युन्नयनैः पयोदो मुखं निशायामभिसारिकायाः।
धारानिपातैः सह किन्नु वान्तश्चन्द्रोऽयमित्यार्ततरं ररास।।
ऐन्द्रं धनुः पाण्डुपयोधरेण शरद् दधानर्द्रनखक्षताभम्।
प्रसादयन्ती सकलंकं मिन्दुं तापं रवेरभ्यधिकं चकार।।
शुद्धस्वाभावान्यपि संहतानि निनाय भेदं कुमुदानि चन्द्रः।
अवाप्य वृद्धिं मलिनात्मनात्मा जडो भवेत्कस्य गुणाय वक्रः।।
उपोढ़रागेण विलोलतारकं तथा गृहीतं शशिना निशामुखम्।
यथा समस्तं तिमिरांशुकं तया पुरोनुरागाद् गलितं नु लक्षितम्।।
प्रकाश्य लोकान् भगवान स्वेतजसा, प्रभादरिद्रः सवितापि जायते।
अहो चला श्रीर्बलमादाऽप्यहो, स्पृशन्ति सर्वा हि दशा विपर्यये।।

संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य का प्रामाणिक एवं स्वतन्त्र प्रथम ग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है। मेक्डानल ने मेघदूत को गीतिरत्न तथा हरियन्ना ने इसे महत्तम सर्वश्रेष्ठ गीतिकाव्य बतलाया है। मेघदूत के पश्चात् यह गीतिकाव्य की परम्परा निर्बाध गति से प्रवाहित होती हुई अद्यावधि अक्षुण्ण रूप से बहती चली आ रही है।

संस्कृत गीतिकाव्य की प्राप्त प्राचीनतम दो कृतियां महाकवि कालिदास

की इस प्रकार हैं -

१. ऋतुसंहार -

वत्सभट्टि के शिलालेख (४६२ ई०) पर इनकी छाप स्पष्ट परिलक्षित है। (५/८ ऋतु) ऋतुसंहार के ६ सर्गों एवं १४४ छन्दों में गीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा वसन्त ऋतुओं का यथाक्रम हृदयग्राही वर्णन है। इसमें प्रकृति के बाहरी सौन्दर्य एवं माननीय प्रणय का क्रान्त संयोग दृष्टिगत होता है। तरुण कवि की प्रथम कृति होने के कारण 'ऋतुसंहार' महाकवि के महत्वपूर्ण गुण-ध्वनि से शून्यप्राय है, किन्तु काव्य के लालित्य, माधुर्य, प्रसादगुण का भी उसमें अभाव नहीं यथा -

" आम्री मंजुलमंजरी वरशरः सत्किंशुकं यद्धनुर्ज्या,
यस्यांलिकुलं कलंकरहितं यज्ञं सितांशुः सितम्।
मत्तेभो मलयानिलः परभृतो यद्बन्दिनीलोकजित्,
सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः।।"

मेघदूत -

संस्कृत लक्षण ग्रन्थों के अनुसार मेघदूत खण्डकाव्य के अन्तर्गत आता है। जिसे भारतीय समीक्षकों के खण्डकाव्य के नाम से अभिहित किया है। मेघदूत में भारतीय समीक्षकों का खण्डकाव्य का तथा पाश्चात्य समीक्षकों का गीतिकाव्य का लक्षण पूर्णरूपेण घटित होता है। १२१ मन्दाक्रान्ता छन्दों में पूर्व मेघ और उत्तरमेघ में विरहाकुल हृदय का गम्भीर चित्रण किया है। विरह से व्यथित होकर पक्ष किंकर्तव्यविमूढ हो जाता है। और प्रियतमा से मिलन के किसी भी मार्ग को न पाकर अपने घर की ओर जाने वाले यक्षिणी के लिये संदेश भेजने की बात करता है। पूर्वमेघ में रामगिरि से अलकापुरी तक के मार्ग का मनमोहक वर्णन है तथा उत्तरमेघ में अलकापुरी, वहाँ के भवन एवं अपनी कान्ता की विरह दशा का हृदयग्राही वर्णन है। संस्कृत के सम्पूर्ण गीतिकाव्य साहित्य का यह एक समुज्ज्वल रत्न है।

मेघदूत महाकवि की रमणीय एवं सुकुमार कल्पना, माधुर्यपूर्ण प्रांजल, प्रवाहमयी, परिमार्जित भाषा, मनोरम शैली का चारुनिदर्शन है। माधुर्यव्यंजक मधुर पदावली से युक्त मेघदूत के पूर्वमेघ में वर्णित यह पद दृष्टिव्य है -

"मन्दंमन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां,
वामश्चायं नुदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमावद्धमालाः,
सेविष्यन्ते नयन सुभगं खे भवन्तं बलाकाः।।"

(पूर्वमेघ, श्लोक सं०-१०)

जैसे कि अनुकूल पवन तुम्हें धीरे-धीरे ले जा रहा है। और यह तुम्हारा सम्बन्धी चातक बाईं ओर स्थित होकर मधुर शब्द कर रहा है। (उससे) निश्चित ही गर्भधारण रूपी उत्सव के अभ्यास के कारण पक्तियां बनाये मादा बगुले दृष्टि को आनन्द देने वाले आपका आकाश में सेवन करेंगें।

संक्षेप में उदात्त कल्पना, कलात्मक सृष्टि, रसानुकूल भावत्यञ्जना, उच्च आदर्श एवं सुललित पद विन्यास आदि विशिष्ट गुणों के कारण मेघदूत गीतिकाव्य कला का चूड़ान्त निदर्शन है।

इसकी लोकप्रियता का यही प्रमाण है कि इस पर ४० टीकायें लिखीं गईं। हिन्दी में इसके ६ पद्यानुवाद हो चुके है। विदेशों में इसका प्रचुर प्रचार हुआ है। जर्मन कवि शिलर का "मेदिया स्टुअर्ट" मेघदूत से प्रभावित नाट्यकाव्य है। मैक्समूलर ने इसका जर्मन पद्य में रवेट्जने जर्मन गद्य में, डा० वेक्ह ने तिब्बती भाषा में, आर्थर राइडर ने अंग्रेजी में इसका अनुवाद किया है।

संस्कृत में मेघदूत के अनुकरण पर दूतकाव्य परम्परा ही चल पड़ी। इन संदेश या दूतकाव्यों में जैनकवि जिनसेन (८वीं शती. ई०) कृत "पार्श्वाभ्युदय", कविराज धोयीकृत (१२वीं शती. ई०) पवनदूत के अतिरिक्त परवर्ती नेमिदूत, हंसदूत, कोकिलदूत, शीलदूत एवं उद्धवदूत आदि सन्देश काव्य उल्लेखनीय हैं।

शतककाव्य परम्परा -

संस्कृत की नाना काव्य विधाओं में हमारी संस्कृति पल्लवित हुई है। हमारी संस्कृति का प्राण आध्यात्मिक भावना है, जो संस्कृत वाङ्मय में त्याग एवं तपस्या के द्वारा संवर्द्धित हुई है। वैदिक वाङ्मय से प्रभावित भारतीय कवि को आत्मानुभूति जब काव्यरूप ग्रहण करने के लिये चंचल कामिनी के समान थिरक पड़ी। उस समय भी हमारी संस्कृति के प्राण आध्यात्मवाद ने उसके हाव-भाव का रूप ग्रहण किया। फलतः नाना भंगिमाओं से निःसृत काव्यधारा

आशावादिता से परिपूर्ण रही। शतककाव्य में ही अनेकरूपों में भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

"शतक" हमारी वैदिक परम्परा में पूर्णता का प्रतीक रहा है। 'जीवेम शरदः शतम्' आदि की आत्मा पूर्णता तथा कल्याण से युक्त है। इसी से प्रेरित होकर कवि की भी स्वानुभूति शतककाव्य के रूप में प्रकट हुई संस्कृत काव्य की विधाओं में शतककाव्यों का स्थान खण्डकाव्य के अन्तर्गत प्रतिष्ठित होता है। वैसे शतककाव्य, मुक्तककाव्य के प्रमुख उदाहरण हैं। जिनको पढ़कर सहृदय परितृप्त होकर आनन्दित हो जाता है।

संस्कृत शतककाव्यों की सुदीर्घ परम्परा परिलक्षित होती है। जिसमें प्राचीन काल से भर्तृहरि जैसे यशस्वी कवियों के अतिरिक्त मध्यकालीन एवं अर्वाचीन अनेक कवियों की स्तरीय शतककाव्य कृतियां प्राप्त होती है। जिनका वर्णन प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में भूमिका के अन्तर्गत विवेचित है।

शोधप्रबन्ध की संक्षिप्त पृष्ठभूमि -

संस्कृत साहित्य विश्व वाङ्मय में विविध विधाओं से विलकित है। संस्कृत खण्डकाव्य की व्यापक विधा में शतककाव्य परम्परा अतिदीर्घकाल से संस्कृत साहित्य में प्रचलित है। समृद्ध शतककाव्य का स्वरूप बहुआयामी होकर लोकमानस की सुन्दर मीमांसा करता है। कुछ शतककाव्य देव स्तोत्रात्मक हैं तो कुछ श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रभृति राष्ट्रीय महापुरुषों के भव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व के निरूपक हैं उनके शतककाव्य राष्ट्रीयता पर आधारित स्वदेश प्रेम पर आधृत हैं तो अनेक सौन्दर्यपरक। ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र में अनेक शतककाव्य नाना शैक्षिक विषयों से सम्बन्धित है। तो अनेक शतककाव्य विभिन्न राष्ट्रों के वैशिष्ट्य का निरूपण करते है।

लोकजीवन के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नाना पक्षों पर भी शतककाव्यों की प्राचीनकाल तक सुन्दर रचना हुई है। अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं पर तो पर्याप्त कार्य अनुसंधानकों द्वारा किया गया हैं, किन्तु इन्दिरा गाँधी चरितात्मक अस्पृष्ट काव्य विधा पर अनुसंधान कार्य करना ही मेरे शोधकार्य का परम उद्देश्य हैं जिसमें उत्कृष्ट इन्दिरा शतककाव्य सम्बन्धी रचनाओं को प्रकाश में ला सकूँ तथा संस्कृत साहित्य

का पुनरुत्थान आगे हो सके।

प्राचीनकाल से अद्यावधि विविध वर्ण्यविषयक शतककाव्यों की रचनाएं प्राप्त होती है। जिसमें लोकजीवन का बहुआयामी चारुचित्रण हुआ है। परिणामतः शतककाव्यों का सामान्य वर्गीकरण अथवा स्वरूप निर्धारण भी विभिन्न रूप से किया जा सकता है। कतिपय शतककाव्य स्तोत्रात्मक है। तो कतिपय राष्ट्रीय महापुरुषों के चरित्र-चित्रण से सम्बन्धित सरस शतककाव्य प्राप्त होते हैं।

प्रकृतिचित्रणपरक शतककाव्यों के अतिरिक्त शैक्षिक विषयों काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, शिक्षा, सदाचार आदि से सम्बन्धित शतककाव्य ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं। कतिपय शतककाव्यों में वैदेशिक राष्ट्रों यवद्वीप (जावा) बाली आदि का अच्छा परिचय प्राप्त होता है। लोकजीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक स्तरीय महाकाव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्य के अन्तर्गत श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर आधृत शतककाव्यों का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के *प्रथम अध्याय* में शतककाव्यों का वर्गीकरण करते हुये इनके स्वरूप को निर्धारित करने के साथ ही शतककाव्यों का वर्गीकरण और वैशिष्ट्य विवेचित है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत श्रीकृष्ण सेमवाल का जीवन परिचय इन्दिराप्रियदर्शिनीयम् का साहित्यिक अनुशीलन, भाषा-शैली छन्दोऽलंकार योजना, रसनिष्पत्ति प्रकृति चित्रण एवं समीक्षा वर्णित है।

तृतीय अध्याय में इन्दिराविजयवैजयन्ती तथा इन्दिराप्रशस्तिशतकम् के रचनाकार श्री हजारीलाल शास्त्री का जीवन-परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ ही इन काव्यों का संक्षिप्त साहित्यिक-परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय के अन्तर्गत इन्दिराजीवनम् काव्य तथा उसके रचयिता डा० बलभद्र प्रसाद गोस्वामी का साहित्यिक परिचय विवेचित है। चरितात्मक प्रबन्धकाव्य की दृष्टि से इन्दिराजीवनम् की भाषा शैली, छन्दोऽलंकार योजना एवं रसनिष्पति की समीक्षा की भी गवेषणा विवेच्य विषय में की गयी है।

शोध प्रबन्ध के *चतुर्थ अध्याय* में इन्दिराप्रशस्तितिलकम् काव्य के रचनाकार डा० रमेशचन्द्र शुक्ल का जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विवेचित करते हुये इन्दिराप्रशस्तितिलकम् साहित्यिक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत इन्दिराशतकम् काव्य के रचनाकार श्री रामकृष्ण शास्त्री का जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ ही इसका संक्षिप्त साहित्यिक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय के अन्तर्गत इन्दिराशतकम् के रचयिता डा० रामाशीष पाण्डेय का जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भाषा-शैली छन्दोऽलंकार योजना, रसनिष्पत्ति, सर्मीक्षा निरूपित है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के *षष्ठ अध्याय* में इन्दिराविरुदम् काव्य के रचनाकार श्री विष्णुदत्त शर्मा का जीवन-परिच, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, इन्दिराविरुदम का अनुसंधानात्मक साहित्यिक अनुशीलन विभिन्न साहित्यिक दृष्टियों से किया गया है।

सप्तम अध्याय के अन्तर्गत इन्दिराप्रशस्तिशतकम् काव्य की रचनाकार शान्तिराठी का साहित्यिक अनुशीलन अनुसंधानात्मक पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत किया गया है एवं इसी अध्याय के अन्तर्गत अभागभारतम् के रचयिता श्री सुन्दरराज का जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भाषा-शैली, छन्दोऽलंकार योजना, रसनिष्पत्ति, समीक्षा का निरूपण किया गया है।

अष्टम अध्याय के अन्तर्गत कूहा शतककाव्य के रचनाकार डा० उमाकान्त शुक्ल का साहित्यिक जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अतिरिक्त कूहा काव्य का गवेषणात्मक साहित्यिक अनुशीलन किया गया है।

नवम अध्याय के अन्तर्गत स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर आधृत अनेक प्रकीर्ण काव्यों एवं उनके रचनाकारों का अनुसंधानात्मक अनुशीलन किया गया है। जिसमें विभिन्न उद्धरणों के आधार पर उनकी भाषा-शैली, छन्दोऽलंकार योजना और रसनिष्पत्ति साहित्यिक समीक्षा की गयी है।

अन्तिम अध्याय *उपसंहार* के अन्तर्गत शोधनिष्कर्षो का गवेषणापूर्ण संक्षिप्त निरूपण प्रस्तुत है। जिनके आधार पर इन्दिरा गाँधी के महान् व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है। जिससे उनका राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर महत्वपूर्ण अवदान अभिव्यञ्जित है।

प्रथम अध्याय

संस्कृत शतककाव्यों का स्वरूप, वर्गीकरण एवं उनका वैशिष्ट्य
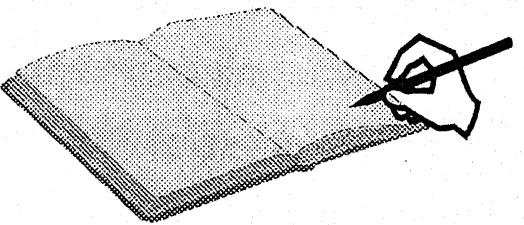
प्रथम - अध्याय

- संस्कृत शतककाव्यों का स्वरूप -

विवेच्य विषय के अनुसन्धानात्मक अध्ययन के आधार पर सामान्यतया शतक हमें चार रूपों में प्राप्त होते है।

१. भक्तिभावपूर्ण अथवा स्तोत्रात्मक शतककाव्य

२. श्रृंगारिक शतककाव्य

३. नीतिसम्बन्धी शतककाव्य तथा

४. राष्ट्रीय भावना परक शतककाव्य

भक्ति भावयुक्त स्तोत्रात्मक शतककाव्यों का प्रतिपाद्य विषय देवताओं की स्तुतियां है। इन्हें ही स्तोत्र शतक साहित्य के नाम से जाना जाता है। संस्कृत कवियों ने अपने लौकिक कल्याण के भाव से ओत-प्रोत होकर दिव्य देवाताओं की स्तुति में अनेक शतककाव्यों की रचना की। जिनमें उपास्य देवता विशेष को ही आधार बनाकर उन्हीं के यशोगान में मुक्तक पद्यों में सुन्दर रसपेशल भव्य भाव व्यक्त किये। इनमें शिव-पार्वती, राम-सीता, हनुमान, कृष्ण-राधा, दुर्गा स्थानीय लोक देवता तथा पुराण सम्बन्धी शतकों की संख्या अगणित है। कवियों ने देवता विशेष की दिव्याकृति, करुणामय स्वरूप तथा दैवीशक्ति आदि तत्वों को काव्यात्मक रूप प्रदान किया। भारतीय मनीषियों ने वैदिककाल से ही ईश्वर के प्रति अपने को अर्पण करने में ही सफलता मानी है। देवता विशिष्ट के वन्दन में ही एक-एक सूक्त का निर्माण किया गया। उसी परम्परा में लौकिक संस्कृत साहित्य में स्तोत्र रूप में विशाल शतक साहित्य का निर्माण किया गया।

संस्कृत के लोकप्रिय कवियों ने जहाँ एक ओर स्तोत्र-परम्परा को समृद्धशाली बनाया। वही सुप्रसिद्ध आचार्यो से प्रभावित होकर काव्य के महनीय प्रयोजन "कान्तासम्मित उपदेश" का समादर किया।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। उसके मूलाधार अर्थात् उद्भावक तत्व है- लोक, वेद, पुराण तथा अध्यात्म। लोक से सामाजिक जीवन, वेद से विज्ञान तथा अध्यात्म से दार्शनिक चिन्तन का ग्रहण होता है।

भामह, मम्मट प्रभृति आचार्यो ने भी काव्य निर्माण में लोक तत्व की महिमा को स्वीकार किया है। साहित्य एक श्रेष्ठ ललित कला है, कला के द्वारा

काव्यकार अपनी सौन्दर्यानुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। सौन्दर्य रूप और विचार दोनों में पाया जाता है, उन विचारों की अभिव्यक्ति कवि को बेचैन कर देती है। श्रृंगारी शतकों का विकास इसी का परिणाम है। इन शतकों में श्रृंगार को ही प्रधान रस माना गया है तथा काम के विभिन्न रूपों मदन, मन्मथ, मार, काम, कन्दर्प, पंचशर आदि के मानव समुदाय में व्याप्त प्रभाव का चित्रण किया गया। कवियों ने नायिकाओं के विभिन्न अव्यवों, विलास क्रीड़ाओं, मनोमुग्धकारी रूपों के चित्रण में ही अपनी लेखनी को सार्थक बनाया। ''सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानं'' तथा ''सर्वस्य गात्रस्य शिरः प्रधानम्'' उक्तियों को कवियों ने अपनी सूक्ष्म उपमाओं तथा अलौकिक भावों से सार्थक सिद्ध कर दिया।

श्रृंगारी शतकों में कवियों ने रमणी के नयन, मुख, नासिका, केश, कटाक्ष, वक्षोज, कटि, रोमावलि आदि अवयवों को ही विषय बनाकर काव्य सर्जना की। इतना अवश्य है कि हमारे इन कवियों का ज्ञान अलौकिक और इन्होंने अपनी अन्तः सूझ से विषय-वस्तु को जिस कलेवर में संजोया वह संसार के किसी साहित्य में दुर्लभ है। कवि ने मर्यादित श्रृंगार का ही चित्रण किया है। जहाँ कहीं भाव-विभोर होकर वह लौकिक धरातल पर उतरने लगता है, अश्लीलता भी ला देता है, पर उसमें भी एक अपूर्व आनन्द तथा सौन्दर्य का समन्वित रूप पाया जाता है।

संस्कृत शतककाव्यों के माध्यम से भारतीय मनीषियों ने ऐसी उपदेशात्मक तथा नीतिपरक बातों की शिक्षा दी है जो किसी अन्य वाड्.मय में दुर्लभ है। इन नीति सम्बन्धी शतकों का समाज पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इन शतकों में कवि ने प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों रूपों में शिक्षायें प्रदान की हैं। इन शतकों पर यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करें तो स्पष्ट हो जाता है। कि समाज में प्रत्येक युग मे यथार्थ दिशा प्रदान करने का कार्य भारतीय मनीषी ही अपने काव्य के माध्यम से करते रहे। नीति सम्बन्धी शतकों में उनका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक माहात्मय, लोकप्रचलित, धर्मशास्त्र, व्यंग्य, सामाजिक, आत्मचरित, आचार्य चरित प्रधान,प्रकृति-ऋतु, राजचरित, छन्द अलंकार, काव्य माहात्म्य सम्बन्धी शतकों का परिगणन किया गया है।

राष्ट्रीय भावनापरक शतककाव्य राष्ट्र के महापुरुषों की स्तुति में विरचित किए है। ये शतककाव्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। इन शतककाव्यों में देश के महान् पुरुषों के देश के लिये किये गये उनके महत्वपूर्ण कार्यो, योगदान, शोक गीत आदि का यथावत् उल्लेख कवियों द्वारा किया गया है।

"वर्ण्यविषयानुसार शतक काव्यों का वर्गीकरण"-

सर्वप्रथम हम धार्मिक शतकों के ऊपर दृष्टि डाल रहे हैं। इनका वर्ण्यविषय विभिन्न देवताओं की स्तुति है। इन शतककाव्यों में कवियों ने देवी देवताओं का गुणगान बड़े ही सुन्दरतम् ढंग से प्रस्तुत किया है। कवियों ने अपनी विलक्षण, लेखनी द्वारा देवताओं के करुणामय रूप, उनकी अलौकिक शक्तियों और दिव्य रुप को बड़े ही अनोखे ढंग से काव्य रूपी माला में पिरोया है।

-देवीशतक -

ध्वन्यालोक के रचयिता आनन्दवर्धन की यह कृति कलापक्ष के प्रदर्शन का एक अनुपम स्थल है। कवि ने पूरे शतक में चित्रकाव्य की शैली से पद्यों का संगठन किया है। शतक के अन्तिम पद्य में कवि के इतर दो ग्रन्थों के निर्माण का उल्लेख है - आनन्दकथा (विषमवाण लीला) तथा त्रिशदानन्द (अर्जुनचरित) नाना प्रकार के बन्धों के निर्माण में आनन्द ने शब्द पाण्डित्य का ही अपूर्व चित्रण किया है। "महदेसुरसंधमे" पद्य काव्यप्रकाश में संस्कृत तथा महाराष्ट्री के भाषासमक के उदाहरण में उद्धृत है। ध्वन्याचार्य के काव्य में हृदय पक्ष की कमी आलोचकों को यहां खटकती है। उदाहरण के लिये -

"सरस्वति-प्रसादं मे स्थितिं चिन्तसरस्वति।
सरस्वति कुरु क्षेत्रकुरुक्षेत्रसरस्वति।।"

श्लोक का आशय है - हे सरस्वति, आप अतिशय (स्वति) प्रसाद को धारण कीजिये और मेरे चिन्तरूपी समुद्र (सरस्वान्) में आप स्थिति कीजिये। शरीर (क्षेत्र) रूपी कुरुक्षेत्र में आप सरस्वती नदी के समान सर्वदा निवास करने वाली हैं। 'सरस्वति' के विभिन्न चतुष्ट्य प्रयोग से यमकालंकार का यह सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस दुर्बोध काव्य का अर्थ समझना पाठकों के लिये टेढ़ी खीर होता। यदि कश्मीर के महनीय पण्डित कय्यट ने अपनी विशद व्याख्या

न लिखी होती। ये कय्यट महाभाष्य पर प्रदीप व्याख्या के रचयिता वैयाकरण कय्यट से नितान्त भिन्न है। ये शिशुपालन आदि काव्यों के विश्रुत टीकाकार वल्लभदेव के पौत्र तथा चन्द्रादित्य के पुत्र थे। टीका का समय ५०७८ कलि संवत् (१७८ई०सन्) दिया गया है। फलतः दशम् शती के उत्तरार्द्ध में कय्यट ने इस टीका का प्रणयन किया- आनन्दवर्धन से एक शताब्दी भीतर ही।

अन्य शाक्त-स्तोत्रों में उल्लेखनीय है-मथुरा के निवासी सामराज दीक्षित (१६शती उत्तरार्द्ध) का (त्रिपुरसुन्दरीमानस पूजास्तोत्र[१]) जो शंकराचार्य के एतन्नामक स्तोत्र से प्रभावित है; सुन्दराचार्य नाम किसी द्रविड़ कवि का गीतिशतक[२] अपनी रमणीय आर्याओं के लिये विख्यात रहेगा। दक्षिण के प्रख्यात कवि नीलकण्ठ दीक्षित (१६शती) का आनन्दसागरस्तव[३] कमनीय भावनाओं से भरा-पूरा है। भाषा सरस सुबोध है और पदों की प्रसन्नता नितरां दर्शनीय है। नासिक के पास बाई नगर के निवासी महाराष्ट्र लक्ष्मण कवि कींचण्डीकुचपंचचाशिका[४] प्रौढ़ भावों से सम्पन्न है तथा कल्पना की प्रचुरता से मण्डित है। कृष्णकं पण्डित रचित 'महाराज्ञी स्तोत्र[५]' अनेक विशिष्टता से मण्डित है। कश्मीर के 'महाराज्ञी' नाम से भगवती की एक विशिष्ट मूर्ति की उपासना प्रचलित है। जिसका आविर्भाव कश्मीर के तूलमूल्य (टुल-मुल) नामक तीर्थ में माना जाता है। महाराज्ञी की उपासना के आवश्यक पटल-पूजा-कवच-सहत्रनाम-स्तोत्र प्रकाशित है। यह स्तोत्र सरस-सुबोध तथा भक्तिभावापन्न है। इसमें ५६ पद्य है जिनमें वाग्देवता-रूपिणी महाराज्ञी की प्रकृष्ट स्तुति है -

"नौ दीर्घदुर्गति सरस्तरणोन्मुखानां यत्पादपंकजयुगप्रणतिर्नराणाम्।
कश्मीरपण्डितमनोरचितप्रतिष्ठां वाग्देवतातनुमुपैम्यहमाशराज्ञीम्।।"

इसके प्रणेता पण्डित कृष्णकं निश्चयेन काश्मीरी हैं तथा अर्वाचीन प्रतीत होते हैं। आनन्दमन्दिरस्तोत्र[६] की रचना कवीन्द्र बहादुर लल्ला दीक्षित ने१८५६ में विक्रमी (१८०२ई०) मे काशी की प्रख्यात देवी संकटाजी की स्तुति में लिखी। ये काशी निवासी बान्धोकर उपनामक भारद्वाजगोत्री शंकरदीक्षित के पौत्र तथा लक्ष्मण दीक्षित के पुत्र थे। यह एक पूरा शतक है। स्तुति प्रसाद गुण तथा भक्तिभाव से सम्पन्न है।

- चण्डी शतक -

बाणभट्ट के चण्डीशतक में प्रख्यात महाकाव्यकार सुकवि भगवती दुर्गा की स्रग्धरा वृत्त में बड़ी प्रशस्तिपूर्ण स्तुति की गयी है। चण्डीशतक में बाण की उस परिचित शैली का चमत्कार हम पाते है - लंबे-लंबे समास, नोंक-झोंक के शब्द, कानों में झनकार करने वाले अनुप्रास तथा ऊँची उत्प्रेक्षा। भोजराज ने सरस्वती कण्ठाभरण में चण्डी शतक का यह प्रशस्त पद्य दृष्टान्त के रूप में दिया है -

"विद्राणे रुद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे,
जाताशंके शशांके विरमति मरुति त्यक्तवैरे कुबेरे।
वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषमतिरुषं पौरुषपध्ननिध्नं,
निर्विघ्नं निघ्नती वः शमयतु दुरितं भूरिभावा भवानी।।"

- विष्णुस्तोत्रशतक -

यह स्तोत्र काव्य महाविष्णु के अवतार से सम्बन्धित है। इसके रचयिता श्री तीर्थपाद परमहंस स्वामी केरल निवासी है। इनके पिता आलक्काट चेस्कोतन्त इल्ल नम्बूदरी माता कुजकुट्टिपिल्ला है। आपका जन्म १८८२ तथा मृत्यु १९३९ ई० में हुई थी।

- सूर्यशतक -

मयूर का 'सूर्यशतक' स्रग्धरा वृत्त में लिखा गया नितान्त प्रौढ़ काव्य है। स्रग्धरा वृत्त में लिखे गये काव्यों में यही प्रथम काव्य हैं। संस्कृत भाषा के ऊपर कवि की प्रभुता बहुत ही अधिक है। झनझनाते हुये अनुप्रासों को मधुर ध्वनि सहृदयों के हृदय का आवर्जन करती है। कवि सूर्य के भिन्न-भिन्न अंगों और साधनों जैसे रथ - घोड़े इत्यादि के वर्णन में पूर्ण सफल है। कहा जाता है। कि किसी कारणवश मयूर को कुष्ठरोग हो गया था जिसके निवारणार्थ उन्होने सूर्य भगवान् की सुन्दर स्तुति लिखी।

- सुदर्शनशतक -

'कूरनारायण' रचित सुदर्शन-शतक काव्य प्रौढि की दृष्टि से एक उत्कृष्ट रचना है। इसके रचयिता कवि द्रविड़ देशीय रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी प्रतीत होते है। निश्चित समय का पता नही चलता; अर्वाचीन मानना

उचित है। नारायण में विशिष्ट आयुध सुदर्शन चक्र का स्रग्धरा में निर्मित यह कवित्वमय वर्णन कवि की उत्कृष्ट प्रतिभा का नमूना है।

- हनुमत्प्रसादशतकम् -

इसके रचयिता रंगनाथ ताताचार्य और तंजौर के रामदुर्ग नामक ग्राम में जन्मे थे। आप कवि भूषण की उपाधि से अलंकृत थे। १८३४ में तंजौर सरस्वती महल ग्रन्थालय के मुख्याधिकारी थे। यह शतक हनुमान् की स्तुति में रचित है।

- कृष्ण शतक -

यह शतक बल्लथोल नारायण मेनन द्वारा रचित है। इनका जन्म १८६० ई० में हुआ था। यह भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति में रचित स्तोत्र है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण की बड़े ही सुन्दर ढंग से स्तुति की गई है।

- श्रीनिवासशतकम् -

इस शतक के रचयिता विठलदेवमुनि सुन्दर शर्मा है। इनका समय २०वी शताब्दी है। इस शतक का प्रकाशन सर्वप्रथम १६७८ ई० में हुआ। यह एक भक्तिभावनात्मक चरित प्रधान काव्य है। इन्हीं का स्तोत्र काव्य वीरांजनेय शतक भी है जिसका प्रकाशन १६८१ ई० में हुआ। यह हनुमान के पराक्रम, वीरता और सच्ची भक्ति का प्रतीक है।

नृसिंहशतक

इसके रचयिता तिरुवेंकट तातदेशिक हैं। जो शष्मर्षण गोत्रीय सिंगाराचार्य के पुत्र है। आपका जन्म १८८२ ई० तथा मृत्यु १६३५ ई० के बाद हुई। यह स्तोत्र शतक है। जिसमें नृसिंह भगवान् के माहात्म्य का वर्णन है।

कोलम्बाकुचशतकम्

यह स्तोत्र शतक एक स्थानीय देवता परक है। इसके रचयिता सुन्दराचार्य का जन्म १८८० ई० में हुआ। आप रामानुजाचार्य के शिष्य थे। इस शतक काव्य में कोलम्बा देवी का श्रृंगारिक भक्तिपरक सुन्दर स्तवन है।

शक्तिशतक-सकलेश्वर शतक

इन शतकों के रचयिता गणेश्वर रथ उड़ीसा प्रान्त के कालाहांडी के निवासी थे। इनका जन्म १८६६ ई० में हुआ। दोनों शतकों में कवि ने नामानुरूप

शक्ति माँ तथा ईश्वर के माहात्म्य का चित्रण किया है। ये स्तोत्र शतककाव्य है।

कृष्णार्यशतक

इसके रचयिता मेलारकोड सुब्रह्माण्य अय्यर का जन्म १८७२ ई० तथा निर्वाण १६४१ ई० है। आप मालावार जिले के पालक्काट तालुकान्तर्गत मेलारकोट में जन्मे थे। कृष्णार्यशतक काव्य में १०८ श्लोकों में कृष्ण चरित का सुन्दर व्याख्यान है।

व्याघ्रटवीशतक

इस शतक के रचयिता नल्लूर कण्डि कृष्णन् नम्बूदिरी उत्तर मलयाल के कटत्तनाट नरिक्कटिरि ग्राम, केरल प्रान्त के निवासी थे।आपका जन्म १८६५ ई० तथा निर्वाण १६३३ ई० में हुआ। यह एक प्रकृति प्रधान काव्य है। स्थानीय देवता की स्तुति है।

छायापतिशतकम्, शम्भुशतकम्, देवीशतकम्

श्री विठ्लदेवमुनि सुन्दरराज शर्मा ने भक्तिपरक स्तोत्र काव्य लिखे जो इस प्रकार है - छायापति शतकम्, शम्भुशतकम्, देवीशतकम्। इनके अन्य शतक है। जो १६८३ ई० तक प्रकाशित हो चुके थे।

रामशतक

ये शतक सोमेश्वर द्वारा लिखित है। इस शतक काव्य में भगवान राम का बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है और भगवान राम की स्तुति बड़े ही भावपूर्ण ढंग से की गई है।

त्रिशतिका

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित त्रिशतिका में तीन शतक स्तोत्रों का वर्णन है जो कि स्तुतिपरक है।

शृंगारिक शतककाव्य

शृंगारिक शतक काव्यों का प्रतिपाद्य विषय शृंगार है। इनमें कवि ने सुन्दर स्त्रियों के नेत्रों, ओष्ठ आदि विभिन्न अवयवों के लावण्य को वर्ण्य विषय बनाया है। कवि ने इन काव्यों के माध्यम से स्त्रियों की सुन्दरता को और अधिक उभारा है। शृंगारपरक शतककाव्यों का चित्रण इस प्रकार है-

शृंगार शतक :-

इसमें शृंगार का आकर्षण पूर्ण चित्रण कवि ने ललित, मधुर शैली में किया है। शृंगार शतक में पहले शृंगार के आकर्षण का किन्तु बाद में शान्तरस की अपेक्षा उसकी तुच्छता व्यक्त की है –

"संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः।।"

शृंगार रस पूर्ण माधुर्य गुण युक्त ललित पदावली देखिये –

"कुंकुमपंककलंकितदेहा गौरपयोधरककम्पितहाराः।
नुपूरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामाः।।"

शृंगार शतक में कवि ने स्त्रियों की मधुर चेष्टाओं, उनके आकर्षण तथा छल–छन्द प्रपचों को सुललित शैली में दिखलाया है। कवि आयजनों से प्रश्न करता ह। कि पर्वतों पर्वतों की गुफाओं में निवास करना अच्छा है तथा विलासनियों के नितम्बों का सेवन करना –

"मात्सर्यमुतसार्य विचार्य कार्यमार्याः समयदिमुदाहरन्तु।
सेव्या नितम्बाः किमु भूधराणामुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम्।।"

स्त्रियों की विविध वैलासिकः चेष्टाओं का वर्णन करता हुआ कवि लिखता है –

"सम्मोहयन्ति मदयन्ति विडम्वयन्ति,
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति।
एताः प्रविश्य हृदयं सदयं नाराणां,
किं किं न वामनयना हि समाचरन्ति।।"

संसार में भाग्यशाली पुरुष ही कामनियों के सरस सौन्दर्य का आस्वादन करते है –

"उरसि निपतितानांसस्तधम्मिल्लकानां,
मुकुलितनयनानां किञ्चिदुन्मीलितानाम्।
सुरतजनितस्वेदैः सार्द्रगण्डस्थलीनाम्,
अधरमधुवधूनां भाग्यवन्तः पिबन्ति।।"

अमरुकशतक

संस्कृत साहित्य में अमरुक शतक के पद्यों की सरसता प्रसिद्ध है। इस अमरुक शतक के रचयिता अमरु या अमरुक नामक कोई राजा थे। इनके विषय में यह ज्ञात नही है कि मण्डन मिश्र की पत्नी शारदा के द्वारा कामशास्त्र सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर के लिये शंकराचार्य ने अमरुक नामक नृपति के मृत शरीर में प्रवेश करके अमरुक शतक की रचना की थी। परन्तु इस किवदन्ती की सत्यता में प्रामाणिकता नहीं है। आचार्य आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में इस प्रकार लिखा है –

"मुक्तकेषु हि प्रबन्धेष्विव रसबन्धामिनिवेशिनः कवयो दृश्यन्ते। तथा ह्यमरुकस्य कवेर्मुक्तकाः श्रृंगाररसस्यन्दिनः प्रबन्धायमानः प्रसिद्धा एव।"

वामन (८०० ई०) ने अमरुकशतक के तीन श्लोकों को उद्धृत किया है। इस प्रकार उक्त आधारों से यह सिद्ध होता है कि अमरुकशतक की रचना ७०० ई० के लगभग हुई होगी।

अमरुक शतक साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है। इसमें श्रृंगाररस का सुन्दर चित्रण है। श्रृंगार रस की ललित क्रीड़ास्थली अमरुकशतक सहृदयों के आनन्द के लिये पर्याप्त है। यही कारण है कि अमरुकशतक के विषय में कहा जाता है –

"अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।"

इसमें तरह-तरह की ललित् श्रृंगार चेष्टाओं, कमिनियों की सुन्दर भाव- भंगिमाओं एवं विदग्धों की चतुर कलाओं का चारु चित्रण मिलता है। इनकी भाषा अत्यन्त सरस, ललित एवं प्रासारिक है। भाषा श्रृंगार रचना के सर्वथा अनुरूप है। इस प्रकार भाव और भाषा भिन्न-भिन्न होते हुये भी यहाँ एकाकार होकर पाठकों को परम विश्रान्ति प्रदान करते हैं। आचार्य मम्मट ने इनके निम्नलिखित श्लोकों को अपने काव्य प्रकाश में ध्वनिप्रकाश के उदाहरण के रुप में प्रस्तुत किया है –

"निःशेषच्युतन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽधरो,
नेत्रो दूरमनंजने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः।
मिक्ष्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे,
वार्पी स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम्।।"

अर्थात् तुम्हारे स्तनतटों से चन्दन छूट गया है, अधर की लालिमा मसली गई है, नेत्र काजल से शून्य है, शरीर पुलकित हो गया है। अति झूठ बोलने वाली दूति! तू अपने बान्धवजन की पीड़ा को नहीं जानतीं। तू यहाँ से वापी में स्नान करने गई थी, उस अधम (नायक) के पास रमण करने नहीं गई थी। इस श्लोक में यह ध्वनित होता है कि वह दूती नायक से समागम करके आई है।

प्रियतम के परदेशगमन को देखकर कामिनी की व्याकुलता का मार्मिक वर्णन देखें -

"प्रस्थानं वलयः कृतं प्रियसखैरस्रैरजस्रं गतं,
धृत्या न क्षणमासितं व्यवसितं चित्तेन गन्तुं पुरः।
यातुं निश्चितचेतसि प्रियतमे सर्वे समं प्रस्थिता,
गन्तव्ये सति जीवितप्रियसुहृत्सार्थः किमुत्यज्यते।।"

अर्थात् दुर्बलता के कारण हाथों से कंगन गिर पड़े, प्रिय अश्रु भी निरन्तर बह रहे है, धैर्य एक क्षण के लिये भी नही रुकरण है, मन तो पहले से ही जाने के लिये तैयार था, प्रियतम के परदेश जाने के निश्चय करते ही ये सब के सब उनके साथ ही चल पड़े, तो फिर हे प्राण तुम प्रियतम का साथ क्यों छोड़ रहे हो? उनके साथ ही क्यों नही चल देतें।

इस प्रकार यहाँ पति परदेशगमन से खिन्न नायिका का चित्रण है अब पति के शुभागमन से पुलकित सुन्दरी का सुन्दर वर्णन देखें -

"दीर्घावन्दनमालिका विरचिता दृष्ट्यैव नेन्दीवरैः,
पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभिः।
दत्तस्वेदमुचा पयोधरयुगेनाहर्यो न कुम्भाम्भसा,
स्वैरेवायवैः प्रियस्य विशतस्तन्व्या कृतं मंगलम्।।"

अर्थात् अपने प्रियतम के स्वागत में नायिका ने अपनी स्निग्ध दृष्टि के द्वारा ही वन्दनवार सजा दी, कमलादि से नहीं। अपनी मुस्कान से ही फूल बिखेर दिये, चमेली आदि फूलों से नही। स्तनों से निकल रहे पसीने से अर्ध्य दान दिया, कलश के जल से नहीं। इस प्रकार उस तन्वी नायिका ने प्रियतम के घर में प्रवेश करने पर अपने अंगों से ही समस्त मंगल कार्य सम्पन्न कर दिया।

कवि को मान और औत्सुक्य की भावभंगिमा को सहज रुप में चित्रित करने में अत्यधिक सफलता मिली है। एकत्र शयन करने पर भी सहसा प्रियतम के मुख से किसी दूसरी स्त्री का नाम सुनकर नायिका खिन्न हो जाती है और आवेश में आकर प्रियतम का तिरस्कार कर देती है। दूसरी ओर सिर घुमा लेती है परन्तु शीघ्र ही गर्दन घुमाकर देखती है कि कहीं वह खिन्न तो नहीं हो गया है –

"एकस्मिन् शयने विपक्षरमणीनामाग्रहे मुग्धया,
सद्यः कोपपराङ्.मुखंग्लपितया चाटूनि कुर्वन्नपि।
आवेगादवधीरितः प्रियतमस्तूष्णीं स्थितिस्तत्क्षणान्मा,
भून्म्लान इवेव्यमन्दवलितग्रीवं पुनर्वीक्षतः।।"

अमरुकशतक में नायक-नायिकाओं का विलास सम्यक् विलसित हुआ है। निम्नलिखित पद्य में नायक नायिका का मार्मिक संवाद सुनें –

"बाले नाथ विमुञ्च मानिनि रुषं रोषान्मयां किं कृतं,
खेदोऽस्मासु न मेऽपराध्यति भवान्सर्वेऽपराधा मयि।
तत्किं रोदिषि गद्गदेन वचसा कस्याग्रतो रुद्यते,
नन्वेतन्मम का तवास्मि दयिता नास्मीत्यतो रुद्यते।।"

प्रिये! नाथ! मानिन! मान छोड़ दो। मान करके मैने आपका क्या कर लिया? हमारे हृदय में खेद उत्पन्न कर दिया है। हाँ, आप तो कभी मेरा कोई अपराध करते ही नही। सारे अपराध मुझमें ही है। तो फिर गद्गद कण्ठ से रो क्यों रही हो। किसके सामने रो रही हूँ। यह मेरे सामने रो रही हो। तुम्हारी क्या लगती हूँ? प्रियतमा। प्रियतमा नहीं हूँ। इसीलिये तो रोना आ रहा है।

प्रियतम के समक्ष आ जाने पर मानिनी नायिका का मान भला कैसे रह सकता हे? उसे देखते ही उसका मान तो रफूचक्कर हो जाता है –

"भ्रूभंगे रचितेऽपि दृष्टिरधिकं सोत्कण्ठमुद्वीक्षते,
रुद्धामायापि वाचि सस्मितमिदं दग्धाननं जायते।
कार्कश्य गमितेऽपि चेतसि तनूरोमांचमालम्बते,
दृष्टे निर्वहणं भविष्यति कथं मानस्य तस्मिन्जने।।"

अर्थात् क्रोध करते समय भौहों को चढ़ा लेने पर नेत्र ओर उत्कझिठत

होकर उन्हें देखने के लिये दौड़ने लगते हैं। चुप्पी साधने पर भी इस निगोड़े मुख पर मुस्कार आ ही जाती है। चित्त को क़ठोर बना लेने पर भी शरीर रोमाञ्चित हो ही उठता है। इसलिये हे सखि! तुम ही बताओ प्रियतम के सामने आने पर मान का अभिनय कैसे किया जाये ?

किसी कुपित नायिका के नायक के प्रति कोप प्रकाशन की विचित्र विधि निम्नालिखित श्लोक में देखें -

"एकत्रासससंस्थितिः परिहृता प्रत्यद्गमाद् दूरत -
स्ताम्बूलानयनच्छलेन रभसाश्लेषोऽपि संविध्नितः।
आलापोऽपि न मिश्रितः परिजनं व्यापारयन्त्याऽन्तिके,
कान्तं प्रत्युपचारतश्चतुरया कोपः कृतार्थीकृतः।।"

अर्थात् प्रियतम को आता देखकर चतुर रमणी ने झटपट खड़ी होकर दूर से उठने के शिष्टाचार के बहाने एक आसन पर बैठने का परिहार कर दिया अर्थात् अपने साथ एक आसन पर बैठने की प्रियतम की इच्छा को पूरा नहीं होने दिया और दूर से ही खड़े होकर बाहरी आदर दिखलाया। पान लाने के बहाने से शीघ्रतापूर्वक आलिंगन में भी विघ्न डाला और समीप में खड़े अनुचरों को आज्ञा देने के बहाने प्रियतम की बात में बात भी नहीं मिलाई। भाव यह है कि जब प्रियतम ने उससे कोई बात करनी चाही तो उसने उसकी बात का उत्तर यन देकर समीपस्थ अनुचरों से उनके ऊपर पंखा झालने तथा अन्य सेवाओं के लिये कहा, जिससे बाह्व आदर सूचित हुआ परन्तु सूरत में उदासीनता दिखलाई। इस प्रकार औपचारिकता दिखलाकर किसी चतुर कामिनी ने अपने कान्त के प्रति कोप कृतार्थ कर लिया।

अमरुकशतक से हिन्दी के प्रसिद्ध कवि विहारी अत्यन्त प्रभावित हुये है और उन्होंने यत्र-तत्र अपनी कविता में इनके श्लोकों के भावों का याथातथ्येन अनुवचन किया है। अमरुकशतक के टीकाकार अर्जुनवर्मदेव ने अपनी टीका मे अमरुक के श्लोकों की ध्वनि की उपमा डमरु से दी है जिसकी ध्वनि के समक्ष अन्य श्रृंगारोक्तियाँ सुनाई ही नहीं पड़ती है -

" अमरुककवित्वडमरुकनादेन विनिह्वाता न सञ्चरित।
श्रृंगारभणितिरन्या धन्यानां श्रवणयुगलेषु।।

_शृंगार तिलक :-_

शृंगार तिलक गीतिकाव्य का रचयिता अज्ञात है। कुछ विद्वानों का विचार है कि इसके रचयिता कालिदास हैं। इसका आधार वे इस ग्रन्थ की सरसता, भाषा की प्रासादिकता, भावों की सुकुमारता तथा शृंगार की समुज्जवलता। इसमें कहीं-कहीं कवि प्रोढ़ोक्ति सिद्ध उपमानों को प्रयुक्त किया गया है। एक उदाहरण देखें -

"इयं व्याधायते बाला भ्रूरस्याः कार्मुकायते।
काटाक्षाश्च शरायन्ते, मनो मे हरिणायते।।"

एक दूसरे पद्य में नायिका के सौन्दर्य चित्रण में परम्परा सिद्ध उपमानों का अवलोकन करें-

"इन्दीवरेण नयन मुखमम्बुजेन,
कुन्देन दन्तमधरं नवल्लवेन।
अंगानि चम्पकदलैः स विधाय वेधाः,
कान्ते कथं घट्तिवानुपलेन चेतः।।"

इस श्लोक में नायिका की आँखें नीलकमल, मुख अरुणकमल, दाँत कुन्दकली, अधर पल्लव तथ अंग चम्पकदल के समान वर्णित हैं।

कवि प्रियतमा के मुखचन्द्र की विचित्र कल्पना करता हुआ कहता है कि हे प्रिये! चन्द्रग्रहण पड़ने जा रहा है इसलिये तुम झटपट घर के अन्दर चली जाओ नहीं तो राहु तुम्हारे इस निष्कलंक मुखचन्द्र को देखकर धब्बे वाले चन्द्रमा को छोड़कर इसे ही ग्रस लेगा-

"झटिति प्रविश गेहं मा बहिस्तिष्ठ कान्ते,
ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः।
तव मुखकलंक वीक्ष्य नूनं स राहुर्ग्रसति,
तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय।।"

नीतिसम्बन्धी शतक काव्य :-

इसमें विद्या वीरता, साहस, मैत्री, परोपकार जैसी वृत्तियों का महाभारत एवं मनुस्मृति जैसी गम्भीरता नैतिकता का सरस परावली में वर्णन किया गया है। 'नीतिशतक' के प्रसिद्ध पद्यों का प्रचार सारे भारत में

है। इसकी भाषा सरल, स्वाभाविक एवं सुबोध है तथा शैली प्रासादिक, माधुर्यपूर्ण, परिष्कृत एवं सुन्दर हैं एक उदाहरण देखिये–

"मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा–
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।"

(नीतिशतक श्लोक सं०-७६)

नीतिशतक की कुछ महत्वपूर्ण शिक्षायें इस प्रकार हैं-

"केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः,
न स्नानं न विलेपनं कुसुमं नालंकृता मूर्धजा।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।"

(नीतिशतक श्लोक सं०-१६)

मनुष्य को हस्ताभूषण, चन्द्रमा के समान चमकने वाला हार, स्नान, लेप, पुष्प और अलंकृत केश विभूषित नहीं करते हैं। केवल शुद्ध वाणी ही पुरुष को विभूषित कर देता है। सभी प्रकार के आभूषण नष्ट हो जाते है परन्तु आभूषण कभी नही होता।

कवि विद्या की प्रशंसा करता हुआ लिखता है-

"विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्यां गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।"

(नीतिशतक श्लोक सं०-८६)

नीति में चतुर व्यक्ति निन्दा करे या प्रशंसा। लक्ष्मी आ जाये अथवा चली जाये मृत्यु आज हो अथवा युगों के बाद परन्तु धैर्यवान पुरुष न्याय के मार्ग से एक पैर भी पीछे नही हटते।

वे साहित्य, संगीत और कला से रहित मनुष्य को नही मानते है और उन्हें पशु श्रेणी में ले जाते है।

" साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम।।"

(नीतिशतक श्लोक सं०-८)

कवि का यह कथन अत्यन्त मार्मिक है कि जिस सुन्दरी का मैं निरन्तर चिन्तन करता हूँ उसके हृदय में मेरे प्रति बिल्कुल आस्था नही। वह किसी ऐसे पुरुष पर आसक्त है जो पुरुष किसी अन्य स्त्री से प्रेम करता है मेरे लिये कोई दूसरी कामिनी उत्कण्ठित हो रही है। इस कामिनी को उस पुरुष को कामदेव को उस दूसरी स्त्री को और मुझको धिक्कार है-

"यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता,
साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परिशुष्यति काचिदन्या,
धिक् तां च तं मदनं च इमां च मां च।।"

दीनताग्रस्त लोगों को सचेष्ट करते हुये महात्मा भर्तृहरि लिखते है-

"रे रे चातक सावधानमानसा मित्रं क्षण श्रूयता-
मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगन सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा,
यांयं पश्यसि तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।"

(नीतिशतक श्लोक सं०-३१)

अर्थात् रे चातक! एक क्षण भर के लिये सावधान मन से मेरी बात सुन लो, आकाश में अनेक तरह के बादल हैं परन्तु वे सब तुम्हें जल नही दे सकते है। कुछ तो पृथ्वी पर पानी बरसाते हैं और कुछ तो व्यर्थ गरजते है, इसलिये तुम जिस जिस को देखत हो उस उस के समक्ष दीनता सूचक शब्दों को न बोलो।

भल्लट शतक :-

"परार्थे यः पीडाननु भवति भंगेऽपि मधुरः"

भल्लट शतक कायह पद्य ध्वन्यालोक में दो बार उदघृत किया गया है। यह शतक आचार्य भल्लट के नाम पर ही है। उपकी कीर्ति केवल भल्लटशतक पर अवलम्बित है। इसे छोड़कर आपका कोई दूसरा शतक काव्य उपलब्ध नही

हुआ है।

"भल्लटशतक मुक्तक पद्यों का संग्रह है। कविता अनेक प्रकार है, परन्तु अन्योक्ति की बहुलता है। सुन्दर शिक्षा देने वाले नीतिमय पद्यों का यह आतुर है। एंसी अनूठी अन्योक्ति संस्कृत साहित्य में बहुत कम देखने को आती है। पण्डितराज जगन्नाथ ही कुछ कुछ इससे तुलना कर सकते है। पद्यों में मधुरता तथा प्रसाद गण कूट कूट कर भरा हुआ है। सुन्दर अलंकारों की छटा मन को मुग्ध कर देती है। सुन्दर स्वाभावोक्ति, कमनीय उत्प्रेक्षा, विमल उपमा तथा उपदेशमय अर्थान्तरन्यास सहृदयों को आनन्दविभोर कर देते है।

"विशालं शाल्मल्या नयन सुभगं वीक्ष्य कुसुमं,
शुकस्यासीद् बुद्धिःफलमणि भवेदस्य सदृश्म्।
इति ध्यात्वोपासतं फलमणि च दैवात् परिणतं,
विपाके तूलोऽन्तः सपदि मरुता सोऽप्यपहृतः।।"

विशाल सेमर के बृक्ष में नयन को सुख देने वाले फूल खिले हुये थे। शुक की दृष्टि उन पर पड़ी; सोचा कि जब फूल इतना रमणीय है। तब इसका फल भी अवश्य ही मनोरम होगा। इसी विचार से उसने सेमर की सेवा की। ईश्वर की दया से उसमें फल भी निकल आये। शुक को आशा थी कि पकने पर ये अवश्य ही मधुर तथा सुन्दर होगें। परन्तु पकने पर भीतर से क्या निकला? केवल रुई! और उसे भी वायुदेव ने शीघ्र ही उड़ा डाला। जिस आशा में बेचारा शुक इतना आनन्द पाता था, इतने दिनों तक जिस फल की प्रतीक्षा की थी, वह अन्त में बिल्कुल शून्य निकला। पूर्ण निराशा का सूचक यह पद्य नितान्त भावपूर्ण हे।

" एतस्य मुखात्कियत्कमलिनीपत्रे कणं वारिणो,
यन्मुक्तामणिरित्यमस्त स जडः श्रृण्वन् यदस्मादपि।
अंगुल्यगलघुक्रियाप्रविलयिन्यादीयमाने शनैः,
कुत्रोड्डीय गतो ममेत्यनुदिनं निद्राति नान्तः शुचा।।"

कोई मनुष्य अपने मित्र से किसी मूर्ख की बात कर रहा है। कि भाई, मैं उसकी हालत क्या कहूं। वह ऐसा जड़ है। कि कमलिनी के पत्ते पर गिरे हुये ओस के कण को मुक्तामणि समझता है, भला ऐसा भी कोई मूर्ख होगा? मित्र

ने उत्तर दिया-एक दूसरे जड़ात्मा का हाल तो सुनो! कमलिनी के दल पर गिरा हुआ ओसकण उसकी उंगली के अगले हिस्से के छूते ही जमीन पर गिरकर गायब हो गया, परन्तु उस मूर्ख को रात को सोच के मारे नींद नहीं आती है,वह सोचा करता है कि हाय! उंगली के छूते ही वह मेरा चमकता मोती कहां उड़ गया; बस इसी में वह हैरान है। रात-दिन इसी सोच में बीते जाते है, नींद दर्शन नहीं देती। कहो उससे वह बड़ा मूर्ख नही है। असल बात यह है कि मूर्खो को इसी प्रकार की अयोग्य वस्तुओं में ममता हुआ करती है। मूर्खो की अस्थान ममता का पता कैसे सुन्दर शब्दों में किया गया है।

सुभाषित शतकम् :-

इसके रचयिता आर०बी० कृष्णमाचारियर का जन्म १८७४ ई० तथा निर्वाण १९४४ ई० हैं। आपने कुम्भकोणम् में विद्याभ्यास किया तथा आप गवर्नमेंट कॉलेज में दीर्घकाल तक पण्डित थे। यह शतक नीतिपरक हैं। इसमें लौकिक विविध विषयों का नीतिपरक काव्यात्मक प्रस्तुतीकरण प्रभावी है।

गुरुमाहात्म्य शतकम् :-

इस शतककाव्य के प्रणेता प्राचार्य डा० कैलाश नाथ द्विवेदी हैं। जो उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जनपद के वैना ग्राम के निवासी हैं। इसका प्रकाशन १९८० में सुबोध प्रकाशन कानपुर से हुआ। जिसमें विभिन्न छन्दों में गुरु के माहात्म्य का प्रस्तुतिकरण किया गया है।

भारतीय संस्कृति आदिकाल से ही गुरु को विशेष महत्व देती आई है। वैदिककाल से लेकर अब तक गुरु-परम्परा निरन्तर नैसर्गिक रुप से चली आ रही है। गुरु पूर्णिमा को अब भी यत्र तत्र गुरुपूजा का प्रचलन है। ''आचार्य देवो भव'' यह औपनिषद् वाणी गुरु को देवतुल्य सम्मान देकर उनके प्रति श्रद्धा की भावना को व्यक्त करती है।

संसार में चार प्रकार के गुरुओं का उल्लेख है-

१. गुरु (उपदेष्टा)

२. परमगुरु (मन्त्रद्रष्टा)

३. मंत्र शक्ति (रहस्यात्मक स्थिति में परामर्श शक्ति)

४. महाकाल (परमेष्टि या परात्पर गुरु)

इन गुरुओं द्वारा निर्दिष्ट ज्ञान प्रत्यक्ष है। शास्त्रज्ञान परोक्ष है। बिना गुरु पुस्तकीय ज्ञान-लाभ अनुमोदित नहीं।

यहां पर गुरु से सम्बन्धित श्लोक देखिये -

"त्वयावेदशस्त्राणि संवर्धितानि,
पुराणानि गीतानि सर्वाणि वाण्या।
अभूत् सार्थकीयं नृवाणी त्वयैव,
गुरो ते पदेभ्यः नमस्ते नमस्ते।।"

हे गुरुदेव तुम्हारे द्वारा वेद तथा शास्त्र समृद्धि को प्राप्त हुये; तुम्हारी वाणी के द्वारा पुराण गाये गये (वेदव्यास रुप में) तुम्हारे द्वारा ही यह मानवीय वाणी सार्थक सिद्ध हुई। हे गुरु! तुम्हारे चरणों को नमस्कार है, नमस्कार है।

"तमोमयो यथालोको भास्करेणैव भासते।
तथा ज्ञानान्धधीरजीवः गुंरुणा दृष्टिरिष्यते।।"

जिस प्रकार अन्धकारमय संसार सूर्य के द्वारा उद्भाषित होता है। उसी प्रकार अज्ञान से अन्धा जीव गुरु के द्वारा दृष्टि प्राप्त करता है।

"सलिलसेचनात्शाखा शुष्कापि सरसायते।
तथा गुरूपदेशेन, सदबुद्धिस्तरलायते।।"

वृक्ष को जल से सींचने पर जिस प्रकार सूखी डाली हरी-भरी हो जाती है उसी प्रकार गुरु के उपदेश से शिष्य की सद्बुद्धि रसान्वित होकर जाग्रत हो जाती है।

राष्ट्रीयभावनापरक शतककाव्य :-

भारतदेश अत्यन्त विशाल है। इसकी पावन धरती में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है तथा जो आगे चलकर देश का गौरव बने। चाहे वो इन्द्रिरा गांधी हों, जवाहर लाल नेहरु हो, महात्मा गांधी हों, वीर सावरकर हों या फिर शिवाजी सभी ने इस देश को गौरवान्वित किया है। आज भी जब हम इन महान् विभूतियों का स्मरण करते है तो हमारा सिर गर्व से ऊँचा उठ जाता है। इन महान विभूतियों के विषय से सम्बन्धित अनेक शतककाव्य लिखे गये है। तथा इन शतक काव्यों को लिखकर हमारेदेश के कवियों ने अपनी लेखनी को धन्य बनाया है। शतककाव्य इस भारत राष्ट्र सम्बन्धी इस प्रकार है-

विभूतिवन्दनास्तोत्रम् :-

'विभूतिवन्दनास्तोत्रम्' नामक शतककाव्य डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा १९६४ ई० में रायपुर में लिखा गया था। इस शतक काव्रू के सौ श्लोकों में भारत की विभिन्न विभूतियों की वन्दना की गयी है। काव्य की भाषा सरल एवं सुबोध है। कवि का उद्‌देश्य काव्य को अलंकारों से मण्डित करना नही है प्रत्युत राष्ट्र को अभिव्यक्ति देना है। इस अभिव्यक्ति के प्रसंग में कहीं कहीं अनायास ही अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। इस शतक काव्य के श्लोकों पर संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध श्लोकों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। कवि ने काव्य में भारत के धर्मनिरपेक्ष रुप को स्पष्ट रुप से उजागर किया है। प्रत्येक मतावलम्बी के आराध्य को इस काव्य में स्मरण किया गयाहै। इस काव्य में अखण्ड भारत की चेतनाचेतन विभूतियों के हृदयावर्जक वर्णनों का स्पर्श पाकर राष्ट्रीयता की मन्दाकिनी भारतीयों की स्वादेशानुरागात्मक भावनाओं को उद्‌दीप्त करती है। प्रत्येक क्षेत्र व वर्ग से सम्बन्धित कोई भी ऐसा व्यक्तित्व नही जिसका पावन स्पर्श कवि की लेखनी से न किया गया हो। चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र हो, राजनैतिक हो अथवा साहित्यिक हो, विषय चाहे भ्रातृभक्ति का हो अथवा स्वामिभक्ति का, विज्ञान का हो या देशोद्धार का सभी का ऐसा भावपूर्ण उल्लेख कवि ने किया है कि मन में भारतीयता के प्रति आदर एवं अभिमान के भाव उत्पन्न होते है।

भारत शतकम् :-

श्री महादेव शास्त्री रचित भारत शतकम् में भारत के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्वरुप का चित्रण किया गया है। काव्य में १०१ पद्य है। समग्र वर्णन में भाषा की योजना भावानुरुप हुई है। समस्त और सुकुमार भाषा में अत्यन्त दुरूह भावों की समर्थ अभिव्यक्ति कवि के प्रगल्भ पाण्डित्य को प्रकट करती है। तद्धितान्त पदों के प्रयोग में कवि ने अपनी विशेष अभिरुचि प्रकट की है। अनुप्रास और यम अलंकारों के प्रयोग से भाषा में लालित्य का आधान हुआ है। सम्पूर्ण काव्य स्रग्धरा छन्द में उपनिबद्ध है।

काव्य के प्रत्येक श्लोक से राष्ट्रीय भावना की परम पावन मन्दाकिनी प्रवाहित हो रही है। भारत का महनीय वैशिष्ट्य प्रतिपादित करते हुये कवि

पाठकों राष्ट्र-प्रेम को दृढ़ करता है। देश के अतीत का गौरव गान भी पाठकों को राष्ट्र के प्रति श्रद्धावान बनाता है। किव श्रीराम और श्रीकृष्ण के अप्रतिम चरित को स्मरण करता है। भारतम् को कवि स्वर्गलोक बताता है। देवगण भी इसकी महिमा का गान करते है।

यह भूमि संस्कृति का प्रभव (संस्कृत्याः सुप्रसूतिः) तथा प्रकृति की क्रीड़ास्थली (क्रीड़ारंगः प्रकृत्याः) है। भारत का ऐसा महिमा गान पढ़कर अवश्य ही पाठकों के हृदय में गौरव का भाव जागता है।

भारत शतकम् :-

भारत शतकम् नामक शतक काव्य के लेखक श्री रामकैलाश पाण्डेय हैं। इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें कवि ने अपने राष्ट्रीय गौरव की अभिव्यक्ति की है। प्रस्तुत काव्य में उपोद्घात से ज्ञात होता है कि यह कवि के विद्यार्थी काल की रचना है। यह उस काल की रचना है जब भारत का चीनक के साथ युद्ध हुआ। तब उत्साह से अभिभूत होकर सैनिकों के उत्साहवर्धन के लिये यह काव्य लिखा गया। भारतशतकम् की भाषा प्रवाहमयी एवं ज्ञानुप्रास है। पद-योजना बहुत सुन्दर है। जिससे काव्य में लालित्य का आधान हुआ है। श्रीकृष्ण के गुजगौरव के वर्णन के प्रसंग में शब्दों की योजना इस प्रकार है-

"बभाण गीतां सरसां गभीरां,
जघान योऽरींश्छलनामुपेत्य।
वृन्दावने राधिकया सहैव,
विहर्न्तुकामो मम कृष्ण आसीत्।।"

सैनिकों का उत्साहवर्धन करने के लिये कवि अर्जुन की याद दिलाता है। जो युद्ध में काल का भी अन्त करने वाला है औरसंग्राम में मतवाला हो जाता है। मेवाड़ के गौरवमय इतिहास की याद ताजा करते हुये कवि कहता है कि इस समय वीर युद्ध भूमि में अठ्ठाहास करते थे। वीर बालक अभिमन्यु के रणचातुर्य का स्मरण कराने के अवसर पर कवि की पदावली देखिये-

"दृष्ट्वाद्भुतं संगरकौशलं ते,
भो वीर! भो बालक पार्थपुत्र!।
शीर्णानि वर्ष्माणि मृधे परेषां
च्युतानि वर्माणि धरा चम्कम्पे।।"

कवि की भाषा भावानुसारिणी है। वीरता-वर्णन के प्रसंग में यदि ओजमयी भाषा है तो कारुण्य की व्यंजना में भी शब्दों का चयन करुणोत्पादक है। भाषा की दृष्टि से लिट् लकार के प्रति कवि का अत्याधिक मोह प्रकट होता है। कवि ने अनुप्रास अलंकार के सुन्दर प्रयोग किये हैं। कहीं-कहीं यमक के प्रयोग भी मिलते है।श्लेष का सर्वथा अभाव है। अर्थालंकारों में उपमा, रूपक और अर्थान्तरन्यास का ही प्रयोग अधिक हुआ है। यह शतक काव्य उपजाति छन्द में उपनिषद है।

भारत के प्राचीन गौरवगान के माध्यम से कवि ने सुप्त भारतवासियों को जाग्रत करने का प्रयास किया है। भारत के ऐश्वर्य के प्रति ईर्ष्यावान विदेशियों के समूह ने भारत की सम्पत्ति, नीति और संस्कृति और नीति को जो हानि पहुंचाई उसका उल्लेख कर कवि देशवासियों के मन में ऐसा अदम्य उत्साह भरने का प्रयास करता है। जिससे भारत पुनः शत्रुओं से पराजित न हो। वैदिक धर्म के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुये कवि उसकी रक्षा की प्रेरणा देता है। संक्षेपतः काव्य के प्रत्येक श्लोक से देशभक्ति भाव की मंदाकिनी प्रवाहित हो रही है।

मातृभूलहरी :-

'मातृभूलहरी' शतक काव्य डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा लिखित है। प्रथम मंगलाचरणात्मक श्लोक में जहां किसी आराध्यदेव की स्तुति की गई है। वहां प्रकृत-काव्य में भारतभूमि की वन्दना की गई है। जिससे कवि की दृष्टि में भारतभूमि की महनीयता सिद्ध होती है। भाषा का लालित्य, भावों की स्फुट अभिव्यक्ति, कल्पनाका असीम वैभव और इसके साथ-साथ अलंकारों का रसानुगुण सन्निवेश इन सबको मिलाकर इस काव्य का निर्माण हुआ है। भारत माता की प्रशस्ति में कवि ने सुन्दर उत्प्रेक्षायें की हैं।

भारतभूमि में सकल गुणों का वर्णन कर पाठकों को देशभक्त बनने की प्रबल प्रेरणा दी है। किसी राष्ट्र की भौगोलिकता राष्ट्रीयता की भावना को प्रभावित करती है। कवि ने भारतभूमि का वर्णन अलंकारों के माध्यम से किया है जिसे पढ़कर कोई भी भारतीय उस पर गौरव कर सकता है। भारत की प्राकृतिक सम्पदा का आत्मीयता के साथ किया गया स्मरण पाठकों की भारत

के प्रति आस्था बढ़ाता है। कवि भारत के गौरवशाली अतीत का ऐसा चित्र खींचता है। जिस पर कोई भी भारतीय गर्व कर सकता है। भारतभूमि के पाषाण खण्ड को इन्द्रासन सेभी वरिष्ठ मानकर कवि ने अपने राष्ट्र प्रेम का परिचय दिया है।

प्रस्तुत काव्य पर पूर्ववर्ती काव्यों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। काव्य का प्रस्तुत पद्य-

"चरित्रं शिक्षेरन् द्विजजनसकाशात् स्वकमिति।
श्रुतो दिनागैस्ते जननि! सुयशो दुन्दुभिरवः।।"

मनुस्मृति में निम्नलिखित पद्य से स्पष्टतया प्रभावित है-

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।"

६०वें श्लोक की "ददद्यापि ग्राव-द्रव्य-करमहो! वज्रदलनम्" इस पंक्ति पर भवभूति के उत्तररामचरित की "अपि ग्रावा रोदित्यपि,दलति वज्रस्य हृदयम्[1]" इस पंक्ति का प्रभाव स्पष्ट रुप से है। इस प्रकार उन्य कतिपय श्लोकों पर भी संस्कृत के प्रसिद्ध श्लोकों का प्रभाव देखा जा सकता है।

भाति मे भारतम् :-

"भाति में भारतम्"डा० रमाकान्त शुक्ल प्रणीत एक राष्ट्रीय भाव प्रधान श्रेष्ठ शतक काव्य है। इसके १०८ पद्यों में भारत की श्लाधनीय महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। विवेच्य काव्य की भाषा सर्वत्र प्राजेल, प्रासादिक और सुमधुर है। पदावली कोमल, सानुप्रास तथा सुबोध होने के साथ-साथ हृदयग्राही भी है। क्लिष्टता का सर्वथा परिहार होने के कारण भाषा प्रसादमयी है। अनुप्रास कवि का प्रिय है। काव्य का शीर्षक "भाति में भारतम्" भी सानुप्रास ही है। अर्थालंकारों में प्रायः मुख्य अलंकारों का ही प्रयोग हुआ है। स्रग्विणी छन्द में लिखा गया यह काव्य भारत के सामाजिक; धार्मिक एव सांस्कृतिक स्वरुप को उद्घाटित करता है। वस्तुतः इस काव्य को पढ़कर पाठक भारत के प्रेम में रंग जाता है। भारत की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुये कवि

1- उत्तररामचरितम्, प्रथम अंक, श्लोक सं0- 28

भारतीयों के मन में राष्ट्रीय चेतना का उद्बोधन करता है। कवि कहता है कि भारत कर्म, शील, धर्म तथा जीवन के मर्म को समझने की स्थली है, ''कर्मभूः शर्मभूर्धर्मभूर्मर्मभूः'' यहां सत्य, शिव और सुन्दर सुशोभित रहता है और वह पवित्र रामराज्य के लिये प्रसिद्ध है -

''यत्र सत्यं शिवं सुन्दरं राजते,
रामराज्यं च यत्राभवत्पावनम्।
यस्य ताटस्थ्यनीतिः प्रसिद्धिं गता,
भूतले भाति तन्नामकं भारतम्।।''

विश्व ने सदा इससे शिक्षा और प्रेरणा पाई है-

''येन विश्वं सदा शिक्ष्यते प्रेर्यते''

इसी प्रकार काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी प्रदेशों का भावपूर्ण स्मरण किस देशवासी को उद्वेलित नहीं करता। अपने देश के राष्ट्रीय पर्वो, भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति का मुख्य स्तवन कवि ने किया है। अपनी राष्ट्र भूमि के प्रति कवि का भक्तिभाव इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि भारत को विदेशी शासन से मुक्त कराने के लिये आत्मोसर्ग करने वालों वीरों को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया गया है। कवि हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद नही करता है। उसने हिन्दू सैनिक के साथ-साथ मुस्लिम सैनिक की वीरता को भी स्मरण किया है। काव्य में कवि जहां अपने देश का उज्ज्वल रूप चित्रित करते हुये स्वाभिमान से भर जाता है। यह इस बात का संकेत है जिसमें कोई किसी का शोषण न करे। इस काव्य पर कहीं कहीं पूर्ववर्ती भावगत पुराण आदि ग्रन्थों का प्रभाव परिलक्षित होता है। काव्य का यह श्लोकांश -

''यत्र हिंस्रः स्वापापैः स्वयं हिंस्यते।
यत्र साधुः समत्वाद् भयान्मुच्यते।।''

तुलनीय है -

''हिंस्रः स्वपापेन विहिंसतः खलः।
साधु समत्वेन भयाद्विविमुच्यते।।''

इस काव्य पर जहां पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव देखा जाता है वहां प्रस्तुत काव्य का प्रभाव परवर्ती रचनाओं पर भी पड़ा है। आचार्य वेदानन्द झाँ ने

स्रग्वणी छन्द में ही ''भाति में भारतीभारतेऽनारतम्'' शीर्षक से कतिपय श्लोकों की रचना की है। ''भारते भासता भारती संस्कृति'' इस शीर्षक से लिखी कविता में डा० बनेश्वर पाठक के द्वारा भारतीय संस्कृति का स्वरुप बताया गया है। कविता के विषय में डा० पाठक ने ३/५/७२ को लिखे पत्र में डा० रमाकान्त शुक्ल को लिखा कि उनकी कविता ''भूतले भाति मेऽनारतम्'' का अनुसरण करके ही यह कविता बनाई है। इस प्रकार डा० वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी कृत भारतं भारतं नौमि तं साम्प्रतम्(भारतवन्दनम्), डा० राजदेव मिश्र कृत ''भारतीयः स एवाय संकीर्त्यते'', डा० मल्लिकार्जुन परड्डी कृत ''राष्ट्रवन्दनम्'' (दृश्यतामस्मदीयं महद् भारतम्) कवीश रामकैलाश पाण्डेय कृत ''भारतम्'' (भारतं तन्नमामि प्रियं भारतम्)तथा डा० चन्द्रशेखर द्विवेदी कृत ''भारतं भारतं भातु भूमौ सदा'' रचनाएं ''भाति में भारतम्'' के कथ्य और छन्द काअनुसरण करतीं है। इनमें से अन्तिम को छोड़कर सभी रचनाएं डा० शुक्ल द्वारा सम्पादित ''अर्वाचीनसंस्कृतम्'' में प्रकाशित हुई। डा० रमाकान्त शुक्ल द्वारा किये गये प्रस्तुत काव्य के पाठों के सन्दर्भ में डा० शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी ने लिखा है कि कवि सम्मेलनों में इस अवसर पर श्रोताओं द्वारा पुनः-पुनः ऐसा कहा जाता है -

''सत्कवेरोजपूर्णैः स्वरैर्भूषितं श्रोतृवृन्देषु रोमांचसंचारकम्।
पाठकाले 'पुनः' शब्दसम्पूजितं तादृशं विद्यते भाति मे भारतम्।।''

जय भारतभूमे :-

जय भारतभूमे डा० रमाकान्त शुक्ल प्रणीत एक राष्ट्रीय शतक काव्य है। १०८ श्लोकों को कवि ने सात शीर्षकों में विभक्त किया है। समग्र काव्य विषय की सरलता और प्रस्तुति की सहजता से अधिक सरस बन पड़ा है। अभिव्यक्ति इतनी मुखर है कि पाठक भी उसी के अनुरुप भाव जगत में अवगाहन करने लगता है और लालित्यमयी भाषा सरल और सुबोध शब्दों के प्रयोग से युक्त है। माधुर्य और प्रसाद गुणके सर्वत्र दर्शन होते है। समास का भी अल्प प्रयोग है। अतः काव्य में वैदर्भी रीति की स्थिति स्वीकार की जा सकती है। लोक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले तथा आंचलिक शब्दों के प्रयोग से भाषा अधिक लोकनिष्ठ हो गयी है। शब्दालंकारों में अनुप्रास और यमक का प्रयोग हुआ है। अर्थालंकारों में सर्वाधिक प्रशस्त उत्प्रेक्षा है।

सम्पूर्ण काव्य में भुजंग प्रयात,आर्या,तोटक, मालिनी, द्रुतविलम्बित शार्दूलविक्रीड़ित छन्द प्रयुक्त हुये है। तोंटक तथा दिग्पाल जैसे अप्रचलित छन्दों का भी प्रयोग मिलता है। इस काव्य पर भी पूर्ववर्ती काव्यों का पर्याप्त प्रभाव है। एक उदाहरण देखिये -

कालिदास ने रधुवंशम् के पंचम सर्ग में एक स्थल पर कहा है कि मुनि लोग यज्ञादि अनुष्ठान करते हैं, हरिणियों के छोटे-छोटे बच्चे मुनियों की गोद की शय्या में ही अपनी नाभि के नालों को गिरा देते है -

"क्रियानिमिन्तेऽवपि वत्सलत्वादभगनकामा मुनिभिः कुशेषु।
तदंकशय्याच्च्युँतनाभिनाला कच्चिन्मृगीणामनद्या प्रसूतिः।।"

इसी भाव को डा० शुक्ल ने अपने काव्य में इस प्रकार लिखा है -

"क्व च मुनिगणपूर्णा आश्रमाः सम्भवन्ति?
नवकिसलयरागा यत्र चित्तं हरन्ति।
त्यजति ऋजुमुनीनां क्रोडमागत्य यत्र,
नवमृगसुतवृन्दं नाभिनालान् स्वचित्रम्।।"

इस काव्य में भारत देश की प्रतिष्ठा, सुरक्षा और शालीनता के प्रति जनचेतना को प्रबुद्ध किया गया है और भारतीयता, संस्कृति ताा ज्ञान-विज्ञान की महनीय राशि का गौरव के साथ उल्लेख किया गया है।

भारत शतकम् :-

डा० राजेन्द्र मिश्र प्रणीत भारतशतकम् राष्ट्रीयभावनापरक शतक काव्य है। श्लोकों की संख्या १०० है। अनुष्टुप् छन्द में अनुप्रास के सद्भाव से लालित्य की सृष्टि हुई है। काव्य की विषय-योजना ही इस प्रकार की है कि श्लेष और यमकादि के शब्दाभ्यास का कवि के पास अवसर ही नहीं था। उसका ध्यान मुख्यतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हो रहे भारतीयों के चारित्रिक पतन के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करने में ही केन्द्रित रहा है। इसलिये जहां कहीं कोई आलंकारिक आया भी है, वह उसके द्वारा सायास उपनिषद्ध न होकर स्वतः ही काव्य में आविर्भूत हुआ है। अतः इस काव्य की गरिमा इन शास्त्रीय गुणों के अन्वेषण में नहीं, प्रत्युत उसके हृदय की प्रबल भावनाओं की सहज, संवेद्य और सफल अभिव्यक्ति में ही निहित है। इस प्रस्तुति की सफलता का प्रमुख

कारण है -

भावानुकूल भाषा जो ध्वनि प्रभाव से ही विषय को स्पष्ट करने में सुतरां समर्थ है।

काव्य को पढ़कर ऐसाप्रतीत होता है कि कवि के मन में अपने राष्ट्र भारत की सभ्यता, संस्कृति व धार्मिक विचारधारा के प्रति प्रचुर भावना है। यही कारण है कि वर्तमान भारत में अपनी सभ्यता व संस्कृति के भ्रष्ट रुप को देखकर कवि का हृदय अत्यन्त विषण्ण है। कुर्सीपरस्त राजनीति से भी भारत क्षुब्ध है। दुष्कृत्यों से भारत का गौरव नष्ट हो रहा है। वह भारत का उज्ज्वल रुप देखना चाहता है। राष्ट्र के प्रति कल्याण की यह कामना कविनिष्ठ राष्ट्रीय भावना को उजागर करती है।

राणाप्रताप सम्बन्धी शतककाव्य

नृप प्रतापविजयम् :-

११२ श्लोक में गुम्फित नृप प्रतापविजयम् नामक शतककाव्य श्री हजारी लाल द्वारा लिखा गया है। इसमें राष्ट्र की स्वतन्त्रता के समर्थक तथा संरक्षक महाराणा प्रताप के मुगल सम्राट् अकबर के साथ हुये संघर्ष तथा अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम का वर्णन हे। कवि की भाषा भावानुकूल है।

काव्य में वैदर्भीरीति का निर्वाह हुआ है। काव्य में अलंकारों की भरमार नहीं है फिर भी उनका स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। अर्थालंकारों में उपम रूपक, आर्थान्तरन्यास, विशेषोक्ति, विभावना जैसे प्रचलित अलंकारों का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण काव्य वसन्ततिलका छन्द में उपनिषद्ध है। पूर्ववर्ती काव्यों का प्रभाव इस काव्य पर पड़ा है।

प्रस्तुत कृति में स्वतन्त्रता के महत्व पर बल दिया गया है। कवि ने देशद्रोह करने वाले राजपूतों की निन्दा की है। एवं राष्ट्र से प्रेम करने वाले राणाप्रताप तथा भामाशाह की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

सावरकर सम्बन्धी शतककाव्य

स्वातन्त्र्यवीरशतकम् :-

स्वातन्त्र्यवीरशतकम् नामक शतककाव्य डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा लिखित है। इसके १०१ श्लोकों में कवि ने वीर सावरकर

के गुण-गौरव का गान किया है। प्रस्तुत काव्य आठ स्तवकों में विभक्त है। कवि ने सुन्दर उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से सावरकर के चरित्र को ऊँचा उठाया है। एक स्थल पर कवि उत्प्रेक्षा करता है कि हनुमान ने नभोमार्ग से जाकर समुद्र का उल्लंघन किया तो उसमें कौन सा आश्चर्य है। हनुमान वायु पुत्र हैं। ''आकाशात् वायुः'' इस उपनिषद् वचन के अनुसार वायु आसमान का पुत्र और वायु का पुत्र हनुमान आसमान का पोता है। उसमें आकाशमार्ग से अर्थात् दादा की सहायता से समुद्र का उल्लंघन किया तो इसमें क्याआश्चर्य? आश्यर्चजनक बात तो यह है कि भारत के एक असहाय पुत्र (सावरकर) ने अपने बाहुबल से समुद्र का उल्लंघन किया।

यह काव्य इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा और उपजाति छन्दों में लिखा गया है। काव्य के अन्त में छन्द परिवर्तन की परम्परा के अनुसार इस काव्य में भी अन्तिम तीन श्लोकों में छन्द परिवर्तन है। जहां क्रमशः द्रुतविलम्बित, शार्दूलविक्रीड़ित एवं मालिनी छन्द है। शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक और श्लेष तीनों का ही अत्यन्त सुन्दर संयोग हैं अर्थालंकारों में भी उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक इत्यादि प्रसिद्ध अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

कवि ने संस्कृत साहित्य का अपार वैदुष्य अर्जित किया है, जिसका प्रयोग उन्होनें इस कृति में किया है। इन प्रयोगों से इस काव्य का महात्म्य और गम्भीर्य बढ़ गया है।

स्वातन्यवीर सावरकर द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का वर्णन होने के कारण इस काव्य में उन सभी तथ्यों का समावेश हो गया है। जो काव्य में राष्ट्रीयता का आधान करते हैं।

महात्मा गाँधी सम्बन्धी शतककाव्य

शोकश्लोक शतकम् :-

''शोकश्लोक शतकम्'' नामक शतककाव्य श्री बद्रीनाथ झां द्वारा रचित है। इसमें श्लोकों की संख्या १०० है। राष्ट्र नायक महात्मा गांधी के देहावसान पर कवि ने वसन्ततिलका छन्द में हृदय के उद्गारों को इस काव्य में व्यक्त किया है। काव्य में व्यंजित कवि हृदय की आकुलता से ऐसा प्रतीत होता है मानो कवि को वाणी मिल गयी हो परन्तु इस करुणा रस प्रधान

काव्य में राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना उद्दीप्त करने में बाधक नही है। एक विशाल देश के पिता स्वरुप महापुरुष के निधन पर प्रकट शोक से उसके प्रति असीम श्रद्धाभाव अभिव्यंजित होता है। शोक प्रकट करते हुये कवि ने राष्ट्रपिता के गुणों की चर्चा की है। जो पाठक को उस महान् विभूति के माध्यम से राष्ट्र के साथ जोड़ देती है।

श्रीगान्धिचरितम् :-

"श्रीगान्धिचरितम्" श्री ब्रह्मानन्द शुक्ल द्वारा रचित राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत एक शतककाव्य है। इसमें १११ श्लोक हैं। इसमें महात्मा गांधी के चरित्र के कुछ महनीय पक्षों का संक्षेप में चित्रण है। भाषा सरल, सरस, माधुर्यगुण प्रधान एवं रचना प्रसादमयी है। इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, अनुष्टुप्, वसन्ततिलका और मालिनी छन्दों का प्रयोग हुआ है। गांधी जी के उदान्त गुणों से देश के प्रति प्रेम व बलिदान को स्पष्ट कर पाठकों के हृदय में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने का सफल प्रयास किया गया है।

गान्धिगौरवम् :-

"गान्धिगौरवम्" नामक शतककाव्य के रचयिता डा० रमेशचन्द्र शुक्ल है। इस शतक काव्य में महात्मा गांधी के गौरवाधायक तथा राष्ट्रोपयोगी कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रचलित छन्दों व अलंकारों का प्रयोग हुआ है। डा० शुक्ल ने अपनी इस कृति में चरित नायक के व्यक्तिगत गुणों से कहीं अधिक उसके राष्ट्रीय भावों पर प्रकाश डाला है। भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिवेश में उनके योगदान का आंकलन किया गया है।

जवाहरलाल नेहरु सम्बन्धी शतक काव्य

जवाहरतरंगिणी :-

डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा लिखे गये जवाहरतरंगिणी नामक शतककाव्य में १०२ श्लोक है। अपने ग्रन्थनायक के प्रशंसनीय कार्यो का वर्णन श्री वर्णेकर जी ने प्रभावशाली ढंग से किया है। जिसमें उनकी प्रखर वर्णना तथा उच्च कल्पना-वैभव के दर्शन होते है। पदों का लालित्य दर्शनीय है। प्रचलित अलंकार ही प्रयुक्त हुये है। श्री वर्णेकर ने पं० नेहरु के देश के प्रति

किये गये महनीय कार्यो से प्रभावित होकर उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया है। काव्य के षष्ठ पद्य में "तवाकृतिर्निश्चलदेशभक्तिः" कहकर कवि ने उनके समस्त जीवन जीवन को ही निश्चल देशभक्ति का निदर्शन स्वीकार किया है।

इन्दिरागांधी सम्बन्धी शतककाव्य

इन्दिराविजयवैजयन्ती- इन्दिराप्रशस्तिशतकम् :-

श्री हजारीलाल शास्त्री ने "इन्दिराविजयवैजयन्ती" तथा "इन्दिराप्रशस्तिशतकम्" नामक दो शतक काव्य लिखे जिनमें श्री इन्दिरा गांधी के शासनकाल की उपलब्धियों की चर्चा करते हुये इन्दिरा से दुराचरण को हटाने की प्रार्थना की है। इ०प्र० शतकम् में ११४ श्लोक है। इसी काव्य के आगे १२ श्लोक और जोड़कर इन्दिराविजयवैजयन्ती नामक काव्य रचा।

इन्दिरा कीर्तिशतकम् :-

श्री कृष्ण सेमवाल "इन्दिराकीर्तिशतकम्" के रचयिता है। इसमें १०० पद्यों में कवि ने श्रीमती गांधी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं दृढ़ शासनकत्व का समुचित रुप से निरूपण कर उनका अभिनन्दन किया है।

इन्दिराप्रशस्तितलकम् :-

"इन्दिराप्रशस्तितलकम्" डा० रमेशचन्द्र शुक्ल लिखित सुन्दर शतक काव्य है। इस काव्य के ११४ श्लोकों में श्रीमती गांधी के गुणों की चर्चा करते हुये उनकी राजनैतिक सफलताओं का उल्लेख किया गया है।

इन्दिराशतकम् :-

"इन्दिराशतकम्" नामक शतककाव्य भी रामकृपालु शास्त्री द्वारा लिखा गया है। इसमें १३७ श्लोकों में लोकप्रिय श्रीमती गांधी के जीवन-गुणों एवं कार्यो की भावाभिव्यंजक स्तुति की गयी है। पूरे काव्य में १४ छन्दों का प्रयोग है।

इन्दिराशतकम् :-

श्री रामकृष्ण शास्त्री 'अव्यय' प्रणीत 'इन्दिराशतकम्' काव्य में १०५ श्लोक हैं। इसमें नेहरू वंश की तथा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की संक्षेप में चर्चा करते हुये इन्दिरा गांधी के राजनैतिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

इन्दिराविरुदम् :-

"इन्दिराविरुदम्" नामक शतककाव्य श्री विष्णुदत्त शर्मा द्वारा लिखित है। इसमें १३१ श्लोक में इन्दिरा जी के गुणों एवं कार्यों की स्तुति की गयी है। श्रीमती गांधी के सभी कार्य राष्ट्र के लिये समर्पित थे, अतएव यह कार्य राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा देता है।

कूहा :-

डा० उमाकान्त शुक्ल द्वारा ११७ श्लोकों में रचित "कूहा" नाम शतककाव्य में श्री राजीव गांधी द्वारा हिमालय की चोटियों पर श्रीमती गांधी की अस्थियों के विसर्जन के समय राजीव गांधी द्वारा अपनी माता का भावपूर्ण स्मरण वर्णित है। काव्य के प्रारम्भ में हिमालय के गौरव और शोभा का वर्णन इस शतक काव्य की विशेषता है। काव्य में आयुधों की स्पर्धा त्यागकर सम्पूर्ण भूमि को एक भीड़ के रूप में देखने की बात कही गयी ह। जो पाठकों के मनोमस्तिष्क पर निश्चय ही भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा के भाव पनपाती है।

इन्दिराप्रशस्तिशतकम् :-

"इन्दिराप्रशस्तिशतकम्" नामक शतक काव्य की लेखिका श्रीमती शान्तिराठी है। इसमें ११६ श्लोक हैं। इसमें श्रीमती गांधी द्वारा देश की सेवा में किये गये कार्यो का परिचय दिया गया है।

उपर्युक्त इन्दिरा गांधी सम्बन्धी शतककाव्य इसी सम्बन्ध में राष्ट्रीय चेतनावर्द्धक है। इसमें एक राष्ट्रीय स्तर के व्यक्तित्व को लेकर उसका स्तवन किया गयाहै। डा० उमाकान्त शुक्ल का "कूहा" नामक काव्य"वसुधैव कुटुम्बकम्" तथा " सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्शो के प्रति निष्ठा व्यक्त करता है।

श्रमगीता :-

"श्रमगीता" श्रम की महत्ता पर प्रकाश डालने वाल शतककाव्य है। इसके प्रणेता डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर है। इसमें ११८ श्लोक है।

काव्यमें सर्वमान्य महात्मा गांधी के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में श्रम की महिमा को कवि ने प्रतिपादित किया है। इसकी पृष्ठभूमि में कवि की राष्ट्र के प्रति कल्याण की कामना प्रेरणा रुप में निहित है।

इसलिये इस काव्य को राष्ट्रीयभावनापरक शतककाव्य के रुप में सम्मिलित किया गया है। काव्य में श्रम की महिमा गीता की शैली में गायी गई है, अतः इस काव्य का नाम ''श्रमगीता'' अन्वर्थक ही है।

प्रकीर्ण :-

डा० नलिनी शुक्ला के कई ग्रन्थ हैं। जिनमें भावांजलि, राधानुनय, स्वरुपलहरी तथा प्रकीर्णन प्रमुख है। इसमें १०० छन्दों का उल्लेख हैं तथा१६७६ में ये उत्तर प्रदेश अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

व्यासशतकम् :-

''व्यासशतकम्'' डा० मिथिलेश कुमारी मिश्रा के द्वारा रचित शतककाव्य है। डा० मिथिलेश कुमारी मिश्रा का जन्म फर्रुखाबाद में हुआ और इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। ये सम्प्रति विहार राष्ट्रभाषा परिषद में शोध अधिकारी के रुप में कार्य कर रहीं हैं। इनकी तीन नाट्यकृतियां है।

१. *सुभाषितसुमनोऽजलि*

२. *आम्रपाली नाटिका*

३. *व्यास शतकम्*

इसमें भगवान वेद व्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का निरूपण १०० छन्दों में किया गया है। यह ग्रन्थ उ०प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा १६८४ में पुरस्कृत हो चुका है।

शतककाव्यों का वैशिष्ट्य

प्रस्तुत प्रेरणाप्रद धार्मिक शतककाव्यों को कवियों ने अपनी लेखनी से ओजमय स्वरुप प्रदान किया है। धार्मिक शतकों की भाषा सरल, सुषुप्त मन को जाग्रत करने वाली तथा प्रभावोत्पादक हैं। इन शतकों में कविने सुन्दर चित्रण किया है। देवी शतक में कवि ने यमक अलंकार का वर्णन इस तरह किया है।

''सरस्वति प्रसादं में स्थिति चित्तसरस्वति।

सरस्वति कुरु क्षेत्रकुरुक्षेत्र सरस्वति।।''

बाणभट्ट संस्कृत गद्य साहित्य के महान् सम्राट्, उन्होंने चण्डीशतक में नोक-झोंक के शब्द, लंबे-लंबे समास, कानों में झनकार उत्पन्न कर देने वाले

अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा का यथास्थान चित्रण किया है। वैसे समासों का प्रयोग तो बाणभट्ट की प्रमुख विशेषता है। चण्डीशतक में इस पद्य को कवि ने दृष्टान्त के रूप में दिया है -

"विद्राणे रुद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे,
जाताशंके शशांके विरमति मरुति त्यक्तवैरे कुबेरे।
वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषमलिरुषं पौरुषपघ्ननिहन
निर्विघ्नं निघ्नती वः शमयतु दुरितं भूरिभावा भवानी।।"

जैसे प्रौढ़ छन्दों का प्रयोग कवियों की प्रमुख विशेषता हे। सूर्यशतक को मयूर ने स्रग्धरा छन्द उपनिबद्ध किया है। मयूर ने सूर्यशतक के रूप में भगवान् सूर्य की सुन्दर स्तुति लिखी है। अनुप्रासों की झनझनाहट हृदयावर्जक है जो इस शतककाव्य की एक और विशेषता है।

सुदर्शनशतक भी स्रग्धरा वृत्त में लिखा गया काव्य है। इसमें नारायण के विशिष्ट आयुध सुदर्शन चक्र का स्रग्धरा में वर्णन कवि की उत्कृष्ट प्रतिभा को दर्शाता है। हनुमत्प्रसादशतकम् की भाषा बहुत प्रभावशाली है। इस शतक काव्य को कवि ने हनुमान की स्तुति में रचा है।

कृष्णशतक की भाषा सरल, सरस एवं प्रभोत्पादक है। इसमें अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है। हनुमान की स्तुति मे रचा श्री निवासशतकम् भक्तिभावात्मक है। इसकी भाषा भाव प्रधान है। कोलम्बाकुचशतकम् में कोलम्बा देवी का शृंगारिक रूप में वर्णन है। इसमें शृंगार की विशेषता है।

भगवान राम का रामशतक मं कवि ने बड़े ही सुन्दरतम ढंग से चित्रण किया है। इसकी भाषा भाव प्रधान है इसी तरह आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने त्रिशतिका में तीन शतक स्तोत्रों का वर्णन किया है। जिनमें भी ईश्वर की स्तुति बड़े ही अनूठे ढंग से की गई है। इनमें कवि ने अलंकारों का यथावत् चित्रण किया है। छन्दों का भी प्रयोग किया गया है।

कवियों ने ईश्वर की स्तुति रूपी पद्यों को अपने काव्य में अलंकार और छन्द रूपी मोतियों से सजाया है। जो इन काव्यों की प्रमुख विशेषता है।

शृंगारिक शतककाव्यों की प्रमुख विशेषता शृंगार हैं। कवि ने इन काव्यों में स्त्रियों की सुन्दरता को उभारा है। कवि ने इन शतकों को ललित एवं मधुर

शैली में प्रस्तुत किया है। स्त्रियों कीं सुन्दर एवं मनोहारी चेष्टाओं का वर्णन उनके छल-छन्द प्रपंचों को सुललित शैली में दिखाया है -

"कुंकुमपंककलंकितदेहा गौरपयोधरककम्पितहाराः।
नूपुरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामाः।।"

अमरुक शतक में तो कमनियों की सुन्दर भाव-भंगिमाओं एवं तरह-तरह की ललित शृंगार-चेष्टाओं का चित्रण किया है। भाषा अत्यन्त सरस, ललित एवं प्रासादिक है। भाषा शृंगार रचना के सर्वथा अनुरुप है। इस प्रकार भाव और भाषा भिन्न-भिन्न होते हुये भी यहां एकाकार होकर पाठकों को परम विश्रान्ति प्रदान करते है। इसमें शृंगार रस की ललित क्रीड़ास्थली अमरुकशतक सहृदयों के लिये पर्याप्त है। यहां पर सुन्दर पद्य का निरुपण कवि ने इस प्रकार किया है -

"दीर्घावन्दनमालिका विरचिता दृष्ट्यैव नेन्दीवरैः
पुष्पाणां प्रकरः स्मितेन रचितो नो कुन्दजात्यार्दिभिः।
दत्तस्वेदमुचा पयोधर युगेनाहर्यो न कुम्भाम्भसा
स्वैरेवायवैः प्रियस्य विशतस्तध्न्तया कृतं मंगलम्।।"

अमरुक शतक की भाषा पाठकों को रोमान्चित कर देने वाली है।

शृंगारतिलक की भाषा में प्रासादिक, भावों की सुकुमारता तथा शृंगार की समुज्ज्वलता दिखाई देती है। कवि ने इसमें उपमानों को भी प्रयुक्त किया है।

नीति सम्बन्धी शतककाव्यों की भाषा चिन्ताकर्षक, चिन्तनिरोधक तथा सत् पथप्रदर्शक भी है। इन काव्यों में उपदेशात्मक शैली को अपनाया गया है।

ये शतक काव्य प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों रूपों में शिक्षा प्रदान करने वाले है।

नीतिशतक की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा सुबोध है। इसकी शैली प्रासादिक, माधुर्यपूर्ण परिष्कृत एवं सुन्दर है एक उदाहरण देखिये।

"मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।"

भल्लटशतक मुक्तक पद्यों का संग्रह है। सुन्दर शिक्षा देने वाले नीतिमय पद्यों में मधुरता है तथा प्रसाद गुण कूट-कूट कर भरा हुआ है। अलंकार मन को मुग्ध कर देने वाले है। स्वाभावोक्ति, कमनीय उत्प्रेक्षा, विमल उपमा तथा उपदेशमय अर्थान्तरन्यास सहृदयों को आनन्दविभोर कर देते है सुभाषितशतकम् भी लौकिक विविध विषयों का नीतिपरक काव्यात्मक है। इसकी भाषा भी सरल, सरस है।

गुरुमाहात्म्यशतकम् की भाषा भावप्रधान तथा प्रभावोत्पादक है। इसमें विभिन्न छन्दों में गुरु के माहात्म्य का वर्णन किया गया है। गुरुमाहात्म्यशतकम् में सुन्दर श्लोकों के माध्यम से शिक्षा दी गयी हे। और गुरु की विशेषता बतायी गयी है।

"विना गुरुं न ज्ञानन्तु न मानं लोक-सम्मुखे।
न शान्तिः कान्तिरप्यस्तं तं विना मृतवन्नरः।।"

कॉफी शतकम् की शैली व्यङ्.य प्रधान है। जगद्गुरुअष्टोतरशरत, आचार्य चरित प्रधान है। तपोवनशतक भी गुरु के महात्म्य में लिखा गया है। इसकी शैली उपदेशात्मक है। इसे विभिन्न छन्दों में उपनिबद्ध किया गया है।

कहने का तात्पर्य है कि नीतिमय पद्य हमारे जीवन में बहुत उपयोगी है। तथा हमें नवदिशा प्रदान करने वाले हैं।

राष्ट्रीयभावनापरक शतककाव्यों की प्रमुख विशेषता यह है कि शतककाव्य हमारे देश की महान् विभूतियों के ऊपर लिखे गये है। ये शतक काव्य हमारे लिये प्रेरणा के स्त्रोत हैं।

विभूति वन्दनास्तोत्रम् की भाषा सरल एवं सुबोध है। इसमें हमें कहीं कहीं अलंकारो के भी दर्शन हो जाते है। इस शतककाव्य के श्लोको पर गद्य साहित्य के श्लोकों का प्रभाव परिलक्षित होता है। इस शतककाव्य की प्रमुख विशेषता यह है कि इस काव्य में अखण्डभारत की चेतनाचेतन विभूतियों क हृदयावर्जक वर्णनों का स्पर्श पाकर राष्ट्रीयता की मन्दाकिनी भारतीयों की स्वदेशानुरागात्मक भावनाओं को उद्दीप्त करती है।

भारतशतकम् के वर्णन में भाषा की योजना भावानुरूप हुई है। समस्त और सुकुमार भाषा में अत्यन्त दुरूह भावों की समर्थ अभिव्यक्ति कवि के

प्रगल्भ पाण्डित्य को प्रकट करती हैं। अनुप्रास और यमक अलंकारों के प्रयोग से भाषा में लालित्य का आधान हुआ है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि सम्पूर्ण काव्य स्रग्धरा वृत्त में उपनिबद्ध है। भारत का महनीय वैशिष्ट्य प्रतिपादित करते हुये कवि पाठकों के राष्ट्र प्रेम को दृढ़ करता है।

रामकैलाशकृत भारतशतकम् को भाषा प्रवाहमयी एवं सानुप्रास है। पद योजना बहुत सुन्दर है कवि ने उत्साह से अभिभूत होकर सैनिकों के लिये यह काव्य लिखा है। वीर बालक अभिमन्यु के रणचातुर्य का स्मरण कराने के अवसर पर कवि की पदावली देखिये –

"दृष्ट्वादभुतं संगरकौशल ते,
भो वीर! भो बालक पार्थपुत्र।
शीर्णानि वर्ष्माणि मृघे परेषां
च्युतानि वर्माणि धरा च कम्पे।।"

कवि की भाषा भावानुसारिणी है। वीरता वर्णन के प्रसंग में यदि भोजमयी भाषा है तो काव्य की व्यंजना में भी शब्दों का चयन करुणोत्पादक है। लिट् लकार का प्रयोग किया गया है। कवि ने अनुप्रास, यमक का यथा स्थान प्रयोग किया है। अर्थालकारों में उपमा, रूपक और अर्थान्तरन्यास का प्रयोग किया गया है। यह शतककाव्य उपजाति छन्द में उपनिबद्ध है।

मातृभूलहरी नामक शतक काव्य में भारत भूमि की महनीयता प्रतिपादित की गयी है। इसकी प्रमुख विशेषता है कि इसमं भाषा का लालित्य, भावों की स्फुट अभिव्यक्ति कल्पना का असीम वैभव और इसके साथ साथ अलंकारों का रसानुगुण सिन्नवेश सबको मिलाकर इस काव्य का निर्माण हुआ है। कवि ने भारत भूमि का वर्णन अलंकारों के माध्यम से किया है।

"भाति में भारतम्" की पदावली सरल सानुप्रास तथा कोमल होने के साथ-साथ हृदयग्राही भी है। माधुर्य गुण प्रचुरता में प्राप्त होता है। क्लिष्टता का सर्वथा परिहार होने के कारण भाषा प्रसादमयी है। अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है। सग्विणी छन्द में वर्णित काव्य भारत के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप को उद्घाटित करता है। काव्य में कवि ने अपने देश का उज्ज्वल रूप चित्रित किया है।

जय भारत भूमे नामक काव्य की भाषा सरल और लालित्यमयी है। इसमें कवि ने माधुर्य और प्रसाद गुण का प्रचुर मात्रा में वर्णन किया है। समास का भी यत्र-तत्र प्रयोग दिखाई पड़ता है। शब्दालंकारों मे अनुप्रास और यमक का प्रयोग हुआ है। अर्थालंकारों में उत्प्रेक्षा सर्वाधिक प्रशस्त है। काव्य मे अलग-अलग छन्द प्रयुक्त किये गये हैं जैसे - भुजंगप्रयात, आर्या, तोंटक, मालिनी, द्रुतविलम्बित तथा दिग्पाल जैसे छन्द का प्रयोग भी मिलता है।

भारत देश की प्रतिष्ठा, सुरक्षा ओर शालीनता के प्रति जनचेतना को प्रबुद्ध करने वाला काव्य है।

भारतशतकम् नामक काव्य जो कि राजेन्द्र मिश्र प्रणीत है। इसमें अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया गया हे। अनुप्रास का प्रयोग किया गया है। इस काव्य की प्रमुख विशेषता यह है। कि काव्य की गरिमा शास्त्रीय गुणों के अन्वेषण में नही प्रत्युत उसके हृदय की सरल भावनाओं की सहज, सेवद्य और सफल अभिव्यक्ति में ही निहित है।

नृपप्रतापविजयम् काव्य में वैदर्भी रीति का निर्वाह हुआ है। भाषा भावानुकूल है। अलंकारों में उपमा, रुपक अर्थान्तरन्यास, विशेषोक्ति, विभावना जैसे प्रचलित अलंकारों का प्रयोग किया गया है। कवि ने समपूर्ण काव्य को वसन्ततिलका छन्द में उपनिबद्ध किया है। इस काव्य में कवि ने देश द्रोह करने वाले राजपूतों की निन्दा की है ओर देश प्रेमी राणा प्रताप और भामाशाह की प्रशंसा में कोई कमी नहीं छोड़ी।

सुन्दर उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से स्वातन्त्र्यवीरशतकम् नामक काव्य में कवि ने वीर सावरकर के चरित्र को ऊँचा उठाया है। इस काव्य में कवि ने इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा और उपजाति छन्दों का प्रयोग किया है। अन्तिम तीन श्लोकों में मालिनी, द्रुतविलम्बित और शार्दूलविक्रीड़ित छन्द है।

अनुप्रास, यमक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक इत्यादि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कवि ने संस्कृत साहित्य विद्वत्ता हासिल की है। और इसके प्रयोग से उन्होने इस कृति के माहात्म्य को और बढ़ा दिया है। इसमं कवि ने अंग्रेजो के विरुद्ध संघर्ष का वर्णन किया है।

श्री बद्रीनाथ झां रचित शोकश्लोकशतकम् वसन्ततिलका छन्द में

उपनिबद्ध है। इस काव्य में हृदय के उद्गारों को व्यक्त किया गया है। इस करुणामय काव्य में कवि ने राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना को उद्दीप्त किया है। यह महात्मा के देहावसान पर लिखा गया है। इस काव्य में कवि ने राष्ट्रपिता के गुणों की भी चर्चा की है।

श्रीगान्धिचरितम् काव्य की भाषा सरल, सरस तथा माधुर्यगुण प्रधान हे। इन्द्रवज्रा, उपजाति, अनुष्टुप्, बसन्ततिलका तथा मालिनी छन्दों का प्रयोग यथास्थान किया गया है। इस काव्य के माध्यम से कवि ने देश प्रति प्रेम एवं बलिदान के विषय में बताकर राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का प्रयास किया है।

गांधी गौरवम् नामक काव्य में डा० रमेशचन्द्र शुक्ल ने नायक के व्यक्तिगत गुणों से कहीं अधिक राष्ट्रीय भावों पर प्रकाश डाला है।

डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित जवाहरतरंगिणी नामक काव्य में पदों का लालित्य दर्शनीय है। अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है। इस काव्य में कवि की प्रखर वर्णना तथा उच्च्व कल्पना वैभव के दर्शन होते है।

इन्दिरा गांधी पर आधृत काव्यों की भाषा भी भावानुरुप है। एक ओर इन्दिरा गांधी के शासनकाल की उपलब्धियों की चर्चा करते हुये इन्दिरा से दुराचरण को हटाने की प्रार्थना की गयी है तो वही दूसरी ओर उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और शासकत्व का निरुपण कर उनका अभिनन्दन किया गया है। कहीं राजनैतिक सफलताओं पर प्रकाश डाला गया है तो कहीं जीवन गुणों और कार्यो की भावाव्यंजक स्तुति की है।

कहने का तात्पर्य है कि ये शतक काव्य केवल हमारे लिये प्रेरणा स्रोत नहीं है अपितु हमारी हृदय में प्रेम भावना को उद्दीप्त करने वाले है।

द्वितीय अध्याय

इन्दिराकीर्तिशतकम् तथा प्रियदर्शिनीयम् का साहित्यिक अनुशीलन
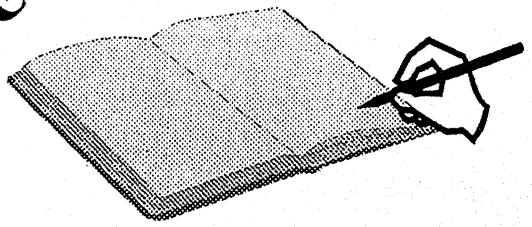
- द्वितीय अध्याय -

''इन्दिराकीर्तिशतकम्'' एवं ''प्रियदर्शनीयम्'' का साहित्यिक अनुशीलन

श्री कृष्ण सेमवाल का जीवन परिचय-

प्रियदर्शनीयम् के लेखक श्री कृष्ण सेमवाल का जन्म ०५ जनवरी १९४४ में हयून ग्राम (चमोली जनपद) में हुआ। कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने व्याकरण, साहित्याचार्य, शिक्षाशास्त्री, एम.ए. की उपाधि विधिवत् धारण की। सेमवाल जी बचपन से ही मेधावी छात्र रहे हैं। बचपन से ही अध्ययन में इनकी विशेष रुचि थी। इनकी शिक्षा-दीक्षा वर्तमान उत्तरांचल के ज्वालापुर एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्पन्न हुयी। विगत २० वर्षों से आप संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार और समुन्नयन में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सुयोग्य सचिव के रूप में संलग्न है। आपकी उत्कृष्ट संस्कृत सेवाओं को ध्यान में रखकर तिरुपति संस्कृत केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने आपको डी.लिट की उपाधि से विभूषित किया है। आप संस्कृत संस्थान के भी कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सेवारत हैं।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

श्रीकृष्ण सेमवाल जी के पास गुणों की अपूर्व धरोहर है। इनके सहज एवं सर्वजनाभिन्द्य व्यक्तित्व का चाहे कोई भी पक्ष हो, सर्वत्र समान रूप से मनोहरता एवं सरलता प्रकट हुआ करती है। सेमवाल जी का चरित्र अद्वितीय है। इनके बहु-आयामी आनन्त्य-भावावेष्टित-विशद व्यक्तित्व में तुच्छता एवं क्षुद्रता राग-द्वेष प्रभृति कलुषाधृत भावनायें प्रवेश नहीं कर पाती हैं।

कविरत्न अमीरचन्द्र शास्त्री ने ''इन्दिराकीर्तिशतकम्'' की रचना करने के उपलक्ष्य में कुंकुम का जो तिलक किया है। उसे लेखक के माथे पर लगाया गया साधुवाद का एक टीका मानें? या इन्दिरा के विराट् व्यक्तित्व को महामण्डित करने वाली दिव्य पहचान? परन्तु इतना सुनिश्चित है कि यह काव्य-प्रशंसा-संस्कृत भारती का सम्मान है। भारत भारती को पहचान देने हेतु एक कवि द्वारा दूसरे कवि के प्रति प्रकट की गई मंगलकामना है-

"विषय इन्दिरा वृत्तमिन्दिरा, लसति सेमवाल्यां गिरिध्रुवम्।
कृतमिवानने गौरिमोज्ज्वले, तिलकमद्भुतं कुंकुमोज्ज्वलम्।।"

संस्कृत के महान् कवि और समालोचक डा० सत्यव्रतशास्त्री ने 'इन्दिरकीर्ति शतकम्' पर टिप्पणी करते हुये ये उद्गार व्यक्त किये हैं कि इन्दिरा शासन की शताब्दी सम्पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस काव्य की रचना हुई है। जनताजनार्दन की उन्होने जो सेवा की तथा विलक्षण कार्यशक्ति का जो परिचय दिया उसी को लक्ष्य करके इस शतक की रचना की गई है-

" प्रधानमन्त्रिण्या श्रीमत्या इन्दिराप्रियदर्शिन्याः शासनकालस्य दशाब्दी सम्पूर्णतां गता। जनताजनार्दनस्य कृते यदाभिः कृतं तद्वयं सर्वेऽपि विद्मः। अतितरसाधारण एतासामुत्साहः विलक्षणा कार्यशक्तिर्महती च सूक्ष्मेक्षका, एता अधिकृत्य श्रीसेमवालमहाभागैर्विरचितं शतकं सुतरां प्रियं नः।

श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित काव्य निम्नलिखित है -

१. ***इन्दिराशतकम्***
२. ***हिमाद्रिपुत्राभिनन्दम्***
३. ***प्रियदर्शिनीयम्***

१. इन्दिराशतकम् -

श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित् इन्दिराशतकम् एक उत्कृष्ट कोटि का काव्य है। इस काव्य के माध्यम से इन्दिरा जी के व्यक्तित्व एवं उनके कार्यो पर प्रकाश डाला गया है। यह शतककाव्य इन्दिरा गांधी के जीवन का द्योतक है।

२. हिमाद्रिपुत्राभिनन्दम् -

हेमवतीनन्दन बहुगणापूर्व मुख्यमंत्री उ०प्र० के जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा राष्ट्र को समर्पित उनकी सार्वजनिक सेवाओं को लक्ष्य कर काव्य के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। वस्तुतः ये चरित्र प्रधान खण्डकाव्य है।

३. प्रियदर्शिनीयम् -

प्रियदर्शिनीयम् श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित काव्य है। इस काव्य को सेमवाल जी ने तीन वर्गो में विभाजित किया है।

१. ***कीर्तिखण्ड***

२. ***संघर्षखण्ड***

३. ***महाप्रयाणखण्ड***

वास्तव में ये तीनों आदर्श महाकाव्य के आदर्श मूल्यों पर आधारित जीवन के महान मूल्य भी है।

१. कीर्तिखण्ड -

इन्दिराकीर्तिखण्ड के नाम से प्रकाशित कीर्तिखण्ड शतककाव्य की विशेषताओं से युक्त है। इस खण्ड में इन्दिरा के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा-दीक्षा, विवाह, स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने, कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनने तक की मुख्य-मुख्य घटनाओं का वर्णन किया गया है।

२. संघर्षखण्ड -

इस खण्ड में काव्यनायक इन्दिरा की प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। अर्थात् एक प्रकार से संघर्षखण्ड उनके संघर्षपूर्ण जीवन का परिचायक है।

३. महाप्रयाणखण्ड -

श्रीमती इन्दिरा गांधी की दुःखद मृत्यु से शोकसंतप्त होकर महाप्रयाण खण्ड की रचना की गई है। जैसे किसी आत्मीय की मृत्यु से व्यक्ति शोक के गहरे सागर में डूब जाता है। वैसे ही इन्दिरा की मृत्यु के समाचार को सुनकर कवि की वाणी मूक हो गई।

''प्रियदर्शिनीयम्'' काव्य का वर्ण्य-विषय-

विश्व-जनमानस की प्रेरणास्रोत पूज्यनीया श्रीमती इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अद्भुत, विलक्षण एवं संघर्षशील रहा है। उन्होनें भारत मां की सतत् समाराधना में समर्पित होकर भारत के सर्वतोभावेन विकास में अविस्मरणीय एवं अमूल्य योगदान दिया। वे भारत में शक्ति के अवतार के रूप में अवतरित होकर गरीबों, असहायों और दलितों की आराध्या देवी ही नही बनी, अपितु समस्त बुद्धिजीवियों, लेखकों, कवियों एवं मनीषियें की भी प्रबल संबल बनीं, उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर श्रीकृष्ण सेमवाल ने सन् १९७३ में, इन्दिरा छन्द में संस्कृत भाषा में

'इन्दिराकीर्तिशतकम्' नाम से प्रथम काव्य लिखा, जिसका संस्कृत जगत ने ही नहीं, बल्कि भारत के समाज ने हार्दिक स्वागत किया। इसी पाथेय को लेकर कवि निरन्तर संस्कृत की काव्य साधना में ही नहीं अपितु संस्कृत के प्रचार-प्रसारादि विभिन्न पक्षों की सेवा में समर्पित भाव से संलग्न हैं। और अनेक संस्कृत काव्यों की रचना करते हुये संस्कृत-शिक्षण-प्रशिक्षण, साहित्य-साधना, प्रसारादि विधाओं में अनेक नवीन प्रयोग किये।

इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुये कवि ने श्रीमती इन्दिरा जी के व्यक्तित्व पर 'कीर्तिखण्ड' के अतिरिक्त 'संघर्षखण्ड' और 'महाप्रयाणखण्ड' उन्हीं अवसरों पर लिखे, जो कीर्तिखण्ड के सहित 'प्रियदर्शिनीयम्' काव्य के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। यह काव्य स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को कवि की भावभीनी श्रद्धांजलि है।

संस्कृत काव्य यात्रा इन्द्र से इन्दिरा तक-

संस्कृत काव्य मात्र कवि का एक कर्म नही, अपितु वर्तमान को अतीत से जोड़ने का एक सांस्कृतिक उपक्रम भी है। वैदिक युग में संस्कृत काव्य-धारा का मुख्य स्वर इन्द्र राष्ट्रनायक के रूप में महिमामण्डित हुआ है। इन्द्र विषयक इन्हीं शौर्यपूर्ण गाथाओं से रामायण और महाभारत जैसे वीर काव्यों की पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ। इस प्रकार वैदिक काल के उषाकाल में जहां एक ओर मन्त्रदृष्टा ऋषि 'स जनास इन्द्रः' की वीरगाथा सुनाकर राष्ट्र को बल और ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। तो वहां दूसरी ओर इसके सन्ध्याकाल में 'प्रियदर्शिनीयम्' जैसे आधुनिक काव्य के 'दलितसेविनी' 'सेन्दिरा जयेत्' 'सुकृतिशालिनी सेन्दिरा जयेत्' का कलरव भी गुन्जायमान है। यह संस्कृत भारती तथा भारतभारती दोनों के लिये गौरवास्पद है कि भारतरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के जीवन को लक्ष्य करके प्रियदर्शिनीयम् काव्य की रचना की। कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित 'प्रियदर्शिनीयम' शीर्षक काव्य संस्कृत साहित्य शास्त्र के अनुसार 'खण्डकाव्य' के अन्तर्गत आता है। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ ने खण्डकाव्य की परिभाषा की है -

"खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च"

अर्थात् काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाली कृति को खण्डकाव्य

कहते हैं। 'प्रियदर्शिनीयम्' काव्य के लेखक श्रीकृष्ण सेमवाल जी भी जननायक श्रीमती इन्दिरा गांधी के समग्र जीवन चरित को कीर्ति संघर्ष तथा महाप्रयाण के शाश्वत आदर्शों से जोड़ना चाहते हैं। इसलिये इस काव्य के भी इन्हीं नामों से तीन खण्ड किये गये हैं -

१. कीर्तिखण्ड

२. संघर्षखण्ड

३. महाप्रयाणखण्ड

वास्तव में ये तीनों आदर्श महाकाव्य के आदर्श मूल्यों पर आधारित जीवन के महान मूल्य भी हैं।

१.- कीर्तिखण्ड -

कवि ने सन् १६७६ में प्रकाशित कीर्तिखण्ड में संस्कृत काव्य-लेखन की परम्परागत मान्यताओं का पालन करते हुये गुरु-वन्दना, देववाणी संस्कृत की स्तुति तथा जगदगुरु भारतराष्ट्र की अभिवन्दना के साथ कीर्तिखण्ड का प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम कवि अपने गुरु मैठाजी को सादर प्रणाम करते हुये कहते हैं।-

अत्यन्त पवित्र, शक्ति के उपासक, श्रेष्ठ कवियों में उत्तम, ज्ञानसागर, मेरी बुद्धि के अन्धकार को दूर करने वाले पूज्य गुरूवर श्री भास्करानन्द मैणजी को मै सादर प्रणाम करता हूं।

तदुपरान्त देववाणी संस्कृत भाषा को प्रणाम करते हुये कहते हैं कि-

"ब्रह्मा के द्वारा आराधित, वेदों में वयारूयापित, सज्जनों द्वारा पूजित भाष्यों में भाषित, कविजनों द्वारा अर्चित शास्त्रों को शासित करने वाली देववाणी संस्कृत भाषा को मै प्रणाम करता हूं।"

तत्पश्चात् कवि कहता है "कि समस्त विश्व की संस्कृतियों में अग्रगामी, प्राणिमात्र के मार्गदर्शक, विविधतापूर्ण एवं अदभुत इस भारत देश को मै सादर प्रणाम करता हूं।[1]

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *सकलसंस्कृतेरग्रगामिनं,*
निखिलदेहिनां मार्गदर्शकम्।
शबलतामञ्चाद्भुतात्मकं,
तमिह नीवृतं नौमि भारतम्।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ३)

इन्दिरा गांधी की जन्मभूमि भारतवर्ष की शोभा का वर्णन करते हुये कवि कहता है कि विविध प्रकार के वन-वाटिका एवं पुष्पों से सुशोभित पर्वतों, गुफाओं एवं श्रेष्ठ गाँवों से गौरवान्वित, जल से परिपूर्ण, समुद्रों से विराजित, माधुर्य से परिपूर्ण भारतवर्ष में श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म हुआ था।

भारतवर्ष में एक अत्यन्त पवित्र स्थान है प्रयाग जो ऋषि मुनियों द्वारा पूजित है। इस पवित्र स्थल में ही इन्दिरा का जन्म हुआ। कवि कहता है कि यह सामान्य बात नहीं है क्योंकि -

ऋषियों द्वारा पूजित, विद्वानों से शोभित, कवियों द्वारा समादृत, राजा और नेताओं द्वारा विभूषित, गुणवानों के समूह से युक्त, शान्तिपूर्ण एवं श्रेष्ठजनों द्वारा सम्मानित प्रयाग में श्रीमती इन्दिरागांधी का जन्म हुआ।[1]

आनन्द भवन की सुन्दरता को दर्शाता हुआ कवि कहता है कि गगन को चुम्बित करने के लिये उत्कण्ठित, मंगलमय, सुललित, श्रेष्ठ सुचूर्णलेपित एवं श्रेष्ठ जनों के आश्रय से संसार में देदीप्यमान आनन्दभवन में श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म हुआ।

कवि कहता है कि यह पं० जवाहरलाल नेहरू के संचित पुण्य ही थे जिनके प्रताप के कारण उनके घर में जो उत्तम ज्योति प्रज्ज्वलित हुयी, वह प्रियदर्शिनी संसार में इन्दिरा गांधी के नाम से प्रसिद्ध हुयी।

एक छन्द के माध्यम से कवि ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को और भी महान दर्शाया है-

---

1. प्रियदर्शिनीयम् - *ऋषिभिरर्चिते विद्वतेञ्चते,*
कविभिरादृते नेतृभूषिते।
गुणिगणान्विते शान्तिशोभिते,
जनवरार्थिते सुप्रयागके।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ५)

समस्त देवताओं के तत्वों से संयुक्त होती हुयी भगवती जगदम्बा की तरह निखिल विश्व में बाल्यजीवन से ही तेरी प्रभा प्रकाशित हुयी।[1]

इन्दिरा जी ने अपने पिता पं० जवाहरलाल नेहरू से बाल्य जीवन में ही देश रक्षापरक अनेक विद्यायें सींखी। कहने का तात्पर्य है कि वह बचपन में ही अनेक विद्याओं मे पारंगत हो गई थी। उनका देश-प्रेम अटूट था।

जब भारतीय लोग विदेशियों के शासन से उत्पीड़ित थे। तो उनकी दशा देखकर उनका मन करुणा से भर जाता था। इसी बात को एक अन्य छन्द के माध्यम से परिलक्षित किया गया है-

बहुत काल तक विदेशियों के शासन से शासित, दुःख पीड़ित पवित्र भारत को शीघ्र ही दृष्टिगत करती हुयीं स्वयं इन्दिरा गांधी अत्यन्त दुःखित हुयीं।[2]

बचपन से ही इन्दिरा जी को अंग्रेजों से एवं उनके क्रियाकलापों को देखकर उनके प्रति घृणा हो गई और ये उनके विनाश के विषय में सोचने लगीं। इनके द्वारा बचपन में अंग्रेजों के नाश के उद्देश्य से दुश्मनों के रहस्य का भेदन करने वाली छोटे बच्चों की वानरी नाम की शत्रुभेदनाशक सेना का निर्माण किया गया।

---

१. प्रियदर्शिनीयम् -

विविधदेवता तत्वसंयुता-
भगवतीशिवाशक्तिसन्निभा।
अयि महोज्ज्वले बाल्यजीवनात्,
भुवि शुभा प्रभा ते प्रकाशते।।

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ६)

२. प्रियदर्शिनीयम् -

बहुविदेशिनां शासने स्थितं,
विमलभारतं दुःखपीडितम्।
नयनगोचरीकृत्य सत्वरं,
स्वयमपीन्दिरा दुःखिताऽभवत्।।

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० १२)

ये इन्दिरा जी का सौभाग्य था कि बचपन से ही उन्हें महान् लोगों की संगत मिली। उन्हीं महान एवं बुद्धिमान लोगों के सत्संग से इन्होंने बहुत कुछ सीखा और आचरण भी किया।

प्रख्यातनामा बुद्धिमानों सत्संग के कल्याणकारी सुयोग से जिस इन्दिरा गांधी ने हितकारी ईश्वरीय महाशक्ति को प्राप्त किया, उस गांधी को कवि के द्वारा प्रणाम किया गया है।[1]

अपने जीवन में इन्हें महान शास्त्रपारंगत प्रसिद्ध पण्डितों से ज्ञानार्जन किया और शीघ्र ही नीतिशास्त्र में निपुणता एवं बुद्धिवैभव में प्रखरता प्राप्त की।

श्रीमती इन्दिरा गांधी अपने बुद्धिवैभव के विकास के व्याज से विभिन्न ज्ञान-मन्दिरों में शिक्षा प्राप्त करने गयीं। जिससे यह विश्वमण्डल मे लोक कल्याणकारिणी छवि के रूप में प्रसिद्ध हुयीं।[2]

भारतभूमि के प्रति इन्दिरा जी का प्रेम विलक्षण था। लोगों के दुःख को देखकर उनका हृदय दुःख से द्रवीभूत हो जाता था। यद्यपि वह समस्त सुखों से परिपूर्ण थीं। परन्तु अपनी प्यारी भारतभूमि को दुखी देखकर समस्त सुखों से परिपूर्ण अपने कुसुमित नव यौवन को क्रान्तिरूपी वडवाग्नि में झोंक दिया।

इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध कई ठोस कदम उठाये, आन्दोलन भी किये। जिसका खामियाजा इन्हें भुगतना पड़ा और जेल भी जाना पड़ा।

---

१. प्रियदर्शिनीयम् - *प्रथितधीमतां पार्श्ववर्तिनां,*
शुभसुयोगतो बाल्यजीवने।
हितकरीं महाशक्तिमैश्वरीम,
उपगतैव या तां नमाम्यहम्।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० १४)

२. प्रियदर्शिनीयम् - *निजमतेरियं वर्द्धनच्छलात्,*
गतवती भुवो ज्ञानसद्मसु।
अतितरामभूत धीमतीन्दिरा,
जनहितैषिणी लोकमण्डले।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० १६)

अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलनों के आयोजनों से अंग्रेजों ने द्रोहवश बार-बार श्रीमती इन्दिरा गांधी को कारागार में डाला। किन्तु क्रान्ति से देदीप्यमान यह जरा भी विचलित नहीं हुयीं। जिससे आपका स्थिर धैर्य सर्वत्र शोभायमान हो रहा है।[1]

अपनी माता की मृत्यु से इन्हें बड़ा कष्ट हुआ। कवि कहता है कि देवगृह स्वर्ग से भी जन्म देने वाली माता श्रेष्ठ होती है, इसलिये हे इन्दिरा गांधी क्या तुम्हें अपनीं माता की मृत्यु से कष्ट नहीं हुआ? अर्थात अवश्य ही हुआ।

सरल चंचल एवं प्रिय शैशव जिस मां की पवित्र गोद में जिसने व्यतीत किया क्या उसकी मृत्यु तेरे लिये कष्ट देने वाली नहीं हुयी? अर्थात अत्यन्त कष्टदायी हुयी, इसमें कोई संदेह नहीं है।[2]

जो जन्म से ही अद्‌भुत एवं विलक्षण हो उसका सारा जीवन ही विलक्षण हो जाता है। जो कुल देवताओं के द्वारा सेवित है ऐसे प्रिय ब्राह्मण कुल को जिसने अपने जन्म से पवित्र किया और अपने विवाह के द्वारा विश्व को एक नई दिशा प्रदान की। विशेष गुणों के द्वारा सूर्य ओर चन्द्रमा के समान सर्वमान्य सुन्दर दो पुत्रों को जन्म देने वाली इन्दिरा गांधी को सारा विश्व आदरपूर्वक प्रणाम करता है।

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *सितशरीरिणां द्रोहकारणात्,*
मुहुरयादियं कृष्णमन्दिरे।
विचलिता न तु कान्तिभास्वती,
स्थिरसा धृति र्भाति ते हि सा।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० १८)

२. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *सरल शैशवं चंचलं प्रियं,*
सुखमये यदंकेऽतिपावने।
परमानामि किं तन्मृतिश्च ते,
परकष्टदा नात्र संशयः।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० २०)

इन्दिरा जी ने प्रारम्भ से ही अपने पिता पं०जवाहरलाल नेहरू से राजनीति सीखी। एक अन्य छन्द के माध्यम से कवि ने इसे दर्शाया है।

प्रारम्भ से नीतिशास्त्र में निपुण पूज्यपिताजी ने प्रेमपूर्वक जिस इन्दिरा गांधी को समस्त राजनीति के पाठ पढ़ाये, ऐसी नीतिशास्त्र में दक्ष समस्त भूमण्डल में भ्रमणशील श्रीमती इन्दिरा गांधी को मै प्रणाम करता हूं।[1]

बचपन से ही ये प्रखर मस्तिष्क वालीं थीं। गुणों की उत्तम धरोहर इनके पास थी। इनकी योग्यता को देखकर कांग्रेस के दिग्गज नेताओं के द्वारा इन्दिरा गांधी को शीघ्र ही लोकपूजित कांग्रेस पार्टी के सर्वोच्च्व अध्ययक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

महाराजा भरत की इस पुण्यभूमि भारत में जब परमविद्वान् श्री लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे, तब श्रेष्ठ बुद्धिमती श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रसिद्ध एवं विशाल सूचनामंत्रालय में मंत्रीपद को सुशोभित किया।[2]

एक बार ऐसी विपत्ति भी पड़ी कि जब पाकिस्तानी शासकों के साथ भयंकर युद्ध हुआ। युद्ध के समय में भी इनके द्वारा निर्मल बुद्धि से सूचना मन्त्रालय का सफल संचालन किया गया। कहा भी गया है कि श्रेष्ठ व्यक्ति ही राज्य का उत्कृष्ट रूप से संचालन कर सकता है। इन्दिरा जी के हाथ में समर्पित सूचना मंत्रालय उस समय भारत के लिये अत्यधिक लाभदायक सिद्ध हुआ और अतिसरल एवं श्रेष्ठ बुद्धि के कारण इनका यश प्रभासित हुआ।

---

१. **प्रियदर्शिनीयम्** – *नयविदः पितुः प्रेमतो यया,*
निखिलनीतयः शिक्षिताः पुराः।
भ्रमणकारिर्णी विश्वमण्डले,
नयविदुत्तमां तां नमाम्यहम्।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० २४)

२. **प्रियदर्शिनीयम्** – *भरतशुशुभे शासने स्थिताः,*
बुधवराः यदा शास्त्रिणस्तदा।
मतिमतीन्दिरा मन्त्रितां गता,
महति विश्रुते सूचनालये।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० २७)

इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहिये कि जब सर्वदा शान्ति के प्रयासों के लिये क्रियाशील, दूसरों की भलाई में रत, सहृदय श्री लाल बहादुर शास्त्री जब ताशकन्द में सम्मेलनार्थ गये, हाय दुःख है कि लोकप्रिय जनसेवक वहीं दिवंगत हो गये।[1]

उस समय भारतीय जनमानस में व्याकुलता, अनाथ होने का भाव, उद्विग्नता, अत्यन्त हीनता, किंकर्तव्यविमूढत्व तथा निराशा उत्पन्न हो गयी थी। परमज्ञानी श्री लालबहादुर शास्त्री के दिवंगत हो जाने पर देश के सभी नेता उस समय एकत्र हुये और उन्होनें नीतिज्ञान में तुम्हारी अनन्य कुशलता को देखकर भारत के प्रधानमंत्री का पद तुम्हें सौंप दिया।

इन्दिरा गांधी जी को बचपन से महान् लोगों की संगति में रहीं थी तथा उन्हें उनका भी सहयोग प्राप्त हुआ। उन्हीं लोगों के विषय में चर्चा करता हुआ कवि कहता है कि-

जिसके द्वारा बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के उत्कृष्ट सिद्धान्त सर्वदा क्रियान्वित हुये, संसार में अपनी मातृभूमि भारत के कार्यों को सिद्ध करने वालीं इन्दिरा गांधी की सर्वदा विजय हो।[2]

कुछ भारतीय नेता जो अपनी ही स्वार्थ पूर्ति में लगे थे। उनका निरीक्षण कर अपने दल से पृथक करके भारत में सुखद शासन स्थापित किया गया।

---

१. **प्रियदर्शिनीयम्** - *उपगतो यदा ताशकन्दके,*
सुमनसा सदा शान्तिसेवकः।
परहितं रतः श्री बहादुरः,
अपरतस्तदा हा जनप्रियः।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ३०)

२. **प्रियदर्शिनीयम्** - *तिलकगोखलेगान्धिनां यया,*
सुमतमुत्तमं पूरितं सदा।
जगति मातृभूकार्यसाधिका,
विजयतामियं सेन्दिरा वरा।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ३४)

कुछ नेताओं की योजना पर उस समय पानी फिर गया जब विधिपूर्वक किये जाने वाले राष्ट्रपति के चुनाव कार्य मे विद्रोह करने वाले नेताओं के हृदयों की आकांक्षायें तुम्हारे द्वारा पीड़ित की गयीं। जब श्री वी.वी.गिरि राष्ट्रपति के पद पर विजयी हुये।[१]

भारत के सच्चे सेवक नेताओं को देश की रक्षा में प्रतिनियुक्त करके, इनके द्वारा उस समय अपनी बुद्धि से दुश्मनों के समूह से भारत की रक्षा की गयी। कुछ लोग जो तुम्हारे विरोधी थे, क्रूर, मिथ्याभाषी तथा षड़यन्त्रकारी थे। गुफाओं के अन्दर वैसे ही छिप गये जैसे सूर्य के उदय होने पर अन्धकार छिप जाता है।

कुछ भ्रष्ट लोगों के द्वारा जनसामान्य का शोषण किया जा रहा था। जिसको एक अन्य श्लोक के माध्यम से इस प्रकार बताया गया है-

भ्रष्टाचारी बलशाली शासकों और धनिक जनों के द्वारा जनसामान्य का रक्तशोषण और जनसमुदाय की गरीबी को देखकर तुमने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया।[२]

और जो देश के लिये अहितकारी, साम्यवाद में बाधक, खर्चीली और भारकारी राजाओं की सौकर्यवृत्ति को इनके द्वारा लोक कल्याण के लिये बन्द कर दिया।

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *विधिविधनतः राष्ट्रभूपतेः,*
चयनकर्मणि द्रोहकारिणाम्।
अयि! कृतं त्वया हृत्सु पीडनं,
विजयतां गते श्रीगिरेरिव।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ३७)

२. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *सबलशासकैः भ्रष्टतायुतैः,*
धनिजनैः कृतं रक्तशोषणम्।
जनगणस्य वै वीक्ष्य दीनतां,
धनगृहाः कृताः राष्ट्रसम्पदः।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ४२)

कुछ लोग ऐसे भी थे जो विश्वासमत के प्रति द्वेष रखते थे। ऐसे विश्वासघाती नेताओं का निपुणता से निरीक्षण करके इन्होंने दोबारा चुनाव करवा दिये। इस समय समस्त भारत ने स्वच्छ छवि वाले इन्दिरा जी के दल को बहुमत से समर्थन दिया।

सभी नेताओं ने देश के प्रधानमंत्री के उच्च पद पर इनको नियुक्त किया।

गरीबी एक अभिशाप है ऐसा सोचकर भारत में गरीबी को अवनति का सबसे बड़ा कारण मानकर ग़रीबी को दूर करने के लिये विविध योजनायें बनायीं गयीं।

इन्दिरा जी सभी वर्गों के प्रति समभाव रखती थीं। तभी तो-

दलित, गरीब, अल्पसंख्यक और हरिजनवर्ग के प्रति अनुराग रखने वाली तुम्हारे मन, वचन और कर्म से सर्वदा प्रियकारिणी निर्मल भावना रहती है।[1]

लेकिन कुछ लोग इनकी उपलब्धि को देखकर इनकसे ईर्ष्याभाव रखने लगे थे। जैसे-

हे इन्दिरा! तुम्हारे भारत् की त्वरित गति से होती सुन्दर प्रगति को देखकर मुस्लिम शासक पाकिस्तान का राष्ट्रपति बिना कारण भारत का दुश्मन बन गया।[2]

---

१. **प्रियदर्शिनीयम्** - *दलितदीनवर्गाल्पसंख्यकान्,*
हरिजनान्प्रति सौम्यतामयी।
विमलभावना वर्तते सदा,
मनसि वाचि ते कर्मसु प्रिया।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ४८)

२. **प्रियदर्शिनीयम्** - *प्रगतिमिन्दिरे! भारतस्य ते,*
द्रुततरामिमा वीक्ष्य मंजुलाम्।
मुगलशासकः पाकनायकः,
रिपुरभूदसौ कारणं बिना।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ५०)

तब बंगलादेश के माध्यम से इनके द्वारा पाकिस्तान के शासक को अत्यन्त पीड़ा पहुंचाने वाले दण्ड दिये गये। जिसे वह कभी न भूल सकेगा।

इन्दिराजी का मन इतना पवित्र था कि उसमें कभी भी किसी वर्ग के प्रति द्वेष प्रवेश नहीं कर पाया। उन्होंने प्रत्येक वर्ग को यथोचित सम्मान दिया।

प्रतिदिन नयी सूचनाओं को प्रदान करने वाले विचरणशील, उत्तम और प्रिय आर्यभट्ट उपग्रह को अन्तरिक्ष में भेजकर भारत को समुन्नत किया गया।

कवि कहता है कि हे सौएयदामिनि। तुम्हारे द्वारा मरूस्थल में जो शक्तिसूचक, आश्चर्यजनक परमाणु परीक्षण किया गया, उससे भारत सम्पूर्ण संसार में गौरव को प्राप्त हो रहा है।[१]

इन्दिरा जी भारतभूमि को सुदृढ़ बनाने के लिये, विपत्ति को दूर करने वाली सुख देने वाली अत्यन्त लाभदायक अत्यन्त क्षणिक इस आपात स्थिति को समस्त भारत में घोषित किया।

यह इन्दिरा जी का ही शासनकाल था जब भारत में मार्ग कल्याण, घर में तेज, बाजार में विनम्रता, कार्य में दक्षता, सूर्य के समान तीव्रता, सब जगह सौम्यता तथा भत्यता थी।

भारत में तुम्हारे उत्कृष्ट शासन के अन्तर्गत बाजार में मूल्य में न्यूनता, जनमानस मे छल का अभाव, दुष्टों की दरिद्रता और सर्वत्र जाति विहीनता हो गयी।[२]

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *अणुपरीक्षणं शक्तिसूचकं,*
कृतमहो त्वया यन्मरूस्थले ।
अयि सुसौरव्यदे! तेन भारतं,
भुवनमण्डले गौरवायते ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ५६)

२. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *भवति हाटके मूल्यन्यूनता,*
जनमनस्सु वै छद्मशून्यता ।
तव सुशासने दुष्टदीनता,
भवति भारते जातिहीनता ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ६५)

ये इन्दिरा जी का ही शासनकाल था जब भारत से मलिनता, ढीलापन, काठिन्य, कंजूसी, धूर्तता ओर नीचता जैसी बुराईयां दूर चली गयीं।

किसान जो कि बहुत दुखी थे, उनकी स्थिति अत्यन्त ही दयनीय थी। ऐसे किसानों को उन्होने भूमिस्वामी बनाया। जो इनकी कुटजता को प्रकट करता है।

कृषि कार्य में लगे भूमिहीन दुखी किसानों को तुमने भूमिस्वामी बनाया। हे कृपापरायणे। ये कार्य तुम्हारे परमार्थी व्यक्तित्व को प्रकट करते हैं।[१]

उस समय दूल्हा खरीदने की भी प्रथा थी। लड़की का पिता पहले दूल्हा खरीदता था जिससे अनेक समस्यायें उत्पन्न हुयीं। इसका इन्होंने तीव्रता से दमन किया।

हे मंगलकारिणी! विवाह के समय विघ्न बढ़ाने वाली, पुत्री को कष्ट पहुंचाने वाली और अत्यन्त दूषित (लड़की के पिता द्वारा) दूल्हा खरीदने की प्रथा इस समय तुमने बन्द की।[२]

कवि इन्दिरा जी की प्रशंसा करते हुये कहता है कि प्रभु के चिन्तन में क्षतचित्त, गुणवती, गुणीजनों के द्वारा मान्य, सत्य बोलने वाली, लोककल्याण चाहने वाली, सम्मान बढ़ाने वाली और जनता द्वारा पूजित वह इन्दिरा विजय प्राप्त करे।

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** – *कृषिरताश्च हा भूमिवंचिताः,*
कृषकमानवाः दुःखपीडिताः ।
अयि कृपापरे! भूमिसंयुताः,
प्रकट्यन्त्यमी ते कृतार्थताम् ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ७०)

२. ***प्रियदर्शिनीयम्*** – *परिणयक्षणे विघ्नवर्द्धिनी,*
दुहितृकष्टदा चातिदूषिता ।
क्रयणपद्धतिः साम्प्रतं त्वया,
वरजनस्य सा नाशिता शुभे ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ७१)

भारत के गौरव को बढ़ाने वाली इन्दिरा जी की जितनी भी प्रशंसा की जाये वह कम है। जनमानस को नई राह दिखाने वाले एक सच्ची समाजसेविका के रूप में हमारे सामने जो नाम आता है वह है इन्दिरा जी। जिनका शुभ यश से समूचा गगनमण्डल शोभायमान है।

वायु के वेग के समान प्रतिपल तीव्र चलने वाली तुम्हारी बुद्धि की गति विद्वान भी नही जान पाते हैं। किन्तु आश्चर्य है कि तीव्र गति वाली बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्मरूपिणी है। जो सबको अचम्भित करने वाली है।[1]

दूसरे देशों के शासक भी इन्दिरा की कुशाग्र बुद्धि को देखकर इनको श्रद्धा से प्रणाम करते हैं।

इन्दिरा का जीवन बचपन से ही त्याग और बलिदान में बीता है। इन्हें त्याग की मूर्ति भी कहा गया है। एक अन्य श्लोक के माध्यम से इनके त्याग को प्रदर्शित किया गया है।

जिसके द्वारा अपनी समस्त सुख सम्पत्ति का त्याग किया गया और अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कई प्रकार से लोक कल्याण के कार्य सम्पन्न किये गये। ऐसी त्याग की मूर्तिमति इन्दिरा सदा विजय प्राप्त करे।[2]

कहा भी गया है कि जिसे बचपन से संस्कारों की धरोहर मिली हो। वह कभी भी असत्य आचरण नहीं कर सकता। ऐसा ही इन्दिरा जी के साथ भी हुआ।

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *प्रतिपलं चलद् वायुवेगवत्,*
मतिगतिर्न ते ज्ञायते बुधैः ।
द्रुततरा तथा सूक्ष्मरूपिणी,
मतिरहो महाश्यर्चकारिणी ।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ७६)

२. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *सकलसम्पदस्त्यागतो यया,*
बहुविद्याः जगन्मंगलकियाः ।
परमहर्षतः सर्वदाकृता,
जयतु सेन्दिरा त्याग शोभिता ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ८०)

तभी तो वह लोगों को अपार प्रेम ओर श्रद्धा देती थीं। कवि कहता है-

वृद्धों की सेवा करने वाली, राष्ट्र की शोभा, लालित्य प्रश्रम देने वाली, शक्तिशालिनी, गिरे हुये को चलाने वाली, दुष्टों का संहार करने वाली, पुण्यशालिनी वह इन्दिरा विजय प्राप्त करे।

उनके व्यवहार और सत्याचारण को देखकर बुद्धि भी उनको बार बार प्रणाम करता है। और उनकी उपमा भी दिया करता है-

जनता के पालन में विष्णुरूपिणी लक्ष्मी के समान, परिवर्तन में रूद्ररूपिणी देवी के समान, निर्बलों की रक्षा करने में माता के समान, विविध सद्रूपों वाली इन्दिरा विजय प्राप्त करें।[1]

जिस प्रकार सूर्य प्राणिमात्र को तपन में समानता प्रदर्शित करता है तथा वर्षा भी वर्षण में समानता प्रदर्शित करती है, क्या यह उनका स्वाभाविक धर्म नहीं है अर्थात है। हे जननि! उसी तरह इस भूमि पर हमेशा सबको अभीष्ट प्रदान करने वाली आपकी कृपा भी है।[2]

इन्दिरा जी के मन में सागर के समान अगाधता है, हृदय में पर्वत के समान ऊंचाई और क्रियाशीलता में विद्युत के समान गति है।

---

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *भुवनपालने विष्णुरूपिणी,*
लयकरक्षणे रूद्ररूपिणी ।
अबलरक्षणे मातृरूपिणी,
जयतु सेन्दिरा चित्ररूपिणी ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ८६)

१. ***प्रियदर्शिनीयम्*** - *तपनतापने वर्षणेऽथवा,*
प्रकृतितोअस्ति किं नो समानता ।
तव कृपापि भो विद्यते तथा,
जननि! सर्वदा सर्वदा क्षितौ ।।
(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० ६१)

भाषा-शैली -

कीर्तिखण्ड की भाषा सरल, सरस तथा सुबोध है। श्रीकृष्ण सेनवाल जी ने भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया है। सेमवाल जी का संस्कृत भाषा पर असाधारण अधिकार है। इन्दिरा जी की प्रशंसा में लिखे गये माधुर्य, ओज एवं प्रसारगुणपूर्ण श्लोकों ने कीर्तिखण्ड को और भी उत्कृष्ट बना दिया है।

कवि ने पद्यों में रीतियों को भी विशिष्ट स्थान दिया है। पदों के नेय या संगठन को रीति कहते है। वह अंगस्थान की तरह मानी जाती हैं। जैसे पुरुष की देह का संगठन होता है। उसी प्रकार काव्यों के देहरूपी शब्दों और अर्थो का भी संगठन होता है। इसी संगठन को रीति कहते है। रीति चार प्रकार की होती है। गौड़ी, पांचाली, वैदर्भी, और लाटी परन्तु सेमवाल जी द्वारा रचित कीर्तिखण्ड में वैदर्भी और गौड़ी रीति के ही स्पष्टता दर्शन होते है।

सर्वप्रथम हम गुणों पर प्रकाश डालते है। आचार्य मम्मट ने गुणों के स्वरूप को समुद्घाटित करते हुये लिखा है -

"ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।
उत्कर्ष हेतवस्ते स्युश्चलास्थितयो गुणाः।।" (काव्य प्रकाश, ८/८७)

अर्थात् आत्मा के शौर्यादि धर्मो के समान मुख्य रस के जो अपरिहार्य तथा उत्कर्षधायक धर्म है, वे गुण कहलाते है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुये श्रीकृष्ण सेमवाल जी ने अपने काव्य में गुणों को पर्याप्त स्थान दिया है। मम्मट के अनुसार प्रसाद गुण का लक्षण इस प्रकार है -

"शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थिति।।" (काव्य प्रकाश, ८/६४)

अर्थात् जिस वर्ण समास अथवा रचना के श्रवण मात्र से ही अर्थ की प्रतीति हो जाये, वह सभी रचनाओं में रहने वाला तत्व प्रसादगुण का व्यंजक तत्व कहलाता है।

उदाहरण १- *परमपण्डिताच्छास्त्रपारगात्,*
अधिगतो यया ज्ञानसञ्चयः।
निपुणता त्वंया प्रापि नीतिषु,
प्रखरता मतौ चैव सत्वरम्।।

(प्रियदर्शिनीयम्, शलोक सं० १५)

इस पद्य में प्रसाद गुण तथा वैदर्भी रीति है।

श्री विश्वनाथ कविराज कृत वैदर्भी रीति का लक्षण इस प्रकार है।

"माधुर्यव्यञ्जकवर्णो रचना ललितात्मिका।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भीरीति रिष्यते।।"

माधुर्य व्यंञ्जक वर्णो के द्वारा की हुई समासरहित अथवा छोटे-छोटे समासों से युक्त मनोहर रचना को वैदर्भी रीति कहते है।

प्रसाद गुण एवं वैदर्भी रीति से युक्त एक अन्य उदाहरण देखिये-

उदाहरण-२ *नयविदः पितुः प्रेमतो यया,*
निखिलनीतियः शिक्षिताः पुराः।
भ्रमणकारिणी विश्वमण्डले
नयविदुत्तमां तां नमाम्यहम्।।

(प्रियदर्शिनीयम्,कीर्तिखण्ड श्लोक सं० २४)

आचार्य मम्मट के अनुसार माधुर्य गुण का लक्षण इस प्रकार है-

"आह्लादकत्वं माधुर्य श्रृंगारे द्रुतिकारणम्।"

(काव्य प्रकाश, ८/६०)

चित्त की द्रति का कारण आह्लादकत्व या आनन्दस्वरूपता माधुर्य गुण है, और वह श्रृंगार रस में रहता है। इस प्रकार माधुर्य गुण करुण, विप्रलम्भ, श्रृंगार और शान्तरस में उत्तरोत्तर चमत्कारजनक होता है।

माधुर्यगुण के व्यञ्जक तत्व -

"मूर्ध्नि वर्गान्त्यगाः स्पर्शा अटवर्गा रणौ लघु।
आवृत्तिर्मध्यवृत्तिर्वा माधुर्ये घटना तथा।।"

(काव्य प्रकाश, ८/६६)

अर्थात ट, ठ, ड, ढ से रहित क से लेकर म पर्यन्त समस्त स्पर्श संज्ञक वर्ण से युक्त तथा ह्रस्व से व्यवहित रेफ और ठाकार, समास रहित एवं ञ्वल्प समास से युक्त तथा अन्य पदों के साथ योग से माधुर्य रचना, माधुर्य गुण क`व्यञ्जक तत्व होते है।

उदाहरण-१ *सरलशैशवं चञ्चलं प्रियं,*
सुखमये यदंकेऽतिपावने।
परमनायि किं तन्मृतिश्य ते,
परमकष्टदा नात्र संशयः।।"

(प्रियदर्शिनीयम्, श्लोक सं०-२०)

इस पद्य में वैदर्भीरीति है।

उदाहरण- *विबुधमन्दिरं विद्वदाश्रयं,*

विमलभारत श्चतिशोभनम्।

सुखमयं दृढं धान्यसंयुतं,

कृतमहो त्वयास्वार्थकर्मभिः।।"

(प्रियदर्शिनीयम्, श्लोक सं०-३५)

इस पद्य में वैदर्भीरीति है।

ओजगुण के व्यञ्जक तत्व - काव्य प्रकाश पर आचार्य मम्मट के द्वारा ओजगुण का लक्षण इस प्रकार निर्धारित किया है।

"योग आद्यतृतीयाभ्यामन्त्ययो रेण तुल्ययोः।

टादिः शषौ वृत्ति दैर्ध्य गुम्फ उद्धत ओजसि।।"

(काव्यप्रकाश, ८/१००)

वर्गो के प्रथम और तृतीय वर्णो के साथ अन्तिम अर्थात् द्वितीय एवं चतुर्थ वर्णो का रेफ के साथ नीचे-ऊपर अथवा दोनों जगह जिस किसी वर्ण का तथा दो तुल्य वर्णो का उसका उसी के साथ संयोग णकार को छोड़कर टवर्ग का प्रयोग और शकार वकार वर्ण दीर्ध समास तथा विकट रचनाएं ओजगुण के व्यंञ्जक होते है।

उदाहरण- *अतुलकमर्भिः सौम्यवृत्तिभिः,*

सुदृढनिश्चयैः कूटनीतिभिः।

विफलिताः कृताः शत्रवो यया,

विजयतां सदा धीमतीन्दिरा।।

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-४१)

इस पद्य में गौड़ी रीति है जिसका लक्षण इस प्रकार है -

"ओज प्रकाशकैर्वर्णैबन्ध आडम्बरः पुनः।"

(साहित्यिदर्पण, ६/३)

ओज को प्रकाशित करने वाले कठिन बन्धों से बनाये हुये अधिक समासों से युक्त उद्धत बन्ध को गौड़ी रीति कहते है।

उदाहरण-२ *सितशरीरिणां द्रोहकारणात्*

मुहुरयादियं कृष्णमन्दिरं।

विचलिता न तु क्रान्तिभास्वती,

स्थिररसा घृति र्भाति ते हि सा।।

(प्रियदर्शिनीयम्, कीर्तिखण्ड, श्लोक सं० १८)

छन्द-

कीर्तिखण्ड को इन्दिराछन्द में निबद्ध किया है। इस छन्द के माध्यम से काव्य की शोभा और भी विस्तार को प्राप्त हुई है।

उदाहरण- *"जनहिते रतात् भारतप्रियात्,*

बुधवरार्चिताच्छ्दीजवाहरात्।

बहुविधाः विधाः देशरक्षिका-

अधिगतास्त्वया बाल्यजीवने।।"

(इन्दिरा छन्द, कीर्तिखण्ड)

उदाहरण- *"गुणवती प्रभोचिन्तने रता,*

गुणिगणार्चिता सत्यवादिनी।

जनहितार्थिनी मानवर्द्धिनी,

जयतु सेन्दिरा लोकपूजिता।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-७४)

अलंकार -

अलंकारों के प्रयोग में कवि ने अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है।

अलंकारों को परिभाषित करते हुये आचार्य मम्मट लिखते हैं -

"उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्द्वारेण जातुचित्।

हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।"

(काव्यप्रकाश, नवम उल्लास)

अर्थात् जो धर्म शब्द और अर्थ रूप अंग के द्वारा इसमें विद्यमान अंगी (रस) को कभी-कभी अलंकृत करते है, वे अनुप्रास, उपमा मादि हार आदि के समान अलंकार कहे जाते है। कीर्तिखण्ड में अलंकारों की अनुपम छटा बिखेरी

गयी है।

अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार इस प्रकार है -

अनुप्रास - *"विपिन वाटिका पुष्पभूषिते,*
गिरिगुहागुरुग्रामर्विते।
सरससागरागारराजिते,
मधुरिमाञ्चिते भव्यभारते।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-४)

अनुप्रास अलंकार - *लक्षण*- वर्णसाम्यमनुप्रासः
"स्वरवैसादृश्येऽपि व्यञ्जनसदृशत्वं वर्णसाम्यम्।
रसाद्यनुगतः प्रकृष्टोन्यासोऽनुप्रासः।।"

(काव्यप्रकाश, ६/१०४)

स्वरों की असमानता होने पर व्यञ्जनों की समानता ही वर्णसाम्य है। रसादि के अनुकूल वर्णो का प्रकृष्ट न्यास अनुप्रास है।

विविध-विविध प्रकार के वन वाटिका एवं पुष्पों से सुशोभित पर्वतों गुफाओं एवं श्रेष्ठ गांवों से गौरवान्तिव, जल से परिपूर्ण समुद्रों से विराजित, माधुर्य से परिपूर्ण भारतवर्ष में इन्दिरा गांधी का जन्म हुआ।

यहां पर व, प, ष, ग, स, र, म, भ वर्णो का प्रयोग हुआ है। अतः इसमें अनुप्रास अलंकार है।

उत्प्रेक्षा - *" विधिविधानतः राष्ट्रभूपतेः,*
चयनकर्मणि द्रोहकारिणाम्।
अयि! कृतं त्वया हृत्सु पीडनं,
विजयतां गते श्रीगिरेरिव।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-३७)

उपमा - *"जगति मातृ भूकार्यसाधिका,*
सततहर्षिणी द्रव्यवर्षिणी।
जलधिगर्भतो या रमा-समा,
समजनीन्दिरा मातृकुक्षितः।।"

(श्लोक सं०-८)

संसार में मातृभूमि के मंगलमय कार्यो की साधिका, निरन्तर प्रसन्न रहने वाली, धनधान्य प्रदान करने वाली श्रीमती इन्दिरा गांधी मातृकुक्ष्ज्ञि से समुद्र

से लक्ष्मी के समान उत्पन्न हुई।

प्रस्तुत अवतरण समानता का भाव परिलक्षित हो रहा है। जिस प्रकार समुद्र से लक्ष्मी उत्पन्न हुई। उसी प्रकार लक्ष्मी के समान इन्दिरा जी उत्पन्न हुई। अतः यहां पर उपमा अलंकार है।

रसनिष्पत्ति - लोक में रति आदि स्थायी भावों के जो कारण, कार्य और सहकारी हैं, वे यदि नाट्य और काव्य में प्रयुक्त होते है। तो वे विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव कहे जाते है और उन विभावादि से व्यक्त वह स्थायीभाव रस कहा गया है -

"कारणान्यथ कार्याणि सहकारी यानि च।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः।।
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः।।"

(काव्यप्रकाश- ४/४३)

कविवर श्रीकृष्ण सेमवाल जी ने कीर्तिखण्ड में रसों का संयोजन बड़े ही मनोहारी ढंग से किया है।

करुण रस तथा अद्भुत रस का वर्णन निम्नांकित है -

वीररस - *"सितवपुष्मतां नाशहेतवे,*
रिपुरहस्यभिन्नाम् वानरी।
शिशुजनैर्युता धर्षिणीचमूः,
वयसि नूतने निर्मिता त्वया।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-१३)

तुम्हारे द्वारा बचपन में अंग्रेजों के नाश के उद्देश्य से दुश्मनों के रहस्यों का भेदन करने वाली छोटे बच्चों की वानरी नाम की शत्रुभेदनाशक सेना का निर्माण किया गया।

इसमें इन्दिरा जी का उत्साह परिलक्षित हो रहा है। अतः यहां पर वीर रस है।

करुण रस - *"उपगतो यदा ताशकन्दके,*
सुमनसा सदा शान्तिसेवकः।
परहिते रतः श्रीबहादुरः,
उपरतस्तदा हा जनप्रियः।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-३०)

सर्वदा शान्ति के प्रयासों के लिए क्रियाशील, दूसरों की भलाई में रत, सहृदय श्री लाल बहादुर शास्त्री जब ताशकन्द में सम्मेलनार्थ गये, हाय दुःख है कि लोकप्रिय जनसेवक वहीं दिवंगत हो गये।

करूण रस का स्थायीभाव शोक होता है। अतः यहां पर लाल बहादुर की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया है। इस पद्य में करूण रस है।

अद्भुत रस - *"विबुधमन्दिरं दिहृदाश्रयं,*
विमल भारतस्चातिशोभनम्।
सुखमयं दृढं धान्यसंयुतं,
कृतमहो त्वया स्वार्यकर्मभिः।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-३५)

महो! आश्चर्य है कि तुमने अपने श्रेष्ठ कार्यो के द्वारा भारत को बुद्धिमानों का धाम, विद्वानों का वर्णन आश्रयस्थल, स्वच्छ, अत्यन्त सुशोभित, सुखमय, मजबूत और धनधान्य से सम्पन्न बना दिया।

इसका स्थायीभाव विस्मय है। यहां पर इन्दिरा जी के आश्चर्यजनक कार्यो का वर्णन है। अर्थात् यहां पर अद्भुत रस है।

प्रकृति-चित्रण -

प्रकृति अनादिकाल से मानव की सहचरी रही है। प्रकृति की गोद में बैठकर ही कवि काव्य का सृजन करता है। श्रीकृष्ण सेमवाल जी ने भी कीर्तिखण्ड में प्रकृति के कुछ दृश्यों का मनोहारी चित्रण किया है जो इस प्रकार है -

"विपिनवाटिकापुष्पभूषिते,
गिरिगुहागुरुग्राममार्तित।
सरससागरागारराजिते,
मधुरिमास्चते भव्यभारते।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-४)

विविध प्रकार के वन-वाटिका एवं पुष्पों से सुशोभित पर्वतों, गुफाओं एवं श्रेष्ठ गाँवों से गौरवान्वित, जल से परिपूर्ण, समुद्रों से विराजित, माधुर्य से परिपूर्ण भारतवर्ष में श्रीमती इन्दिरा गाँधी का जन्म हुआ।

एक अन्य श्लोक के माध्यम से प्रकृति के मंगलमय स्वरूप को देखिये-

"गगनचुम्बनोत्कण्ठिते शुभे,
सुललिते वरे चूर्णलेपिते।
जनवराश्रये भव्यतायुते,
भुवनभासितानन्दसद्मनि।।"

(कीर्तिखण्ड, श्लोक सं०-६)

गगन को चुम्बित करने के लिए उत्कण्ठित, मंगलमय, सुललित, श्रेष्ठ सुचूर्णलेलित एवं श्रेष्ठजनों के आश्रय से संसार में देदीप्यमान आनन्दभवन में श्रीमती इन्दिरा गाँधी का जन्म हुआ। सूक्ष्म रूप में दर्शाया गया है।

समीक्षा -

इस प्रकार कीर्तिखण्ड के पूर्वभाग में इन्दिरा के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा-दीक्षा, विवाह, स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने, कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनने, सेना प्रसारण मंत्री एवं उसके बाद प्रधानमंत्री बनने तक की मुख्य घटनाओं का काव्यात्मक सरस वर्णन किया गया है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के इस चमत्कृत कर देने वाले व्यक्तित्व को काव्य शैली में प्रस्तुत करते हुये कवि कहता है। कि अपने प्रधानमंत्रित्व के शासनकाल में इन्दिरा जी ने लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, महात्मा गाँधी आदि आधुनिक राष्ट्रचिन्तकों की आदर्शभूत नीतियों पर चलकर देश का शासन चलाया।

उपरि विवेचन को दृष्टि में रखते हुये ज्ञात होता है कि डा० सेमवाल की विवेच्य काव्य के अन्तर्गत भाषा में अनुपम लालित्य, सारल्य और प्रासादिक प्रवाह सर्वत्र विद्यमान है। वर्ण्य विषयानुकूल सुन्दर छन्दोऽलंकार योजना और सहृदय संवेद्य प्रभावी रसनिष्पत्ति परिलक्षित होती है। समासतः कीर्तिखण्ड, प्रियदर्शिनीयम् काव्यों का साहित्यिक सौष्ठव इन्हें अर्वाचीन संस्कृत के चरितात्मक काव्य कृतियों में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

२ - संघर्ष खण्ड -

काव्य का दूसरा खण्ड संघर्षखण्ड है। ६४ पद्यों के इस लघुखण्ड में कवि ने काव्य नायक इन्दिरा जी की प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया है। इन्दिरा ने लोककल्याण सम्बन्धी योजनाओं को सख्ती से लागू करने के लिये आपातकाल की जो घोषणा की उसमें प्रशासनिक दुरुपयोग से आम जनता का अनेक प्रकार के कष्टों और यातनाओं को सहना पड़ा उसकी लोकतांत्रिक प्रक्रिया यह हुई कि श्रीमती गाँधी और उनकी पार्टी की चुनावों में भारी पराजय हुई। विरोधी पक्ष ने सत्ता में आकर बदले की भावना से इन्दिरा गाँधी को कई तरह से उत्पीड़ित किया और उन्हें बदनाम करने के प्रयत्न किये। इन विपरीत परिस्थितियों में इन्दिरा की निर्मिल कीर्ति धूमिल हुई। देश को अशान्ति के दौरसे गुजरना पड़ा। काव्य नायक के लिये इससे बड़ी आपदा और क्या हो सकती है कि जो अपने पराक्रम से जनता जनार्दन का विश्वास जीत चुकी हो और वही जनता को चुनावों के समय उसके विरुद्ध जनादेश दे दे।

संघर्षखण्ड का प्रारम्भ महाकाल शिव के गरलपान से हुआ है। वैसे भी किसी काव्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगलाचरण आवश्यक माना गया है। इसीलिये कवि ने शिवजी का स्मरण किया है। विविधताओं से युक्त लोकरजक, दलितपोषक, इन्दिरा का नेतृत्व तथा भारतराष्ट्र की पहचान मानो दोनों की बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से विषपान की प्रक्रिया से गुजर रहे हों।

कमल के समान निर्मल, शान्ति प्रदान करने वाले, विविधताओं से युक्त, संसार का रञ्जन करने वाले, दलितों के पालनकर्ता, हर्ष के दाता, विष पीने वाले प्रिय शंकर को मैं नमस्कार करता हूँ।[1]

इस प्रकार कवि ने भगवान शंकर की स्तुति की है। देवी इन्दिरा भी दलितों के उद्धार में निरन्तर प्रयत्नशील रहतीं थीं।

१- **प्रियदर्शनीयम्** - *कमलनिर्मल शान्तिदायकं,*
विविधतायुंत लोकरंजकम्।
दलितपोषकं हर्षदं प्रियं,
गरलपायिनं नौमि शंकरम्।।
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१)

इन्दिरा जी के शासन में सर्वत्र धैर्य, स्थायित्व तथा कार्यो में शीघ्रता दिखाई देती है। देश के सभी कर्मचारी नियम, सदाचार, कर्तव्य बोध से युक्त और प्रसन्नचित्त दिखाई देते है।

जनता इन्दिरा जी एवं उनकी कार्यप्रणाली को देखकर अत्यन्त प्रसन्न थी -

सामान्य जनता इस प्रकार की कार्यपद्धति को देखकर प्रसन्नता से श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति निरन्तर अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है।[1]

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो उनकी कार्यप्रणाली के प्रति ईर्ष्याभाव रखते थे। भारत में शान्ति, सौरुय और विकास देखकर विपक्षी लोग बैचेन हो गये थे। उन्होने कई प्रकार के कुप्रचार भी किये -

उस समय उन विरोधियों के द्वारा नाना प्रकार के कुप्रचार दूषित क्रिया कलाप, दुर्व्यवहार और छझवृत्ति से विरोध किया गया।[2]

विरोधियों के इस प्रदर्शन से लोग भयभीत हो गये। इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है कि विद्यालयों में परिवार-नियोजन के प्रति उनके द्वारा पूर्णरूप से छात्र भयभीत किये गये।

विरोधियों के द्वारा कुछ ऐसी अफवाहें फैलाई गई कि भारत में सर्वत्र विद्यालयों में सर्वदा स्वास्थवर्धन हेतु छात्रों को जो औषधि दी जाती है। उस औषधि से सभी बालक नपुंसक हो जायेगें। इससे वह विद्यालय जाने से भी डरने

१- **प्रियदर्शनीयम् -** *" सामान्यजनता हृष्टा,*
दृष्ट्वैवं कार्यपद्धतिम्।
इन्दिरा प्रति कातृज्ञं,
प्रकटयन्ति पुनः पुनः।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५)

२- **प्रियदर्शनीयम् -** *"विविधैः दुष्प्रचारैश्च,*
क्रियभिः वृत्तिभिस्तथा।
विरोधो विहितो नित्यं,
छद्मवृत्या तु तैस्तदा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-७)

लगे। कवि कहता है कि -

इससे छात्र विद्यालय जाने के लिये उद्यत नही हुए इससे बढ़कर आश्चर्य अन्य क्या हो सकता है? इस प्रकार के समाचार को सुनकर सभी बुद्धिजीवनी लोग चिन्तित हो गये।[1]

जो योजना लोगों के हित के लिये लागू की गयी थी। वही लोगों को अहितकर लग रही थी। इस कल्याणकारी योजना को विरोधियों ने किस प्रकार अकल्याणकारी बना दिया। बुद्धिजीवी लोगों के मस्तिष्क में यही प्रश्न उठ रहा था कि सत्यवादी हरिश्चन्द्र के देश में यह क्या हो रहा है?

उन विरोधियों के द्वारा उस समय न केवल इस प्रकार कुप्रचार किया गया अपितु (कपटपूर्ण) हृदय से उनके द्वारा तुरन्त अन्य कार्य भी किये गये। यथा-

इस शासन के द्वारा विद्यालयों में छात्रों को निश्चित रूप से पुंसत्व के नाश करने लिये पैर के नीचे सुई द्वारा औषधि दी जा रही है।[2]

इस अप्रिय समाचार को सुनकर उस समय भारत में सर्वत्र माता-पिता और सम्बन्धी भयभीत हो गये।

इन सब कुप्रचारों से इन्दिरा जी तनिक भी भयभीत नही हुई और देश में शुद्ध एवं स्वच्छ शासन हो इस भावना को हृदय में धारण करके इन्दिरा ने

१- ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" गन्तुं हि नोद्यताः बालाः,*
किमाश्चर्यमतः परम्।
इत्थं वृतं निशम्यात्र,
बुधाः सर्वेऽपि चिन्तिताः।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१२)

२- ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" शालासु शासन ञ्चैतत्,*
क्लैव्यसम्पादनाय हि।
पादातलौषधं तेभ्यः,
सूचिकया प्रदीयते।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१६)

तुरन्त भारत शासन के उच्चाधिकारियों पर अपना नियंत्रण किया। जब भी कोई दुःखी सहायता के लिये उनके पास ज़ाता। वह उसकी यथा सम्भव सहायता करतीं।

उनके इस तरह के व्यवहार को देखकर कुछ लोग उनसे ईर्ष्याभाव रखने लगे और -

धूर्त और दुष्ट अधिकारियों के द्वारा श्रीमती इन्दिरा गाँधी के लोककल्याणकारी निर्णय का विपरीत अर्थ लेकर शासकों द्वारा दण्डित किया गया।[1]

सत्ता के केन्द्रीभूत होने पर दल में सामान्य नेताओं के द्वारा उस समय सत्ता का अनुचित उपयोग किया गया। इन नेताओं ने राजनीति से दूर जो अपने व्यक्तिगत विरोधी थे उनको भी व्यक्तिगत बैर के कारण जेल में डलवा दिया। कुछ लोगों ने तो -

भ्रष्ट, रिष्वतखोरी में लिप्त अधिकारियों के साथ शीघ्र ही दुष्ट, लुटेरे एवं विपक्षी आदि सभी ने कांग्रेस की राष्ट्रीय पोशाक खादी के वस्त्र पहन लिये।[2]

इस प्रकार सभी व्यक्ति खादी के वस्त्रों को पहनकर कांग्रेस दल में अन्तर्भूत हो गये।

विरोधियों के द्वारा इस प्रकार का प्रचार भी किया गया कि देश में कभी चुनाव नही होगा। परन्तु उनके इस प्रचार का इन्दिरा जी पर कोई प्रभाव

१- ***प्रियदर्शनीयम् -*** *" परं धूर्तैश्च दुष्टैश्च,*
तत्रापि शासकैः कृतः।
निर्णयः प्रतिकूलो हा,
तज्जनं प्रति सत्वरम्।।
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-२०)

२- ***प्रियदर्शनीयम् -*** *"भ्रष्टैरुत्कोचसंलिप्तैः,*
शासकैः सह सत्वरम्।
दुष्टाश्च लुण्ठकाः सर्वैः,
प्रतिपक्षिजनास्तदा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-२३)

नही पड़ा। उन्होने निश्चित समय पर देश का चुनाव घोषित करके उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया। इस चुनाव में इन्दिरा गाँधी के विरोध के लिए अलग-अलग विचारों और मतों के सभी दल एक होकर सामने आये।

विपक्षी दल के लोगों के कुप्रचारों का प्रभाव इन्दिरा जी के राजनैतिक जीवन पर पड़ा और वह अपने दल के साथ ही पराजित हो गयीं। परन्तु उनकी विनम्रता तो देखिये कि वह -

शीघ्र ही श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने देश के जनादेश को हृदय से स्वीकार कर प्रेमपूर्वक प्रसन्न हृदय से सत्ता विपक्ष को सौंप दी।[१]

इस पद्य के माध्यम से इन्दिरा जी का बड़प्पन प्रदर्शित हो रहा है। इससे पता चलता है कि उनके हृदय में किसी भी प्रकार का कोई द्वेष नही था। प्रशासन से मुक्त हो जाने पर उन्होंने आत्मचिन्तन किया और विनम्रतापूर्वक जनता की सेवा का व्रत लिया।

उस समय जननी इन्दिरा प्रतिदिन बारम्बार प्रभु का चिन्तन कर पुनः देश में जनता की सेवा के लिए हृदय से तत्पर हुई।[२]

उन्हें इस बात का कोई दुख नही था कि लोंगों ने उन्हें पराजित किया। बल्कि दुःख इस बात का था कि लोग उन्हें न समझकर विरोधियों की बात पर विश्वास कर रहे थे।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"जनादेशं स्वदेशस्य,*
तया स्वीकृत्य सत्वरम्।
सत्ता समर्पिता प्रेम्णा,
विपक्षाय मुदा हृदा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-३२)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" प्रतिदिनं प्रभुचिन्तन-चिन्तनं,*
पुनरहो पुनरेव विधाय सा।
जनसमर्चनतच्परतां गता,
भुवि हृदैव तदा जननीन्दिरा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-३४)

फिर भी वह अपने आवास पर रात-दिन श्रद्धादिभावों से युक्त होकर लोक-कल्याण के कार्यो में प्रवृत्त हो गयी। उनके कार्य की निष्ठा को देखकर विपक्षी लोग उनको विभिन्न दुष्कृत्यों के द्वारा पीड़ा देने के लिये तत्पर हुये। लेकिन उनका धैर्य इतना अटूट था कि वह तनिक भी विचलित नही हुई। वह धैर्य की मूर्ति थीं -

उन सब (विपक्षियों) के द्वारा प्रतिशोधपरक वृत्ति से प्रताड़ित वह धैर्यशालिनी इन्दिरा फिर भी विलित नही हुई। इस (इन्दिरा) की घृति अद्‌भुत दिखाई देती है।[1]

दुष्ट शासकों ने इन्दिरा गाँधी के विरोध में असत्य आरोपों को एकत्रित कर कारागार में डालने का प्रयास किया। लेकिन जब जनसामान्य ने यह समाचार सुना और देखा तो वह विचलित हो गयी।

विविध आक्षेपों को भी धैर्य से, प्रसन्नता से सुनकर श्रीमती इन्दिरा गाँधी लोक सेवा रूपी अर्चना के लिए निष्ठा से तत्पर हुई।[2]

यह उनका लोगों के प्रति अनुराग ही था। जिससे वह साहसपूर्वक अपने कार्यो को अन्जाम दे रहीं थीं। लेकिन सत्तारूढ़ शासक निरन्तर सत्ता के लोभों से युक्त होकर स्वार्थ, मोह और धन के आकर्षण में परस्पर युद्ध के इच्छुक हो गये।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"प्रतिशोध परायणैस्तदा,*
सकलैः तैश्च विताडितेन्दिरा।
चलिता न तदापि सा दृढा,
धृतिरस्याः परिवीक्ष्यतेऽद्‌भुताः।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-३७)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *'आक्षेपान् विविधान चापि,*
धृत्या श्रुत्वेन्दिरा मुदा।
लोकसेवार्चनासक्ता,
निष्ठयाऽभवदिन्दिरा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-४१)

कुछ नेताओं ने जो लोभरूपी पाश के बन्धनों से युक्त थे। उन्होंने अपनी एक अलग पार्टी (जनता पार्टी) का गठन किया। परस्पर कलह से आक्रान्त अपने अपने स्वार्थ से व्याकुल उन शासकों ने सत्ता के सुख की प्राप्ति के लिए जनता को भी भुला दिया और जनता की सेवा को छोड़कर उस समय वे सभी शासक हृदय से अपने दल के लाभ के लिए निरन्तर प्रयासरत हो गये।

उस समय देश में सर्वतोभावेन पूर्णरूप से शासकों के कुकर्मी के द्वारा सर्वत्र अव्यवस्था हो गई।[१]

वैसे भी इन क्रूर शासकों का कार्य देश को हित पहुंचाना नहीं था, बल्कि देश में अशान्ति फैलाना था। मौन भाव से रहने वाली श्रीमती इन्दिरा गाँधी (देश की) इस दशा को देखकर राष्ट्रसेवा के व्रत भाव से पूर्ण होकर सक्रिय हो गयी। जनता के दुःख का विनाश करने के लिये वह भारतभूमि पर घूमती हुई जनता की दशा को देखकर अत्यन्त दुखी हुई। एक अन्य छन्द के माध्यम से कवि कहता है -

जनता के कल्याण के लिए घूमती हुई वह कहीं विहार में कहीं बंगाल में, कहीं उडीसा में, तो कहीं केरल में , कभी उत्तर में तो कभी दक्षिण में (जाती) थी।[२]

---

१. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *" अव्यवस्था तदा देशे,*
सर्वभावेन सर्वतः।
सञ्जाता किल सर्वत्र,
शासकानां कुकुर्मभिः।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-४७)

२. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *" क्वचिद् विहारे क्वचिदुत्कले वा,*
क्वचिच्च बंगेष्वथ केरले वा।
तथोत्तरेवापि च दक्षिणेऽपि,
परिभ्रमन्ती जनताहिताय।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५०)

विभिन्न भावों पर आधारित एकता नश्वर होती है, आश्चर्य है कि बाद में सत्ता में रहते हुए भी वे परस्पर कलह करते हैं। इस प्रकार जब व सोचतीं तो उनका हृदय बड़ा दुखी होता। जब भारत में लोभी नेताओं का शासन था तब भारत की उन्नति सब ओर से अवरुद्ध हो गयी, जिससे जनता शासन के प्रति नाराज हो गयी। इसका प्रभाव यह हुआ कि -

श्रीमती इन्दिरा गाँधी की कूटनीति और उनकी धैर्यवृत्ति के द्वारा थोड़े ही समय में यह सरकार भंग हो गयी।[1]

वैसे भी बुराई का अन्त तुरन्त हो जाता है। और अच्छाई हमेशा ही बुराई पर विजय प्राप्त करती है। अकस्मात् ही इस देश में पुनः व्ययकारी चुनाव हो गया जिससे जनता पुनः नाराज हो गयी।

इन्दिरा जी ने पुनः जनता का अत्यधिक स्नेह अर्जित किया, उसके बाद शीघ्र ही वह भारत में सत्तासीन हो गयी।

ईश्वर के चरणों की कृपा ओर प्रजा के विश्वास जनित भावों से पौनः पुन्येन जनता की सेवा के लिए यह प्रसन्नहृदया नयी आशा का संचार करने के लिए तुरन्त ही भारत देश में शासनारूढ़ हो गयीं।[2]

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" इन्दिरा कूटनीत्या च,*
धैर्यवृत्या तथैव च।
अल्पीयसैव कालेन,
सत्ता होषा विखण्डिता।।
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५३)

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** -
" प्रभुचरण कृपाभिः विश्वविश्वासभावैः,
पुनरपि पुनरेवं लोकसंराधनाय।
भरतभुविनवाशां सम्प्रदातुं हि सघः,
प्रभुदितमनसेयं शासनाधिढिठ्ताभूत्।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५६)

जनता इन्दिरा जी को सत्तारूढ़ देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुई जिस प्रकार घने जंगलों में निवास करने के पश्चात श्री रामचन्द्र के अयोध्या आने पर जैसी स्तुति वहां के नागरिकों द्वारा की गयी। वैसे ही भावपूर्ण हृदय से, स्नेह और भक्ति से इस इन्दिरा गाँधी की स्तुति विजय प्राप्ति कर जनता द्वारा की गयी है।[1]

मनुष्यों ने नाना प्रकार के पुष्प गुच्छों द्वारा धूप दीपादि के द्वारा शीघ्र ही नवीन-नवीन पद्धति के द्वारा प्रसन्न हृदय से उनका स्वागत किया। जिस शासन को भृष्ट नेताओं ने शिथिल कर दिया था उसे नियन्त्रित करने के लिए उन्होने अनेक स्तर पर प्रयास किये। उन्होने विभिन्न उद्योग स्थापित किये। कवि कहता है -

शिक्षा तथा अन्य सभी क्षेत्रों के विकास में रहत माननीय इन्दिरा को मै मन और वाणी से प्रणाम करता हूँ।[2]

भारतवर्ष एक बार पुनः उन्नति की ओर अग्रसर हो गया तथा भारतवर्ष के अद्भुत विकास को देखकर लोग विचलित हो गये।

इस प्रकार इन्दिरा जी के नितत् संघर्ष से भारतवर्ष पुनः जीवित हो उठा। मानव की आशायें जाग्रत हो गयी तथा उनमें उत्साह भर गया। परन्तु दुःख की बात है। कि विदेश से लगे कुछ सीमाक्षेत्रों मे विभिन्न प्रयासों से अशान्ति उत्पन्न की गयी। उसी के कारण इन्दिरा जी की मृत्यु हो गयी।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" सघनवननिवासा दागते रामचन्द्रे*
स्तुतिरतिमधुरा या नागरैः तत्र पुयमि।
सहृदयहृदयेन स्नेहतो भक्तितोऽपि,
तदनुसरणमस्यै चन्दिरायै कृतं हि।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५७)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" शिक्षाक्षेत्रे तथान्यत्र,*
सर्वत्र प्रगतौ रताम्।
सुमान्यामिन्दिरां नौमि,
मनसा वचसाप्यहम्।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-६१)

भाषा-शैली-

संघर्षखण्ड की भाषा प्रवाहमयी तथा मानव मन को उद्वेलित करने वाली है। इन्दिरा जी के संघर्षपूर्ण जीवन को कवि ने अपनी शैली से चमत्कृत रूप प्रदान किया है। कवि ने भावप्रधान शैली की सहायता से इस खण्ड को और भी जीवंत बना दिया है। मानव मन सहसा ही इस ओर आकृष्ट हो जाता है। इस खण्ड में ओजगुण, मार्धुय गुण ता प्रसाद गुण का सर्वताभावेन प्रयोग हुआ है। इनके उदाहरण निम्नांकित है।

ओज गुण- *" प्रतिशोध परायणै स्तदा,*
सकलैः तैश्च विताडितेन्दिरा।
चलिता न तदापि सा दृढ़ा,
धृतिरस्याः परिवीक्ष्यतेऽदभुता।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-३७)

इस श्लोक मे सर्वत्र ओजगुण प्रवाहित हो रहा हैं। विपक्षी नेताओं के द्वारा प्रतिशोधपरक वृत्ति से प्रताड़ित वह विचलित नहीं हुई। इस पद्य में गौड़ी रीति है।

प्रसाद गुण- *"इन्दिराशासने मित्र,*
धीरता दृढ़ता तथा।
कार्येषु द्रुततापयंत्र,
सर्वत्र समवेक्ष्यते।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-०३)

इसमें वैदीर्भी रीति है।

माधुर्य गुण- *" शुद्धं सुशसनं भूयात्,*
मनसि भावनामिनाम्।
रंचिन्त्य शासकाः देव्या,
तदा नीता नियन्त्रणम्।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१८)

इस पद्य में माधुर्य गुण स्पष्टतया दृष्टिगोचर हो रहा है एवं इस पद्य में वैदर्भी रीति है।

छन्द -

इस खण्ड को अनुष्टुप छन्द में निबद्ध किया गया है।

लक्षण - *" श्लोक षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चयम्।*
द्विचतुष्पादयो कस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।"

जिस छन्द के चारों चरणों में पंचम अक्षर लघु तथा षष्ठ अक्षर गुरू होता है, दूसरे तथा चौथे चरण मे सप्तम अक्षर हृस्व होता हैं, ओर पहले तथा तीसरे चरण में सप्तम अक्षर दीर्ध होता है, उसको अनुष्टुप छन्द कहते है।

उदाहरण- *" शालासु शासनंचैतत,*
क्लैव्यसम्पादनाय हि।
पादतलौषघं तेभ्यः,
सूचिकया प्रदीयते।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१६)

यहां चारों चरणों के पांचवे वर्ण स, स, व, प्र, लघु है। दूसरे और चौथे का सातवां वर्ण लघु है और चारों चरणों के छठे वर्ण गुरू है इसलिये यह अनुष्टप छन्द का उदाहरण है। जिसका लक्षण इस प्रकार है -

" श्लोक षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चयम्।
द्विचतुष्पादयो कस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।"

उदाहरण- *" परं धूर्तैश्च दुष्टैश्च,*
तत्रापि शासकैः कृतः।
निर्णयः प्रतिकूलो हा,
तज्जनं प्रति सत्वरम्।।"

(अनुष्टप छन्द, संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-२०)

इसमें चारों चरणों के पांचवे वर्ण च, स, ति,ति लघु है। दूसरे और चौथे का सातवां वर्ण कृ, व लघु है और चारों चरणों के छठे वर्ण गुरू है।

अलंकार -

अलंकार काव्य की शोभा है। महर्षि वेदव्यास ने अलंकारों से रहित काव्य को विधवा स्त्री के समान माना है। महाकवि जयदेव का कथन है कि अंलकार से रहित काव्य को स्वीकार करना उसी प्रकार उपहासास्पद है जिस

प्रकार उष्णता से रहित मग्नि को अग्नि मान लेना उपहासास्तद होता है -

"अंगीकरोजि यः काव्यं शब्दार्थावनलङ़ती।

असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।।"

कहने का भाव है कि अलंकार काव्य के ऐसे धर्म हैं जो उसे सुन्दर बनाते है।

इसी परम्परा का निर्वाह करते हुये श्री कृष्ण सेमवाल ने संघर्षखण्ड में अलंकारों का यथास्थान प्रयोग किया है।

इस खण्ड में अनुप्रास, यमक, उत्प्रेक्षा, रुपक अलंकारों का मनोहारी चित्रण है। इनके उदाहरण इस प्रकार है -

अनुप्रास-

"शान्तिं सौख्यं विकासञ्च,

समवीक्ष्य भारते तदा।

प्रतिपक्षिजनाः त्यग्राः,

नानाभावैः निरन्तरम्।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-०६)

इस पद्य मे अनुप्रास अलंकार है। जिसका लक्षण इस प्रकार है -

"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषमेऽनि ?न स्वरस्य यत्"

यमक अलंकार -

उदाहरण- *"प्रतिदिनं प्रभुचिन्तन - चिन्तनं,*

पुनरहो पुनरेव विधाय सा।

जनसमर्चन तत्परतां गता,

भुवि हृदैव तदा जननीन्द्रिरा।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-३४)

उस समय जननी इन्दिरा प्रतिदिन बारम्बार प्रभु का चिन्तन कर पुनः जनता की सेवा के लिए हृदय से तत्पर हुई।

इस श्लोक मे चिन्तन चिन्तन दो बार प्रयुक्त हुआ हैं एवं सार्थक एवं भिन्न अर्थ वाले स्वर व्यंजन समूह की एक क्रम में आवृत्ति हुई है। अतः यमक अलंकार है जिसका लक्षण इस प्रकार है -

"सत्यर्थे प्रथगथमियाः स्वरप्यञ्जसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यनं विनिगद्यते।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-६४)

रस -

इस खण्ड में भयानक, अद्भुत एवं करूण रसों का चित्रण किया गया है।

भयानक रस–

उदाहरण– *" श्रुत्वैतद दुष्करं वृतं,*
सर्वत्र भारते तदा।
माता भीता पिता भीत,
भीतः परिजनस्तथा।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१७)

यह कठोर समाचार सुनकर उस समय भारत में सर्वत्र माता-पिता और सम्बन्धी भयभीत हो गये।

इसमें सर्वत्र भय परिलक्षित हो रहा है। अतः यहां पर भयानक रस है।

अद्भुत रस–

उदाहरण– *" गन्तुं हि नोद्यताः बालाः,*
किमाश्चर्यमतः परम्।
इत्थं वृत्तं निशम्यात्र,
बुधाः सर्वेऽपि चिन्तिताः।।"
(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-१२)

इससे छात्र विद्यालय जाने के लिये उद्यत नहीं हुए इससे बढ़कर आश्चर्य अन्य क्या हो सकता है? इस प्रकार के समाचार को सुनकर सभी बुद्धिजीवी लोग चिन्तित हो गये।

इस प्रकार यहाँ पर विस्मय सर्वत्र विस्मय परिलक्षित हो रहा है। अतः यह अदृभुत रस है।

करुण रस –

उदाहरण– *"सीमाप्रदेशुषु विदशतोऽत्र,*
कृता अशान्तिः विविधैः प्रकल्पैः।
तस्या फलं हन्त विलाम्यध्वं,
मृत्युः विचित्रो जननीन्दिरायाः।।"

यहाँ विदेश से लगे हुए सीमाक्षेत्रों मे विभिन्न प्रयासों से अशान्ति उत्पन्न की गयी, परम दुःख है कि उसी के कारण जननी इन्दिरा की विचित्र दुःखद मृत्यु देखी गयी।

इस श्लोक में करूण रस है। क्योंकि यहाँ पर श्रीमती इन्दिरा जी की मृत्यु का वर्णन किया गया है।

प्रकृति-चित्रण -

कवि ने इस खण्ड को प्रकृति के मानवीय क्रिया कलापों से अछूता नही रखा है; क्योकि अविभाज्य अंग के रूप में प्रकृति के अभाव में सर्वत्र शून्यता का आभास होता है। इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कारक के रूप में प्रकृति का उदाहरण प्रस्तुत पद्य में द्रश्टव्य है -

"विविधकुसुमगुच्छैः धूपदीमादिभिश्च,
निखिल भरतभूमेः मानवैस्तत्क्षणं हि।
अभिनवनवरीत्या मन्त्रगीतादिभिश्च,
कृतमतिमुदितैस्तैः स्वागतं तत्र तस्यै।।"

(संघर्षखण्ड, श्लोक सं०-५८)

नाना प्रकार के पुष्प गुच्छों द्वारा धूप दीपादि के द्वारा समस्त ाारत के मानव मात्र ने शीघ्र ही नवीन-नवीन पद्धति के द्वारा प्रसन्न हृदय से उस इन्दिरा का स्वागत किया।

समीक्षा -

संघर्षखण्ड भी कृति का एक मुख्य तत्व रहा हैं। साहित्य पूर्व का हो या पश्चिम का संघर्ष के बिना कोई भी काव्य चरित्र नायक नही बन सकता। कवि ने राजनैतिक एवं सामाजिक संघर्ष को आधार बनाकर संघर्षखण्ड की रचना की है। संघर्षखण्ड वास्तव में संघर्ष की स्थिति का ही द्योतक है। इस खण्ड में काव्य नायक इन्दिरा अपनी धूमिल कीर्ति को अर्जित करने के लिए संघर्षशील है। कवि ने तटस्थ भाव से आपातकाल की अच्छाईयों और बुराईयें दोनों का मूल्यांकन किया है। आपातकाल में इन्दिरा के द्वारा जो लोकहितकारी कार्य योजनाएं लागू की गई उनकी प्रशंसा की गई है, किन्तु सत्ता के केन्द्रीभूत हो जाने पर दल के जिन नेताओं ने सत्ता का दुरुपयोग किया। उनकी निन्दा भी की गई है। कवि ने

विपक्षी नेताओं की एकता और गठबन्धन सरकार के स्थायित्व की वास्तविकता का रहस्योद्घाटन करते हुये कहा है कि जब-जब भिन्न विचार धाराओं वाले राजनैतिक दल संकीर्ण, स्वार्थवश एक होते है। तो उनकी एकता अस्थायी होती है। सत्तारूढ़ होते ही वे आपस में लड़ना प्रारम्भ कर देते हैं।

आपसी मतभेदों से तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी के सतत् संघर्ष से विपक्षी दलों की जनता पार्टी सरकार अल्पकाल में ही भंग हो गई। नये चुनाव हुए तथा जनता उन्हें पुनः सत्ता में ले आयी। इस प्रकार कई संघर्षो को पारकर श्रीमती गाँधी भारत में एक बार फिर सत्तारूढ़ हो गई। जिस प्रकार रात्रि के गहन अन्धकार के बाद नई सुबह का आरम्भ् होता है। वैसे ही इन्दिरा जी ने देश को नये विकास की प्रकाशमय सुबह प्रदान की ।

३.-महाप्रयाणखण्ड -

श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु से शोकसंतृप्त होकर 'महाप्रयाणखण्ड' की ५३ पद्यों में काव्य रचना की गई है। इस खण्ड के प्रारम्भ में कवि के द्वारा स्नेहिल भाव से इन्दिरा गाँधी को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई है -

संसार की उत्पत्ति, नाश एवं विकास में तत्पर, विश्व के स्वामी, पवित्र, हर्ष, आक्रोश, वियोग एवं शोक के स्थान, सभी प्राणियों के आश्रयभूत एवं शान्तिदाता उस परब्रह्म परमात्मा का ध्यान करते हुये पूजनीया मातृरूपा प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी को मै श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।[1]

इन्दिरा जी की मृत्यु विषयक समाचार को सुनकर कवि शोक के अथाह सागर में डूब जाता है। कवि का शरीर निश्चेतन हो जाता है। और वह सोचने लगता है जिस इन्दिरा ने भारतवर्ष के लिए इतने महत्वपूर्ण कार्य किये। उसे प्रत्यके क्षेत्र मं अग्रसर किया। भारत से गरीबी, बेरोजगारी, महामारी दूर की। आज उसी देश में लोगों के द्वारा उनके प्राण छीन लिये गये। कवि कहता है कि-

हे माँ! तेरी मृत्यु के समाचार की सूचना प्राप्त होने पर मेरी वाणी में गूंगापन, हाथों में शून्यता, बुद्धि मं चञ्जलता और पैरों में स्थिरता आ गयी तथा आँखों में अन्धेरा छा गया, इस प्रकार मेरी समस्त क्रियाविधि निश्चेतन हो गयी।[2]

तमसा नदी के तट पर क्रोंच शिकारी द्वारा निर्मम हत्या से जिस प्रकार वाल्मीकि का शेक श्लोकत्व में उमड़ पड़ा ओर आदिकाव्य रामायण की रचना हुई उसी प्रकार "महाप्रयाणखण्ड" भी "तमसावृत" नेत्रों से लिखा गया है।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *"संसारस्थितिनाशपालनरतं विश्वेश्वरं पावनम्,*
हर्षाक्रोशवियोगशोकनिलयं ध्यात्वा प्रभुं सादरम्।
पूज्यां तां प्रियदर्शिनीं च जननीं नत्वा प्रियामिन्दिरां,
श्रद्धायाः कुसुमाञ्जलिः सुमनसा तस्यै मया दीयते।।"
(महाप्रयाण खण्ड, श्लोक सं०-१)

१. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *"वाणी वाक्य विहीन तामुपगता पाणिक्रिया शून्यतां,*
बुद्धिश्चचलतां गता जननिहे पादौ स्थिरौ संगतौ।
नेत्रे वै तमसावृते प्रतिगते मातर्हतायां त्वयि,
हा हा सर्वविधैव सम्प्रति गता निश्चेतना मे गतिः।।"
(महाप्रयाण खण्ड, श्लोक सं०-२)

मनुष्य तो मनुष्य प्रकृति भी उनकी मृत्यु से सतप्त हुए बिना न रह सकी। चारों तरफ निस्तब्धता छा गई और समस्त वातारवण शोकमय हो गया। कवि कहता है कि -

आकाश मे मलिनता, दिशाओं में नम्रता, पेड़-पौधों में मुर्झायापन, वायु में वक्रता और पृथ्वी में खिन्नता दिखाई दे रही है। अरे! बताओ आज संसार में ऐसा कौन सा अनर्थ हो गया है, जिससे सारी प्रकृति प्रतिकूल दिखाई पड़ती है।[1]

जब कवि इन सब बातों में विचारमग्न था तभी अवरूद्ध कण्ठ से अत्यन्त दुःख एवं खिन्न भाव से धीमी-धीमी एवं त्वरित ध्वनि में आकाशवाणी से कही हुई आवाज सुनी कि किन्ही मूर्ख लोगों ने भारत की गौरवभूत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या कर दी है।

इस समाचार को सुनकर लोग दुःख में डूब गये। उन्हें मानों कोई बड़ा सदमा पहुँचा हो। उनकी माता तथा संरक्षिका उन्हें छोड़कर जा चुकी थी -

इस समाचार को सुनकर समस्त लोगों की आँखों में अन्धेरा छा गया तथा मन को गहरा सदमा पहुँचा और वे आज मेरी माँ इन्दिरा मर गयी हैं ऐसा कहते हुए छाती पीट-पीट कर रोये।[2]

इन्दिरा जी की मृत्यु का समाचार सुनकर कुछ लोग अचेतन होकर जमीन पर लुढ़क गये और कहीं कोई अत्यन्त दुःखी होकर समस्त धैर्य को त्यागकर पागल से हो गये।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"आकाशे परिक्ष्यते मलिनता नम्रा दिशोऽपि ध्रुवम्,*
गम्लानत्वं भुवि पादपादिषु तथा वायोमहावक्रता।
रम्या हा धरिणी विपर्णवदना सन्दृश्यते साम्प्रतम्,
हा हा ब्रुहि किमद्य चात्र भवति हयेतन्महानर्थकम्।।"
(महाप्रयाण खण्ड, श्लोक सं०-४)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"वृतं निशम्य तदिदं समभूत्तदानीं,*
नेत्रान्धता भुवि जनस्य मनःसुपीड़ा।
वक्षः प्रताड्य मनुजो विललाप भूयः,
हा हा हता सुजननी मम सेन्द्रिराद्य।।"
(महाप्रयाण खण्ड, श्लोक सं०-६)

ये इन्दिरा जी के ही कार्य थे जिससे समस्त भारत उन्नतिशील बना। लोगों को समस्त सुविधाये उपलब्ध हुई। परन्त लोगों को न जाने क्या वैर था कि कुछ क्रूर पापियों ने उनकी हत्या जैसा पाप कर डाला। कवि कहता है। कि जो इन्दिरा गाँधी भारतवर्ष की भलाई के लिए एकमत होकर हमेशा तल्लीन रहती थी, उसी पवित्र हृदया को मूढमति लोगों ने मार डाला। उन्हें तो पता ही नही था कि जिस भारतवर्ष को समृद्ध बनाना उनका स्वप्न है। उसी के कुछ लोग उन्हें मार देगें -

जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अत्यन्त प्रसन्नचित से आज लोकहित के लिऐ प्रातःकाल ही घर से अतुलनीय प्रस्थान किया था, अत्यन्त कष्ट है कि मार्ग में ही ना समझों ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या करके मानो सम्पूर्ण विश्व में भारत की हत्या कर दी हो।[१]

इन्दिरा जी के उत्कृष्ट हृदय को देखकर लोग प्रेम से उनके भवन में घूमते रहते थे। कवि कहता है कि अत्यन्त कष्ट है कि उन्होने इन्दिरा जी को उन्ही के घर में मार दिया।

अपने एक गन्य भाव को व्यक्त करते हुये कवि कहता है कि- उत्कृष्ट आकृति, अत्यन्त पवित्र, सरल स्वभाव, प्राणिमात्र के मनों को आनन्दित करने वाली, कोमल देहधारिणी वह इन्दिरा गाँधी जब पृथ्वी में गिरी होगी। तब क्या पृथ्वी कम्पायमान नहीं हुई होगी? अर्थात् पृथ्वी कम्पायमान अवश्य हुई होगी।[२]

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" प्रातः प्रयाणमतुलं जनताहिताय,*
गेहात्कृतं सपदि हृष्टहृया ययाद्य।
मार्गे विवेकरहितैः जननी हता सा,
हा भारतं विनिहतं निहतं धरायां।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१०)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *" भव्याकृतिः परमपावनपावनी सा;*
सौम्याकृतिः जनमनस्सुविनोदनी सा।
भूमौ यदा निपतिता मृदुलेन्दिरा सा,
किं नो विकम्पितवती धरिणी समस्ता।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१२)

इन्दिरा जी की मृत्यु से कवि को इतना गहरा आघात हुआ कि वह कहने लगे -

हे बन्दूक! तुम इन्दिरा गाँधी पर प्रहार करने से पूर्व ही गल क्यों नही गयी हे गोलियों! तुम श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शरीर पर लगने से पहले जमीन पर क्यों नहीं गिर गयीं? हे निन्दनीय चरित्र वालों तथा इसी प्रकार के अन्य सहयोगी मूर्खो! तुम लोग अपने निन्द्य कृत्य से क्यों नही विरत हो गये।[1]

लेकिन विधाता का विधान ही कुछ ऐसा है। संसार का प्राणी उससे ही प्रेरित होकर समस्त कार्य करता है। पृथ्वी को लक्ष्य बनाकर कवि कहता है कि इन्दिरा गाँधी जब तुम्हारी गोद में गिरी होगी, तब तुम्हारा हृदय विदीर्ण नही हुआ होगा? अर्थात् अवश्य हुआ होगा। लेकिन आश्चर्य है -

कि संसार में जब कोई भी प्राणी आश्रय नही देता है अर्थात् प्राणी मृत्यु का प्राप्त होकर निराश्रित हो जाता है, तब हे पृथ्वी! तुम ही एक ऐसी हो जो अपनी गोद में स्नेह और सौहार्द प्रदान करती हो।[2]

जिस प्रकार रामायण में सीता को धरती अपने में समा लेती है। क्योंकि पृथ्वी ही हमारी माता है और अन्त मे जब हम मृत्यु को प्राप्त होते है। तब हम पृथ्वी में ही मिल जाते है।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** -

" हे हे भूशुण्डि! गलिता प्रथमं कथन्न,
हे गोलिकाः किमिति नो पतिताः हि भूमौ।
हे हे विवेकरहितौ च तथान्यमूर्खाः,
यूयं कथन्न विरताः निजनिन्द्यकृत्यात्।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१३)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** -

" परमहो यदा विश्वमण्डले,
न हि समाश्रयं यच्छति प्रजा।
अयि धरे तदा स्वांकसीमनि,
त्वमपि यच्छसि स्नेहसौहृदम्।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१७)

चाहे कोई व्यक्ति कितना ही दुराचारी, पापी, धर्माचारी क्यों न हो। सभी का पृथ्वी पर आश्रय मिलता है। कवि कहता है कि क्या तेरे द्वारा कुटिल सन्तान को आश्रय नही दिया जायेगा अर्थात् अवश्य दिया जायेगा, क्योंकि तुम भी क्या कर सकती हो।

किन्तु जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु से शीघ्र ही समस्त संसार कम्पित हो उठा, इस प्रकार संसार का कम्पित होना ही तेरे महान् गुणगौरव को स्वतः प्रकट कर रहा है। कवि कहता है -

हे अत्यन्त उज्जवल चरित्र शालिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी तेरी हत्या होने पर विविधतामयी और चित्र-विचित्र रूपधारिणी यह भारतभूमि शोक से विहाल होकर आज संसार में अनाथ हो गयी है।[1]

इन्दिरा जी अपने कुशल शासन के द्वारा लोकप्रियता को प्राप्त हो गयी थी, जिसने अपने सम्पूर्ण भारतवर्ष को बड़े प्यार और निष्ठा से पाला-पोसा। उसके ही घर मे किये गये हत्या के कलुषित वृतान्त को सुनकर समस्त संसार विचलित हो गया और क्यों न हो भारतवर्ष की महान और श्रेष्ठ महिला उन्ही के घर में मृत्यु को प्राप्त हो गयी। कवि कहता है -

देश के उत्थान के लिये प्रबृत्त बृद्धि वाली, प्रिय एवं हितकारी, श्रद्धास्पद, आनन्ददायिनी सभी एश्वर्यो को प्रदान करने वाली, ऐश्वर्य से सम्पन्न श्रीमती इन्दिरा गाँधी का आज घर में ही मार डाला गया है, इसी कारण मेरा मन आज अत्यन्त दुःखित हुआ।[2]

---

१. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *"अयि महोज्जवले ते मृतौ द्रुतम्,*
विविधतामयी चित्रतापरा।
भरतभूरियं शोकविहला,
सपति संगतानाथतां भुवि।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-२२)

२. ***प्रियदर्शनीयम् -*** *" देशोत्थानमतिः प्रिया हितकरी श्रद्धास्पदा भाविनी,*
सर्वेशष्वर्यकरी सदा सुखकरी पुण्यप्रदा शोभना।
श्री भिस्संवलितेन्दिरा विनिहता गेहे च या साम्प्रतम्,
तेनैवात्र मनोऽतिदशःखिवतमिदं सद्यः मदीयं गतम्।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-२६)

बच्चे, वृद्ध, युवक सभी की आँखों में आसुओं की धारा हृदय में शोक का सागर लिए अत्यन्त दुत्वित होकर बार-बार विलाप कर रह थे। जो बालक संसार की क्रियाविधि का ज्ञान भी नहीं रखते है। वह भी विलाप करते है। कवि कहता है -

समस्त दिशाएं एवं प्रदिशाएं, आकाश और पृथ्वी तथा समस्त संसार श्रीमती इन्दिरा गाँधी के आकस्मिक निधन को सुनकर अत्यन्त वियोग का प्राप्त हो गये।[1]

समस्त पशु, पक्षी, कीट, पतंग, पेड़-पौधे विलाप करते हुये प्रतीत हो रहे थे। हवा भी रूक गयी और चन्द्रमा भी अपनी विभा एवं प्रभा से मन्दता को प्राप्त हो गया। सूर्य का तेज भी तुम्हारी मृत्यु को देखकर शिथिल हो गया।

इन्दिरा जी की मृत्यु ने समस्त संसार को दुखाग्नि में जला दिया था। लोग विलाप कर रहे थे एवं मृत्यु को भी उलाहना दे रहे थे।

जिस माँ इन्दिरा ने अपनी मातृभूमि के लिए अपना समस्त जीवन आद्योपन्त अर्पित कर दिया, उस इन्दिरा को हरते हुये हे मौत! बताओ क्या तुम्हे दया नही आयी।[2]

इन्दिरा जी के परलोक सिधार जाने पर पृथ्वी भी असहाय हो गयी थी। जिस इन्दिरा के निमेष मात्र से सारे संसार के शाँसक भयभीत हो जाते थे, ऐसी तुम्हें अनिमेष देखकर मेरा हृदय अत्यन्त पीड़ा को प्राप्त हो रहा है। इस प्रकार कवि क्षण-क्षण प्रत्येक क्षण दुःख में निमग्न है।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"दिशस्समस्ताः प्रदिशस्समस्ताः,*
नभोऽपि भूमिश्च जगत्समस्तन्।
श्रुत्वेन्दिराया निधनस्य वृत्तम्,
वियोगभूमिं प्रति संगतं हा।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३२)

२. ***प्रियदर्शनीयम्*** - *"निजजन्मभुवः कृते यया,*
सकल जीवनमर्पितं प्रियम्।
हरतः किल चेन्दिराच तां,
मरण! ब्रूहि दयागता न वा।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३८)

कवि कहता है कि पहले जिस इन्दिरा के द्वार संसार के प्राणिमात्र को पवित्र आश्रय दिया जाता था, वही आज आश्रयविहीन होकर पृथ्वी में किस तरह गिरी है। वह विधाता से कहता है -

हे विधात! तुम श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति शीघ्र ही इस तरह कैसे वक्र हो गय हो, जा तुमने समस्त प्राणियों को सुख प्रदान करने वाली मनस्विनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी को सहसा ही हर लिया।[1]

इस संसार में प्रकृति का नियम है कि जो मनुष्य जन्म लेता है, वह ही अवश्य विलीनता को प्राप्त होता है। हे इन्दिरे! क्या तुमने भी इस नियम को स्वीकार किया है।

जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है -

"जातस्य हि ध्रवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्थेऽर्थे न त्वं शोचितुर्महसि।।"

(श्रीमद् भगवत् गीता-)

यदि शरीरादिकों की तरह इस आत्मा को भी नित्यजन्मा और मरण धर्मा मान लिया जाये तो भी यह ध्रुव सत्य है कि उसका भी शरीरादिकों की तरह जन्म होगा और जन्म के बाद मरण और मरण के बाद जन्म। इस तरह क्रम चलता रहेगा।

कवि कहता है कि-

संघर्ष से परिपूर्ण लोकहितकारी तुम्हारा जीवन संसार में लोककल्याण की शिक्षा प्रदान करता रहे और तुम्हारे द्वारा लोकहित के लिए प्रदर्शित पूजनीय मार्ग पर चलना ही तुम्हारे चरणों में सच्ची श्रद्धांज्जलि होगी।

---

१. ***प्रियदर्शनीयम् -***

" कथमत्र विधे त्वयि द्रुतं,
जननी तां प्रति वक्रता गता।
यदियं जनसौख्यदायिनी,
सहसा चैव हृता मनस्विनी।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-४२)

इन्दिरा जी ने मानव कल्याण के लिए जो नियम लागू किये थे। मगर मनुष्य उन्हीं नियमों का अनुसरण करे तो ही सच्चे अर्थो में उनकी विजय होगी। कवि कहता है -

उस श्रीमती गाँधी के देश के लिये वीरगति को प्राप्त होते हुए उसके शरीर से जितनी भी खून की बूंदें पृथ्वी पर गिरी होगी, वे सभी संसार में हमेशा राष्ट्रीय एकता का प्रतीक होगी।[1]

कहने का भाव है कि इन्दिरा के हृदय में राष्ट्रीय एकता से मनुष्य को बाँधे रखना ही उनकी प्रमुख अभिलाषा थी। क्योंकि जिस के प्राणी राष्ट्रीय एकता से परिपूर्ण नही होते वह राष्ट्र कभी प्रगतिशील नही हो सकता। इसलिये वह चाहती थीं कि उनका देश राष्ट्रीय एकता में बँधा रहे।

संसार से तुम्हारे इस महाप्रयाण का संसार कभी नही भूल सकेगा। और भक्ति एवं श्रद्धा से प्रजान करता हुआ तुम्हारे कमल रुपी चरणों की हमेशा पूजा करेगा।

कवि कहता है कि -

हे जननि! इन्दिरे! जब तक सूर्य और चाँद शोभायमान है, जब तक वायु, आकाश, पृथ्वी, जल एवं विश्व विद्यमान है, तब तक तुम्हारी अत्यन्त उज्जवल एव स्वच्छ कीर्ति संसार में देदीप्यमान होती रहे।[2]

---

१. **प्रियदर्शनीयम् -** *"देशाय वै वीरगति गतायाः,*
रक्तस्य यस्याः पतिताः कणाः ये।
ते ते भविष्यन्ति सरैकताया,
प्रतीकरूपा जगतीतलेऽस्मिन्।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-४८)

२. **प्रियदर्शनीयम् -** *"यावरुचन्द्रदिवाकरौ विलसतो यावच्च वायुस्तथा,*
यावद्व्योम विराजते जननि हे यावद्धरा शोभते।
यावद्विश्वमिदं विभाति सकलं यावज्जलं निर्मलम्,
तावत्कीर्तिरतीव भव्यविमला त राजतां भ्रोजताम्।।"
(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-५२)

भाषा-शैली -

विवेच्च्य रचना के महाप्रयाण खण्ड की भाषा भावप्रधान तथा मानव मन को उद्वेलित करने वाली है। इसे पढ़कर मानव हृदय अनायास ही दुःख के गहन सागर में डूब जाता है। कवि की शैली सशक्त एव भावप्रधान है। महाप्रयाणखण्ड का प्रत्येक पद्य मानव को दुख से द्रवीभूत करने की क्षमता रखता है । जब कवि ने इस खण्ड की रचना की तो स्वयं कवि की वाणी भी मूक हो गई थी। अनगिनत विचार कवि के हृदय को झंझकोर रहे थे।

इस खण्ड में सामान्यतः माधुर्य प्रसाद गुण एवं वैदर्भी दर्शन होते है। जिनके उदाहरण इस प्रकार है।

माधुर्ण गुण -

उदाहरण- *"यस्याः शासनमागतं विकसितं भव्यं प्रियं भारतम्,*
सर्वोत्थानपरम्परां प्रतिगतं सर्वप्रकारेण यत्।
तस्यास्तन्निलये निशम्य निधनं सर्वात्मना कष्टदम्,
संयाजोमम मानसे ह्यतितरां खेदो हि मर्मान्तिकः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-२५)

जिन श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शासनकाल में भारतवर्ष सभी प्रकार से फला, फूला विकसित हुआ। उस इन्दिरा गाँधी का उसके घर में सभी प्रकार से कष्ट प्रदान करने वाला निधन समाचार सुनकर मेरे मन में अत्यन्त मनन्तिक दुःख हुआ।

इस पद्य मं माधुर्य व्यज्जक वर्णो द्वारा माधुर्य गुण की प्रतीति हो रही है।

प्रसाद गुण -

उदाहरण - *" निपतिता यदा श्रीमतीन्दिरा,*
सपदि ते प्रिये क्रोडसीमनि।
अत्रि धरे कथन्त्वं विदीर्णतां,
न हि गता तदा मातृरूपिणी।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१६)

हे धरे! आदरणीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी जब तुम्हारी गोद में धड़ाम से गिरी होंगीं, तब क्या हे मातृरूपिणी पृथ्वी तुम्हारा दिल विदीर्ण नही हुआ होगा?

अर्थात् अवश्य हुआ होगा।

इस पद्य में प्रसाद गुण है।

छन्द -

इस खण्ड में शार्द्रविक्रीड़ित, बसन्ततिलका, तोटक, उपजाति उपेन्द्रवज्रा तथा द्रुतविलम्बित छन्दों का प्रयोग हुआ है।

शार्दुलविक्रीड़ित छन्द -

उदाहरण- *"यस्या शासनमागतं विकसितं भव्यं प्रियं भारतम्,*
सर्वोत्थानपरम्परां प्रतिगतं सर्वप्रकारेण यत्।
तस्यास्तन्निलये निशम्य निधनं सर्वात्मना कष्टदम्,
संजातो मम मानसे ह्यतितरां खेदो हि मर्मान्तिकः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-२५)

इसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण और दो तगण तथा अन्त में एक गुरू है। यहाँ शार्दूलविक्रीड़ित छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते है।

वसन्ततिलका -

उदाहरण - *"यस्या प्रभाभरित भारतवर्षमेतत्,*
लोके विकासपथमत्यधिकं प्रयातम्।
सा मातृभूहितरता जगदम्बिकायद्य,
क्रूरेर्हतात्र विहितं ननु निन्द्यकर्म।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-०८)

इसके प्रत्येक चरण में एक तरण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हों, अतः वसन्ततिलका छन्द है। इसके प्रत्येक चरण मे १४ अक्षर है।

उपेन्द्र वज्रा - उदाहरण- *" अखण्डतायें भुविभारतस्य,*
त्वदीयमेतद् बलिदानमत्र।
स्वर्णाक्षरैस्तै रजतस्य तट्टे,
लेखिष्यतीति प्रियंनाम मातः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-५०)

इसमें क्रमशः जगण, तगण, जगण और दो गुरु है। यह उपेन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर है।

उपजाति -

उदाहरण- *"देशाय वै वीरगति गतायाः,*
रक्तस्य यस्याः पतिताः कता ये।
ते ते भविष्यन्ति सदैकतायाः,
प्रतीतरूपाः जगतीतलऽस्मिन्।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-४८)

इसमें क्रमशः इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के दो-दो चरण है तथा प्रत्येक चरण में ११ अक्षर है। अतः उपजाति छन्द है।

रसनिष्पत्ति -

इसमें सर्वत्र करुण रस परिलक्षित हो रहा है। इन्दिरा के निधन का स्मरण कर कवि अत्यन्त भावुक हो उठा है। जिस प्रकार भवभूति ने एको एस करुणदेव की गूंज से पत्थरों को रुलाया। महाप्रयाण भी उसी प्रकार मनुष्यों को रूला रहा है।

करूण रस -

उदाहरण - *"पलितकेशपराः सकला नराः,*
निखिलनार्य इमाः व्यथितास्समाः।
अहह ताः विलपन्ति मुर्हुर्मुहुः,
विमल वक्षविताऽन तत्पराः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३०)

इस पद्य के माध्यम से सर्वत्र करूण रस प्रवाहित हो रहा हैं एक अन्य श्लोक देखिये -

उदाहरण- *"अयि काल! दयामयीं शुभां,*
कुशलां शासनशासिकामिमाम्।
जननीं भरतावनेः प्रियां,
हरतः किन्नु दयागता न वा?।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३७)

प्रकृति-चित्रण -

इन्दिरा जी की आकस्मिक मृत्यु से मनुष्य ही नहीं प्रकृति भी निस्तब्ध हो जाती है जैसे वह भी इन्दिरा जी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त कर रही हो -

"दिशस्समस्ताः प्रदिशस्समस्ताः,
नभोऽपि भूमिश्च जगत्समस्तम्।
श्रुत्वेन्दिराया निधनस्य वृत्तम्,
वियोगभूमि प्रति संगतं हा।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३२)

समस्त दिशायें एवं प्रदिशायें और पृथ्वी तथा समस्त संसार श्रीमती इन्दिरा गाँधी के आकस्मिक निधन को सुनकर अत्यन्त वियोग को प्राप्त हो गये।

कवि कहता है कि दिशाएं, प्रदिशाएं, पशु, पक्षी, कीट-पतंग, पेड़-पौधे आदि समस्त संसार वियोग से दुःखी होता हुआ विलाप कर रहा है।

"विलपन्ति खगाः पशवोऽपि नगाः,
विलपन्ति च कीट पतंगन्दलाः।

द्रुतविलम्बित -

उदाहरण - *"नयन वारिझरः परिपूरिता,*
हृदय शोकभरा व्यथितास्थता।
युवतयो युवका विलपन्ति हा,
पुनरहो पुनरेव पुनः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१८)

इसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो भगण और एक रगण है इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर है।

अलंकार -

प्रस्तुत खण्ड में अलंकारों में अनुप्रास, रुपक, उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकारों की छटा विखरी हुई है। जो इस प्रकार है -

अनुप्रास अलंकार -

उदाहरण - *" वाणी वाम्यविहीनतामुपगता पाणिक्रियाशून्यताम्,*
बुद्धिश्चचलतां गता जननि हे पादौ स्थिरौ संगतौ।
नेत्रे वै तमसावृते प्रतिगतेमातर्हतायां त्वयि,
हा हा सर्वविधेव सम्प्रति गता निश्चेतना मे गतिः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-०२)

इसमे फ, न, त, च, ह, ग आदि वर्णो की आवृत्ति बार-बार होने से वृत्यनुप्रास अलंकार है।

उत्प्रेक्षा -

उदाहरण - *"छिन्नद्रुमा इव यदा जननीन्दिरा सा,*
भूमौ शुभा निपतिता मुदुलस्वभावा।
जातं तदा धरखि ते बहुकष्टमद्य,
नो वर्णनस्य करणे कविरत्र शक्तः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-१५)

इस पद्य में कटे वृक्ष के समान इस प्रकार की सम्भावना की जा रही है। अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

रुपक अलंकार -

उदाहरण - *" मातरत्त्वदीयचरणाम्बुज भक्तिभावाः,*
स्नेहाश्रुपूरितपराः प्रियभारतीयाः।
स्वप्नेऽपि विस्मृतिपथं न कदापि लोके,
नेष्यन्ति चारुचरितं तव पावनं तत्।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-४५)

" तरवो विलपन्ति वियोगभराः,
निधनेन तपासमये जननि!।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-३४)

इन्दिरा जी की मृत्यु को देखकर हवा भी रूक गयी तथा चन्द्रमा अपनी विभा एवं प्रभा से मन्दता को प्राप्त हो गया। सूर्य भी शिथिल हो गया -

"मनसा वचसापि कर्मणा,
मनुजैर्विश्वनिवासभिस्समैः।
सुमनोञ्जलिभिः प्रपूज्यते,
चरणस्ते सततं हि भक्तितः।।"

(महाप्रयाणखण्ड, श्लोक सं०-४४)

समीक्षा -

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के आकस्मिक निधन पर कवि ने इस महाप्रयाण की रचना की है। महाप्रयाणखण्ड काव्य भी उसी करूण रस के अथाह सागर में डूबकर इन्दिरा के महाप्रयाण का वर्णन करता है। इस शक्तिस्वरुपा इन्दिरा गाँधी के आकस्मिक निधन के क्षणों का स्मरण कर कवि अत्यन्त भावुक हो जाता है। इस खण्ड में इन्दिरा जी की मृत्यु का वर्णन किया गया है इन्दिरा जी की मृत्यु विषयक समाचार को सुनकर समस्त मानव जाति एवं पशु पक्षी सभी विलाप करने लगते है बाल- वृद्ध सभी का करूण क्रन्दन सुनाई पड़ता है।

इसके अन्तिम पद्यों में कवि ने भारतवासियों की ओर से इन्दिरा गाँधी के द्वारा दी गई अभूतपूर्व राष्ट्रसेवाओं हतु कृज्ञता ज्ञापित की है। और भक्तिपूर्ण काव्य वचनों से उनके चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए है।

" किं किं त्वया नहि कृतं जननी इन्दिरे हे,
हा भारतस्य यश से महते हिताय।
तस्माद्धि भारतमिदं मनसा स्मरन्ते,
श्रद्धाञ्जलि चरणयोः वितनोति भक्त्या।।"

श्रीमती गाँधी एक कुशल राजनेता ही नही, अपितु महामानव थीं। इस महामानव को मारकर उन्होंने देश से एक राजनेता छीन लिया जो सर्वदा हमारे लिये दुखदायी रहेगा। आज भी जब हम उन्हें याद करते है। तो हमारे शोकाकुल नेत्रों में आँसू उमड़ पड़ते है

अतएव भावों के साधारणीकरण तथा रसनिष्पत्ति की दृष्टि से विवेचच रचना की प्रभावात्मकता सर्वथा सहृदय संवेद्य है। जिसमें इसकी श्रेष्ठता संस्कृत काव्यों में स्वतः सिद्ध होती है।

तृतीय अध्याय

इन्दिराविजयवैजयन्ती, इन्दिराप्रशस्तिशतकम्
एवं इन्दिराजीवनम्
का साहित्यिक अनुशीलन
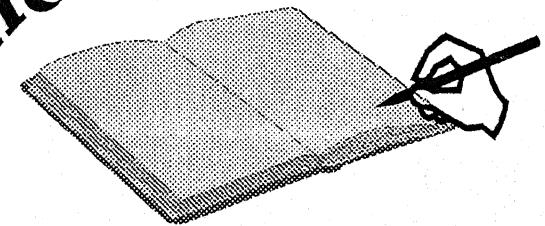
- तृतीय अध्याय -

"इन्दिरवियजवैजयन्ती" एवं "इन्दिराप्रशस्तिशतकम्" का साहित्यिक अनुशीलन

श्री हजारीलाल शास्त्री का जीवन-परिचय -

श्री हजारीलाल शास्त्री २०वीं शदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। हजारीलाल शास्त्री बचपन से ही प्रखर बुद्धि के थे। इन्होंने शिक्षा को ही अपना ध्येय माना। बचपन से ही इनमें कुछ करने की प्रबल इच्छा थी। अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये इन्होने कड़ी मेहनत भी की। हजारीलाल शास्त्री माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाले, शास्त्रोक्त नियमों का अनुसरण करने वाले, देवोपासना में तल्लीन रहने वाले एवं सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे। इनके माता-पिता इनके क्रिया कलापों को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते थे। हजारीलाल जी की बचपन से ही संस्कृत विषय में विशेष रुचि थी और इसी को उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया। इन्होने संस्कृत विषय में उत्तरोत्तर वृद्धि की। इनकी कार्य-क्षमता का तो कहना ही क्या। जब वह अध्ययन करने बैठते तो समय का पता ही नही चलता था। इन्होंने संस्कृत साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान दिया। ये हरियाणा में पिण्डारा जिले के लज्जाराम संस्कृत महाविद्यालय में प्राचार्य पद पर आसीन हुये तथा उसको सुशोभित किया।

व्यक्तित्व -

इनका व्यक्तित्व अद्भुत था। इनके मुख मण्डल का तेज इतना तीव्र था कि लोग इनकी प्रशंसा किए बिना न रह पाते। सुगठित शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं ओजायमान मुखमण्डल वाले श्री हजारीलाल शास्त्री में ईर्ष्या-द्वेष की भावना नहीं थी। वह सबसे समानता का व्यवहार करते। मानव जीवन की उत्कृष्टतम् विचारधाराओं को महत्व देने वाले व्यक्ति विद्वानों का यथोचित आदर करते थे। इनके जीवन का चाहे शारीरिक पक्ष हो, चाहे मानसिक पक्ष हो या फिर चारित्रिक पक्ष सर्वज्ञ उत्कृष्टता परिलक्षित होती है।

कृतित्व -

श्री हजारीलाल शास्त्री प्रसिद्ध विद्वान् एवं रचनाकार थे। इनकी

निम्नलिखित रचनाएं है -

१. सगुणब्रह्मस्तुति
२. संस्कृतमहाकविदिव्योपाख्यान
३. कादम्बरीशतक
४. महर्षिदयानन्दप्रशस्ति
५. शिवप्रतापविरुदावली
६. चपर्टपंजरी
७. इन्दिराविजयवैजयन्ती
८. इन्दिराप्रशस्तितिलकम् तथा
९. हकीकतराय (एकांकी नाटक)

इन्दिराविजयवैजयन्ती तथा इन्दिराप्रशस्तिशतकम् -

श्री हजारीलाल शास्त्री ने इन्दिराविजयवैजयन्ती तथा इन्दिराप्रशस्तिशतकम् नामक दा शतककाव्य लिखे। जिनमें श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शासनकाल की उपलब्धियों की चर्चा करते हुये इन्दिरा से दुराचरण को हटाने की प्रार्थना की है। इन्दिराप्रशस्तिशतकम् में ११४ श्लोक है। इसी काव्य के आगे १२ श्लोक और जोड़कर इन्दिराविजयवैजयन्ती नामक काव्य रचा गया है।

इन्दिरा गाँधी गुणों की खान थीं। उन्होने समस्त भूमण्डल को अपने कार्यो से स्तब्ध कर दिया। वह निर्भीक महिला थी जो देश की उन्नति के लिए कुछ भी कर सकतीं थीं। उन्होने भारतवर्ष को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया। लोगों के दुखों का निवारण किया। उनके समस्त कार्य देश के लिये समर्पित थे। इन्दिराप्रशस्तिशतकम् के माध्यम से कवि ने उनकी जो प्रशंसा की है वह देखते ही बनती है। महिला होते हुए भी वह निडर थीं। वह बहुत सुन्दर थीं। सुडौल शरीर, ऊँचा कद, उत्तरी भारत के ब्राह्मण वर्ग के लिए साक्षणिक गोरा रंग।

इन्दिरा गाँधी भारत के सभी बच्चों का पेट भरने, देश के सदियों से चले आ रहे पिछड़ेपन का अन्त करने, जनता की गरीबी को हटाने का सपना जीवन भर संजोय रहीं और कठिन मार्ग तय किया।

स्वतन्त्र, एकजुट तथा प्रजातंत्रीय भारत के निर्माण के हेतु वह सदा अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहीं ताकि देश में सांप्रदायिक द्वेष के लिए कोई स्थान न हो और सभी भारतवासियों की एकजुट, स्वाधीन और शक्तिशाली मातृभूमि महान राष्ट्रींय आदर्शो से देदीप्यमान रहे।

इस महान् लक्ष्य हेतु वह नवोदित भारत गणराज्य के विदेशी और आंतरिक शत्रुओं का सदा साहसपूर्वक विरोध करतीं रहीं, उन शक्तियों का पर्दाफाश तथा भर्त्सना करतीं रहीं, जो आज भी राष्ट्रों की शान्ति और स्वतन्त्रता को खतरे में डालतीं हैं।

उदात्तराजनीतिक नैतिकता, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ईमानदारी और निष्कपटता के कारण उन्हें भारतीय जनगण, संसार के सभी सद्भावनापूर्ण लोगों के बीच सम्मान और महाती प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। परन्तु इन्दिरा गाँधी के अनेक शत्रु भी थे। विश्व-शांति तथा अपने देश की सुख-समृद्धि के उदान्त विचारों से प्रेरित इस निर्भीक महिला के खिलाफ उन्होने साजिश का जाल बुना था।

इन्दिरा गाँधी ने पाकिस्तान के खिलाफ भी ठोस कदम उठाये क्योंकि वह अपनी दुष्प्रकृति के कारण वंग भूमि के निरीह लोगों की हत्या कर रहा था एवं भारत पाकिस्तान में युद्ध के कारण जो कश्मीर को लेकर छिड़ा था, हिंसा, बलात्कार, गृहदाह द्वारा अमानवीय पीड़ा पहुँचाना और मानव जीवन को मिटाना पाक सैनिकों का पवित्र कार्य हो गया था। शत्रुओं द्वारा आरोपित युद्ध को समझकर साहस का आवाहन कर शौर्य से तत्काल रणचण्डी जैसी उसने अपने राष्ट्रजनों को सम्बोधित करते हुए कहा - अपने घर को स्वयं जलाकर जो पड़ोसी के घर को जलाने का प्रयास करता है। वही कभी क्षमा के योग्य नही होता। इन्दिरा जी के आवाहन से ही सेनापतियों ने अपनी सेना के द्वारा उद्धत शुत्र का बल ध्वस्त कर दिया। इस प्रकार उन्होने पाक पर विजय प्राप्त की।

इन्दिरा गाँधी प्रतिभावान सद्बुद्धि धैर्य और साहस से सुशोभित थीं। साथ ही शासनकार्य में सक्षम भी थीं। युवावस्था में उन्होने भारत की स्वतन्त्रता की खातिर और बाद में इस स्वतन्त्रता को मजबूत बनाने के लिए संघर्ष किया। शान्ति के वातावरण में रहने और अपनी प्रतिभा को पूर्णता उजागर करने के सभी राष्ट्रों के अधिकार के लिए वह अनथक संघर्ष करतीं रहीं। उत्पीड़ितों और

अवमानितों के प्रति वह सहानुभूति रखतीं थीं और इसलिये उन्हें जनसाधारण से अधिक प्रेम हुआ।

भाषा-शैली -

इन काव्यों की भाषा ललित सरस एवं हृदयग्राही है। श्री हजारीलाल शास्त्री ने इसे अपनी लेखनी और भी मधुरता प्रदान की है। इसमं प्रसाद गुण, ओज गुण एवं माधुर्य गुण के दर्शन होते है। इनकी भाषा प्रवाहमयी एवं वैदर्भी रीति से युक्त हैं। कवि द्वारा रचित इन काव्यों की भाषा इतनी सशक्त है कि पाठक अनायास ही इसकी तरफ खिंचा चला आता है।

छन्द -

छन्दों की श्रेणी में कवि ने अनेक अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति आदि अनेक वर्णिक छन्दों का प्रयोग किंया है। जो इनके काव्य सौन्दर्य में वृद्धि कर रहे हैं।

अलंकार योजना -

शब्दालंकार और अर्थालंकारों के समुचित सन्निवेश ने इस काव्य में पर्याप्त प्रभावशालिता को प्राप्त किया है। विवेच्य काव्य में अनुप्रास, यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि अलंकारों का वर्णन मिलता है।

रसनिष्पत्ति -

अद्भुत, वीर आदि रसों ने इन दोनों काव्यों के वर्ण्य विषय में अभिवृद्धि की है। इन्दिरा जी के शौर्य के प्रदर्शन में वीर रस के दर्शन होते है और इनके अद्भुत कार्यो का वर्णन सै अद्भुत रस की प्रतीति हो रही है।

समीक्षा -

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उक्त शतककाव्य इन्दिरा जी के वीरतापूर्ण कार्यो के द्योतक है। एकीकृत तथा परस्पर निर्भर संसार में व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन में आस्था, राष्ट्रीय हितों के अलावा आम मानवीय, विश्वव्यापी हितों को देखने की क्षमता, विवेक बुद्धि का मानवतावाद से, राजनीतिक लक्ष्यों का सामाजिक नैतिकता से, आत्मिक मानकों का अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धों से समन्वयन - सारतः यही अपनी जनता, वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए इन्दिरा गाँधी का बौद्धिक तथा आत्मिक सन्देश है।

इन दोनों विवेच्य काव्यों की प्रासादिक, प्राञ्जल, माधुर्यगुण पूर्ण, ललित भाषा, भावानुकूल छन्दोऽलंकार योजना, सशक्त रसनिष्पत्ति असामान्य साहित्यिक श्री वृद्धि करती है, जिससे इनका चरितात्मक काव्यों में महत्वपूर्ण स्थान है।

“इन्दिराजीवनम्” का साहित्यिक अनुशीलन

डॉ० गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री का जीवन-परिचय -

डॉ० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री का जन्म ७ अक्टूबर १९२५ में ग्राम सकाहा में हुआ था। ये ग्राम जनपद हरदोई उ०प्र० के अर्न्तगत आता है। इनके पिता का नाम श्री गोविन्द प्रसाद गोस्वामी तथा माता का नाम महादेवी था। इन्होने साहित्यचार्य, एम०ए०, पी०एच०डी० एवं साहित्य रत्न की उपाधि विधिवत् धारण की। बलभद्रप्रसाद बचपन से ही प्रखर बुद्धि के थे। इसके बाद जैसे-जैसे ये बचपन से युवावस्था की ओर बढ़े वैसे-वैसे इनका ज्ञान भी उत्तरोत्तर बृद्धि को प्राप्त हुआ। इनका अधिकांश समय ज्ञानार्जन में व्यतीत होता था। आप शिक्षा विभग में ३वर्ष तक प्राध्यापक रहे एवं २६वर्ष तक उ०प्र० ग्राम्य विकास में राजपत्रित अधिकारी रहे।

व्यक्तित्व -

डॉ० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री एक आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। इनका मुखमण्डल के आभा इतनी अलौकिक थी कि कोई भी व्यक्ति इनकी प्रशंसा किये बिना नही रह सकता था। इनके अद्भुत ज्ञान से प्रभावित होने वाले लोगों की कमी नही थी। ये जीवन मूल्यों कोबहुत महत्व देते थे जिससे इनका जीवन बड़ा ही सरल परन्तु सुखमय था। लोभ, मोह, क्रोध और मात्सर्य तो इनमें लेशमात्र भी नही था। ये दूसरों के दुःख को समझकर उनके दुःख में भी सम्मिलित होते थे। ये आपकी व्यवहार कुशलता ही थी जो लोगों को आपकी ओर आकर्षित करती थी। इस प्रकार हम कह सकते है कि इनका चरित्र बड़ा ही उन्नत था।

कृतित्व -

डॉ० गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री की कृतियाँ इस प्रकार है -

१. काव्य - चक्रव्यूहम्

२. महाकाव्य - नेहरूयशः सौरभम्, सिन्धुराजवधम्, इन्दिराजीवनम्, भागीरथी दर्शनम्

३. नाटक - सेतुबन्धम्, कर्णीभजात्यम्

४. एकांकी - यौतकं दशमग्रहः, विद्या ददाति विनयम्, उत्कोंचकौतुकम्,

५. अन्य - लिङ्.पुराण समीक्षा (शोध)

स्फुट कविता संग्रह ज्योतिषमती

पुरुस्कार -

डॉ० बलभद्र शास्त्री को अनेक पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया यथा -

कालिदास पुरुस्कार - उ०प्र० संस्कृत अकादमी

गीता पुरुस्कार - २ बार भाषा विभाग हरियाणा

विशेष पुरुस्कार - ३ बार उ०प्र० संस्कृत अकादमी

आकाशवाणी पर साहित्यिक प्रसारण अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

शोधकार्य - हुंमायु, रुहेलखण्ड, कानपुर विश्वविद्यालयों द्वारा रचनाओं पर शोधकार्य।

विश्वविद्यालयों में इनकी रचनाएं पाठ्यक्रम में भी निर्धारित हैं।

इन्दिराजीवनम् का वर्ण्य-विषय -

'इन्दिराजीवनम्' अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का एक भव्य शिल्प है। इसमें स्वतन्त्र भारत के विकास में श्रीमती इन्दिरा गाँधी के योगदान की गाथा उपनिषद्ध की गयी है।

कवि ने इसके विषय में सत्य ही कहा हैं कि यह न दलगत नीति के कारण प्रसूत है न राजनीति से ही प्रेरित। यह तो 'चारुचारित्रयगीति' तथा 'भव्यभावों' की अनुभूति है।

"न च दलगतनीतिनिष्यिसौ राजनीतिः,
सरसकृतिरियं मे चारुचरित्र्यगीतिः।
सहृदयहृदि वेद्या भत्यभावानुभूति-
र्भवतु कविगिरेयं मंगलानां प्रसूतिः।।"

राष्ट्रीयता, देशभक्ति, स्पष्टवादिता, ईमानदारी निष्ठा और प्रजातन्त्र की भावना से ओतप्रोत यह महाकाव्य उदान्तभावों और जीवनदर्शन से परिपूर्ण है। इस महाकाव्य के प्रारम्भ में सर्वप्रथम शारदा की स्तुति करते हुये कहा गया है-

जिनकी कृपा से अल्पबुद्धि पुरुष की भी वाणी स्वयं ललित काव्य कला समूहों को जन्म देने लगती है, अपनी वीणा के स्वरों से हृदय में नवरसों को पोषण करती हुई वे भगवती वागीश्वरी शारदा मुझ पर प्रसन्न रहें।[1]

इसके पश्चात् नेहरू कुल की प्रशंसा कनते हुये कवि कहता है कि लोकहित में अपनी आत्मा की आहुति देने वाले, विद्वान, मानी, यशस्वी जनों के उदीयमान गुणों चरित्र ऐश्वर्य एवं समृद्धि से पृथ्वी पर नेहरू कुल प्रसिद्ध हुआ है।

उसी नेहरू कुल के वरिष्ठ पुरूषों ने और नारियों ने भी देशहित में उद्यत होते हुये कठोर संघर्ष के पथ पर प्रयत्नशील होकर बन्दीगृह को कठोर

---

१. ***इन्दिराजीवनम् -*** *"वाणी स्वयं ललितकाव्यकलाकलापान्,*
सूते यदीयकृपयाऽल्पधियोऽपि पुंसः।
वीणा स्वरै र्नवरसान् हृदि पोषयन्ती,
वागीश्वरी वितनुतां मयि सा प्रसादम्।।"

यातना भी सही है। पं० जवाहर लाल नेहरू एवं उनकी पत्नी कमला के संघर्ष मार्ग में रत रहते हुये ही कमनीय दर्शन वाली पत्नी निर्मल द्युति सम्पन्न कमला ने गर्भधारण किया। कमला यथाविधि देवताओं की प्रार्थना करती हुई, अपने गर्भ की सम्पत्ति को भली भाँति पालती हुई, अन्तः प्रतिभासित प्रभा के कारण रत्न की खान युक्त पृथ्वी के समान सुशोभिति हो रहीं थीं।

कवि इन्दिरा जी के जन्म पर प्रकाश डालते हुये कहता है। - भूमि आकाश तथा दिग्मण्डल को आनन्दमय करनेवाली शरद्ऋतु से शोभायमान शुभ मुहूर्त में कमला ने चन्द्रमा की कला के समान उज्जवल और कुल की कीर्ति बृद्धि करने वाली कन्या को जन्म दिया।[1]

प्रतिदिन सौम्यगुणों से वृद्धि को प्राप्त होने वाली और अपने रूप लावण्य से मन को प्रसन्न करने वाली उस सदुर्शना कन्या का नाम प्रसन्न होते हुये माता-पिता ने प्रियदर्शिनी रख दियां।[2]

कवि कहता हैं कि नूतन कमल जैसे नेत्रों वाली कन्या अपने कुल के अनुरूप गुण और शील के गौरव को भली भाँति धारण करती हुई नवोदित चन्द्रमा की कला के समान धीरे-धीरे रात-दिन वृद्धि को प्राप्त होने लगी।[3]

---

१. **इन्दिराजीवनम्** - *" शुभे मुहूर्त शरदर्तुशोभने,*
प्रसन्नभूव्योमदिगन्तमण्डले।
कुलामसौ चान्द्रमसीमिवोज्ज्वला,
मसूत कन्यां कुलकीर्ति वर्धिनाम्।।"

२. **इन्दिराजीवनम्** -*" दिने दिने सौम्यगुणेः प्रवर्धिनी,*
स्वरूप लावण्यमनः प्रसादिनी।
प्रमोदमानैर्गुरुभिः सुदर्शनाऽ,
प्यकारीनाम्ना प्रियदर्शिनी च सा।।"

३. **इन्दिराजीवनम्** -*" शनैः शनैः श्चान्द्रमसी कलेव सा,*
नवोदया सं ववृधे दिवानिशम्।
कुलानुरूपं गुणशीलगौरवं,
समादधाना नवकञ्जलोचना।।

इन्दिरा गाँधी अपनी किशोर आयु में प्रबुद्ध हो जाने वाली (प्रियदर्शिनी) ने अपने माता-पिता को तपस्या जैसे कठोर संघर्ष मार्ग पर राष्ट्र की मुक्ति के लिये निरन्तर तल्लीन होकर चलते देखा। उन्होने दुष्ट अंग्रेज शासकों द्वारा, निरन्तर बन्दीगृह भेजने, लाठी बरसाने जैसे कार्यो द्वारा दमन करने वाले कृत्यों को देखा।

पिता-माता तथा अन्य जनों के प्रयास को देखकर प्रभावित होती हुई उन्होने अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिये हृदय में निश्चय कर किशोर आयु में ही साहस बांधे हुये वानर वाहिनी नामक बाल सेना को तैयार किया।[1]

परिवार जनों के राष्ट्र मुक्ति के लिये बन्दीगृह में ही अधिक जीवन बीतने की बात समझकर, इन्दिरा अपनी शिक्षा के लिये सुनिष्ठित माता-पिता के द्वारा अनुमोदित होकर विदेश में शिक्षा ग्रहण करने चली गयीं।[2]

पं० जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुत्री को प्रसन्नचित्त होकर पत्र-लेखन द्वारा विश्व की गतिविधि को समझाया।

कवि कहता है कि उस महापुरूष की विवेक और ज्ञानमयी बुद्धि से निकले हुये और उनकी प्रतिभा से परिष्कृत समाज को बहुत कुछ ज्ञान देने में सक्षम प्रकाशित हुये उन पत्रों के द्वारा प्रबुद्ध साहित्य की रचना हो गयी।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *" प्रभाविता तातजनप्रसासतः,*
स्वराष्ट्रमुक्तयै हृदि सञ्चिताग्रहा।
किशोर एवांयुषि वद्धसाहसा,
न्ययोजयद् वानर वाहिनीबलम्।।"

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"कुटुम्बिनां राष्ट्रविमुक्तये भृशं,*
समीक्ष्य सा वन्दिगृहेषु जीवनम्।
सुनिष्ठ्ता पितृजनानुमोदिता,
ययौ विदेशेऽध्ययनार्थमिन्दिरा।।"

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"विवेकविज्ञानधिया विनिर्गतैः,*
महाजनस्य प्रतिभावरिष्कृतैः।
तदीयतत्रै बहुबोधनक्षमैः,
प्रबुद्धसाहित्यमभूत् प्रकाशितैः।।"

इन्दिरा जी एवं फिरोज गाँधी के सम्बन्ध का वर्णन करते हुये कवि कहता है -

स्वाधीनता युद्ध के संघर्ष में साथ चलते हुए उदार दर्शन, प्रिय युवा फिरोज गाँधी सामीप्य पाकर धीरे से प्रियदर्शिनी के हृदय में प्रवेश कर गये।[1]

इन्दिरा एवं फिरोज गाँधी भी अपने देश की दासता को दूर करने के लिये उद्यत होत हुये अनेक प्रकार से अंग्रेजों के द्वारा निग्रह आदि से दण्डित किये गए।

कठोर संघर्ष मार्ग में भी जीवन, गृहस्थ धर्म का आचरण तो चाहता ही है। यह विचार कर पिता द्वारा अनुमोदन किये जाने पर वे दोनों विवाह बन्धन में बंध गये।[2]

तत्पश्चात् समय बीतने पर उन दोनों के मन को प्रसन्न करने वाले यशस्वी दो पुत्र उत्पन्न हुये। उनमें से एक का नाम राजीव तथा दूसरा संजय नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कवि कहता है - उस करूणायपरयण प्रिय इन्दिरा ने पति के साथ अपने दोनों पुत्रों को भली भाँति पालते हुये भी राष्ट्र की स्वीधीनता के संघर्ष पथ से अपना पैर नहीं हटाया।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** -*" स्वतन्त्रतासंगरघस्मरे समं,*
व्रजन हि फीरोजउदारदर्शनः।
अवाप्य सान्निध्यमसौ प्रियो युवा,
शनैर्विवेश प्रिशदर्शिनीहृदि।।"

२. ***इन्दिराजीवनम्*** -*" कठोर संघर्षपथेऽपि जीवनं,*
गृहस्थधर्माचरणं समीहते।
विचार्य चैतज्जनकानुमोदितौ,
बबन्धतुस्तौ तु विवाहबन्धने।।"

३. ***इन्दिराजीवनम्*** -*" सुतौ च पत्या सह पुत्रवत्सला,*
सुपालचन्ती करुणापरायणा।
न मुक्तिसंघर्षपथाद् व्यचालयत्,
पदक्रमं किञ्चिदपि प्रियेन्दिरा।।"

प्रबुद्ध जनों द्वारा भली भाँति विचार विमर्श करके बनाये गये, जन की आकांक्षा के लिये आत्मा से प्रतिबद्ध स्वतन्त्र राष्ट्र के संविधान का, जिसमें भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं, लोकार्पण किया गया।

इन्दिरा जी का भारतवर्ष के स्वतन्त्र हो जाने पर भी कभी मुक्ति नहीं मिल पायीं। इसी का वर्णन करते हुये कवि कहता है -

अपने बड़े बूढ़े समस्त कुटुम्ब जनों के साथ राष्ट्र की मुक्ति के लिये अपने जीवन में संघर्ष मार्ग में लगी हुई इन्दिरा को भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर कभी शान्ति प्राप्त नहीं हो पायी।[1]

दासता की रात्रि को हटाकर स्वतन्त्रतारूपी द्युतिमान राष्ट्र सूर्य के उदय होने पर फीरोज गाँधी रूपी चन्द्र दैववश प्रियदर्शिनी के हृदय को अन्धकार से भरकर अस्त हो गया।

इस विषम परिस्थिति से जूझती हुई इन्दिरा गाँधी पर प्रकाश डालता हुआ कवि कहता है -

जिस प्रकार पथिक मार्ग में छायादार वृक्ष के पास चला जाता है। उसी प्रकार पति वियोग से विषादयुक्त इदिरा अपने स्नेह से प्रसन्न करने से तत्पर पिता के पास चली गयी और जीवन के इस शोक को भूलने की इच्छा से वे लोकहित चिन्ता के कार्यो में लग गयीं।[2]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"कुटुम्बबृद्धैः सह राष्ट्रमुक्तये,*
गतापि संघर्षपथें स्वजीवने।
स्वतन्त्रभूतेऽपि च भारते भृशं,
न जातु शान्तिं लभते स्म सेन्दिरां।।"

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *स्नेहात् प्रसादनपरं पितरं विषण्णा,*
छायातरूं पथियथा पथिकोऽम्युपेत्य।
शोकापनोदनधिया निजजीवनस्य,
सा चापि लोकहितचिन्तनतत्पराभूत्।।"

इस प्रकार इन्दिरा के पिता जवाहर लाल के भारत के प्रधानमंत्री पद पर अधिष्ठित हो जाने पर विकास मार्ग पर आगे बढ़ता हुआ देश लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति करने लगा। पिता के कार्यो में इस प्रकार सहायक रहते हुये पुत्री प्रियदर्शिनी इन्दिरा ने राजनीति की गति नापने के लिये पिता के साथ अनेक विदेश यात्राओं को भी सम्पन्न किया।

विदेश यात्राओं में पहुंचकर राजनीतिक प्रमुखों के सम्पर्क में आकर विश्व की नीति, विधि व्यवस्था तथा कार्य क्षमता का उन्होने ज्ञान प्राप्त किया।[1]

पिता के समीप रहते हुये उन्होने विश्व के महापुरुषों के सम्पर्क में आकर राजनीति की प्रतिभा को धारण करते हुए सभी विषयों में चतुरता प्राप्त कर ली। अपने कार्यो से सचेत इन्दिरा अपनी प्रतिभागत विशेषता से धीरे-धीरे राजनीति के प्रसंग में उचित परामर्श देती हुई नीतिगत वचनों के द्वारा पिता को आश्चर्य चकित कर देती थी। इस प्रकार क्रमशः दाक्षिण्य गुणों से परिपूर्ण होती हुई और अपने पिता का अनुसरण करती हुई इन्दिरा राजनीति में पैर रखतीं हुई समय से कांग्रेस दल मे कार्य करने लगी।

भाईचारे की भावना के बढ़ते रहने पर भी जब सहसा विश्वासघात करके चीन ने शत्रु भाव से हिमालय की ओर की राष्ट्र सीमा पर आक्रमण कर दिया।[2]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"विदेशयात्रासु गताप्यनैकैः,*
सा राजनीतिज्ञजनेषु मुख्यैः।
सुसंगता नीतिविधिव्यवस्थां,
विश्वस्य कार्यक्षमतां विवेद।।"

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"भ्रातृत्वभावेऽपि च वर्धमाने,*
विश्वास भंग सहसा विधाय।
हिमालयान्तामथ राष्ट्रसीमां,
चीनो यदाक्रामरित्वभावात्।।"

इस चीन के आक्रमण से भारत के मानस में भी राष्ट्र के सम्मान को विक्षुब्ध कर देने वाला सुप्त और शान्त ज्वालामुखी शीघ्र फट पड़ा।[1]

युद्ध में मानसिक रूप से घायल जन नेतागण अपने भाषण और अपने उद्यम प्रदर्शन के द्वारा अपने राष्ट्र में बढ़ते हुये जन समुद्र के ज्वार को और अधिक आन्दोलित कर रहे थे। उस समय नगर और ग्रामवासियों के बीच घूमती हुई अपने राष्ट्र धर्म का बोध कराती हुई इन्दिरा ने राष्ट्र के लोगों द्वारा प्रदान किये गये सुरक्ष कोष का भी संग्रह किया। राष्ट्र की उन्नति के लिये मन वचन और कर्म से अपने को समर्पित करने वाले उदार हृदय नेहरू भारतीय समाज के लिये विकास का मार्ग निर्माण करके स्वयं अलक्ष्य महापथ की ओर चले गये। पिता की मृत्यु पर इन्दिरा के शोक का वर्णन करते हुये कवि कहता है -

पिता के वियोग से दुखी फिर भी बुद्धि प्रतिभा से समृद्ध प्रियदर्शिनी इन्दिरा को प्रधानमंत्री ने अपने मन्त्रिमण्डल में सूचना मंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया।

इन्दिरा गाँधी की कार्यकुशलता का वर्णन करते हुये कवि कहता है - सीमा अतिक्रमण करके जब मदोध्दत पाकिस्तान ने भारत के साथ युद्ध किया था, उस समय अपने देश की रक्षा के लिये प्रचार कार्य के द्वारा उन्होने सूचना मंत्री के पद को सफल कर दिया।[2]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"अनेन चीनाक्रमणेन सद्यः,*
सर्वत्र विक्षोभितराष्ट्रमानम्।
विस्फोटितं सुप्तमपि प्रशान्तं,
ज्वालामुखं भारतमानसेऽपि।।"

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *"सीमामतिक्रम्य मदोद्धतोऽसौ,*
पाको यदायुध्यतभारतेन।
स्वदेशरक्षार्थमथ प्रचारैः,
सा मन्त्रिकार्यं सफलीचकार।।"

इसके बाद भारतीय वीरों ने अपनी शक्ति से युद्ध में आक्रमण करके शत्रु की जयाभिलाषा के साथ ही सेना और शस्त्रास्त्र साधनों को नष्ट कर दिया। तभी जाने कैसे दैव के विपरीत हो जाने पर भारत राष्ट्र महान् अन्धकार में डूब गया, जब उस देश का सूर्य लालबहादुर शास्त्री अकस्मात् मध्यान्ह में ही अस्त हो गया। पाकिस्तान के साथ सन्धि करने के लिये वे ताशकन्द तो चले गये। जनता के आंसुओ के साथ उनका शरीरमात्र भूमि पर वापस आया।

पाकिस्तान पर विजय प्राप्त करके प्रतिभा के धनी तथा वृद्ध होते हुये भी युवकां को नवशक्ति देने वाले वे, यश से प्रशस्त अपने गुणों से दिशाओं को प्रकाशित करते हुए व दिव्य पथ की ओर चले गए। इस दुःखद काण्ड के बाद आहत मन होते हुए भी मनीषी लोकसभा सदस्य संसद में युद्ध के बाद विचलित भारत की रक्षा में तत्पर राष्ट्र के हित को ही महत्व देते हुए राष्ट्रनेता के पक्ष में सभी में एक मत हो जाये, इस प्रकार वे सद्बुद्धि को जाग्रत करने लगे।

इस विपत्ति की घड़ी में सुप्रबुद्ध सांसदों ने बहुत प्रकार से निष्ठा और राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर विचार करके,जन-मन में प्रशस्ति गुणों से वन्दनीय उदाहृदय इन्दिरा का राष्ट्र नेतृत्व का पद सौंप दिया।

इस प्रकार संसदीय कांग्रेस दल द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करके नेहरू कुल की इस विभूति इन्दिरा गाँधी ने एक बार पुनः राष्ट्र का शासन सूत्र अपने हाथ में लेते हुये प्रधानमंत्री पद को अलंकृत किया।

अपनी प्रतिभा के बल से राजनीति में प्रवेश कर प्रगति प्राप्त करती हुई इन्दिरा गाँधी ने राष्ट्र के सर्वोच्च्व पद पर आरूढ़ हो, अपने पूर्वजों की प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लिया। नारी प्रधान राष्ट्र के प्रशासन को देखकर लोगों ने हृदयों में जो शंका उत्पन्न की थी, उसकी उन्होंने अपने गुणों के प्रकाश को बिखेरते हुए निर्मूल कर दिया। पाकिस्तान के साथ (१६६५) युद्ध के पश्चात् जो भारत का प्रशासन शिथिल हो गया था उसे उन्होंने सुदृढ़ कर दिया। जिससे इस विशाल राष्ट्र में योजनागत विकसा कार्यो में प्रगति आ गयी।

बड़े उद्योगों की प्रगति हो जाने पर एक विशेष वर्ग को ही लाभ मिला था। उनसे ग्रामीण लोगों में जड़ जमाई हुई गरीबी कुछ भी कम नही हुई। बैकों में स्थित जनता का धन भी उस समय धनी उद्यमियों के लिए ही प्राप्त होता था।

अतः गरीबी का घना अन्धकार लोगों के घरों में व्याप्त हो रहा था।

यह विचार कर इन्दिरा गाँधी ने उन बैंकों को जनता के हित के लिए अधिग्रहण कर लिया। जिससे विकास की गंगा ग्रामोन्मुखी होकर प्रगति पथ पर चल पड़ी।[1] भारत राष्ट्र के राज्यों के विलीन हो जाने पर भी 'प्रीर्वापर्स' के रूप में प्राप्त होने वाले धन की व्यवस्था को लोकतन्त्र की शक्ति से समाप्त करने हेतु वह संविधान में संशोधन चाहती थी। उस कार्य के लिये समर्थन न पाकर उन्होन उस लोकसभा को भंग कर दिया। और पुनः जनमत से निर्वाचित होकर संविधान में प्रीवीपर्स सुविधा को समाप्त कर दिया।

कवि कहता है – इस दुःसाध्य कार्य से समस्त देश में प्रतिष्ठा को प्राप्त उन्होने अपने आलोचको और प्रगति मार्ग के अवरोधकों के मुखमलिन कर दिये।[2] निरीह दलित जनों का गरीबों के दुःख से उद्धार करने के लिये बहुशः अंशदान ग्रामों में चारों ओर कृषि और कुटीर उद्योगों को बढ़ाने का प्रयास किया।[3]

व्यवसायी वर्ग की भृष्ट प्रवृत्ति को कठोर दण्ड से नियत्रित करती हुई उन्होने सामान्य वस्तुओं से बिक्री की। व्यवस्था जनहित को ध्यान में रखकर की। समाज का विकास करने वाली वह विकास कार्यो में निरन्तर प्रगति प्राप्त करती हुई अपने सौजन्य और मधुर व्यवहार से भी जन मानस में प्रतिष्ठित हो गयीं।

---

१. **इन्दिराजीवनम्** - *विचिन्त्य चैतत् सहसेन्दिरा तान्,*
व्यापारकोषान् जनताहिताय।
अध्यग्रहीद् येन विकासगण,
ग्रामोन्मुखीभूय गतिं प्रपेदे।।

२. **इन्दिराजीवनम्** - *दुःसाध्यकृत्येन समस्तदेशे*
प्यनेने सद्योऽधिगतप्रतिष्ठा।
आलोचकानां गतिरोधकानां,
मुखानि चासौ मलिनीचकार।।

३. **इन्दिराजीवनम्** - *दारिद्रियदुःखाद् दलितान् निरीहा–*
नुद्धर्तुमेषा बहुशोंऽशदानैः।
कृषि कुटीरोद्यमिता समन्ताद्,
ग्रामेषु संबर्धयितुं प्रयेते।।

पश्चिम पाकिस्तान में जन्मा वहां का प्रशासक वर्ग पूर्वांचल में स्थित वड़भाग रोगों की उत्तम संस्कृति को भंयकर आन्तरिक दमन चक्र से नष्ट करने में संलग्न था। उन लोगों ने अपने ही धर्म राष्ट्र में अपने ही धर्म वाले के पुत्रों को मारा, कुमारियों का अपहरण कर लिया, धन धान्य लूट लिया और तत्काल घरों को आग में झोंक दिया। पाकिस्तान के उत्पात से व्याकुल लोग भारत में आ गये। असंख्य पार्कीय शरणार्थियों के प्रवेश से संसाधनों के अभाव से भारत व्याकुल हो गया। उन्होने पाकिस्तान के प्रशासक से उसे समय से किसी प्रकार रोक लेने की प्रार्थना की।

लोक शान्ति के लिये विवेक बुद्धि से इन्दिरा ने जो भी सद्वचन कहे थे, मदोद्धत पाक शासकों ने अपनी दुर्बुद्धि और दुर्भाग्यवश उन्हें तिरस्कृत कर दिया।[1] बड़ीय लोगों ने भी चारों ओर सशस्त्र विद्रोह युद्ध की प्रतिघोषणा कर दी। बंग जनता के मुक्ति हेतु सशस्त्र युद्ध को जानकर पाकिस्तान में शासकों की प्रकृति भी अत्यन्त दानवी हुयी।[2]

इस दुष्कृत्य से पहले से ही बढ़ी हुई सीमा विपत्ति को और आगे बढ़ाते हुये पाक ने भारत की शान्त पश्चिमी सीमा पर सेना के द्वारा आक्रमण करने का प्रयास किया। जिससे इन्दिरा गाँधी ने अपने राष्ट्र जनों को सम्बोधित करते हुये कहा -

अपने घर को स्वयं अग्नि से जला कर उससे स्वयं जलता हुआ जो प्रमन्त आततायी पड़ोसी के घर को जलाने का प्रयास करता है। दुर्मदान्ध कभी क्षमा के योग्य नही होता।

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *विवेक बुद्धया जनशान्तिहेतोः,*
सदुक्तमासीद् यदपीन्दिरायाः।
मदोद्धतेः पाकजनेश्वरैस्तत्,
तिरस्कृतं दुर्मतिभिर्नियत्या।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *विज्ञाय वड़स्थितमानवानां,*
सशस्त्रयुद्धं निजमुक्तिहेतोः।
प्रशासकानामपि तत्र पाके,
प्रतिक्रियाभूदपि दानवीया।।

जो श्वान स्वभाव से लुटेरों की तरह कश्मीर भूमि पर चोरों के साथ आक्रमण कर कठोर मार पड़ने पर भागता हुआ भी भूभाग को आज भी नहीं छोड़ रहा है। एक बार जो पंजाब प्रदेश और कश्मीर की भूमि पर पराजित हो चुका है। वही पुनः आज हमारे राष्ट्र की सीमा पर आक्रमण करे तो समझो कि दुष्टों की प्रकृति कितनी दुष्परिणाम वाली होती है। कवि कहता है -

क्षुद्र कीट पतंग भी चारों ओर प्रभा से प्रकाशित दीपशिखा को देखकर उसे आक्रमण कर नष्ट करने में प्रवृत्त होता है और स्वयं अपने पक्षों के साथ नष्ट हो जाता है।[1]

जब राष्ट्र दुर्मद शत्रुओं की सेनाओं से आक्रान्त हो रहा हो तब अपनी मातृभूमि की रक्षा में लगे युवक शत्रु की गर्वोक्ति कैसे कर सकते है। इन्दिरा जी के अवगाहन मात्र से रणकुशल सेनापतियों ने अपनी सेना के द्वारा आक्रमण करते हुये उद्धत शत्रु का बल ध्वस्त कर दिया। शौर्य से दीप्त साहस से भरे हुये रणकौशल में समृद्ध वीरों ने जल स्थल और आकाशगत प्रहारों से शत्रु को पराजित कर विजयश्री का वरण कर लिया। इस प्रकार विश्व में मान्यता प्राप्त बांगलादेश का जन्म हुआ।

तत्पश्चात् शिमला में पाक के साथ द्विपक्षीय सन्धि करके उसकी लगभग एक लाख सेना को उस दयालु इन्दिरा ने लोकहित में मुक्त कर दिया।[2]

कुछ समय पश्चात् प्रशस्त वैज्ञानिकों ने अणु अस्त्र का निर्माण कर लिया उससे राष्ट्र की शक्ति बढ़ गयी साथ ही उसने शत्रुओं के हृदय पर वज्रपात कर दिया।

---

१. **इन्दिराजीवनम् -** *क्षुद्रोऽपि कीटः परितः प्रभाभिः,*
प्रकाशितां दीपशिखां विलोक्य।
आक्रम्य तां लोपयितुं प्रवृत्तः,
स्वयं स्वपक्षैः सह नाशमैति।।

२. **इन्दिराजीवनम् -** *ततो द्विपक्षं प्रविधाय सन्धिं,*
पाकेन सार्धं शिमलानगर्याम्।
मुमोच सेनामपि लक्षकल्पां,
बन्दीकृतां लोकहिते दयार्द्रा।।

प्रधानमंत्री के पद पर आरोहण करने पर भी इन्दिरा कांग्रेस पार्टी के कार्यो से निरन्तर चिन्तित और खिन्न रहती थी। यद्यपि उन्होने अपनी प्रतिभा से प्रशासन को नियन्त्रित कर लिया था पर उनका दल उनके प्रभाव से प्रभावित नहीं हो रहा था। कांग्रेस दल, सिन्डीकेट के रूप में कूटनीतिपरक कुछ नेताओं की मनोवृत्ति के वशीभूत हो रहा था। शासन कार्य में सक्षम और लोकजीवन में कुशल होने पर भी वे दल के अन्तविरोध के कारण सावधान और चिन्तित रहती थी। वे प्रति भावान सद्बुद्धि, धैर्य और साहस से शोभायमान थीं। विश्व की राजनीति को वह पहले भी बहुत देख चुकीं थीं। अतः वे अपने दल को भी वैदिक चतुराई की दृष्टि से देखती रहतीं थीं। कवि कहता है।-

राजनीति में भली प्रकार पिता के सामने ही मँजी हुई चतुर इन्दिरा ने दुराराध्य दल नेताओं को दूर करने के लिये दल को दो पाटों में फाड़ दिया। प्रियदर्शिनी इन्दिरा ने इसके अन्दर अपने पक्ष के विश्वस्थ जन नेताओं के द्वारा पुर्नगठित किया।[१]

सफलता के साथ (स्वाभिमत राष्ट्रपति पद के लिये श्री वी०वी० गिरि को विजयी बनाकर) अलग हुये और विकास के लिये उद्यत इन्दिरा को कांग्रेस दल को लोगों ने नवोदित चन्द्र के समान देखा।[२]

ऐश्वर्य के शिखर पर आरूढ और प्रभाव से मण्डित सूर्य प्रभा के समान इन्दिरा ने अप्रसन्न रहने वालों को प्रभावहीन कर दिया। जैसे सूर्य प्रभा कुमुद नामक पुष्प को नलित कर देती है।[३]

---

१. **इन्दिराजीवनम् -** *राजनीतौ सुनिष्णाता पितुः कालात् सुदक्षिणा।*
दुराराध्यानपाकर्तुं दृणाति स्म दलं द्विधा।।

२. **इन्दिराजीवनम् -** *साफल्येन पृथग्भूतं विकासाय समुद्यतम्।*
नवचन्द्रमिवापश्यल्लोकस्तद्दलमैन्दिरम्।।

३. **इन्दिराजीवनम् -** *ऐश्वर्यशिखरारूढा प्रभावपरिमण्डिता।*
सूर्यप्रभेव सा चक्रे कुमुदान मलिनामनपि।।

उसका प्रभामण्डल इस प्रकार वृद्धि को प्राप्त हो रहा था कि उसे देखने के लिये लोग ऐसे उत्सुक रहने लगे जैसे चकोर चन्द्र को देखने के लिए उत्सुक रहता है।[१]

उनका व्यक्तित्व वट वृक्ष की भांति ऐसा विशाल और सघन हो गया था जिसकी छाया का आश्रय लेकर कांग्रेस दल कृतार्थ हो गया। नीतिनिर्धारण में उनका जो जैसा विचार होता था। वह उसी रूप में कांग्रेस दल को सर्वसम्मति से स्वीकार होता था।

पाकिस्तान की पराजय, अपनी सैन्य शक्ति की बृद्धि और बंगलादेश के निर्माण से वे यश से अलंकृत हो गयी। [२]

उन्होने अणुशक्ति का निर्माण कर अणुबम के भूगर्भ में विस्फोट कर भारत को विश्व मण्डल में दुर्जेय कर दिया।

इस राष्ट्र की अणुशक्ति विकास शान्ति और राष्ट्र की समृद्धि के लिये होगी इस प्रकार की घोषणा कर उन्होंने विश्व नेताओं का आश्वस्त कर दिया। कवि कहता है -

जवाहर के प्रति भाव गुणों से सम्पन्न, धैर्य और साहस की समृद्धि तथा राजनीति की क्रियाओं से सुदीक्षित इन्दिरा जन और जननायकों की वन्दनीय हो गयीं थीं।[३]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *वर्धमानं विरेजेऽस्याः प्रभामण्डलमीदृशम्।*
द्रष्टुमुत्का जना आसंश्चकोरा ऐन्दवं यथा।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *राजयेन पाकस्य सैन्यशौर्यविवर्धनैः।*
बंगलादेशनिर्माणात् सा यशोभिरलंकृता।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *जवाहरस्य प्रतिभागुणाना–*
मियं समृद्धिः धृतिसाहसानाम्।
सुदीक्षिता राजनयक्रमाणां,
बभूव वन्द्या जननायकानाम्।।

इन्दिरा गाँधी ने गरीबों से ग्रस्त , धनाभाव से प्रभावित पाक युद्धों से जर्जर राष्ट्र में विकास की ओर ध्यान दिया। राष्ट्र में उद्योगों में अधिक उत्पाद कृषि क्षेत्रों में वृद्धि के द्वारा तथा समस्त कार्यों में योजना बना कर निर्णय से विकास के लिये वे प्रयत्नशील हो गयी। ग्रामों की गरीबी के विकास के हेतु और श्रमिकों के हित के लिये एकीकृत विकास कार्यक्रम का और अधिक प्रसार किया गया।

ग्रामीणों के लिये (इन्दिरा) आवासों का निर्माण कार्य, युवकों के लिये शिल्प का प्रशिक्षण तथा अनुदान देकर गरीब और दलितों का उद्धार कार्य किया गया।[१]

निरन्तर अच्छे प्रयत्नों से समाज शिक्षा और लोगों को प्रशिक्षण देकर इन्दिरा प्रशासन ने मनुष्यों की जन्मदर को वश में करने का प्रयास किया। इस प्रकार लोकनिर्माण एवं विकास कार्यो में संलग्न यशस्वनी इन्दिरा को कार्य की गुरूता के कारण सुख शान्ति प्राप्त नही थी। भारत को समृद्धशाली बनाने के बहुत प्रयास के बाद भी न तो गरीबी ही दूर हो रही थी और न ही बेरोजगारी कम ही हुई थी।

विकासरूपी हनुमान जैसे जैसे अपना शरीर बढ़ा रहे थे। वैसे वैसे ही जन्मदर रूपी सुरसा खाने के लिये अपना मुख फैला रही थी।[२]

वर्षा बाढ़ और कहीं सूखा जैसे दुर्भाग्य और प्रकृति के प्रकोप से भी देश को क्षति पहुंची। कवि कहता है –

निश्चय ही समाज जब प्रकृति का कोप भाजन होता है तभी दुश्चरित्र पुरूषों को भ्रष्टाचार आरम्भ हो जाता है।[३]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *ग्राम्यवासीविनिमाणं युवशिल्पप्रशिक्षणम्।*
अनुदानप्रदानेन दलितोद्धवरणं तथा।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *विकाससमारूतेगात्रिं वर्धते स्म यथा।*
मुखं व्यांदात्तयाश्नातुं सुरसाजनजन्मता।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *जायते हि यदा लोकः प्रकृतेः कोपभाजनम्।*
तदैव देश्चरित्राणां भ्रष्टाचारःप्रवर्तते।।

जननेता धनी हो रहे थे। यह लोग अनाचार से दुर्लभ राष्ट्रसम्पति को खींच रहे थे। धन धान्य से समृद्ध लोगों के पास उसकी बृद्धि के असंख्य साधन उत्पन्न हो गये। परन्तु गरीब निर्धनों के लिये केवल राम का नाम ही था। जीविका साधन तथा उद्यमहीन युवकों में आक्रोश भर रहा था और धीरे धीरे सर्वत्र असन्तोष की आग सुलग रही थी। विपक्षी वर्ग भी संसद में अवसर प्राप्त कर जनता की उपेक्षा की समीक्षा करके क्रोध के साथ शासन की निन्दा करता था।

उस समय गुजरात में विपक्ष दल का शासन था वहां पर युवा आन्दोलन ने निर्भय होकर अपना उग्र रूप धारण कर लिया।[1]

इसी प्रकार बिहार राज्य में भी जनान्दोलन उठ रहा था। वहां विपक्ष द्वारा अनुमोदित युवकों के तीव्र आन्दोलन में जयप्रकाश नारायण उनके अग्रणी नेता बन गये। उनके प्रभाव के कारण असन्तोष और बढ़ गया। उसको शान्त करने पर भी वह बढ़ता ही जा रहा था।

गतनिर्वाचन में विजय प्राप्त कर प्रियदर्शिनी इन्दिरा लोकसभा पहुंच गयी थीं। तथा श्री नारायण ने तभी याचिका दायर कर दी।

उस संघर्षकाल में जनान्दोलन के दुर्दिन ने घाव पर नमक की तरह उस याचिका का निर्णय आ पड़ा।[2]

उस इन्दिरा की चुनाव विजय को रद्द नही किया गया, अपितु उसे छःवर्ष के लिये चुनाव में भाग लेने को निषिद्ध कर दिया गया।
दीनजन धार्मिक और बृद्धिजीवी वर्ग विचार करने लगे कि अलक्षित दैव ने कैसा वज्रपात कर दिया।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम् -*** *आसीच्च गुर्जरप्रान्ते विपक्षस्य प्रशासनम्।*
यूनामान्दोलनं तत्र दधौ निर्भयमुग्रताम्।।

२. ***इन्दिराजीवनम् -*** *संघर्ष समये चास्मिन् जनान्दोलनदुर्दिने।*
क्षत क्षार इवासह्योऽपतत् तस्याश्च निर्णयः।।

३. ***इन्दिराजीवनम् -*** *व्यचारयन् जना दीना धार्मिका बुद्धिजीविनः।*
वज्रपातः कृतः कीदृग् विधिना दुर्विभावना।।

वे सोच रहे थे कि ये वही इन्दिरा है जिसने क्रूर पाकिस्तान के शासकों के जीत लिया और पूर्व पाकिस्तान को उनके बन्धन से मुक्त कर दिया। (बंगलादेश स्वतन्त्र हो गया।)[1]

भीतरी बाहरी दशा में मन बुद्धि और प्राणों में विक्षोभ करने वाले उस निर्णय को सुनकर इन्दिरा किंकर्तव्यविमूढ हो गयीं। विशेष रूप से इन्दिरा के पद और प्रतिष्ठा के लिये इस निर्णय के कारण यह असहनीय हो गया था। न्यायालय के सम्मान की रक्षा के लिये इन्दिरा के अनुयायी इन्दिरा कांग्रेस के नेता त्यागपत्र देने की सलाह देने पर भी विचार करने लगे थे।

बाहर से लोगों के आन्दोलन के दुर्दिनों और अन्तर के विचारों की विफलता के घने बादलों के अन्धकार में आन्दोलित इन्दिरा जी की बुद्धि प्रकाश खोजने के लिये व्याकुल हो गयी।[2]

इन्दिरा सोच रहीं थीं कि यही नैतिक है कि मैं प्रधानमंत्री का पद त्याग दूं। इसमें नीतिज्ञ लोगों का क्या मत होगा, इसमें राजनीतिज्ञता क्या होगी। आज तक राष्ट्र के लिये जो मैने और मेरे पिताजी ने किया उस सबको और अपने भविष्य को अन्धेरी गुफा में झोंककर विपक्षी वर्ग की इच्छापूर्ति कर दूं।

इस प्रकार विधिवशात अपने प्रशस्त मार्ग में आ पड़ी दुष्परिणाम वाली वाधा को तत्काल हटाने के लिये व्याकुल दृष्टि से उपाय खोजती हुयी। इन्दिरा ने यह विचार कर कि आपत्ति में बुद्धिमान लोग वर्तमान काल से ही व्यवहार करते है संविधान में स्थित सुदुर्गम मार्ग पर चलने का निर्णय ले लिया।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *इयमेव यया क्रूरा विजिताः पाकशासकाः।*
पूर्वपाकं व्यधाद् धीरा मुक्तं तद्बन्धनादपि।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *वहिर्जनान्दोलनदुर्दिनानां,*
विचारवैकल्यधनावलीनाम्।
आन्दोलितान्तरस्तमसीन्दिराधीः,
, प्रकाशमन्वेष्टुमथातुराभूत्।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *इत्थं दैववशाद् दुरन्तपतितां बाधां प्रशस्ते पथि,*
सद्यो रोद्धुमुपायमाकुलदृशा सा मार्गयन्तीन्दिरा।
काले चापदि वर्तयन्ति सुधियोवद् वर्तमानं हित-
मित्यालोच्य सुदुर्गमं निर्णयद् मार्गं विधाने स्थितम्।।

तत्पश्चात घनी अंधेरी रात में उन्होने राष्ट्र की रक्षा के व्यवस्था में निहित विशेष अधिकार का उपयोग करते हुये अपने ऊपर किये जाने वालों प्रहारों को रोकने की इच्छा से कवच की भांति अमोघ आपस्थितिरूपी अस्त्र का सहसा प्रहार कर दिया। आपातकाल - कानून लागू हो जाने के बाद अवरोध की व्यवस्था में विपक्ष के समस्त मुख्य दल के प्रबन्धकर्ता निग्रहण -दण्डबन्धन के अन्तर्गत रात्रि में कारागार मे बन्द कर दिये गये।[1]

समस्त समाचारों का प्रकाशन अनिवार्य रूप से निरीक्षण किया जाने लगा। इसी प्रकार अनियत्रित बातें करना या भाषण देने पर दण्ड और पकड़े जाने की व्यवस्था हो गयी। जिला मजिस्ट्रेट असीमित शान्ति साधन सम्पन्न हो गये और दण्डित मनुष्य की दण्ड के विरूद्ध कहीं सुनवाई नही थी।

समझदार लोगों ने मौन धारण कर लिया तथा समस्त प्रजा मूक जैसी हो गयी। उस समय नवीन समाचार वही होता था जो शासकों की दृष्टि से शुद्ध हो कर निकलता था।[2]

न कहीं शासन के विरोध विकार की व्याकुलता थी और न कहीं जनान्दोलन के दर्शन होते थे। प्रशासन के कार्यो पर कोई विवाद नही हो सकता था और प्रशासक आलोचना के परे हो गये थे।[3]

---

१. **इन्दिराजीवनम्** - *अवरोधविधौ विपक्षगाः,*
सकला मुख्यदलप्रबन्धकाः।
अथ निग्रहदण्डबन्धनै-
र्निशि कारागृहबन्धिनोऽभवन्।।

२. **इन्दिराजीवनम्** - *बुधवागपि मौनमावहद,*
अभवद् मूक इव प्रजाजनः।
नववृत्तमभूत्तदेव यत्,
प्रथमं शासकदृष्टिपावितम्।।

३. **इन्दिराजीवनम्** - *न विरोधविकारवैक्लवं,*
न जनान्दोलनदर्शनं क्वचित्।
अवितर्क्यमभूत् प्रशासन-
मसमीक्ष्या अभवन् प्रशासकाः।।

इस प्रकार समस्त विपक्षी वर्ग को दवा देने के बाद और समस्त प्रसाशन को पुनः सुदृढ़ करके इस आपात काल की फल सिद्धी हेतु बीस सूत्री योजना बनाई।[1]

प्रचुर अन्न ओर तिलहन के उत्पादन तथा सिंचाई के साधनों की बृद्धि द्वारा इन्दिरा ने इस राष्ट को अन्न में आत्म-निर्भर बनाने का प्रयास किया। वृक्षों की अधिक कुटाई से अनुर्वत और शुष्क हुई भूमि को आच्छादित करने के लिये उन्होने सर्वत्र वृक्षारोपण कार्य करने का आदेश दिया।

उन्होने बंधुआ श्रमिकों को दासता से मुक्त कराके उनके पुर्नवास की पूर्ण व्यवस्था की श्रमिकों के हित की चिन्ता करते हुये उनकी दैनिक मजदूरी की दरों का निर्धारण किया।[2]

आबादी के बढ़ने के कारण गरीबी को रोकना अति कठिन समझकर उन्होने कड़वी औषधि के समान परिवार नियोजन कार्यक्रम ग्रहण कर उसे सफल बनाने के लिये लोगों को समझाया। (जैसे औषधि कड़वी होने पर भी रोग नाश के हित में लोग उसे ग्रहण कर लेते है, वैसे परिवार नियोजन कुछ कड़वा लगता है, पर परिवार के लिये हितकर होने पर ग्राह्य है।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *प्रविधाय विपक्षशातनं,*
सुदृढ़ीकृत्य पूनः प्रशासनम्।
निजकृत्यफलप्रसाधने,
विहिता विशतिसूत्रयोजना।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *अहरच्छ्रमदासतामपि,*
पुनरावासविधिव्यवस्थया।
श्रमदनिकमूल्यमादिशत्,
श्रमिकाणां हितचिन्तयाप्यसौ।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *जनबृद्धिवशेन दुस्तरां*
प्रसमीक्ष्यापि दरिद्रतामिह।
कटुकौषधिवन्नियोजनं,
सफलीकर्तुमुपादिशज्जान्।।

परन्तु लोकहित की कामना से प्रचलित ओर सुलभ इस योजना को जनता ने निष्फल कर दिया। परन्तु जनबृद्धि रूपी प्रबल राक्षसी को नव राष्ट्र के विकास का विनाश करने वाली समझकर शासकवर्ग शक्ति के द्वारा भी उसे रोकने के लिये उद्यत हो गया।

निश्चित रूप से परिवार नियोजन कार्यक्रम महाज्वार की तरह बढ़ रहा था। जिसने समस्त जनता रूपी महासागर को शीघ्र आन्दोलित कर दिया।[1]

उस समय इस बीस सूत्री कार्यक्रम में अत्याधिक लोकहित का कार्य हुआ। परन्तु बलपूर्वक परिवार नियोजन ने जनता के हृदय में आक्रोश उत्पन्न कर दिया। इसके परिणाम ने निश्चयं ही निर्वाचन में जनमत को प्रभावित करदिया। "जनवाणी और जनता के समाचार की सूचना पर प्रतिबन्ध होने के कारण इन्दिरा अपने गुप्तचरों से नियन्त्रित व्यवस्था द्वारा ही देश की प्रगति और देश की मनोदशा का समाचार जान पातींथीं।"[2]

जनता के हित में चलायी गयी सभी योजनाओं का उचित न्याय द्वारा फल कल्याणकारी तो हुआ। सन्ततनिरोध कार्य में उत्पन्न अतुलनीय भय ने उन अच्छाइयों को हस्तिनानवत कर दिया। (हाथी नहाता है और तुरन्त अपने ऊपर धूल फेंक लेता है।)[3]

---

१. **इन्दिराजीवनम् -** *परिवारनियोजनक्रमः,*
प्रबलज्वार इव प्रबर्धितः।
सकलं जनतामहार्णवं,
सहसान्दोलिततवानपि ध्रुवम्।।

२. **इन्दिराजीवनम् -** *जनवाग् जनवृन्तसचना–*
प्रतिबन्धादपि सा विवेद वै।
निजगुप्तचरैर्नि यन्त्रितां,
प्रगतिं देशमनोदशां तथा।।

३. **इन्दिराजीवनम् -** *जनहितविहितानां योजनानां प्रगाढं,*
फलमुचितनेयेनाभूत्तु कल्याणकारि।
परमतुलमनल्पं सन्ततीनां निराधे,
भयमकृत समस्तं तत् करिस्नानमेव।।

गुप्तचर विभाग के वरिष्ठ जनों से अपने उदार कार्यो से समस्त जनता को शान्त और प्रसन्न जानकर निर्वाचन के लिये उचित और हितकर समय समझकर इन्दिरा जी ने आपातकाल के नियमों को शिथिल कर दिया।[1]

संसार में मनुष्य जन मंगल का विचार कर अनेक प्रकार के कार्य करता है। परन्तु निर्यात नदी के हृदय में छिपे रहने के कारण उसके फल का पता किसी को नही होता है। अर्थात् उन कार्यो को फल अनुकूल आयेगा या प्रतिकूल।[2]

कवि कहता है - जनमत द्वारा चलाये जा रहे उग्र आन्दोलनों का नियन्त्रण करना यदि उचित है तो उन्हें प्रजातन्त्र की रीति से ही करना चाहिये यदि उनके दमन की प्रतिक्रिया घोर आपातकाल के नियमों से चलती है तो उसका विष बीज असहनीय रूप में समाज में फैलता है।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *विज्ञायगुप्तचरवर्यजनैः समस्तं,*
शान्तं प्रसन्नमपि लोकमुदार कृत्यैः।
निर्वाचनोचितहितं समयं समीक्ष्य,
सापातकालनियमान् शिथिलीचकार।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *यदपि बहुविधु करोति कार्य,*
भुवि मनुजो जनमंगलं विचार्य।
तदपि फलितमस्य दुर्विभात्यं,
नियतिनदीहृदये तिरोहितं वै।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *जनमतविहितानामुग्रमान्दोलनानां,*
नियमनमुचितं चेत् स्यात्प्रजातन्त्ररीत्या।
यदि दमनमुदञ्चद्धोद्मापातानीत्या,
फलति गरलबीजं तत् समाजेऽविसह्यम्।।

फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उनके रक्षक भी उनके भक्षक बन गये। उनके मार्ग में रक्षा करने के लिये खड़े दोनों युवा शरीर रक्षकों ने भी स्वचालित मर्शानगनों से अपने पवित्र विश्वास और इन्दिरा जी पर प्रहार कर दिया।[1]

तभी वहां पर स्थित सशस्त्र रक्षकों ने उन दुसाहसी हत्यारों को पकड़ लिया उनमें से एक अपराधी के मारे जाने पर भी लोकप्रिया इन्दिरा नही बची। प्रहार के शब्दों के साथ ही वधू सोनिया व्याकुल मन से दौड़कर आर्या और इन्दिरा को भूमि पर क्षत-विक्षत देखकर उनसे लिपट गयी। वह उनके प्राण बचाने की इच्छा से उन्हें स्वयं शीघ्र चिकित्सालय ले गयी।

अंसख्य प्रयासों से उच्यकोटि के विवश चिकित्सकों और शल्यक्रिया के नवीन साधन द्वारा भी घावों से जीर्ण प्रियदर्शिनी इन्दिरा का शरीर दुबारा सांस नही ले सका।[2]

अपने गुण और कार्यो से पृथ्वी पर राष्ट्र के गौरव और उसके हित मे ही अपने जीवन को सर्वत्र फैला कर तथा देश की दवाग्नि को शान्त करने के लिये ही मरकर उन्होने यशरूपी शरीर द्वारा अमरता प्राप्त कर ली।[3]

---

१. ***इन्दिराजीवनम्*** - *तदैव तस्याः पक्षरक्षणे स्थिता-*
वुभौ युवानौतनुरक्षकावपि।
स्व चालितास्त्रैः सहसाऽभिजघ्नतुः,
पवित्रविश्वासमपीन्दिरामहो।।

२. ***इन्दिराजीवनम्*** - *असंख्ययत्नैर्विवशैर्भिषग्वरैः,*
समस्तनव्यैरपि शल्यसाधनैः।
क्षतैर्विशीर्णा प्रियदर्शिनीतनु-
र्न जातु लेभे श्वसनक्रियां पुनः।।

३. ***इन्दिराजीवनम्*** - *गुणक्रियाभिर्भुवि राष्ट्रगौरवं,*
विकीर्य तस्यैव हिते स्वजीवनम्।
हतापि देशस्य दवाग्निशान्तये,
यशः शरीरेऽमरतामवाप सा।।

हृदय को चीर देने वाले इस मां की हत्या का समाचार सुनकर उनके पुत्र राजीव गाँधी शोकव्याकुल हो कलकत्ता से विमान द्वारा दिल्ली आ गये। विदेश यात्राओं पर गये हुये राष्ट्रपति श्री जैल सिंह इस दुखान्त समाचार को सुनकर अत्यन्त दुखी होते हुये राजधानी दिल्ली की ओर लौट आये। सभी दिशओं से आये हुये, शोकव्यथा से पीड़ित मनोदशा वाले लोगों की असंख्य श्रदांजलियां देश विदेश से भी आने लगी।

अश्रुपूर्ण मुख से जब वरिष्ठ चिकित्सकों ने इन्दिरा जी के महाप्रयाण(मृत्यु) की सूचना दी तभी लोगों की आक्रोशपूर्ण प्रतिक्रिया शोकसमुद्र में ज्वार के समान हुई।[1]

दो सिख युवकों द्वारा इन्दिरा की मृत्यु का समाचार सुनकर क्रोध से विवेक का विनाशकर मूढ बने हुये, विध्वंस कार्य में दक्ष लोगों ने जाति के लोगों को पीड़ित करना आरम्भ कर दिया।[2]

चारों ओर अराजकता फैल गयी।

जो इन्दिरा जाति धर्म से ऊपर पहुंचकर जीवन भर मानवता की सेवा करतीं रहीं। उनको लेकर यदि जन हिंसा हो तो क्या उनकी आत्मा के सुख के लिये होगी।[3]

---

१. **इन्दिराजीवनम् -** *भिषग्वरैःसाश्रुमुखै र्यदात्तं,*
महाप्रयाणं सहसेन्दिरायाः।
शोकार्णवज्वारसमा जनानां,
प्रतिक्रियाऽऽ कोशपरा तदाभूत्।।

२. **इन्दिराजीवनम् -** *सिक्खद्वयेन प्रहतां निशम्य,*
क्रोधेन विध्वस्तविवेकमूढ़ाः।
सर्वत्र विध्वंसन कार्यदक्षा,
अपीडयन् जातिजनान् निरीहान्।।

३. **इन्दिराजीवनम् -** *या जातिधर्मोपरि वर्तमाना,*
स्वजीवने मानवतां सिषेवे।
उद्दिश्य तां चेज्जनहिंसनं स्यात्,
किमात्मनस्तद् भविता सुखाय।।

राजनीति के क्षेत्र में जिसकी संसार में प्रसिद्धि है जिसकी बुद्धि गहन अन्धकार मे भी प्रकाश ला देती है। जिसका हृदय अन्दर से निरन्तर स्नेह और मित्रभाव से पूर्ण है। वह राष्ट्र की आत्मा समाज की लक्ष्मी इन्दिरा जाने कहां चली गयी।[1] सभी ओर से राष्ट्र की रक्षा करने के लिये समुद्र और वायु की सेना नवीन सशस्त्रास्त्रों और प्रखर गति वाले लड़ाकू विमानों से सुसज्जित हो गयी। कश्मीर से लेकर दक्षिण समुद्र तक प्रचुर शक्ति सम्पन भारत का जिसने निर्माण किया उसका प्राण अपहरण या तो कुबुद्धि पुरुष का खेल है अथवा दैवकी दुष्चेष्टा है।

जिसका जन्म कृतित्व और इष्टप्रतिष्ठा का व्रत था। जिसका लक्ष्य धर्म समता और गरीबी का विनाश था और जिसने दुष्चक्र से उस अखण्ड भारतभूमि को बचाने के लिये अन्त में अपनी बलि देकर उस भारत माता को अपने रक्त से सींच दिया।[2] कवि कहता है -

कैसी प्रीति और कैसा सच्चरित्र, कैसा स्नेह बन्धन, अर्थात् सब समाप्त हो गया। इस तूफान और आंधी ने तथ कलुषित हाथों ने जीवन दीप बुझा दिया है। इस सघन भयंकर अन्धकार में चारों ओर कुछ न दिखाई पड़ने से व्याकुल लोगों के लिये विपत्ति में एक मात्र आलम्बन राम का नाम ही शेष रह गया है जो सदा सत्य और नित्य है।[3]

१.**इन्दिराजीवनम्** - *शक्तिर्यस्या भुवनविदिता राजनीतिप्रकोष्ठे,*
बुद्धिर्यस्यां गहनतिमिरेऽप्यानयन्ती प्रकाशम्।
यस्या अन्तर्हृदयमनिशं स्नेहसौहार्दपूर्ण,
राष्ट्रस्यात्मा क्वनु खलु गता सेन्दिरा लोकलक्ष्मीः।।

२. **इन्दिराजीवनम्** - *यस्या जन्म कृतित्वमिष्टमभवद् राष्ट्रप्रतिष्ठाव्रतं,*
यस्या लक्ष्यमभूच्च धर्मसमता दारिद्रियनाशस्तथा।
दुश्चकात् तदखण्डभारतमहीं संरक्षितुं वै ययाऽ,
प्यन्ते चात्मबलिं विधाय जननी रक्तैस्तया सिञ्चिता।।

३. **इन्दिराजीवनम्** - *कीदृक प्रीतिः किमु सुचरितं कीदृशः स्नेहबन्धः,*
झञ्झावातैः कलुषितकरै र्ध्वंसितो जीवदीपः।
घोरे चास्मिन् निविडतिमिरे दर्शनव्याकुलानां,
सत्यं शेषं विपदि मनुजालम्बनं रामनाम।।

भाषा शैली -

इसकी भाषा सरल, सरस तथा प्रसाद गुण शालिनी है। वर्ण्यविषनानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। कवि की भाषा में गौरव है जो सचमुच आकर्षण का केन्द्र है इनकी भाषा में सुकुमारता एवं प्राञ्जलता है। इस महाकाव्य को पढ़ने पर पाठक मानो यथार्थ ही इन्दिरा जी के जीवन का दर्शन करने लगता है। इन्होंने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। इनमें भावों की अभिव्यंजना की शक्ति इतनी प्रबल है कि वे कठिन कठिन तत्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकते है इसमें प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुण का यथास्थान प्रतिपादन किया गया है -

प्रसाद गुण -

१. उदाहरण -

यदा स्वराष्ट्रं सततप्रयासैः,
प्रवृन्तमासीत् प्रगतौ तदानीम्।
आसीत् स्वदुष्कृत्यविपाकबह्नौ,
दन्दह्यमानं ननु पाकराष्ट्रम्।।

इसमें *प्रसाद गुण* एवं *वैदर्भी रीति* है।

२. उदाहरण -

विवेक बुद्धया जनशान्तिहेतोः,
सदुक्तमासीद् यदपीन्दिरायाः।
मदोद्धतैः पाकजनेश्वररैस्तत्,
तिरस्कृतं दुर्मतिभिर्नियत्या।।

यह पद्य प्रसाद गुण से युक्त है एवं इसमें वैदर्भीरीति परिलक्षित हो रही है।

३. उदादरण -

शिशुबालकमातृगर्भिणी-
वनितानां बहुशः कुपोषणम्।
व्यपनेतुमसौ व्यवस्थिता-
मकरोत् पौष्टिकभोजनक्रियाम्।।

यह पद्य प्रसाद गुण एवं वैदर्भीरीति से परिपूर्ण है।

माधुर्य गुण -

१. उदाहरण - *तां सक्षमां राजनयप्रबन्धे,*

विलोक्य तातस्य जवाहरस्यः।

सन्तानसाफत्य सुखानुभूतिं,

मातुं न शेके हृदयं विशालम्।।

यह पद्य *माधुर्य गुण* युक्त है।

२. उदाहरण- *निरन्तरं सा प्रगतिं दधाना,*

विकासकार्येषु समाजधात्री।

सौजन्यमाधुर्यगुणैरपीयं,

प्रतिष्ठताभूज्जनमानसेषु।।

प्रस्तुत पद्य *माधुर्यगुणमय* है।

३. उदाहरण - *वर्धमानं विरेजेऽस्याः प्रभामण्डलमीदृश्म्।*

द्रष्टुमुत्काजना आसंश्चकोरा एंन्दवं यथा।।

इस पद्य में *माधुर्य गुण* है।

ओजगुण -

१. उदाहरण - *शौर्येण दीप्तैरापि साहसाङ्कै,*

शूरैः समृद्धै रणकौशलेन्।

जलस्थलाकाशगतप्रहारै,

शत्रुं पराजित्य वृता जयश्रीः।।

प्रस्तुत पद्य *ओजगुण* से दीप्तिमान हो रहा है।

२. उदाहरण - *ऐश्वर्यशिखरारुढा प्रभाववरिमण्डिता।*

सूर्यप्रभेव सा चक्रे कुमुदान मलिनामपि।।

इस पद्य में *ओजगुण* की प्रभा बिखरी हुई है।

३. उदाहरण - *तदार्यवीरा! नरसिंहकल्पाः,*

शौर्य स्मरन्तो निजपूर्वजानाम्।

विदीर्यवक्षः प्रसभं रिपूणां,

रक्षन्तु राष्ट्रं प्रतिभां प्रतिष्ठाम्।।

प्रस्तुत पद्य में *ओज गुण* है।

छन्द -

इस काव्य में वसन्ततिलका, वंशस्थ, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा शार्दूलविक्रीडितम् आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। इनके निम्नलिखित उदाहरण इस प्रकार है।

वसन्ततिलका छन्द -

उदाहरण -

वाणी स्वयं ललितकाव्यकलाकलापान्,
सूते यदीयकृपयाऽल्पधियोऽपि पुंसेः।
वीणास्वरै र्नवरसान् हृदि पोषयन्ती,
वागीश्वरी वितनुतां मयि सा प्रसादम्।।

इस पद्य में वसन्ततिलका छन्द है जिसका लक्षण इस प्रकार है -

"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण एक भगण दो जगण और अन्त में दो गुरू वर्ण है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १४ अन्तर है।

बंशस्थ छन्द-

उदाहरण-

विनोदयन्ती प्रियलेकमानसं ,
प्रमोदयन्ती पितरं स्वलीलया।
स्वमातु रुत्संतले शुभनना,
निनाय सा शैशवमिन्दु शोभना।।

इस पद्य में बंशस्य छन्द हैं जिसका लक्षण इस प्रकार है-

"जतौ तु बंशस्थमुदीरितं जरौ।"

इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक जगण, एक तगण, एक लगण और एक रगण हैं इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर होते है।

उपेन्द्रवज्रा छन्द-

उदाहरण-

यथा हि विज्ञान विधिं नियोज्य
तथैव क्ल्याणकरैरुपायैः।
चकार राष्ट्रं बहुशः प्रयासैः,
समृद्धमन्नैरपि साधनैः सः।।

यह पद्य उपेन्द्रवज्रा छन्द में उपनिबद्ध है इसका लक्षण इस प्रकार है।-

"उपेन्द्रवज्रा जतजास्तता गौ"

इसके प्रत्येक चरण मं एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरू गुरू वर्ण है। इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते है।

इन्द्रवज्रा छन्द -

उदाहरण *सा राजनीतौ प्रतिभावलेन,*
प्राप्य प्रवेशं प्रगतिं दधाना।
राष्ट्रस्य सर्वोच्चपदाधिरूढ़ा,
लेभे प्रतिष्ठां निजपूर्वजानाम्।।

इस पद्य मं इन्द्रवज्रा छन्दहै। इसका लक्षण इस प्रकार है।-

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"

इसके प्रत्येक चरण मं दो तगण, एक जगण और दो गुरू वर्ण होते है। तथा प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते है।

शार्दूलबिक्रीडित छन्द -

उदाहरण - *इत्थं दैववशाद दुरन्तपतितां बाधां प्रशस्तेपथि,*
सद्यो रोद्धुमुपायमाकुलदृशा सा मार्गयन्तीन्दिरा।
काले चापदि वर्तयन्ति सुधियो यद् वर्तमाने हित-
मित्यालोच्य सुदर्गमं निरणयद् मार्ग विधाने स्थितम्।।

इस पद्य में शार्दूलबिक्रीडित छन्द है। इसका लक्षण इस प्रकार है-

"सूर्याश्वैर्यसजस्ततः सगुरवः शार्दूलबिक्रीडितम्"

इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण आर दो तगण तथा अन्त मे एक गुरू वर्ण होता है। तथा १२ एवं ७ अक्षरों पर विश्राम होता ह। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते है।

अलंकार -

इन्दिराजीवनम् काव्य में अनुप्रास , उपमा, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों की छटा बिखरी पड़ी है। अलंकारां के बाहुल्य से यह काव्य सुशोभित हो रहा है।

अनुप्रास अलंकार -

१. उदाहरण- *दिने दिने सौम्यगुणैः प्रवर्धिनी,*
स्वरूप लावण्यमनः प्रसादिनी।
प्रमोदमानैर्गुरुभिः सुदर्शनाऽ,
प्यकारि नाम्ना प्रियदर्शिनी च सा।।

इस पद्य मं अनुप्रास अलंकार है अनुपास अलंकार का लक्षण इस प्रकार है -

"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषन्येऽपि स्वरस्य यत्"

२. उदाहरण - *विचिन्त्य चैतत् सहसेन्दिरा तान्,*
व्यापार कोषान् जनताहिताय।
अध्यग्रहीद येन विकासगड़ा,
ग्रामान्मुखीभूय गतिं प्रपेदे।।

इसमें त, न आदि व्यंजनों की पुनरावृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

उपमा अलंकार–

१. उदाहरण– *शनैः शनैश्चान्द्रमनसी कलेव सा,*
नवोदया सं ववृधे दिवानिशम्।
कुलानुरूपं गुणशीलगौरवं,
समादधाना नवकञ्जलोचना।।

इस पद्य में इन्दिरा के नेत्रों की समानता कमल से एवं उनके गुण ओर शील के गौरव को नवोदित चन्द्रमा की कला के समान बताया गया है। अतः यहां पर उपमा अलंकार है। जिसका लक्षण इस प्रकार है।

" साधमर्य वैधर्म्य वाक्येक्य उपमा इयोः"

२. उदाहरण - *तदार्यवीरा! नरसिंहकल्पाः*
शौर्य स्मरन्तो निजपूर्वजनानां।
विदीर्यवक्षः प्रसभं रिपूणां,
रक्षन्तु राष्ट्रं प्रतिभां प्रतिष्ठाम्।।

इस पद्य में पूर्वजों के शौर्य का स्मरण करते हुये नरसिंह के समान बताया गया है। अतः यहां पर उपमा अलंकार है।

रस-

इस काव्य में वीर, अद्‌भुत, करूण आरि रसों का यथा स्थान वर्णन किया गया है। जिनके उदाहरण इस प्रकार है।

वीर रस -

उदाहरण - *शौर्यण दीप्तैशपि साहसांकैः*
शूरैः समृद्धे रणकौशलेन।
जलस्थलाकाशगतप्रहारैः,
शत्रुं पराजित्य वृता जयश्रीः।।

इस पद्य के माध्यम से वीरों के पराक्रम का वर्णन किया गया है।अतः यहां पर वीर रस है।

अद्भुत रस-

उदाहरण - *शनैः शनैः राजनयप्रसंगे,*
सन्नीतिवाक्यैः पितरं प्रबुद्धा।
परामृशन्ती प्रतिभागुणो,
तमिन्दिराश्चर्यगतं चकार।।

इस पद्य में इन्दिरा जी की प्रतिभागत विशेषता के माध्यम से उनक अद्भुत स्वरूप के दर्शन होते है। अतः यहां पर अद्भुत रस है।

करूण रस-

उदाहरण- *जनाः प्रबुद्धा अपि बालबृद्धाः*
सामान्यलोका वनितायुवानः।
शोकाकुल वै निधनेन देव्या-
दुःखानुभूत्याऽ श्रुमुखा अभूवन्।।

इस पद्य के माध्यम से लोगों का इन्दिरा गाँधी की मृत्यु पर शोक प्रकट हो रहा है। अतः यहां पर करूण रस है।

समीक्षा -

इन्दिराजीवनम् इन्दिरा गाँधी के जीवन का परिचायक है। इसके माध्यम से इन्दिरा गाँधी की राष्ट्रीयता, देशभक्ति, स्पष्टवादिता, ईमानदारी और निष्ठा पर प्रकाश डाला गया है। इस महा काव्य में एक ओर इन्दिरा गाँधी के शैशवकाल का वर्णन किया गया है। तो वहीं दूसरी ओर उनके प्रधानमंत्री बनने का पाकिस्तान विजय का एवं राष्ट्र के लिये किये गये कार्यो का वर्णन प्राप्त होता है। इन्दिरा गाँधी अपनी विवेक पूर्ण व्यवहार कुशलता के लिये भारत में और उससे

बाहर विख्यात थीं। इस उत्साहपूर्ण तथा योजस्वी भारतीय नारी का सशक्त स्वर उनकी उज्जवल और जीवनदायी मुस्कान लोगों के मन में विश्वास भरतीं थीं - उनमें अपनी शक्ति में अच्छाई में और विवेक में दृढ विश्वास उत्पन्न करतीं थीं। इन्दिरा गाँधी अब हमारे बीच नही रहीं, जो सजग प्रहरी की तरह दो देशों की जनता की अमूल्य निधि उनकी मैत्री एवं उनके सहयोग , स्वतन्त्रता तथा शान्ति के प्रति निष्ठा की रक्षा करतीं रहीं। उनके रक्षकों ने ही उन्हें अपनी गोली का निशाना बनाया और वह काल के मुंह में समा गई।

इस प्रकार हम कह सकते है। इन्दिराजीवनम् नामक महाकाव्य में इन्दिरा के प्रारम्भिक जीवन से लेकर उनकी अन्तिम यात्रा तक वर्णन कवि ने अपनी प्रभावपूर्ण लेखनी से किया है। अतः रचना कौशल की दृष्टि से एक उत्कृष्ट महाकाव्य है।

चतुर्थ अध्याय

इन्द्रायशस्तिलकम् काव्य का साहित्यिक अनुशीलन
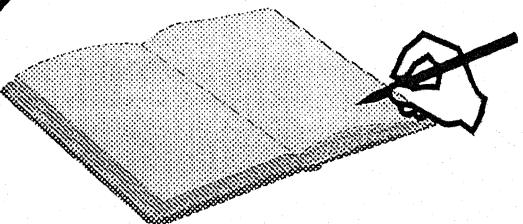
- चतुर्थ अध्याय -

''इन्दिरायशस्तिलकम्'' काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

डॉ0 रमेशचन्द्र शुक्ल का जीवन परिचय-

डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल का जन्म १५ अक्टूबर १६०६ में धौलपुर राज्य में हुआ था। इन्होंने एम.ए. सांख्ययोगाचार्य, साहित्याचार्य एवं पी.एच.डी. की उपाधि नियमित अध्ययन कर विधिवत् प्राप्त की। ये अलीगढ़ वार्ष्णेय कॉलेज में संस्कृत विभाग में प्रोफेसर रह चुके हैं। बचपन से ही डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल प्रतिभा सम्पन्न रहे हैं। अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में (बाल्यावस्था के उपरान्त) इन्होंने लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। उन्हें अध्ययन, अध्यापन तथा साहित्य रचना में भी विशेष रुचि थी।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल सरल, सरस, सहृदय एवं इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व वाले एवं कुशल शिक्षक थे। इनके जीवन में अध्ययन का विशेष महत्व रहा है। इन्होंने संस्कृत साहित्य सहित पौरस्त्य शिक्षा को हमेशा आगे बढ़ने का रास्ता माना। वैसे कहा भी गया है कि पथ-पथ पर मानव की सही मार्गदर्शिका शिक्षा ही है, चाहे वह अध्ययन से सम्बन्धित हो या फिर जीवन से। ये उच्च्व चरित्र वाले उदारमना, दृढ़ व्यक्तित्व के प्रतिभावान सत्कवि थे। कर्म में फल के प्रति निस्पृह होकर विश्वास करना ही इनका परम धर्म था। जैसा कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनन्।
माकर्मफलेहेतुर्भूमाते संगोऽस्त्वकर्मणि।।''

(श्रीमद्भगवत्गीता, २/४७)

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न होवे। इनकी महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियां इस प्रकार हैं-

१. गान्धिगौरवम्(खण्डकाव्य) -

"गान्धिगौरवम्" नामक शतककाव्य के रचयिता रमेशचन्द्र शुक्ल हैं। इस शतककाव्य में महात्मा गांधी के गौरवधायक तथा राष्ट्रोपयोगी कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ० शुक्ल ने अपनी इस कृति में चरित नायक के व्यक्तिगत गुणों से कहीं अधिक उसके राष्ट्रीयभाव पर प्रकाश डाला है। भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिवेश में उनके योगदान का आंकलन किया गया है।

२. इन्दिरायशस्तिलकम् -

इन्दिरायशस्तिलकम् नामक शतककाव्य में ११४ पेजों मं श्रीमती इन्दिरा गांधी के गुणों की चर्चा करते हुये उनकी राजनीतिक सफलताओं का उल्लेख किया गया है।

३. नवभारतपुराणम्-

इस विशाल काव्यग्रन्थ में पुराण साहित्यिक के अनुहरण में नवदीपों में प्रमुख भारतवर्ष का सांगोषांग वर्णन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें भारत की प्रमुख पवित्र नदियां, पर्वत, प्रदेश, तीर्थ, नगर, एवं सांस्कृतिक स्थलों का काव्यात्मक वर्णन किया गया है। इस प्रकार भारतवर्ष को अभिनवपुराण के आकार में प्रस्तुत करने का कवि का शाश्वत प्रयास सर्वथा श्लाघनीय है। यह काव्यग्रन्थ दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।

४. विभावनम् -

इस काव्यग्रन्थ में उपास्य देवी-देवताओं, आदर्श महापुरुषों महात्माओं आदि का काव्यात्मक स्तवन प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य की भक्तिरस सम्बन्धी निष्पत्ति अत्यन्त सहृदय संवेद्य है, जिससे विभावनम् का काव्यशास्त्रीय महत्व निःसन्देह उत्कृष्ट कोटि का है। यह काव्यग्रन्थ भी देववाणी दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।

५. प्रबन्धरत्नाकर -

इस ग्रन्थ में विविध वर्णनात्मक, गवेषणात्मक, साहित्यिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक निबन्धों का संकलन है। यह निबन्ध संकलन चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ में कवि के प्रासादिक

सरल गद्य का सुन्दर निदर्शन प्राप्त होता है। जिसमें भावात्मक, विचारात्मक सभी प्रकार के निबन्ध देखे जा सकते हैं।

६. नाट्य संस्कृति सुधा -

इस नाट्य ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति को चित्रित करने वाले सुन्दर रूपकों का संकलन हुआ है। संस्कृत रूपकों में वर्तमान, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक दशाओं के चित्रण की दृष्टि से इस कृति का महत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

७. लालबहादुर शास्त्रिचरितम् -

इस काव्य में डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल ने लालबहादुर शास्त्री के चरित्र पर प्रकाश डाला है।

८. भरतचरितामृतम् -

इस काव्य कृति में भरत का चारु चरित्र इतिवृत्तात्मक रूप से चित्रित है। भाषा शैली, काव्यसौष्ठव ओर रसनिष्पत्ति की दृष्टि से भरतचरितामृतम एक प्रभावपूर्ण काव्यकृति है एंव यह उ०प्र० शासन के द्वारा पुरुस्कृत है।

९. संस्कृत वैभवम् -

इस ग्रन्थ में संस्कृत वाङ्मय का महत्व सरस रूप में निरूपित किया गया है। जिसमें संस्कृत के प्रतिष्ठित कालजयी रचनाकारों का महत्व निरूपित किया गया है।

१०. गीतमहावीरम् -

गीतात्मक शैली में इस काव्य ग्रन्थ में महावीर का चरित्र चित्रित किया गया है। गीतिकाव्य की दृष्टि से इस कृति का महत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

११. चारुचरितचर्चा -

डॉ० शुक्ल की यह कृति अभी अप्रकाशित है। जिस पर पूर्ववर्ती काश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र का प्रभाव परिलक्षित होता है। इस ग्रन्थ में सदाचार सम्बन्धी विभिन्न पक्षों की सरस चर्चा की गई है।

१२. अभिनवहनुमन्नाटकम् -

नाट्य साहित्य में दामोदर मिश्र कृत प्राचीन हनुमन्नाटक को आदर्श मानकर अभिनव उद्भावनाओं के साथ हनुमत्चरित्र को इस कृति में रूपांत्रित किया गया है। पात्रों के चरित्र-चित्रण, सम्वाद सौष्ठव ओर रसनिष्पत्ति की दृष्टि से यह नाट्यकृति उत्कृष्ट कोटि की है।

१३. सीताचरितम् -

यह कृति भी डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल कृत है। इसमे सीता जी के चरित को वर्णित किया गया है।

१४. राधाचरितम् -

राधाचरितम् राधाजी के चरित का द्योतक है। इसको शुक्लजी ने अपनी कल्पना वैभव से उत्कृष्ट बना दिया है।

१५. श्रीकृष्ण चरितम् -

श्रीकृष्ण के चरित पद आधारित इस काव्य में श्रीकृष्ण के उत्कृष्ट स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

१६. भारतस्वतन्त्रतासंग्रामेतिहास -

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास पर लिखा यह ग्रन्थ इसमें भारत के स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बन्धित समस्त बातों का विवेचन किया गया है। अतः ऐतिहासिकता की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

१७. रसदर्शनम् -

काव्यशास्त्र सम्बन्धी अपना ज्ञान इस ग्रन्थ में रमेशचन्द्र शुक्ल द्वारा वर्णित किया गया है। रसों का तलस्पर्शी निरूपण करने की दृष्टि से रसदर्शनम् एक महत्वपूर्ण रचना है।

१८. कृष्णात्परं किमपितत्वमहं न जाने -

इस ग्रन्थ में डॉ० शुक्ल ने श्री मद्भागवत सम्बन्धी अपना उत्कृष्ट ज्ञान व्यक्त किया है, जो विशेष रूप से दशम स्कन्ध पर आधारित है। इसमें श्रीकृष्ण को विभिन्न सरस लीलाओं पर आधारित उनका अलौकिक व्यक्तित्व निरूपित हुआ है। प्रासारिकता, सरसता, भावपूर्णता की दृष्टि से यह कृति सर्वथा उच्चस्तरीय है।

- इन्दिरायशस्तिलकम् काव्य का वर्ण्य-विषय -

आचार्य रमेशचन्द्र शुक्ल प्रणीतम् "इन्दिरायशस्तिलकम्" इत्याख्य देववाण्याम् विरचितं काव्यं विपश्चितां सहृदयानां पुरः समागच्छतीति हर्षस्य विषयः।

विविधकठिनपरिस्थितिषु स्थितवाऽपि, वैदेशिक साहाय्यान्यवमत्य स्वावलम्बन-भावनामेवावलम्ब्य भारतस्योन्नत्यै श्रीमत्या इन्दिरागान्धिमहाभागया यथाप्रयतितं तन्न कस्यापि दृष्टरगोचरम्। देशदारिद्रयनिवारण-बंगलादेशनिर्माण निर्धनजनतोन्नति, श्रमिकसुरक्षा, पोखरणपरमाणुपरीक्षण, आर्यभट्टाविष्कार, विंशतिसूत्रात्मककार्यक्रमप्रभृत्यनेककार्येभरितस्य प्रधानमन्त्रिपदे स्थिता श्रीमती इन्दिरा गान्धिः भारतस्योच्छायं चिकीर्षन्ति सततं दृश्यते। राष्ट्रियचरितगायकेन महाकविनानेन वर्तमानयुगस्य महनीयव्यक्तित्वस्यास्य विषने स्वेच्छया सुरगिरा यन्निबद्धम् तदत्रभवतः सततराष्ट्रचिन्तनस्य परिचायकम्। कविः कथयति-

अत्याचारकदर्थितोद्धरणकृद् यस्यां बलं राजते
स्वालम्बं हि नवं च नव्येमददाद् देशाय या जीवनम्
मुख्यं राष्ट्रहितस्य रक्षणमहो लक्ष्यंच यस्याः शुभं
तस्यै सादरमर्प्यते कृतिरियं गान्धीन्दिरायै मया।।

इस काव्य के ११४ पन्नों में श्रीमती इन्दिरागांधी के गुणों की चर्चा करते हुये उनकी राजनीतिक सफलताओं का उल्लेख किया गया है।

काव्य का प्रारम्भ करते हुये कवि कहता हे कि भारत की मन्त्रिमहोदया, भारतभूमि की माता, महान यश से युक्त तथा सद्गुणों से युक्त इन्दिरा की जय हो।[1]

इन्दिरागांधी के गुणों की प्रशंसा करता हुआ कवि कहता है कि-

वह विमलचारुचरित्र से उन्नत, सहृदय, प्रतिभासम्पन्न, शुभविचार वाली, बुधों के द्वारा वन्दित तथा भारतभूमि के हित में सदा रत रहती थीं।[2]

---

१. **इन्दिरायशस्तिलकम्-** *जयति भारतमन्त्रिमहोदया*
भरतभूजननी-महनीयता-
महिममानयशः-परिवर्धिका
जगति सद्गुणमन्दिरमिन्दिरा
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० १)

२. **इन्दिरायशस्तिलकम्-** *विमलचारुचरित्र-विभोन्नता*
सहृदयाभरण-प्रतिभा-स्तुता
शुभविचारवती बुधवन्दिता
भरतभूमिहितेषु सदा रता
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० २)

इन्दिराजी भारतवासियों के दुःखों को भलीभांति समझती थीं इसलिये उन्होंने इसका निवारण भी किया। यथा-

इन्होनें लोगों के कष्टों का निवारण किया, मलिनता दूर की एवं दरिद्रता दूर की।[1]

समाज में फैले हुये दोष एवं कुरीतियों के निवारण के लिये प्रयत्न किये। वह चाहतीं थीं कि भारतवर्ष भी उन्नति करे एवं कोई भी अधिक्षित या बेकार न रहे। इसके लिये उन्होनें कुछ ठोस कदम भी उठाये। सम्पूर्ण भारत वैभव से युक्त हो यही उनका स्वप्न था। कवि एक अन्य पद्य के माध्यम से इन्दिरा जी के विचारों को प्रकट कर रहा है-

वह चाहती थीं- मेरा भारत शीघ्र ही प्रचुर धन-धान्य से शोभित हो। भारत भूमि ज्ञानीजन से युक्त हो और समस्त राष्ट्र के वासी शिक्षित हों।[2]

भारतवर्ष के प्रति उनका प्रेम अटूट था। इसलिये वह नित्य नयी योजनायें बनाती। जिससे भारतवर्ष में समृद्धि आये एवं बेकारी का विनाश हो सके। लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। कृषि में प्रकर्षता आये।

वह कभी भी लोगों का अहित नहीं चाहती थीं, बल्कि हमेशा अनके हित की आकांक्षा करती थीं। उनकी यही इच्छा थी कि समस्त देश के लोग सुखी एवं समृद्ध रहे। कहने का तात्पर्य है कि वह प्रियदर्शिनी समस्त देशवासियों को सुखी देखना चाहती थीं।

---

१. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *जन-विपच्चय-नाशन-पण्डिता*
मलिनता-क्लम-दैन्य-दरिद्रता
हरण-कौशलभृद् विनयान्विता
सकलसज्जन-मण्डलसत्कृता
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ६)

२. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *भवतु शीघ्रमिदं मम भारतं*
प्रचुरधान्यधर-क्षिति-शोभितं
विमल बोधजुषोऽथ च शिक्षिताः
सकलराष्ट्रनिवासिजना द्रुतम्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० १०)

इनके जीवन में अनेक कठिनाइयां आयीं। उन संकटों को विषम परिस्थितियां होते हुये भी इन्होंने झेला। भारतराष्ट्र में जितने भी विघ्न उत्पन्न उन सब का कठोरता से दमन किया। साहस की महान मूर्ति ने दुःखों से घिरे होने पर भी धैर्य नहीं छोड़ा। दृष्टव्य है-

भारतभूमि के उदय कार्य में रत रहते हुये जब अनेक विघ्न उत्पन्न हुये। तब पाक रूपी विषम परिस्थिति का इन्होनें प्रबलता से दमन किया।[1]

बंगलादेश भी अनेक कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था। वहां पर भी पाक अपनी क्रूरता को प्रदर्शित कर रहा था। शीघ्र ही इनके द्वारा इस दुष्टता को समाप्त करने की योजना बनायी गयी।

पाकिस्तान पूर्ण रूप से कुपथ का आश्रय ले रहा था। इन्होंने बंगलादेश को कुशाग्रबुद्धि लोगों को शीघ्र ही सौंपकर विरोध प्रदर्शित किया।[2]

पाकिस्तानी लोगों के द्वारा निरपराध स्त्री और बच्चों को निरन्तर प्रताड़ित किया जा रहा था। अनेक लोग मृत्यु के भय से एवं असुरक्षा की भावना से पलायन कर गये एवं भारतवर्ष में शरण ली। लोगों को भारतवर्ष में शरण भी मिली। परन्तु मानवमन से भय को दूर करना भी आवश्यक था।

---

१. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *भरतभूदयकार्यरता यदा*
भवदसौ गृहविघ्ननूनपात्
विषमपाकमलक्ष्यत दुर्बल
मतिभवन् हि तदा प्रबलो दहन्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० २२)

२. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *कुपथसंश्रित-पश्चिमपाकगा-*
नसहताधम-शासनवर्तिनो
न सुपथ स्थित बंगकुशाग्रधीः
सपदि साति विरोधमदर्शयित्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० २५)

शरण में आये हुये लोगों के भरण-पोषण के लिये बहुत से साधनों को जुटाया गया। उनकी यथासम्भव सहायता की गयी। पाक के बढ़ते हुये उप्लवों को देखकर भारत के लोगों को संकट से उबारने के लिये एवं उनके हित के लिये अनेक ठोस कदम उठाये और इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें जल्दी ही इस संकट से मुक्ति भी मिली।

जब लोगों को इस संकट से राहत मिली तब इन्हें इन्दिरा जी पर बड़ा गर्व हुआ और सारा वातावरण उनकी जयजयकार से गूंज उठा-

परमहर्ष और जय-जयकार से समस्त पृथ्वी औरगगन गूंज रहे थे। माननीय इन्दिरा जी की जय हो, मुजीबुर्रहमान की जय हो।[1]

और क्यों न हो क्योंकि जब बंगलादेश की जनता पाक रूपी दुख से घिरी हुयी थी तब उन्होनें ही जनतन्त्र के पथ को अपनाकर जनता का हित किया।

नवीन विधियों से उन्होंने लोगों की सहायता की। जनता के अन्दर व्याप्त भय को दूर किया। बन्दी शत्रु और सैनिकों पर दया कर उन्हें छोड़ दिया गया।

हिम नगेन्द्र वाले शिमला में पाक को नष्ट करने के लिये सन्धि हुयी।[2]

---

१. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *जय जयेति रवो गगनाजिरं*
परमहर्षमयोऽकृत गुंजितं
जयतु मान्यपुनीतहृदिन्दिरा,
जयतु नेतृमुजीबसुधीश्च नः
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ३५)

२. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *हिमनगेन्द्रगते शिमलास्थले*
मधुरसन्धिमियं च विधाय सा
हृत-पराजय-ताप-विभावसुं
विषयपाकमनेष्ट शमालयम्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ४०)

इन्दिरा जी की प्रशंसा करते हुये कवि कहता है कि वह वत्सलता युक्त मन वाली अच्छे कार्य करने वाली, शौर्य में रुचि रखने वाली, प्रकृति से कोमल चित्त वाली तथा कलुषताओं से घृणा करने वालीं थीं।[1]

उन्होंने लोगों के लिये धनवर्धन के साधनों के लिये भी नियमों को लागू किया। वह चाहती थी कि भारत एक सुदृढ़ देश हो इसमें लाचारी, बेरोजगारी के लिये लेशमात्र जगह न हो।

दसों दिशाओं को पण्डित नेहरू ने जिस प्रकार अपने यश से धवल किया। वैसे ही इनकी कीर्ति भी देश में फैली हुयी है।

इन्दिरा जी धैर्य की मूर्ति तो थीं ही साथ ही इनमें प्रबल साहस भी था। आपने भारतवर्ष को साधनों से सम्पन्न देखा तो सिक्किम के विषय में विचार किया।

इस प्रकार इनका यश सर्वत्र फैल गया और लोगों में इनके प्रति और भी सम्मान की भावना प्रदीप्त हुयी।

उन्होंने कृषिकर्मियों एवं धनविहीन श्रमिकों को शीघ्र ही कोषागृह से धन उपलब्ध कराया। ये इन्दिरा जी की उदारता ही थी कि वह प्रत्येक गरीब दीन-दुखी के विषय में संजीदगी से विचार करतीं थीं।[2]

---

१. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *निभृतवत्सलतामय-मानसा*

सुकृतिनी धृतशौर्यमहारुचिः

प्रकृति-कोमल-चित्तवतीन्दिरा

विहितकल्मषराजिघृणास्ति सा

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ४५)

२. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *अथ तया सदयं कृषिकर्मणां*

धनविहीननृणां श्रमिणां कृते

सपदि कोषगृहा विवृतीकृताः

अतितराम् अधिभारतपत्तनम्

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ६१)

उन्होंने भारत में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिये भी अनेक प्रयत्न किये। उन्होंने लोगों को परिवार नियोजन के विषय में जानकारी दी। भारतवर्ष की उन्नति के लिये यह भी एक ठोस कदम उनके द्वारा उठाया गया।

उन्होनें भारत को बीस सूत्रीय कार्यक्रम की आनन्ददायिनी माला प्रदान की। जिससे भारतवर्ष शीघ्र ही गौरव से सुशोभित हुआ।

समस्त चल-अचल संसार में धन यौवन-वैभव जैसे विविध रोगों से युक्त यह क्षणभंगुर शरीर बहुत से दोषों के परवश हो जाता है।[1]

उसे देखकर इन्होंने विवेकपूर्वक विपत्तियों का निवारण किया। यह हमेशा से ही एक कर्मठ महिला थीं। कभी भी आलस न करने वाली तथा कठोर परिश्रम में ही विश्वास रखती थीं।

परन्तु भारतवर्ष में कुछ भ्रष्ट तथा लोभी व्यापारी लोगों को लूट रहे थे। एक अन्य पद्य के माध्यम से कवि कहता है कि-

कुछ धन के लोभी व्यापारी गलत पदार्थों के संचय से इसे भ्रष्ट कर रहे थे। उन्होंने कठोरता से उन्हें रोका तथा इसके लिये अनेक प्रयास किये।[2]

---

१. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *सकलमेव चलं सचराचरं,*
जगदिदं धनयौवनवैभवं
विविधरोगयुतं क्षणभंगुरं
परवशं बहुदोषमयं वपुः
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ७३)

२. ***इन्दिरायशस्तिलकम्-*** *अनुदिनं वणिजो धनलोलुपान्*
अशनपानपदार्थचेयं भृशं
विदधतो धमतत्वसमन्वितं
नियमनैः सुमतिर्न्यरुणद् द्रुतम्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ८२)

उन्होंने लोगों में कार्य को बढ़ावा देने के लिये अनेक प्रयास किये। लघुकुटीर उद्योग एवं कृषि के साधन भी लोगों को उपलब्ध कराये। जिससे उन्हें रोजगार मिले एवं गरीबी की समाप्ति हो सके।

कहने का तात्पर्य है कि भारतभूमि का हित चाहने वाली इन्दिरा हमेशा ही मानव के हित में रत रहती थीं। लोगों से उनका व्यवहार बन्धुओं के समान था।

कवि कहता है- भारत देश के वासी मनु, वशिष्ठ, बसु, कश्यप जैसे पूज्य चरित्र तपस्वियों को लोग अपने मने से आज भी स्मरण करते हैं।[1]

नल, दिलीप, भगीरथ, पाण्डव जैसे चरित्रों को आज भी स्मरण किया जाता है। विक्रम, भोज आदि आज भी अपना महत्व रखते हैं।

भारतराष्ट्र वसुन्धरा परम विश्रुत चारु चरित्र वाली, इन्दुमती तथा दमयन्ती जैसी राजकन्याओं को स्मरण किया जाता है।[2]

तिलक, गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, पं० मदनमोहन एवं गोखले जैसे मान्य मनीषियों ने भारतवर्ष पर अपना शासन किया।[3]

---

१. **इन्दिरायशस्तिलकम्-** *स्मरतु भारतदेशनिवासिनी,*
मनु-वशिष्ठ-वसुश्रुत-कश्यप-
प्रभृति-पूज्यचरित्र-तृपस्विनां,
जनिमहीयमिति स्वमनोगृहे
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ६४)

२. **इन्दिरायशस्तिलकम्-** *स्मरतु भारतराष्ट्रवसुन्धरा,*
परमविश्रुत-चारुचरित्रभृज्
जनकजेन्दुमती-दमयन्तिका-
प्रभृतिराजसुताजनिदेति च
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ६७)

३. **इन्दिरायशस्तिलकम्-** *तिलक गान्धि जवाहरनेहरु-*
मदनमोहनपण्डित-गोखले
प्रभृतिपुरुष-मान्य-मनीषिणों
भरतभूजननीं परशासनात्
(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ६८)

इन्दिरा जी ने भी हमेशा ही सुपथ का आश्रय लिया। वह कुपथ पर कभी नहीं चली। कवि कहता है-

उन्होंने अपने पूर्वजों के गौरव की रक्षा की। तथा अपने शुभ आचरण से उन्होंने अपने पूर्वजों के गौरव को बढ़ाया।

उन्होंने कठिन परिश्रम से भारतभूमि की जनता में सुख समृद्धि का विस्तार किया।

इस प्रकार यह काव्य उनके उत्कृष्ट चरित्र एवं गुणों का द्योतक है। कवि ने इसे अपने लेखन कौशल के माध्यम से उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचा दिया है।

भाषा शैली -

रमेशचन्द्र शुक्ल की भाषा, सरस तथा प्रभावपूर्ण है। प्रस्तुत काव्य की भाषा विषयानुकूल है। कवि ने अपनी लेखनी से काव्य को और भी रोचकता प्रदान की है। भाषा प्रसाद गुण, माधुर्यगुण एवं ओजमय है। एक-एक पद्य मानों एक नया संदेश देता प्रतीत हो रहा है। इसकी पदावली का वैशिष्ट्य प्रस्तुत पद्यों में द्रष्टव्य हो रहा है-

प्रसादगुण-उदाहरण-

इयमतीतसमुज्ज्वल-भावना
परमंजुल-पावनकर्मणा
अहरहो हि तया परिरक्ष्यते
विमल-भावविभावितयानिशम्

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० ७५)

ओजगुण-उदाहरण-

भारतभूदयकार्यरता यदा
भवदसौ गृहविघ्नतनूनपात्।
विषमपाकमलक्ष्यत दुर्बल-
यतिं भवन् हि तदा प्रबलो दहन्।।

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० २२)

माधुर्यगुण-उदाहरण-

भवतु शीघ्रमिदं मम भारतं
प्रचुरधान्यधर-क्षिति-शोभितं
विमलबोधजुषोऽथ च शिक्षिताः
सकलराष्ट्रनिवासिजना द्रुतम्

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं० १०)

अलंकार-

काव्य के शोभाधायक धर्म अलंकारों को भी इन्दिरायशस्तिलकम् में प्रचुर प्रयोग किया गया है। निम्नलिखित अलंकारो के उदाहरण इस प्रकार हैं-

अनुप्रास अलंकार -उदाहरण- *"इह जनो ह्यवयातु जनं जनं,*
न च ममायमन्तु जनः परः
अमुकधर्मगतो मनुजोऽस्ति सः
विलयमेत्विति भावमलीनसः"

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-१२)

यमक अलंकार -उदाहरण- *" जगति देशहितं स्वहितं सदा*
तरहितं मनुते च निजहितं
जयति भारतमन्त्रि धुराग्रणी
भरत भू कमला कमलात्मजा

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-६६)

रूपक अलंकार- उदाहरण- *जय जयेति रवो गगनाजिरं*
परमहर्षमयोऽकृत गुंजितं
जयतु मान्यपुनीतहृदिन्दिरा
जयतु नेतृमुजीब सुधीश्च नः

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-३५)

उपमा अलंकार- उदाहरण- *अनलसा शशिसूर्यसमद्युतिः*
श्रमकठोररता समयं सती
नयति तेन दुनोत्यलसान् भृसम्
अनलसांश्च धिनोति मुहुर्मुहः।।

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-७६)

रसनिष्पत्ति-

इसमें उत्साह जैसे स्थायीभाव से युक्त वीर, भयानक आदि रसों का समावेश है। वीर रस का उदाहरण देखिये-

भारतभूदयकार्यरता यदा
भवदसौ गृहविघ्ननूनपात्
विषमपाकमलक्ष्यत दुर्बल-
मति भवन् हि तदा प्रबलो दहन्

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-२२)

भयानक रस- उदाहरण-

पिशितभक्षण-पाकवरूथिनी
कठिन-कर्कश-निन्द्यतर-क्रियाः
अतितरामवलम्ब्य ततोऽजसा
निरपराध-कलत्र-शिशूच्चय

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-२६)

छन्द-

छन्दों की दृष्टि से सम्पूर्ण काव्य मे द्रुतबिलम्बित तथा अन्तिम पद्य मालिनी छन्द में निबद्ध है।

द्रुतविलम्बितम्- उदाहरण-

सुचरितासु चिकीर्षति सत्कृता
भरत-भू-जनतामनुशासने
स्वमनसा वचसापि च कर्मणा
जयति सा निरता नितरां क्षितौ

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-७२)

इसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो भगण और एक रगण होता है। अतः द्रुतविलम्बित छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में १२ अक्षर हैं।

द्रुतविलम्बित - उदाहरण-

वसतयो ह्यधुना पुटभेदने-

ष्वतिशयप्रभया प्रियविद्युतो

नयन-मानसहारि-च वलक्षताम्

उपगताः क्व न सन्ति सुशोभिताः

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-१०८)

इसके प्रत्येक चरण मं एक नगण, दो भगण और एक रगण है। अतः यह द्रुतविलम्बित छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ अक्षर हैं। इसका लक्षण इस प्रकार है। -

"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ"

मालिनी छन्द - उदाहरण -विमलहृदयसम्पत्येशला पूतवृत्तां

भुवनविदितवि श्वोत्कृष्टसेवावदाता

भरत धरणिराष्ट्रख्यातमन्त्रिप्रधाना

जयति जयति मान्या गान्ध्युवाब्धेन्तिरा नः

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-११४)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, एक भगण और दो यगण हैं तथा ६ और ८ अक्षरों पर विराम है। अतः यह मालिनी छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मं १५ अक्षर होते हैं। इसका लक्षण इस प्रकार है -

"ननयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः"

प्रकृति-चित्रण -

इसमें प्रकृति का यदा-कदा ही चित्रण मिलता है। इन्होंने आलम्बन रूप में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण किया है। यहां पर हृदयावर्जक हिमवान महीधर की शोभा का वर्णन देखिये-

अमरनाथ-कृपा-सुकृताज्ज्वलां

हिम-महीधर-वर्धित गौरवां

प्रकृति-मातृ पदाम्बुजपावनां

महिम-मंजुल-दिव्यविभोच्छ्तिाम्

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-८७)

एक अन्य पद्य के माध्यम से भी प्रकृति की झलक मिलती है-

सुरभि-केसर-सौरभसेवितां
स्व-धरणीसुर-पूर्वज-पूजितां।
सुर-गिरापटु-पण्डित-जन्मदां,
शिवपदाब्ज-समर्पितजीवनाम्।।

(इन्दिरायशस्तिलकम्, श्लोक सं०-८८)

इस प्रकार इसमें प्रकृति का सूक्ष्म रूप देखने को मिलता है।

समीक्षा -

इस काव्य के माध्यम से सुकवि ने इन्दिरा जी के गुणों एवं उनके देश के प्रति किये गये कार्यों का उल्लेख किया है। उनकी देशभक्ति, देशप्रेम ओर निष्ठा को देखकर कवि इतना प्रभावित हुआ कि उसने इन्दिरागांधी के इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व पर एक सरस काव्य ही रच डाला। जो उनके शोभनीय आकर्षक व्यक्तित्व का द्योतक है। इन्दिरा गांधी निडर होने के साथ-साथ स्वाभिमानी महिला रत्न भी थीं। वह समस्त सामयिक समस्याओं का तत्काल निराकरण करने में पूर्ण सक्षम थीं। इस प्रकार इस काव्य में उनके कमनीय क्रिया-कलापों का वर्णन मिलता है। यह सम्पूर्ण काव्य उनके वीरतापूर्ण कार्यों ओर राजनीतिक दिव्य गुणों का द्योतक है। साम्प्रदायिक सहिष्णुता, लोकतांत्रिक निष्ठा, वैज्ञानिक प्रगति, महिला प्रोत्थान, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति, राष्ट्र विरोधी तत्वों का दमन आदि राष्ट्रीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में इन्दिरायशस्तिलकम् शीर्षक स्तरीय काव्य की रचना हुयी है।, जिसकी साहित्यिक महत्ता सर्वविदित है।

अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्यों में इस महत्वपूर्ण कृति का सर्वत्र संस्कृत काव्य प्रेमियों द्वारा स्वागत किया गया है। जिससे इसकी लोकप्रियता स्वतः सिद्ध होती है।

पंचम अध्याय

इन्दिराशतकम् काव्य का साहित्यिक अनुशीलन
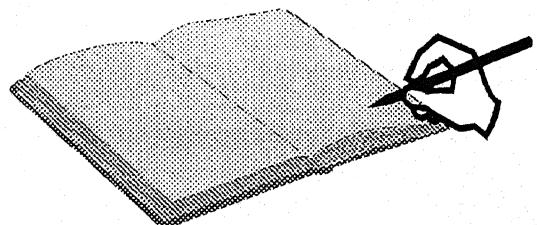
- पंचम अध्याय -

"इन्दिराशतकम्" काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

इन्दिरा शतकम् के रचयिता श्री रामकृष्ण शास्त्री का जीवन-परिचय -

श्री रामकृष्ण शास्त्री संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान रत्न हैं। बाल्यकाल से सुसंस्कृत परिवार में उनका लालन पालन हुआ। रामकृष्ण शास्त्री बचपन में अपना अधिकतर समय विद्योपार्जन में व्यतीत करते थे। अध्ययन के प्रति इनकी विशेष रुचि थी। इनकी प्रखर वृद्धि को देखकर अध्यापकगण भी इनकी प्रशंसा किये बिना न रहते। जिस प्रकार एक छोटा सा पौधा उचित देखभाल से वृद्धि को प्राप्त करता है। उसी प्रकार रामकृष्ण शास्त्री भी उचित लालन पालन से वृद्धि को प्राप्त हुये। वे अपने माता पिता एवं समस्त परिवार को यथोचित आदर-सम्मान देते। गुरुओं का भी सम्मान करते एवं अपना कार्य समय से पूर्ण करते। रामकृष्ण बचपन से ही संस्कृत में रूचि रखते थे और ये रुचि आगे चलकर इतनी बढ़ गयी कि उन्होंने अपना समस्त जीवनकाल संस्कृत की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्हेंाने भवाना (मेरठ) में संस्कृत प्राध्यापक के पद को सुशोभित किया।

व्यक्तित्व -

ये बड़े ही महान् एवं आदर्श व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। सुन्दर एवं सुगठित शरीर, ओजमय मुख, जो कि मधुर वाणी से सुशोभित होता है। इनकी प्रमुख विशेषतायें हैं। इनके जीवन के समस्त पक्ष उत्कृष्ट हैं। इन्होंने कभी किसी की निन्दा नहीं की। जब भी किसी को इनकी आवश्यकता होती तो ये तुरन्त उसकी सहायता के लिये तत्पर हो जाते। रामकृष्ण शास्त्री, कभी भी किसी व्यक्ति को हीन भावना से नहीं देखते। इस प्रकार इनके व्यक्तित्व जितनी भी प्रशंसा की जाये वह कम है।

कृतित्व -

इन्होंने संस्कृत साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने संस्कृत मे नाना पक्षों पर विभिन्न काव्य लिखे जो इनकी दूरदर्शिता के परिचायक हैं। इनके द्वारा रचित इन्दिराशतकम् संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति हैं। इसका प्रकाशन १९८१ में हुआ। इसमें इन्दिरा जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

इन्दिराशतकम् का वर्ण्य-विषय -

श्री रामकृष्ण शास्त्री अव्यय प्रणीत 'इन्दिराशतकम्' काव्य में १०५ श्लोक हैं। इसमें नेहरू वंश की तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की संक्षेप में चर्चा करते हुये इन्दिरा गांधी के राजनैतिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

नेहरू वंश बड़ा ही उत्कृष्ट वंश माना जाता है। सत्पुरुषों की शरणस्थली इस कुल में अपने सुयश से सम्मानित श्री जवाहरलाल नेहरू उत्पन्न हुये। उस महान पुरूष ने मुक्ति संग्राम का सुचारु रूप से नेतृत्व करते हुये स्वाधीनता को प्राप्त कर लिया। कमल जैसी दर्शनीय स्वरूप सम्पन्न सुन्दर लक्षणों वाली, गुणों से युक्त कमला उनकी सहधर्मचारिणी प्रिय पत्नी थीं। जिस प्रकार देश के हित के लिये जवाहर लाल नेहरू जेल गये। उनकी पत्नी भी बन्दी गृह में बन्द रहतीं। इस प्रकार संघर्ष मार्ग पर चलते हुये कमला ने गर्भ धारण किया। उन्होने कुल की कीर्ति की वृद्धि करने वाली कन्या को जन्म दिया। जिसका नाम माता पिता ने प्रियदर्शिनी रख दिया।

इन्दिरा गांधी अपने किशोर आयु में ही प्रबुद्ध हो गयी। उन्होंने अपने माता पिता को राष्ट्र की मुक्ति के लिये संघर्षरत देखा। इन्दिरा ने भी अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिये किशोर आयु में ही साहस बांधे हुये वानर वाहिनी नामक बाल सेना को तैयार किया। इन्दिरा गांधी का विवाह फीरोज गांधी से हुआ। उनके दो पुत्र भी उत्पन्न हुये। इन्दिरा गांधी ने दोनों पुत्रों का पालन करते हुये स्वाधीनता के संघर्ष पथ से अपना पैर नही हटाया। अपने राष्ट्र के संघर्ष मार्गपर प्राणों की आहुति देने वाले मनस्वी जनों के घोर तप से, निरीहजन मे एक से स्वतन्त्रता प्राप्त हुयी। इसके बाद स्वतन्त्र राष्ट्र के संविधान का जिसमें भारत की आत्मा के दर्शन होते हैं लोकार्पण हुआ।

इन्दिरा गांधी ने अपने राजनैतिक जीवन में बड़ी ही कठोर परिस्थितियों का सामना किया। परन्तु प्रधानमंत्री के पद पर आरूढ़ होकर उन्होंने अपनी विवेक बुद्धि और प्रतिभा के बल से राष्ट्रगत प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुये भारत का महत्व समस्त विश्व में फैला दिया। इन्दिरा गांधी ने अपने पिता के सथ राजनीति के लिये विविध यात्राओं को भी किया। जिसके माध्यम से उन्होनें राजनीतिज्ञों के सम्पर्क में आकर विश्व की नीति आदि को सीख लिया। चीन ने शत्रुभाव से

हिमालय की ओर आक्रमण किया जिसके लिये असंख्य वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। इसके बाद जब भारत का पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ, तब भी भारत की ही विजय हुयी। इसके बाद भारत का प्रशासन जो कि शिथिल हो गया था। उसे इन्दिरा गांधी ने सुदृढ़ किया। इन्दिरा गांधी ने भारतवर्ष के हित के लिये अनेक कार्य किये। कुछ विरोधी पार्टियों ने उनके खिलाफ लोगों को भड़काने की भी कोशिश की। परन्तु इन्दिरा जी ने इन सब का बड़े ही धैर्य के साथ सामना किया। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में भारतवर्ष को धन धान्य आदि के समस्त साधन उपलब्ध कराये। बेरोजगारी को कम किया और युवा वर्ग को रोजगार उपलब्ध कराये। उन्होंने कृषि के साधन उपलब्ध कराये। बैकों का राष्ट्रीयकरण, बीस सूत्रीय कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया। इस प्रकार इन्दिरा शासनकाल में भारतवर्ष ने प्रत्येक क्षेत्र में वृद्धि की।

भाषा शैली -

इस शतककाव्य की भाषा ओजपूर्ण है। इस शतककाव्य को कवि ने अपनी शैली से रोचकता प्रदानकी है। इसकी भाषा सरल, सरस तथा मनोहारी है। इसमें कवि के विचार बड़े ही सुन्दर रूप में प्रकट हुये हैं। जिसे पढ़कर पाठक अनायास ही इसकी ओर खिंचा चला जाता है। इसमें प्रसादगुण वैदर्भी रीति के दर्शन होते हैं।

छन्द -

सुन्दर के छन्दों के प्रयोग से कवि ने इस काव्य का उत्कृष्टता प्रदान की है। इस काव्य में छन्दों का स्वरूप देखते ही बनता है।

अलंकार -

अलंकारों की श्रेणी में शब्दालंकारों में अनुप्रास एवं यमक अलंकार के दर्शन होते हैं। और अर्थालंकारों की श्रेणी में उपमा, रूपक आदि अलंकार देखने को मिलते हैं। अलंकारों के सुन्दर प्रयोग से इस काव्य का स्वरूप और भी उत्कृष्ट हो गया है।

रस-

इस शतककाव्य में वीर, अद्‌भुत आदि रसों का प्रयोग किया गया है। इसमें इन्दिरा गांधी का ओजपूर्ण व्यक्तित्व परिलक्षित हो रहा है।

समीक्षा -

प्रस्तुत शतककाव्य इन्दिरा गांधी के बहुआयामी स्वरूप को द्योतक है। इस शतककाव्य के माध्यम से इन्दिरा गांधी के राजनैतिक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इन्दिरा गांधी भारत को उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचाने वाली श्रेष्ठ महिला थीं। उन्होने भारतवर्ष के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। उनहोंने भारत के लोगों के हृदय में ज्ञान की ज्योति को प्रज्जवलित किया। भारतवर्ष में छाये हुये घोर अन्धकार को दूर किया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इन्दिरा गांधी भारत की महामानव थीं।

विवेच्य शतककाव्य की भाषा प्रसादिक, पदावली माधुर्यगुण पूर्ण प्रायः सर्वत्र परिलक्षित होती है। वर्ण्य-विषय के अनुरूप वर्णिक छन्दों का सुन्दर प्रयोग इस काव्य में पाया जाता है अलंकारों में शब्दालंकार और अर्थालंकार अर्थगौरव में असाधारण अभिरामता एवं प्रभावशालिता की संसृष्टि करते हैं।

विवेच्य काव्य की रसनिष्पत्ति अत्यन्त मार्मिक एवं सहृदय संवेद्य है। समासतः अनेक साहित्यिक विशेषताओं के कारण इन्दिराशतकम् का अर्वाचीन संस्कृत काव्य साहित्य में उल्लेखीय स्थान है।

डॉ0 रामाशीष पाण्डेय का जीवन-परिचय -

डॉ० रामाशीष पाण्डेय का जन्म सन् १९४४ ई० में जैतीपुर (नालन्दा) में हुआ। रामाशीष पाण्डेय बचपन से ही अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। छोटी-छोटी बातों को ध्यानपूर्वक सुनना और सुनकर उस पर आचरण करना आपकी महान विशेषता है। अध्ययन कार्य के प्रति इनकी रुचि ने आगें चलकर लेखन कार्य का रुप ले लिया। आपने एम. ए., पी.एच.डी., साहित्यव्याकरण वेदाचार्य की उपाधि विधिवत प्राप्त की। डॉ रामाशीष पाण्डेय मारवाड़ी कॉलेज रांची (झारखण्ड) में संस्कृत के प्राध्यापक रह चुके हैं। उनका निवास स्थान ४७, हरमू हाउसिंग कॉलौन, रांची (बिहार) है।

व्यक्तित्व -

डॉ० रामाशीष पाण्डेय व्यक्तित्व के धनी हैं। इनके व्यक्तित्व की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है। इनके मुख मण्डल पर सूर्य के समान तेज है। व्यवहारिकता डॉ० रामाशीष पाण्डेय की मुख्य विशेषता है। लोगों के साथ समानता का व्यवहार करना अर्थात किसी को भेदभाव की दृष्टि से न देखना इनकी प्रमुख विशेषता है। संस्कृत साहित्य में डॉ० रामाशीष पाण्डेय का विशेष योगदान रहा है।

कृतित्व -

कृति ही किसी कवि के जीवन का मूल आधार होती है एवं कृति के माध्यम से एक कवि ख्याति प्राप्त करता है। डॉ० रामाशीष पाण्डेय की कृतियां इस प्रकार हैं।

१. मयूरवशतकम् -

इस शतककाव्य में सूर्य और चन्द्रमा को दृष्टि में रखते हुये उनकी आभा में मयूखों अर्थात किरणों का सरस छन्दों में वर्णन किया गया है।

२. शिखाबन्धनम् -

हिन्दू धर्म में शिखाबन्धन के महत्व का मनुस्मृति में प्रतिपादित महत्व के आधार पर काव्यात्मक निरूपण किया गया है। इस कृति की भाषा सरल, सुबोध तथाप्रवामयी है।

३. इन्दिराशतकम् -

इस शतककाव्य में इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व निरूपित है।

४. कर्णार्जुनीयम् -

महाभारत के आधार पर कर्ण और अर्जुन की परस्पर प्रतिद्वन्द्धता ओर प्रतिस्पर्धा इस कृति में रूपायित है।

५. कृष्णोदयम् -

भगवान कृष्ण के आदिभाव को आधारित कर उनको काव्यात्मक चारुचरित इस कृति में सरस रूप में निरूपित है।

६. काव्यकदम्बकम् -

यह कृति भी अपने सरस एवं मनोहर विन्यास के कारण अपना विशेष रखती है। डॉ० रामाशीष ही समय-समय पर विरचित विभिन्न महत्वपूर्ण कविताये इस कृति में सम्मिलित है। जिसका काव्य सौष्ठव और वर्ण्य विषय विवेचन की दृष्टि से विशेष काव्यात्मक महत्व है।

७. प्रहेलिकाशतकम् -

लोकजीवन में प्रचलित विभिन्न महत्वपूर्ण पहेलियों का इस काव्य कृति में प्रभावी प्रस्तुतिकरण है। ये पहेलियां आज भी जनमानस को निर्देशित कर रही हैं।

''इन्दिराशतकम्''

वर्ण्य-विषय -

इन्दिराशतकम् डॉ० रामाशीष पाण्डेय द्वारा रचित शतककाव्य है। इस शतककाव्य में इन्दिरा गांधी जीवन एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। उदात्त राजनीतिक नैतिकता, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ईमानदारी और निष्कपटता के कारण उन्हें भारतीय जनगण, संसार के सभी सद्भावनापूर्ण लोगों के बीच सम्मान और महान प्रतिष्ठा प्राप्त हुयी। परन्तु इन्दिरा गांधी के अनेक शत्रु भी थे। विश्व शांति तथा अपने देश की सुख समृद्धि के उदात्त विचारों से प्रेरित इस निर्भीक महिला के खिलाफ कुछ क्रूर लोगों ने साजिश का जाल भी बुना परन्तु इन विषम परिस्थितियों में उन्होने बड़े ही साहस से काम लिया। कवि कहता है कि–

''देश दूसरे विदेशियों के हाथ में था। क्रूर लोग अपने स्वार्थ के लिये लोगों को पीड़ा पहुंचा रहे थे। गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन हुआ। जिसमें इन्दिरा गांधी भी कर्म में रत हो गयीं। जब भारतवर्ष विदेशियों के हाथ में था। तब देश में अनेक अत्याचार हो रहे थे। एवं भारतवर्ष की स्थिति भयावह थी।[1]

इन्दिरा गांधी जी ने भी बिना वक्त गंवायें १४ से १७ वर्ष के किशोर किशोरियों का दस्ता संगठित किया। जिसे वानर सेना का नाम दिया गया। इसी का वर्णन करते हुये कवि अपने शब्दों में कहता है कि –

''बालक और बालिकाओं की एक वानर सेना स्थापित की गयी जिस प्रकार रावण से निपटने के लिये वानर सेना रक्षा के लिये नियुक्त की गयी थी।[2]

---

१. ***इन्दिराशतकम्***- *देशोऽयमासीत् परकीयहस्ते, वैदेशिकाशासकता वापुः,*
कुराः स्वलाभाय सदार्थलुब्धाः, पीडाः जनेभ्योः ददाति स्मगौराः।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० १)

२. ***इन्दिराशतकम्***- *स्थापितं वानरसैन्यमेकं युक्तंगृहं बालकबालिकानाम्।*
एतादृशैनैव जिता पुत्राऽत्र, लंका तथा रावण रक्षा सेना।।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ३)

वानरसेना के सदस्य राष्ट्रीय झण्डे बनाते तथा नगर में लगा देते थे। इस प्रकार इस वानर सेना के द्वारा अनेकों कार्य किये गये। कभी-कभी इस वानर सेना को अधिक गम्भीर कार्य भी सम्भालने पड़ते थे। वानरसेना में बहुत से अनाथ बालक और गरीबों के बच्चे शामिल थे। ये साहसी भारतीय बालक कांग्रेस के स्काउट तथा संदेश वाहक थे। वे भारतीय जनता के बीच कांग्रेस के नारे और अपीलें प्रसारित करते थे।

इन्दिरा जी ने अपने जीवन में अनेक दुःख देखे इन्हीं दुःखों मेंएक दुःख था कि कमला नेहरू जो कि इन्दिरा गांधी की मां थीं २८ फरवरी १६३६ को उनका निधन हुआ। घातक रोग उनकी मृत्यु का कारण बना। इसी का वर्णन करते हुये कवि कहता है -

उनकी (इन्दिरा गांधी) की माता भी अपनी कन्या को छोड़कर चलीं गयीं।[1]

कमला की गहन मानवीयता उसका नैतिक आकर्षण तथा सूक्ष्म सद्भाव पुत्री के हृदय में मूर्तिमान हुये। मां की तपस्या के उदाहरण ने इन्दिरा को अपने विलक्षण भाग्य की चुनौती साहस पूर्वक स्वीकार्य करने के लिये प्रेरित किया।

इन्दिरा गांधी ने स्वतंत्रता के हेतु निरंतर यत्न किया। उन्होने अपनी शिक्षा देश-विदेश में समाप्त की। वह बहुत धैर्य युक्त शांतप्रिय थीं।[2]

इन्दिरा गांधी ने शांतिनिकेतन तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के विश्वविद्यालय में प्रवेश किया जो समस्त देश में कवीन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। प्रकृति ने उन्हें अनेक विलक्षण गुणों का वरदान दिया था। वह विनम्र तथा विशाल हृदय वाले व्यक्ति थे। इन्दिरा गांधी की शिक्षा-दीक्षा रवीन्द्रनाथ टैगोर के दिशा निर्देशन मे और भी जोर पकड़ रही थी।

---

१. ***इन्दिराशतकम्***- *माता यदास्याः परलोकमाप, शिक्षां स्वकीयां सममापभूयः।*
निध्यब्जे वर्षे विहितेन्दिरा सा, कांग्रेस देशे मिलिता बभूव।।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ४)

२. ***इन्दिराशतकम्***- *याता तथा शान्तिनिकेतने सा, शिक्षां ग्रहीतुं निजभारतस्य।*
देशेविदेशे बहुधैर्ययुक्ता, शान्तिप्रिया भारतभारती सा।।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ५)

कवि इन्दिरा गांधी की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुये कहता है-

इन्दिरा गांधी शिक्षा ग्रहण करने के लिये शान्तिनिकेतन गयी। वहां उन्होने अच्छी प्रकार से शिक्षा प्राप्त की। उनकी जन्मजात शालीनता उभरकर आ रही थी। जो उसकी सादगी से प्रकट होती थी। विनयशीलता, बुद्धिमता और दूसरों का आदर करने की क्षमता उसके आकर्षण का स्रोत थीं।

इन्दिरा गांधी का विवाह फीरोज गांधी से हुआ। वह गुणी विद्वान तथा पारसी धर्म के थे।[1]

इस तरह का विवाह हिन्दू धर्म के सर्वथा प्रतिकूल था। गांधी जी हिन्दू धर्म के कायल थे। परन्तु उन्होंने इन्दिरा गांधी से कुछ नहीं कहा।

इन्दिरा गांधी को कुछ क्रूर लोगों के कारण जेल मे भी जाना पड़ा और वह कारागृह में भी रहीं।[2]

कवि कहता है कि इन्दिरा गांधी इससे तनिक भी विचलित नहीं हुयीं। एक अन्य कवि के शब्दों में -

इन्दिरा कहा करती थीं कि अगर हिंसा के फलस्वरूप मेरी मृत्यु हो गयी। जिसका कुछ मंसूबा बना रहे हैं तो हत्यारों के विचार और कृत्य हिंसा के शिकार होंगे, क्योंकि दुनियां में ऐसी कोई कुत्सित घृणा नहीं है, जो अपनी जनता और देश के प्रति मेरे प्रेम को कुंठित कर सके, ठीक इसी तरह कोई भी एंसी शक्ति नहीं, जो मुझे देश को आगे बढ़ाने का अपना लक्ष्य छोड़ने को बाध्य कर सके।

---

१. ***इन्दिराशतकम्***- *राष्ट्रस्यभावे परिदीक्षिता सा, दीक्षां विवाहस्य ततो गृहाण।*
तस्याः पतिनमि फिरोज गांधी, विद्धान गुणी पारसिधर्मदक्षः।।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ८)

२. ***इन्दिराशतकम्***- *आन्दोलने सा स्वगृहे वसन्ती, कारागृहे क्रूरकैर्निबद्धा।*
मासाष्टकं तत्र प्रयागराज्ये, कारागृहस्याऽप्यतिथिर्बभूव ।।
(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ९)

भाषा शैली -

इस शतककाव्य की भाषा सरस तथा मनोहारी है। कवि ने जिस प्रकार भाषा, भाव, कल्पना तथा वर्णन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बल पर जो निदर्शन किया है। वह अनूठा है। इसकी भाषा प्रसाद, माधुर्य तथा ओजगुण युक्त है। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं-

प्रसादगुण - उदाहरण -

द्वाविंशवर्षे प्रियदर्शिनी सा,
पारें समुद्रं प्रययो विदेशम्।
स्वीयां चिकित्सां खलुदेशरक्षां,
तत्रस्थ वैहौर्विहिता गृहाण।।

(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ७)

माधुर्यगुण - उदाहरण -

स्वातन्त्र्य हेतोः सततं यतन्ती,
शिक्षां स्वकीयां समबापू भूयः।
देशेविदेशे बहुधैर्ययुक्ता,
शान्तिप्रिया भारतभारती सा।।

(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ५)

ओजगुण - उदाहरण -

स्थापितं वानरसैन्यमेकं,
यतंगृहं बालकबालिकानाम्।
एतादृशेनैव जितां पुत्रांऽत्र,
लंका तथा रावणरक्षा सेना।।

(इन्दिराशतकम्, श्लोक सं० ३)

छन्द -

प्रस्तुत काव्य में इन्द्रवज्रा छन्द्र है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है-

इन्द्रवज्रा छन्द - उदाहरण -

मुक्तेन्दिरा सा बहुधैर्ययुक्ता,
पित्रासमं राष्ट्रपितुः समक्षम्।
स्वातंत्र्यहेतो नवबुद्धिकल्पां,
सेवां स्वदेशस्य भृशं चकार।।

अलंकार -

इस काव्य में अनुप्रास एवं यमक अलंकार का मनोहारी वर्णन मिलता है।

अनुप्रास अलंकार - उदाहरण -

आन्दोलनं चात्र भृशं प्रचक्रुः,
श्री गान्धिनः नेतृपदे तदानीम्।
लोकाः समासश्चासहयोग नाम,
तत्रेन्दिरा कर्मरता बभूव।।

इसमें न् म् आदि वर्णों की आवृति बार-बार होने से अनुप्रास अलंकार है।

अनुप्रास अलंकार - उदाहरण -

स्थापितं वानरसैन्यमेकं,
यत्कंगृहं बालकबालिकानाम्।
एतादृशेनैव जितां पुत्रांऽत्र,
लंका तथा रावणरक्षा सेना।।

रसनिष्पत्ति -

इस काल में करुण, वीर आदि रसों की प्रधानता है। जिनके निम्नलिखित उदाहरण हैं।

करुण रस - उदाहरण -

देशोऽयमासीत् परकीय हस्ते,
वैदेशिकः शासकतामवापुः।
क्रूरा स्वलाभाय स्वार्थलुब्धाः,
पीडा जनेभ्यो ददति स्म गौराः।।

वीर रस - उदाहरण -

मुक्तेन्दिरा सा बहुधैर्ययुक्ता,
पित्रासमं राष्ट्रपितुः समक्षम्।
स्वातंत्र्यहेतोर्नवबुद्धिकल्पां,
सेवां स्वदेशस्य भृशं चकार।।

समीक्षा -

इस काव्य के माध्यम से कवि ने इन्दिरा जी के जीवन की झांकी प्रस्तुत की है। एक ओर यह काव्य उनके वीरतापूर्ण कार्यों का द्योतक है तो दूसरी ओर इसमें करुण रस की भी सुन्दर व्यंजना हुयी है। स्वतंत्र, एकजुट तथा प्रजातंत्रीय भारत के निर्माण के हेतु वह सदा अपना सर्वस्थ न्यौछावर करती रहीं ताकि देश मं साम्प्रदायिक द्वेष के लिये कोई स्थान न हो, और सभी भारतवासियों की एकजुट, स्वाधीन और शक्तिशाली मातृभूमि महान राष्ट्रीय आदर्शों से दैदीप्यमान रहे।

इसके लिये वह विदेशी और आन्तरिक शत्रुओं का साहसपूर्वक विरोध करती रहीं, उन शक्तियों का पर्दाफाश तथा भर्त्सना करती रही, जो आज भी राष्ट्र की शान्ति और स्वतन्त्रता को खतरे में डालती है। इस काव्य की शैली अत्यन्त व हृदयग्राही है। कवि ने सुन्दर भावपूर्ण भाषा का प्रयोग करके काव्य को रोचकता प्रदान की है।

षष्ठ अध्याय
इन्दिराविरुदम् काव्य का
साहित्यिक अनुशीलन
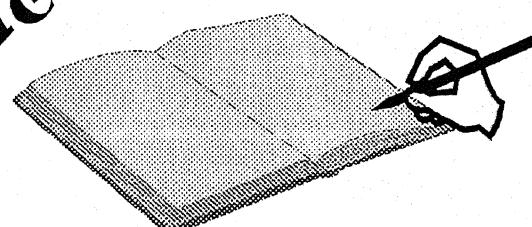
षष्ठ - अध्याय

''इन्दिराविरुदम्'' काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

विष्णुदत्त शर्मा का जीवन परिचय -

विष्णुदत्त शर्मा का जन्म ०५/०६/१६३६ को मेरठ में हुआ था। बचपन से ही विष्णुदत्त शर्मा प्रखर बुद्धि के थे। इन्होंने आचार्य, व्याकरण, साहित्य, दर्शन, ज्योतिष तथा एम.ए. की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। इनके गुरु ब्रह्मानन्द शुक्ल थे। ज्ञान ही मानव जीवन का परम उद्देश्य होना चाहिये। यह इनकी सारगर्भित प्रतिज्ञा थी। ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। विष्णुदत्त शर्मा ने भी अपने जीवन में ज्ञान को सर्वाधिक महत्व दिया। विष्णुदत्त शर्मा प्राध्यापक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष नानकचंद एंगलो संस्कृत स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेरठ (उ०प्र०) में रह चुके है।

व्यक्तित्व -

मानव के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण शारीरिक विशेषताओं एवं कार्य करने की प्रणाली ही उसके व्यक्तित्व की द्योतक होती है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत जिनकी परिगणना होती है। उनमें प्रेंरणायें, प्रवृतियाँ, अनुभवजन्य मानसिक दशायें, रुचि, दृष्टिकोण विचार आदि प्रमुख है। यद्यपि व्यक्तित्व के पक्ष्य अनन्त है फिर भी तथ्यात्मक विभाजन में व्यक्तित्व तीन प्रकार का हो जाता है -

१. *शारीरिक*

२. *मानसिक*

३. *चारित्रिक*

अगर मैं विष्णुदत्त शर्मा क शारीरिक पक्ष की बात कहूँ तो वह एक सुगठित शरीर के हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे। इनकी मनःस्थिति अत्यन्त पवित्र विचारों से ओत-प्रोत थी, और चरित्र बहुत ही उज्जवल था। इनके व्यक्तित्व का प्रत्येक पक्ष आकर्षक था। इन्होने अपने मन में कभी भी क्षुद्रता एवं द्वेष को प्रवेश न करने दिया। यह साधारण जीवन बिताने में विश्वास रखते थे।

कृतित्व -

इनकी कृतियां इस प्रकार हैं -

१. इन्दिराविरुदम् -

इसमें इन्दिरा गाँधी के गुणों एवं कार्यों की चर्चा की गयी है। कवि ने इस काव्य के माध्यम से इन्दिरा गाँधी के व्यक्तित्व को और भी उज्जवल बनाने का प्रयास किया है।

२. गुरुनानकदेवचरितम् -

इसमें गुरु नानक देव का चरित्र वर्णित है। गुरुनानक देव के जीवन से सम्बधित अनेक दशाओं का वर्णन इसकी शोभा को और भी बढ़ा रहा है।

इन्दिराविरुदम् काव्य का वर्ण्य-विषय-

"इन्दिराविरुदम्" नामक शतककाव्य डा० विष्णुदत्त शर्मा द्वारा रचित है। इसमें १३१ पद्यों में इन्दिरा के सामान्य गुणों और कार्यों की स्तुति की गयी है। इन्दिरा जी के समस्त कार्य राष्ट्र के लिए समर्पित थे। उन्होने एक सच्चे राष्ट्रभक्त के रूप में भारतवर्ष को ऊँचाई के उस शिखर पर पहुँचाया जहाँ भारतवर्ष को एक नई दिशा मिली। एक सच्ची मार्गदर्शिका के रूप में उन्होंने भारतवर्ष के लोगों को पथ-पथ सही मार्गदर्शन तथा दिशा निर्देशन किया। भारतवर्ष के लोगों में आत्मविश्वास जाग्रत किया।

इन्दिरा जी की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है कि इन्दिरा गाँधी गुणों की खान थीं। वह एक सच्ची देशभक्त थीं। इन्दिरा गाँधी के यशस्वी पिता विश्वप्रसिद्ध पं० जवाहर लाल नेहरू थे। इनके व्यक्तित्व को कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत पद्य में प्रस्तुत किया है -

"यस्याः पिता किल जवाहर लाल नामा,
विश्वप्रसिद्ध पुरुषः प्रथमः स आसीत्।
राजोचितानि विम्वानि निज हित्वा,
यो राष्ट्रमुक्ति समितौ समितो भूव।।[1]"

अपि च *" यस्याः जगद् विदित राज्यविधान वेत्ता,*

यक्षाधिपाधिक धनः सः पितामहोऽपि।

सांसारिक सुखमपास्य महेन्द्रतुल्यं,

यो मातृभूमिहितसाधनतत्परोऽभूत्।।[2] "

इन्दिरा गाँधी के माता-पिता और भाग्यज्ञाता पितामह आदि के तय की ही वे पूँजी थी। अनकी पुत्री अपनी माता के समान ही आपने धर्म का पालन करने वाली, सेवा रूपी अमृत और पवित्र विचारों वाली थी। इन्हीं विचारों को इस पद्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है -

"माता-पिता च विधिविज्ञपितामहाश्च,

तेपुस्तपांसि भरतावनि मुक्तयेये।

तेषां सुता स्वजननीपयसैव सार्ध,

सेवामृतं शुचि पपौ भुवि जातगात्रा।।[3] "

इन्दिरा गाँधी की शिक्षा-दीक्षा सर्वप्रथम भारतवर्ष में सम्पन्न हुई। रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास शान्तिनिकेतन में इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। इनके बाल्यकाल में ही ये बहुत समय तक विदेश में शिक्षाग्रहण करने के उद्देश्य से रहीं। वहाँ पर इन्होने अपनी शिक्षा पूर्ण की। इसी का विवेचन इस पद्य के माध्यम से किया गया है -

"बाल्ये विदेशेषु चिरं वसन्ती,

शिक्षापदेशेन गृहीतसारा।

विवेद सा भारतपारतंत्र्यं,

तद्वासिनां शाश्वद्दुःखमूलम्।।[4] "

इन्दिरा गाँधी का विवाह फीरोज गाँधी नामक युवक से हुआ, वह अपने देश की सेवा के महान व्रती थे। इसके पश्चात् वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये संलग्न हुई -

" फीरोजगान्धीत्यभिधं युवान्,

स्वदेशसेवा सेवा वृतिनं महान्तम्।

कृत्वा पतिं सा जननी नियोगात्,

स्वातन्त्र्यमार्गे प्रयता बभूव।।[5]

इन्दिरा गाँधी का भारतवर्ष के प्रति अटूट प्रेम था। वह चाहती थी कि भारतवर्ष समृद्धशाली बने। भारतवर्ष के लोग स्वतन्त्र हो तथा उन्हें जीविका के समस्त साधन सुलभ हों। वह भारतवर्ष को एक सूत्र में बंधे हुये देखना चाहतीं थे। इसके लिए उन्होने हर सम्भव प्रयास किया। उन दोनों दम्पत्तियों ने इस समाज में देशभक्ति का प्रसार किया। अनेक बार वह देश की सेवा करते हुये कारागह में गयी। इसी दशा का वर्णन उक्त पद्य के माध्यम से किया गया है-

"पूनां समाजे खलु देशभक्तिं,
प्रसारयन्तावथ दम्पत्तौ तौ।
अनेकदाऽऽस्तांमपि सद्गृहस्थौ,
कारागृहस्थौ क्षितदेश धर्मो।"

जब पं० जवाहरलाल नेहरू कारागार में थे तब उन्होनें अपनी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को अनेक बार पत्र लिखे और उन्हें जगत से सम्बन्धित जानकारी दी। इसी वर्णन करते हुए कवि कहता है-

"पित्रा सुतायै लिखितानि भूयः,
पत्राणि कागृहतोऽरभुतानि।
प्रायः सुताया उपकारकाणि,
जातानि भूम्ना जगता हितानि।।"

इन्दिरा गाँधी भारतवर्ष में एक सुदृढ़ शक्ति को लाने वाली महिला थीं। उन्होने पत्रों के माध्यम से भी बहुत कुछ सीखा। देश के सुदृढ़ और समृद्धशाली बनाने का हर सम्भव प्रयास किया। अशिक्षित लोगों को शिक्षा के साधन सुलभ कराये और देश में रोजगार के साधन उपलब्ध कराने।

इन्दिरा गाँधी एक अद्वितीय महिला थी। उनकी प्रशंसा करते हुए कवि कहता है -

"साऽभूदपत्यं पितुरद्वितीयं,
नारीसु नारी पुनरद्वितीया।
नेत्रा जगन्नेतृसु चाऽद्वितीया,
द्वितीयता क्वापि न तां जगाहै।।"

भाषा-शैली -

इन्दिराविरुदम् सरल, सुबोध प्रसाद गुण से परिपूर्ण है। पर योजना में कवि की सहजता परिलक्षित होती है। उनकी भाषा में क्लिष्टता का अभाव देखने को मिलता है। शब्दों का प्रयोग सटीक और सारगर्भित है। इसमें ओजगुण और माधुर्यगुण का भी यथास्थान प्रयोग किया गया है। इनके निम्नलिखित उदाहरण इस प्रकार है -

प्रसाद गुण -

"यस्याः पिता किल जवाहर लाल नामा,
विश्वप्रसिद्ध पुरुषः प्रथमः सः आसीत्।
राजोचितानि विभवानि निज हित्वा,
यो राष्ट्रमुक्तिं समितौ समितो भूव।।"

ओजगुण -

" यस्याः जगद् विदित राज्यविधन वेत्ता,
यक्षादिपाधिक धनः सः पितामहोऽपि।
सांसारिक सुखमपास्य महेन्द्रतुल्यं,
यो मातृभूमिहितसाधनतत्परोऽभूत्।।"

माधुर्यगुण -

"साऽभूदपत्यं पितुरद्वितीयं,
नारीसु नारी पुनरद्वितीया।
नेत्रा जगन्नेतृसु चाऽद्वितीया,
द्वितीयता क्वापि न तां जगाहै।।"

छन्द -

छन्द योजना का काव्यार्थ के उत्कर्ष में विशिष्ट स्थान है। मानव के अन्तस् भाव तरंगों का सम्बन्ध काव्य की आत्मा रस से हाता है। ये मनोवेग काव्य में प्रयुक्त शब्दों की स्वरलहरी से चलायमान होते हैं। यही स्वरलहरी छन्द की आत्मा है। कवि ने इसमें वसन्ततिलका एवं इन्द्रवज्रा छन्द का प्रयोग किया है। इनके उक्त उदाहरण इस प्रकार है -

वसन्ततिलका छन्द -

" यस्याः जगद् विदित राज्यविधान वेत्ता,
यक्षादिपाधिक धनः स पितामहोऽपि।
सांसारिक सुखमपास्य महेन्द्रतुल्यं,
यो मातृभूमिहितसाधनतत्परोऽभूत्।।"

इसके प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरुवर्ण हैं। अतः यह वसन्ततिलका छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में १४ अक्षर है।

इन्द्रवज्रा छन्द -

" फीरोजगान्धीत्यभिधं युवान्,
स्वदेशसेवा सेवा वृतिन।
कृत्वा पतिं सा जननी नियोगात्,
स्वातन्त्र्यमार्गे प्रयता बभूव।।"

इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण, एक जगण और दो गुरु है। अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

अलंकार योजना -

इसमें मुख्यतः अनुप्रास और यमक अलंकार परिलक्षित हो रहा है।

अनुप्रास अलंकार -

उदाहरण - *"बाल्ये विदेशेषु चिरं वसन्ती,*
शिक्षापदेशेन गृहीतसारा।
विवेद सा भारतपारतंत्र्यं,
तद्वासिनां शाश्वद्दुःखमूलम्।।"

यमक अलंकार -

उदाहरण - *"साऽभूदपत्यं पितुरद्वितीयं,*
नारीसु नारी पुनरद्वितीया।
नेत्रा जगन्नेतृसु चाऽद्वितीया,
द्वितीयता क्वापि न तां जगाहे।।"

रसनिष्पत्ति -

इसमें क्रमशः करुण, वीर एवं अदभुत् रस के दर्शन होते है। इनके निम्नांकित उदाहरण है -

करुण रस –उदाहरण–

"बाल्ये विदेशेषु चिरं वसन्ती,
शिक्षापदेशेन गृहीतसारा।
विवेद सा भारतपारतंत्र्यं,
तद्वासिनां शाश्वद्‌दुःखमूलम्।।"

स्थायी भाव -

करुण रस का स्थायी भाव शोक है। जब किसी आलम्बन रूप में पात्र के हृदय में स्थायी भाव के रूप में शोक की अनुभूति हो और वह विभिन्न अनुभावों विलाप इत्यादि के द्वारा व्यक्त की जा रही हो, तब उद्‌दीपन और आलम्बन विभावों के साथ विभिन्न अनुभावों एवं संचारीभाव से करुण रस की निष्पति होती है।

निम्नलिखित उद्धरणों मे आलम्बनगत पात्र इन्दिरा गाँधी के हृदय में जनता के दारिद्र, अशिक्षा, से प्रार्दुभूत करुणा की निष्पति से शोक की अनुभूति स्वाभाविक रूप से चित्रित की गई है।

अद्‌भुत रस–

उदाहरण–

"साऽभूदपत्यं पितुरद्वितीयं,
नारीसु नारी पुनरद्वितीया।
नेत्रा जगन्नेतृसु चाऽद्वितीया,
द्वितीयता क्वापि न तां जगाहे।।"

समीक्षा -

प्रस्तुत काव्य इन्दिरा गाँधी के उच्चतम गुणों का द्योतक है। उनके समस्त कार्य देश के लिये समर्पित थे। जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुये उन्होने किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी साहस एवं धैर्य नही खोया। उनका प्रमुख लक्ष्य देश को समुन्नत बनाना था। उन्होने जीवन में कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक तरह से हम कह सकते हैं कि वह देश सेवा की व्रती थीं अगर हम इन्दिरा जी के जीवनकाल पर दृष्टि डाले तो हम हमेशा

उन्हें एक सच्चे राष्ट्रभक्त के रूप में पायेंगें। कवि ने इस काव्य के माध्यम से इन्दिरा जी की प्रशंसा में पद्य रचे है। वह उनकी शोभा को और भी उत्कर्ष प्रदान कर रहे है।

साहस और धैर्य की प्रतिमूर्ति इन्दिराजी मानव के लिए प्रेरणा की वह श्रोत है जिससे प्रेरणा लेकर मानव कभी कभी भी मझधार में डूब नहीं सकता। यह काव्य एक प्रेरणादायक काव्य है। जिसे पढ़कर मानव कृतकृत्य हो जाता है।

सप्तम अध्याय

इन्दिराप्रशस्तिशतकम् एवं अभागभारतम् का साहित्यिक अनुशीलन
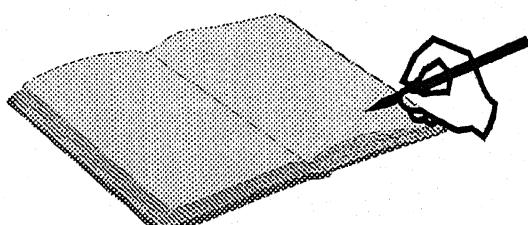
सप्तम - अध्याय

''इन्दिराप्रशस्तिशतकम्'' एवं ''अभागभारतम्'' काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

शान्तीराठी का जीवन परिचय-

श्रीमंती शान्तिराठी का जन्म २०वी० शती० में हुआ। इनका बचपन बड़ा ही सुखमय एवं सुसंस्कार वाले परिवार में बीता। शान्तिराठी बचपन से ही गुणों की गौरवपूर्ण विभूति रहीं है। ऐसा परिलक्षित होता है। मानो उन्होने जीवन का प्रत्येक पल बड़े ही सहज ढ़ंग से बिताया। बचपन से ही छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना, उनकी चर्चा करना इनकी आदत में शामिल रहा है। गुरूजन हमेशा ही शान्तिराठी की प्रशंसा की। कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाली शान्तिराठी सबको प्रिय रही है। माता-पिता अपनी पुत्री के क्रियाकलापों से बड़े प्रसन्न रहते थे।

व्यक्तित्व -

इनका व्यक्तित्व बड़ा आदर्शमय है। ये सुन्दर आकृति, ओजमय मुखमण्डल से सदा देदीप्यमान रही हैं। इनका व्यवहार बड़ा ही सरल तथा वाणी मधुरता से ओत-प्रोत है। शान्तिराठी ने कभी भी किसी भी व्यक्ति में कोई भेदभाव नही रखा। वह सर्वत्र सबको सम्मान की दृष्टि से देखतीं। शान्तिराठी का व्यवहार कभी ईर्ष्यामय नही रहा। जीवन मे कितनी ही बड़ी विपत्ति क्यों न हो। सर्वत्र धैर्य से काम लेती। इस धैर्य की मूर्ति को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह जाते।

कृतित्व -

इनका रचना कौशल बड़ा ही प्रभावशाली रहा है। इनके द्वारा रचिकत इन्दिराप्रशस्तिशतक संस्कृत साहित्य को अनूठी देन है। इसमें इन्दिरा जी की प्रशस्ति में रचे गये पद्य इनकी विद्वत्ता को दर्शा रहें है। यह रूचि आगे चलकर और भी विकसित हुई। इन्होंने अपने काव्यों के माध्यम से साहित्य जगत् में अपना नाम अमर कर लिया।

इन्दिराप्रशस्तिशतकम् काव्य का वर्ण्य-विषय-

इन्दिराप्रशतिस्तशतकम् नामक शतककाव्य की लेखिका शान्तिराठी हैं। इसमें ११६ श्लोक है। इसमें श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा देश की सेवा में किये गये कार्यों का वर्णन है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने सुदीर्घकाल तक भारत राष्ट्र को स्थिरता और मजबूती प्रदान करने की नीतियों पर अमल किया। उन्होने देश की दरिद्रता का निवारण किया। बांगलादेश निर्माण, निर्धन जनता की उन्नति, श्रमिक सुरक्षा, पोखरण परमाणु निरीक्षण, आर्य भट्ट आविष्कार बीससूत्री कार्यक्रम जैसे अनेक कार्य उन्हीं के शासनकाल में किये गये। उनके द्वारा बताये गए सिद्धान्त राष्ट्र के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

राष्ट्रनिर्माण की गहरी सूझ-बूझ श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भारत की प्राचीन संस्कृति से सीखी थी। वे कहती हैं हमारे सामने अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये तीन सिद्धान्त हैं।

पहला सिद्धान्त धर्मनिरपेक्षता का, एकता का, अलग-अलग दर्शनों और धर्मो के सहअस्तित्व का है। इस एकता के बिना हम समानता नहीं ला सकते, हम समाजवाद नही ला सकते जो कि हमारा दूसरा बुनियादी सिद्धान्त है। सच्चे अर्थो में एक प्रजातांत्रिक समाज का निर्माण करने के लिए धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद जरूरी है। इस प्रकार प्रजातंत्र हमारा तीसरा सिद्धान्त है। उन तीनों को एक साथ प्राप्त करने के लिए हमें प्रयत्न करना है।

इन्दिरा गाँधी ने भारतराष्ट्र के लिये बहुत से कार्य किए। उन्होंने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। जिससे विकास की गंगा ग्रामोन्मुखी होकर प्रगति पथ पर चल पड़ी। दलित जनों का गरीबी से उद्धार करने के लिए बहुशः अंशदान द्वारा ग्रामों में चारों और कुटीर उद्योगों को बढ़ाने का प्रयत्न किया। व्यवसायी वर्ग को कठोर दण्ड से नियन्त्रित करती हुई उन्होंने सामान्य वस्तुओं की बिक्री की। समाज का पालन करने वाली वह विकास कार्यो में निरन्तर प्रगति प्राप्त करती हुई अपने सौजन्य और मधुर व्यवहार से जन-मानस में प्रतिष्ठित हो गयीं।

भारतीय स्वाधीनता का संघर्ष राष्ट्र की एक नूतन चेतना या जागृति थी। प्रायः सभी कार्य जनहित में ही किए गये और वे योजनानुसार फलदायी भी हुये।

भाषा-शैली -

इन्दिराप्रशस्तिशतकम् की भाषा सरल, सरस तथा भावपूर्ण है। श्रीमती

शान्तिराठी ने भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया है। इसमें प्रसादगुण, ओजगुण एवं माधुर्य गुण का प्रचुर रूप में प्रयोग हुआ है। इसमें वैदर्भी रीति के भी दर्शन होते है। इन्दिराप्रशस्तिशतकम् को पढ़कर पाठक सहसा ही उनके गुणगान करने लगता है।

छन्द -

इसमें छन्दों को भी प्रयोग देखने को मिलता है। सुन्दर छन्दों के प्रयोग ने इस रचना को और भी उत्कृष्ट बना दिया है। छन्द योजना का काव्यार्थ के उत्कर्ष में विशिष्ट स्थान है।

अलंकार योजना -

इसमें सीमित मात्रा में अलंकारों का प्रयोग किया गया है। जिस प्रकार एक स्त्री आभूषण से और भी सुशोभित होती है। उसी प्रकार एक काव्य भी अलंकारों से सुशोभित होता है। वर्णनों में माधुर्य लाने के लिये इन्होंने अनुप्रास, यमक, उपमा आदि अलंकारों का वर्णन किया है। अनुप्रास की छटा तो छहराती है।

रसनिष्पत्ति -

श्रीमती शान्तिराठी सहृदय संवेद्य रसों के वर्णन में अद्वितीय सिद्धहस्त कवयित्री हैं उन्होंने अपने इस सुन्दर शतककाव्य में वर्ण्य विषयानुकूल वीर, अद्भुत आदि रसों को विशिष्ट स्थान दिया है। इसमें इन वीर, अद्भुत आदि रसों के दर्शन होते हैं।

समीक्षा -

उपर्युक्त इन्दिरा गाँधी सम्बन्धी शतककाव्य इसी सम्बन्ध में चेतनावर्धक है। इसमें एक राष्ट्रीय स्तर के व्यक्तित्व को लेकर उसका स्तवन किया गया है। इस शतककाव्य के माध्यम से श्रीमती इन्दिरा गाँधी के ओजमय स्वरूप के दर्शन होते है। अपने अद्भुत कृत्यों से इन्दिरा जी ने समस्त विश्व को चमत्कृत कर दिया। अतः इस काव्य की शोभा देखते ही बनती है।

प्रकृत शतककाव्य की भाषा प्रसाद, माधुर्य और ओजपूर्ण, वर्ण्य विषयानुकूल सुन्दर छन्दोऽलंकार योजना, सशक्त रसनिष्पत्ति आदि अनेक साहित्यिक विशेषताएं इसे अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

श्री सुन्दरराज का जीवन-परिचय -

श्री सुन्दरराज का जन्म तञ्जाबूर जनपद के अन्तर्गत देवनाथ विलास ग्राम में १३/०६/१६३६ ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम सार्वभौम विल्लूर नडादूरश्रीनिधिराघवाचार्य और माता का नाम श्रीमती वज्जुलवल्ल्यां था। इन्होंने रसायन शास्त्र में एम०एस०सी० की उपाधि धारण की। तत्पश्चात् आइ०ए०एस० पदाधिकारी हुए। इन्होने भारत के योजना आयोग के संयुक्त सचिव पद पर अधिष्ठित होकर, सरस्वती की कृपा से अभागभारतम् नामक काव्य की रचना की। इस काव्य की मूल प्रति १५/०१/१६८५ ई० में देववाणी परिषद अर्वाचीन संस्कार नामक मासिक पत्रिका में इन्दिरागीति के नाम से निकाली गयी।

व्यक्तित्व -

सुन्दरराज एक महान् व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। बचपन से ही इनके अन्दर प्रतिभा कूट-कूट कर भरी हुई थी। इनके व्यक्तित्व का चाहे कोई भी पक्ष हो। सर्वत्र सरलता प्रकट हुआ करती है। उनके बहुआयामी विशद व्यक्तित्व में तुच्छता एवं रागद्वेष प्रभृतिकलुषाधृत भावानायें प्रवेश नहीं कर पायीं। इनकी ओजस्विनी वाणी एवं तेजपूर्ण मुखमण्डल के समक्ष दुष्प्रवृत्तियों एवं दुर्भावनाओं की सत्ता का तो कोई प्रश्न ही नही उठता है।

कृतित्व -

इनकी रचनाएं निम्नलिखित है -

१. जगन्नाथसुप्रभातम्
२. सुरश्मिकाश्मीरम्
३. श्री बदरीशतर्रङ्ग्णी
४. श्री जगन्नाथस्तोत्रम्
५. श्री जगन्नाथशरणगतिस्तोत्रम्
६. श्री जगन्नाथमंगला शासनम्
७. तिरुप्पावै-प्रबन्धस्य
८. तिरुप्पल्लियेषुच्चिप्रबन्धस्य
९. अभागभारतम्

अभागभरतम् -

"अभागभारतम्" श्री सुन्दरराज प्रणीत एक स्तरीय काव्यकृति है। यह काव्य इन्दिरा गाँधी की मृत्यु पर १९८५ में लिखा गया है -

"The title "ABHAGABHARATHAM" means 'unlucky India' India has been unlucky in losing a capable and world renowned priminister in Mrs. Gandhi. It has also another meaning ' Indivisible India'. This is thetheme for which Mrs. Gandhi herself laid down her life."

इस काव्य में ६७ श्लोक हैं। इस काव्य के माध्यम से कवि ने इन्दिरा जी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया है। जिस क्रौञ्च की निर्मम हत्या से वाल्मीकि का शोक श्लोकत्व में उमड़ पड़ा। उसी प्रकार इन्दिरा जी की निर्मम हत्या का देखकर कवि का शोक श्लोकत्व में उमड़ पड़ा।

कवि कहता हैं कि मेरा मन यह मानने को तैयार नही है कि नेहरू जी की प्रतिभाशालिनी प्रियदर्शिनी पुत्री लाखों की आदर्श, प्रियनेत्री जो केवल भारत में ही प्रधानमंत्री नहीं थीं, अपितु सवमस्त संसार का नेतृत्व करने के योग्य थी, अब नहीं हैं।[1]

वह प्रथम महिला थी। जो कि संसार में एक देश की प्रधानमंत्री हुई। उन्होंने पृथ्वी पर अपने मनोबल से गौरब स्थापित किया।

कवि कहता है उनका शरीर व्याधि और वृद्धावस्था से विकृत नहीं हुआ था। वह सदैव ही हृष्ट-पुष्ट और हल्के शरीर की थीं और अपने रक्षकों की गोली का निशाना बनीं।[2]

---

१. ***अभागभारतम् -*** *"नेहोस्सुता जनगणाभिमता नयज्ञा,*
नेत्री न केवलं मनुष्य हि भारतस्य।
नेतुँ समस्तमपि विश्वमिदं समर्था,
नेत्यद्य विश्वसिति नो खलु मानसं ने।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-२)

२. ***अभागभारतम् -*** *"न व्याधिवाधिततया विकृतान्यभूवन्,*
नोवा जराक्रमणजानि तदीयदेहे।
स्वस्था सदा लघुतनुर्यवतीव भूत्वा,
स्वस्था बभूव निजरक्षक गोलकास्यैः।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इनके पिता पं० जवाहर लाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री हुये। तब वह लालबहादुर शास्त्री का अनुसरण कर रहे थे। इन्दिरा जी ने भी दो तीन साल तक इनका अनुसरण किया।

इन्दिरा जी को अपने जीवन में अनेक दुःखद अनुभवों से गुजरना पड़ा। एक अन्य पद्य के माध्यम से कवि इसका वर्णन कर्ति हुए कहता है -

युवावस्था में वह अपनी माता के वियोग से तप्त हो गई, वह अपनी माता के लालन सुख को प्राप्त न कर सकीं । स्वतन्त्रता की लड़ाई में रत पिता का पर्याप्त स्नेह भी उनको न मिल सका।[1]

" As she lost her mother in her young age, she could not know of maternal caressing very much. She was also not able to get much of parternal caressing from her father as he did not have enough time for the child being busy all the time with the freedom struggle.

अनकी प्रारम्भिक शिक्षा रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास, शान्तिनिकेतन में हुई। बाल्यकाल में ही ये विभिन्न ललित कलाओं में रत हो गई।

तदन्तर शिक्षा प्रातिप के लिए इन्हें देश से बाहर भेजा गया। उसी का वर्णन करते हुये कवि कहता है -

उनके पिता ने उन्हें विदेश भेजा, जहाँ उन्होने कला और विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अँग्रेजी और फ्रेंच सीखी जिससे उन्हें जल्द ही विदेशियों को समझने में सहायता मिली।[2]

---

१. ***अभागभारतम्*** - *"जाता नवे वयसि मातृवियोगतप्ता,*
लब्धुं न लालन सुखानि शशाक मातुः।
स्वातन्त्र्ययुद्ध पितश्च नेह्रो,
सा कर्मतत्परतया किल तस्य नित्यम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-७)

२. ***अभागभारतम्*** - *"गत्वा विदेशमथ शिक्षितवत्यभूत्सा,*
विद्याः कलाश्च विविधा प्रट्िता स्वपित्रा।
तामांगिलीमपि तथैव फिरंगभाषां,
वैदेशिकान्यदशकव्यस्वयमेव वेत्तुम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-१०)

इन्दिरा जी के पिता (पं० जवाहर लाल नेहरू) का अधिकांश समय स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध में कारागृह में बीता। उन्होंने इन्दिरा गाँधी को पत्र के माध्यम से इतिहास से अवगत कराया।

इसके अनन्तर उनका विवाह फीरोज गाँधी नामक नवयुवक से हुआ। जिनसे उन्होने देवदूत के समान दो पुत्रों राजीव और संजय को जन्म दिया।[१]

"In due course she got her married to a young man called Feroze Gandhi thought whom she gave birth to two angel like boys, named Rajiv and Sanjay.

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जब उनके पिता प्रधानमंत्री थे। वह भी उन्हें देखकर राजनीति और प्रशासन में कुशल हो गयीं। वह पूर्णतया देश और समाजसेवा में संलग्न हो गई। जब उनके पति की मृत्यु हुई तब उन्होंने अन्य औरतों की तरह अपने आप को असहाय नहीं समझा।

इसके बाद तो जैसे इनके जीवन में दुःख का समावेश हो गया तत्पश्चात् उनक जनप्रिय पिता जवाहर लाला की भी मृत्यु हो गयी। वह कैबिनेट की सदस्य बनीं ओर इन्होने सरकार चलाना सीखा।

इसके बाद पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ। लालबहादुर शास्त्री ताशकन्द गये हुये थे और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद वह पहली बार भारत की प्रधानमंत्री बनी।[२]

---

१. ***अभागभारतम्*** - *"काले पिता दुहितुरुद्वहनं वितेने,*
गान्धी फिरोजिति युवकेन नाम्ना।
यस्मादसौ सुरसमौ सुसुजावसूत,
राजीव इत्यपि च संजय इत्यपि द्वौ।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-१२)

२. ***अभागभारतम्*** - *"पाकिस्तानेन सह युद्धमजृम्भताथ,*
ताष्केण्ट्गतस्य समयाय कृतप्रयत्नः।
शास्त्री ततो मृतिमगादथ सा प्रधान-
मन्त्रिण्यभूतप्रथमस्य हि भारतस्य।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-१८)

प्रधानमंत्री पद पर आरूढ़ होकर ये राजनीति में और भी कुशल हो गई। कवि कहता है -

राष्ट्र का संचालन करते हुए उन्हें एक वर्ष से अधिक हो गया। वह प्रशासन में कुशल हो गयीं। उन्होंने चौथे सामान्य चुनाव के आदेश दिये।[1]

"After running the administration of the country for more than a year, she becane an expect. She ordered the fourth general Elections on time."

चतुर्थ सामान्य चुनाव जीतने के पश्चात उन्होने फिर देश का शासन संभाला और वह जल्द ही समझ गई कि देश का विकास और तरक्की होना इसलिए सम्भव नहीं क्योंकि चीन और पाकिस्तान के साथ युद्ध हो चुका था। इससे देश की आर्थिक व्यवस्था पर काफी असर हुआ था और गरीबों पर भी इसकी मार पड़ी।

उन्होने देश के दुखी एवं दलितों के लिए नाना योजनाएं बनायी -

" She therefore, formulated, a new plan directed towards the improvemrnt of the lot of the poorer and weaker section of society and the fourth five year plan brought out by her was therefore different from the previous plans."

तदन्तर पाकिस्तान के साथ जो युद्ध चल रहा था। उसमें हमारी विजय हुई। कवि कहता है -

इस प्रकार युद्ध में विजय के पश्चात् उन्होने सामान्य चुनाव के आदेश दिये और आश्चर्यजनक विजय प्राप्त की। विद्वानों के अनुसार, यह उनके राजनीतिक इतिहास का दूसरा अध्याय था।[2]

---

१. ***अभागभारतम्*** - *"संचाल्य राष्ट्रमधिकं तत एकवर्षात्,*
राष्ट्रप्रशासनकलाकुशला बभूव।
साधारणञ्च समये समुपागते सा,
निर्वाचिनं निरदिशच्चतुरा चतुर्थम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-१६)

२. ***अभागभारतम्*** - *"एवं विजित्य युधि सा पुनरादिदेश,*
निर्वाचनं विजयमाप च विस्मयार्हम्।
तद्राजकीयचरिते यदनु द्वितीयः,
पर्याय आरभत नूनमिति प्रवाच्यम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-२५)

वह फिर भी डरी नहीं थीं और साहस दिखाया। उन्होने बताया कि उन्होने देश के विरूद्ध कोई काम नही किया है। वह अपना जीवन देश को देना चाहती थी और भारतीय लोग उनके गुणो को जाने।[1]

निर्वाचन में तत्पर पूरे तीन वर्ष बाद विरोधी पार्टियों के कारण उनकी सरकार फेल हो गई। फिर चुनाव हुए तथा उनकी जीत हुई।

भारतीय लोगों ने उन्हें फिर से चुना। वे समझ गये कि एक योग्य व्यक्ति हमेशा ही देश के लिये अच्छा कार्य कर रहा है। इसके बाद उन्होंने बीस सूत्री कार्यक्रम चलाया।

चुनाव में विजय के बाद जब वह प्रधानमंत्री बनीं वह अपने विरोधी दलों से कोई बदला नहीं चाहती थी। वे क्षमा और शान्ति चाहतीं थीं।

उनका पुत्र संजय एक उड़ान एक्सीडेंट में अचानक मारा गया। यद्यपि वे शोकाकुल थीं फिर भी उन्होने देश की सेवा के लिये अपने आप को सम्भाला। साथ ही अपने पुत्र राजीव की सहायता के लिये भी।[2]

---

१. अभागभारतम् - *" राष्ट्रं विरुध्य न कदाऽपि मयाऽपराद्धं,*

राष्ट्राय जीवनमपि प्रभवामि दातुम्।

ज्ञानन्ति मां मम गुणानपि भारतीयाः,

इत्यास सा दृढ़मतिर्न भयाच्चचाल।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-३०)

२. अभागभारतम् -*"यादृच्छिकेन मरणेन विमानपाते,*

सा संजयस्य तनयस्य नितान्त तप्ता।

भूत्वा पुनर्दृढमतिर्निजराष्ट्रसेवां,

राजीवसाह्यपलभ्य पुरेव चक्रे।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-३५)

The writer says that -

" She tried to better the lot of the weaker seetions by introducing a revised 20 point programme for immediate implementation."

पंजाब भी आतंकवादियों से पीड़ित था। वह बहुत ही विषम स्थिति से गुजर रहा था। कुछ लोग राजनीति में प्रवेश कर चुके थे तथा धर्म की दुहाई दे रहे थे। शस्त्र इकट्ठा कर रहे थे हिंसा फैलाने तथा एक दूसरे को मारने के लिए।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने शान्ति लाने का बहुत प्रयास किया । लेकिन हिंसा और ज्यादा बढ़ गई तो उन्होंने सेना को इसे रोकने के लिए आदेश दिये।

उनकी पास बहुमुखी प्रतिभा थी। वह समझ चुकी थीं कि मानव के लिए क्या अच्छा है। उन्होने पर्यावरण से सुरक्षा के लिए, जंगल पहाड़ियों और पानी जो कुछ भी आवश्यक था। इन सबके लिए कोशिश की।[1]

उनकी खेलकूद में भी रुचि थी और वह जान गई कि इसके जरिये केवल लोगों के स्वास्थ्य को ही नहीं सुधारा जा सकता। बल्कि यह मित्रता और सहनशीलता भी ला सकता है।[2]

---

१. ***अभागभारतम्*** -*"अस्याः पुनर्बहुमुखी प्रतिभा व्यभासीत्,*
जानाति यत्स्म भुवि मानवजीवनाय।
पर्यावृतेर्विपिनपर्वतवारिमय्याः,
आवश्यकत्वमयतिष्ट च रक्षितुं राम।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४३)

२. ***अभागभारतम्*** -*" क्रीडाप्रियाऽपि नितरां किल सा बभूव,*
यत्साऽवधारितवती तत एव नृणाम्।
पुष्टिश्च तुष्टिरपि चित्तविनोदजाता,
सख्यं च वृद्धिमुपयाति सहिष्णुता च।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४४)

वह भारत में खेल करवाना चाहतीं थीं और यह हुआ भी भारतीय खेल प्रेमी इससे बहुत खुश थे।

वह जो चारों तरफ भारत में उन्नति फैला रहीं थीं। तभी वह कुछ वेवकूफ भारतीयों की वजह से मारीं गईं। जो भारत की सदा हितैषी थी जो हमेशा भारत का अच्छा चाहती थी और हमेश राष्ट्र की सेवा में लगी रहती थी। हमारा हित चाहने वाली मार दी गई।[1]

हम उनका मुस्कराता चेहरा दुबारा नहीं देख पायेंगें और न ही उनकी मधुर आवाज सुन सकेंगें। उनको मारकर हमने अपने भाग्य को मार डाला।[2]

समस्त राष्ट्र मातारहित हो गया। जब सब उनके विषय में सोचते कि कैसे उनके रक्षकों ने उन्हें मार डाला। उनके रक्षक ही उनके भक्षक बन गये।

कवि कहता है कि मैं क्या कहूँ उन शर्मनाक हत्यारों के विषय में? वे उनकी सुरक्षा की आशा कर रहे थे लेकिन उन्होंने उनकी जिन्दगी ही ले ली। कैसे मैं इसका वर्णन करूँ।[3]

---

१. ***अभागभारतम्*** -*" या भारतस्य सततं हितमेव मेने,*

या भारतस्य सततं हितमेव तेने।

या भारताय सततं हितमेव सेने,

तामिन्दिरामिह निहत्य हतं हितं नः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४८)

२. ***अभागभारतम्*** -*" द्रष्टुं न वल्गु वदनं पुनरिन्दिरायाः,*

श्रोतुं वचोऽपि मधुरं न हिः पारयेम।

हा हन्त तां हतवता हतकेन नूनं,

भाग्यं परं प्रमथितं गतमस्मदीयम्।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४९)

३. ***अभागभारतम्*** -*"किं व्याहरानि निरपत्रपतां निहन्त्रोः,*

प्राणैर्निजैरपि गतैरभिरक्षितव्याम्।

तामेव ताविह वियोजयतस्स्म पापौ,

प्राणैः कथं न खलु वर्णयितुं क्षमं तत्।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५३)

उनकी हत्या के विषय में सुनकर समस्त संसार सन्न रह गया -

"The Whole world was stunned and plunged in to darknen on hearing this despicable and destardly act of assassingtion of Indira all a sudden. The entire country has been struck by a thunderbolt."

वह कहतीं थीं - मुझे सिक्खों पर विश्वास है और इसलिये ये दोनों सिक्ख मेरे सुरक्षाकर्मी है और इनका तबादला नहीं हो सकता यह उनका आदेश था, लेकिन दोनों ही सुरक्षाकर्मी एक अपराधिक शाखा से थे।[1]

वह, जो कि देश को उन्नति की राह पर ले जा रहीं थीं और देश को सुदृढ़ बनाने में लगी हुई थी। विश्वासघातियों के द्वारा मार दी गई। कवि कहता है -

अनगिनत लोग उनकी अन्तिम यात्रा को देखकर चिल्लाये "जब तक सूरज चाँद रहेगा इन्दिरा तेरा नाम रहेगा।[2]

ओ इन्दिरा, कैसे मारने वालों ने तुम्हारे कोमल शरीर में गोलियाँ मार दी। कैसे निर्दयी लोगों ने एक पुष्प को आग से जला डाला।

O Indira, how did the killer have the heart to pump bullets in to your tender body? How can even a cruel man through burhing fire into a heap of flowers."

---

१. ***अभागभारतम्*** - *"सीखेषु विश्वसिमि तेन मदीयरक्षां,*
सीखाविमौ च कुरुतां मम रक्षिभूतौ।
स्थानान्तरं च न तयोरिति साऽऽदिदेश,
विश्वासघातमिह तौ कथमादधाते।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५७)

२. ***अभागभारतम्*** - *" सूर्यश्च चन्दिर इतो जयतो हि यावत्,*
नामापिते जयतु तावदिहेन्दिरे नः।
एवं विलप्य बहवः परिदेवयन्तः,
यात्रां विलोक्य रुरुदुश्चरमां तदीयाम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५८)

पाकिस्तान के साथ युद्ध में विजय के पश्चात् इन्हें भारतरत्न से सम्मानित किया गया।[1]

" Yoy were given the title of Bharat Ratna after the war between Bharat and Pakistan for the victory over Pakistan which you obtained for thr country,But the foals who killed and crushed this jewel there by displaying their foolishness only."

राजीव गाँधी की माँ, इन्दिरा ने अपने जीवन के अन्तिम तक देश की सेवा की। कवि कहता हैं कि भाग्य हँस रहा है अब हम कभी उनका सुन्दर मुख और मधुर आवाज न सुन सकेंगें।[2]

हमें उनकी सलाह को अपने मस्तिष्क में रखना चाहिये। जिससे हमें देश की उन्नति के लिये प्रयास करना चाहिये। जाति के भेदभाव को भुलाकर देश को एकता के द्वारा सुदृढ़ बना सकते है।[3]

" However, we should keep in mind her advice that we should all try for the progrees of the country, fargetting the difference of caste as our contry can become strong become only by unity and integrity."

---

१. ***अभागभारतम्*** -*" पाकिस्तानेन युधि लब्धज्येति पूर्व,*
समानिता त्वमिह भारतरत्ननाम्ना।
त्वां रत्नमद्य विनिपात्य विनाश्य कैश्चित्,
मूर्खत्वमेव नियतं प्रकूटीकृतम् स्वम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-६२)

२. ***अभागभारतम्*** -*" सा पूर्वपश्चिमसखित्वकृतोद्यमाय*
'यूताण्ट्'- पुरसकृतिविन्दत पूर्वमत्र।
तां पश्चिमं परमपश्चिमवित्तवन्तः,
ते पश्चिमत्व भजन्नवेत्य नूनम्।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-६३)

३. ***अभागभारतम्*** -*" अस्माभिरद्य वचनं स्मरणीयमस्याः,*
देशो बली भवितुमेकतमैव शक्तः।
विसमृत्य जातिमत भेदमतस्समस्ते,
राष्ट्रष्य न प्रगतये प्रतयेहीति।।"
(अभागभारतम्, श्लोक सं०-६६)

भाषा-शैली -

इस काव्य की भाषा भाव प्रधान है। इस काव्य को कवि ने दुःखद अवस्था में लिखा हैं इसे पढ़कर कोई भी मनुष्य दुखी हुये बिना नहीं रह सकता। एक-एक पद्य मानो दुःख की अनुभूति करा रहा हो। भाषा प्रसाद गुण, ओज गुण तथा माधुर्य गुण युक्त है। इनके निम्नलिखित उदाहरण देखिये -

प्रसाद गुण -

उदाहरण - *" आत्मद्वितीयगतशैशवकारणेन,*
तिक्तेऽपि सक्तिमियमाप परां विविक्ते।
वात्सल्यमार्दवदपादिगुणाः प्रकृष्टाः,
सिद्धास्स्वयं ववृधिरे तथाऽप्यमुष्याम्।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-८)

ओज गुण -उदाहरण -*" दृष्ट्वा द्रुतप्रतिमार्गगति ततो नः,*
देशद्विषस्समभवन्नसहिष्णवस्ते।
पाकिस्तानेन पुनरेव बभूव युद्धं,
यस्मिन्नसंशयममूद्विजयोऽस्मदीयः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-२३)

माधुर्य गुण -

उदाहरण - *"द्रष्टुं न वल्गु वदनं पुनरिन्दिरायाः,*
श्रोत वचोऽपि मधुरं न हि पारयेम।
हा हन्त तां हतवता हतकेन नूनं,
भाग्यं परं प्रमथितं गतमस्मदीयम्।।

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४६)

छन्द -

प्रस्तुत काव्य में वसन्ततिलका छन्द है। निम्नलिखित पद्य दृष्टव्य है -

वसन्ततिलका -

लक्षण - *"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।"*

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और

अन्त में दो गुरु हो, उसे वसन्ततिलका छन्द कहते है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १४ अक्षर होते हैं।

१. *वसन्ततिलका छन्द* -

उदाहरण - *" नेत्रीममु समुपलभ्य हि भारत नः,*

स्थातुं शशाक जगति प्रथमानभूम।

अस्माकमेव पुनस्यतमेन हन्त

सा धातितेति विहसिष्यति विश्वमद्य।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५०)

२. *वसन्ततिलका छन्द* -

उदाहरण - *" राष्ट्रं विरुध्य बहुधा विहितापराधा,*

कारागृहे वसतिमर्हति सेन्दिरेति।

निर्णीम नूयमयतन्त ततो विपक्षाः,

तद्दण्डनामे च बभूवुरतिप्रचण्डाः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-२८)

इसके प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण है तथा १४ मात्रायें हैं। अतः वसन्ततिलका छन्द है।

३. *वसन्ततिलका छन्द* -

उदाहरण - *" वारो बुधः कथम कीदृश आगतोऽय,*

हा रोदनाय भुवनस्य च भारतस्य।

भारो यया चिरमधार्यत भारतस्य,

हारो न गोलकमदीयत हन्त तस्यै।।

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५६)

इसके प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण है तथा १४ मात्रायें हैं। अतः वसन्ततिलका छन्द है।

अलंकार -

अभागभारतम् में अनुप्रास, विशेषोक्ति तथा उत्प्रेक्षा अलंकारों का वर्णन मिलता है। इनके निम्नलिखित उदाहरण इस प्रकार है -

अनुप्रास अलंकार –उदाहरण – *" यां सन्ततं नयनयोः प्रियदर्शिनीति,*

तातेन तेन कृतसार्थकनामधेया।

या श्रीमतीति विदिता भुवि गान्धिनाम्नी,

हा हन्त सा गतवती दिवमिन्दिरा नः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-१)

अनुप्रास अलंकार –

उदाहरण – *" काले कलौ कलहमारपीडिताया,*

भूमेः प्रशासनविधावपि राजतन्त्रे।

अस्या विलोक्य निपुणत्वमतीन्द्रमस्मान्,

दक्षेति रक्षितुमियाममरा नु निन्युः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५)

विशेषोक्ति अलंकार –

उदाहरण – *"सा विश्व एव निखिले प्रथमा प्रधान-*

मन्त्रिण्यभूत्पुरुषगर्वहरा हि नारी।

भूत्वाऽबलाऽपि सुदृढा स्वमनोबलेन,

तन्वी दुरापमपि गौरवमाप पृथ्व्याम्।।

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-३)

उत्प्रेक्षा अलंकार –

उदाहरण – *"द्रष्टुं न वल्गु वदनं पुनरिन्दिरायाः,*

श्रोतुं वचोऽपि मधुरं न हि पारयेन।

हा हन्त तां हतवता हतकेन नूनं,

भाग्यं परं प्रमथितं गतमस्मदीयम्।।

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-४६)

रसनिष्पत्ति -

इसका मुख्य अंगीरस करुण है। इसमें अद्भुत एवं वीर रस की झलक देखने को मिलती है। इनके निम्नलिखित उदाहरण है –

करुण रस -

उदाहरण - *" मातेति याममतनुताखिलभारतीयाः,*
यातेति साऽद्य निहता निजरक्षकाभ्याम्।
मात्रा विनाकृत इवात्र जनो विरौति,
धात्रा कृतः खलु महानपकार एषः।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-५१)

इसमें सर्वत्र करुण रस की धारा बह रही है। अतः यहां पर करुण रस है।

अद्भुत रस-

उदाहरण - *" सा विश्व एव निखिले प्रधान-*
मन्त्रिण्यभूत्पुरुषगर्वहरा हि नारी।
भूत्वाऽबलाऽपि सुदृढा स्वमनोबलेन,
तन्वी दुरापमपि गौरवामाप पृथ्व्याम्।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-३)

इस पद्य में अद्भुत रस हैं इसका स्थायी भाव विस्मय है।

वीर रस -

उदाहरण - *" निर्वाचनात्परमपूर्णतृतीयवर्षे,*
सयो मिथः कलहकारणतो विभिन्नम्।
छिन्नं विपक्षघटनं निपतात् पश्चात्,
निर्वाचिने जयमिनाय नवे पुनस्सा।।"

(अभागभारतम्, श्लोक सं०-३१)

इसमें वीरता के भाव प्रकट हुये है। अतः यहाँ पर वीर रस है। इसका स्थायी भाव उत्साह है।

समीक्षा -

अभागभारतम् इन्दिरा की मृत्यु पर लिखा गया है। कवि इन्दिरा जी की मृत्यु पर दुःख प्रकट करते हुये कहता है कि देश का उत्तरोत्तर विकास चाहने वाली आज देश में क्या पृथ्वी से ही विलुप्त हो गयी। उनके निज रक्षकों ने ही उन्हें अपनी गोली से मार डाला। इस काव्य के माध्यम से कवि के इन्दिरा जी

के प्रति हृदयगत भाव प्रकट हो रहे है। कवि के शोक ने श्लोक का रूप धारण कर समस्त देशवासियों तक पहुँचाया है। इन्दिरा गाँधी ने भारतवर्ष के लिए क्या नही किया। वह हमेशा ही भारतवर्ष को उन्नति की राह पर चलते देखना चाहतीं थीं। वह एक निडर एवं साहसी महिला थीं। उन्होने अपने जीवन मे आने वाली विविध कठिनाइयों का सामना बड़े ही साहस के साथ किया।

प्रियदर्शिनी इन्दिरा बचपन में अपने माता की मृत्यु के दुःख से दुःखी थीं। माता के लालन का सुख भी ये न भोग पायीं। फिर भी इन्होने बड़े ही साहस के साथ भारतवासियों की सेवा की। उनके दुःखो को दूर किया। परन्तु फिर भी कुछ लोग जो इनसे ईर्ष्याभाव रखते थे। उन्होने हमसे हमारी माता को छीन लिया। इन्दिरा जी की अन्तिम यात्रा को देखकर लोग अनायास ही कह उठते है –

" जब तक सूरज चाँद रहेगा, इन्दिरा तेरा नाम रहेगा।"

इन्दिरा जी के प्रति लोगों का स्नेहभाव ही था कि वह अपनी माता की मृत्यु से विचलित हो गये।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत काव्य के माध्यम से कवि ने इन्दिरा जी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया है एवं अपने भाव लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस काव्य की शैली उत्तरोत्तर चमत्कारपूर्ण एवं सहृदय जनों को सहसा ही अपनी ओर आकृष्ट करने वाली है।

अष्टम अध्याय
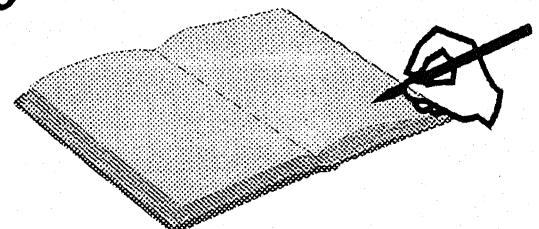
कूहा काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

अष्टम - अध्याय

"कूहा" काव्य का साहित्यिक अनुशीलन

डॉ0 उमाकान्त शुक्ल का जीवन-परिचय-

भारतरत्न श्रीमती इन्दिरागांधी पर आधृत सरस गीतिकाव्य "कूहा" के रचयिता डॉ० उमाकान्त शुक्ल का जन्म १८ जनवरी १६१६ में बुलन्दशहर में हुआ था। इनके पिता का नाम आचार्य पं० ब्रह्मानन्द शुक्लः था। ये अपने समय के प्रतिष्ठित विद्वान कवियों में समादृत थे। ये सुप्रसिद्ध राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जा (उ०प्र०) के यशस्वी और सुयोग्य प्रधानाचार्य थे। उमाकान्त शुक्ल इनके द्वितीय पुत्र हैं। श्री उमाकान्त शुक्ल की प्रारम्भिक शिक्षा खुर्जा में तथा उच्च शिक्षा मेरठ में सम्पन्न हुयी। जहां से इन्होंने संस्कृत में एम.ए., साहित्याचार्य, पी.एच.डी. आदि की उच्च उपाधियां प्राप्त की। डॉ० उमाकान्त शुक्ल मेरठ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर में संस्कृत प्राध्यापक रहे और अब वहां से सेवानिवृत्त होकर साहित्य साधना में संलग्न हैं। "भाति में भारतम्" काव्य के यशस्वी कवि डॉ० रमाकान्त शुक्ल इनके छोटे भाई है। डॉ० शुक्ल के अन्य तीन भाई सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् एवं साहित्यकार के रूप में बहुचर्चित हैं। इस प्रकार अपनी पारिवारिक पृष्ठ भूमि पर पाण्डित्य एवं शाश्वत उत्कर्ष से डॉ० शुक्ल पूर्णतया अनुप्राणित हैं।

व्यक्तित्व -

जैसा कि इनके उत्कृष्ट काव्यों के माध्यम से हमें इनकी अलौकिक काव्य प्रतिभा के दर्शन होते हैं। इनका व्यक्तित्व बड़ा ही विशाल एवं तेजोमय है। दंभ, द्वेष और ईर्ष्या की भावना इनमें कभी नहीं रही। डॉ० उमाकान्त शुक्ल का उदार चरित्र बड़ा ही उज्जवल है। डॉ० उमाकान्त के द्वारा रचित कूहा काव्य के माध्यम से ही इनकी विद्वता प्रकट हो रही है। ये संस्कृत के संशोधक उद्भट विद्वान और श्रेष्ठ कोटि के कवि हैं।

कृतित्व -

डॉ० उमाकान्त शुक्ल की साहित्यिक कृतियां इस प्रकार हैं-

१. मंगल्या

२. परीष्टिदर्शनम्

३. कूहा आदि ग्रन्थ उ०प्र० संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत।

१. मंगल्या -

इस काव्य में डॉ० उमाकान्त शुक्ल ने सामयिक विशेष अवसरों पर तथा विशिष्ट व्यक्तियों को ध्यान में रखते हुये भारतीय संस्कृति पर आधृत विभिन्न आयामों पर अपने काव्यात्मक विचार व्यक्त किये हैं। इस दृष्टि से कवि ने दीपावली जैसे मांगलिक पर्व पर जो मंगल मनोभाव कविता के माध्यम से व्यक्ति किये हैं। इसका संकलन मंगल्या शीर्षक से किया है। वस्तुतः मंगल्या कृति का काव्य सौष्ठव उत्कृष्ट कोटि का हैं।

२. परीष्टिदर्शनम् -

अपने भक्तिभावों को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हुये तथा इस काव्य में भक्तिरस की सुन्दर निष्पत्ति करते हुये, इस कृति की रचना की है। अतः यह कृति अत्यन्त हृदयग्राही है। इस काव्य में कवि डॉ० शुक्ल का काव्यकौशल स्थान-स्थान पर परिलक्षित हो रहा है। इसमें कवि का दर्शनशास्त्रीय ज्ञान भी प्रकट हुआ है।

३. कूहा -

कूहा नामक शतककाव्य डॉ० शुक्ल की अत्यन्त हृदयग्राही रचना है। इस काव्य में श्री राजीव गाँधी द्वारा हिमालय की चोटी पर इन्दिरा गांधी की अस्थियों के विसर्जन के समय अपनी माता का भावपूर्ण स्मरण वर्णित है।

कूहा काव्य का वर्ण्य-विषय -

कूहा डॉ० उमाकान्त शुक्ल प्रणीत शतककाव्य है। यह २० पद्यों मे निबद्ध है। इस सरस काव्य में श्री राजीव गान्धी द्वारा हिमालय की चोटी पर इन्दिरा गांधी की अस्थियों के विसर्जन के समय अपनी माता का भावपूर्ण स्मरण वर्णित है। डॉ० रमाकान्त शुक्ल ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं-

"इदमेकत इन्दिराया आकर्षक व्यक्तित्वस्य अपरतश्च संस्कृत रचनाकारणां वर्तमानं प्रति जागरूकतायाः परिचायकमस्ति। तामवलम्ब्य तस्या प्रधानमंत्रित्वकाले पराजयकाले, पनर्विजयकाले, स्वर्गप्रयाणकाले च रचिता नैका रचनाः संस्कृत साहित्येऽवलोकयितुं शक्यन्ते यासु तस्या गुणकीर्तनं कविभिः कृतम्। कतिपयासु कृतिषु तस्या आलोचनापि दृश्यते। यैरिन्दिराया जीवनकाले तस्यास्तिक्ता आलोचनापि कदाचिदक्रियत।

कूहा इत्यस्मिन् काव्येऽपि तस्याः जीवनगाथा गुणाश्च प्रसक्त्यानुप्रसक्त्या कविना वर्णिताः। अस्य काव्यस्य कथावस्तु इदमेवास्ति यद हिमलयश्रृंगेषु स्वर्गतायाः श्रीमत्या इन्दिरागान्धि महाभागाया अस्थिभस्म विकीर्य हिमालयात्प्रतिनिवर्तमानः काव्यस्यास्य नायकः श्री राजीवगान्धी वायुयानस्थितः सन् स्वमातुः स्मरणं करोति।

कविर्यदा समकालीनं कमपि जनं स्वकाव्यस्य नायकत्वेन वृणोतितदा नूनं स तस्मिन् नायकोचितगुणानां संयोजनं करोति। यद्यपि लोके तस्य जनस्य अनेकानि विवादास्पदकार्याण्यपि भवन्ति सम्भवन्ति वा, तथापि कवि काव्ये तं तदा नायकत्वेन चित्रयति तदा स तस्य सर्वस्वीकार्याणामादर्शगुणकार्याणामेव, प्रधान्येन चित्रणं करोति। कवेरस्य नीरश्रीरविवेकेन बहवोगुण दोषयुता अपि जगातिका जनाः काव्ये परिष्कारं प्राप्य लोकोत्तरनायकः भूत्वा चिरकालं यावत् विश्वजनैः स्मर्यन्ते।

काव्यमिदं परि देवनस्य, अवसादस्य शोकस्य वा काव्यं नास्ति अपितु शान्तेः, विवेकस्य, कर्मठतायाः, सौमनस्यस्य, रचनात्मकतायाश्च काव्यमस्ति। शोकदिवसेषु अस्य रचना नैव जाता, अतः शोकापनोदं सोत्साहतां च जनयति। अस्य प्रारम्भोऽधृष्यभावे निदर्शनं गतस्य, भारतस्य रक्षाकरण्डस्य, उद्रिक्तसत्वस्य विशालराशेश्च हिमालयस्य वर्णनेन भावति -

पृथ्वी तल का सौभाग्यसार, ब्रह्मा का कमनीय शिल्प तथा प्रवृद्ध सत्व-गुण का विशाल स्तूप यह हिमालय त्रिलोकी में सबसे उत्कृष्ट है।[1]

---

१. ***कूहा-*** *सौभाग्यसारो धरणीतलस्य,*
जगत्प्रसूतेः कमनीयशिल्पम्।
उद्रिक्तसत्वस्य विशालराशि,
हिमालयोऽसौ जयति त्रिलोक्याम्।।
(कूहा, श्लोक सं०- १)

कवि हिमालय की शोभा का वर्णन करता हुआ कहता है कि-

विधाता की कला की मंजुल सुगढ़ता, चारू विन्यास, कुशल प्रयोग तथा पल-पल नवीनता धारण करता यह हिमालय सदा सर्वोत्कृष्ट बना रहे।[1]

"May the Himalayas, the king of mountains, a faultless expanse, a beautiful exhibition and astute application of skill of the creative art of God, continue to shine, assuming a new freshness every moment."

जिस हिमालय पर्वत की शोभा निर्मल प्रवाहशील गति से बहती हुई नदियों के माध्यम से दृष्टिगोचर होती है एवं इन्हीं नदियों के माध्यम से जिसकी कारूण्य वृत्ति का कथन करती है तथा वज्र के किनारों को भी मोथरा बना देने वाली शिलायें जिसकी दृढ़ता को बताती है। जहां उत्पन्न हुयी, पुष्ट हुयी, बहती हुयी, रोके जाने पर उचककर फिर चल पड़ती नदियां तरल-तरंगों की तालियों से गाती है, नाचती हैं और कल-कल ध्वनि करती रहती हैं। हिमालय की सुन्दरता का एक अन्य पद्य के द्वारा वर्णित करता हुआ कवि कहता है-

चंचल तरंग रूपी निर्मल कटाक्षों से सुन्दर, तटवर्ती पर्वत उरोजों से मनोहर रूप धारण करती प्रसन्न जहनु की कन्या (गंगा) जिसके आंगन में अन्य नदियों के साथ खेलती रहती है।[2]

हिमालयपर्वत सदा अपनी गुरुता से गगन चारियों की दृष्टि को खीचकर उनके गर्व को दूर कर देता है तथा पृथ्वी पर स्थित प्राणियों की दृष्टि को ऊपर उठाकर उनके चित्त का विकास करता रहता है।

---

१. **कूहा-** *धातुः कलाया वरिमाऽनवद्यो,*
न्यासो वरेण्यः कुशलः प्रयोगः।
क्षणे क्षणे नूतनतां दधानो,
हिमालयोऽसौ जयतान्नगेशः।।
(कूहा, श्लोक सं०- २)

२. **कूहा-** *रिङ्तरङ्कटाच्छकटाक्षकम्रा*
तटा द्रयुरोजाहितरम्यरुपा।
नद्यन्तरैः सार्धमतीव हृष्टा,
यदङ्णे कीडति जहनुकन्या।।
(कूहा, श्लोक सं०- ५)

हिमालयपर्वत भारतवर्ष की उत्कृष्टता एवं शोभा का केन्द्र बिन्दु है। हिमालय पर्वत सासता, समग्रता के उन्मेष, कला निवेश, लालित्य विधान, सौभाग्यराशि, अधिगम्यता और अधृष्यता का एक ही निदर्शन है। एक ओर इसके सुन्दर स्वरूप को देखकर हम इसकी आकृष्ट होते हैं तो दूसरी ओर इसकी गुणवत्ता का स्मरण कर हमारा मन सहसा ही इसका गुणगान करने लगता है। जैसे कि देखिये-

जो औषधियों, मणियों और प्रभावशीलता से परिपूर्ण तथा सब प्रकार से दृढ़ता से बंधा मानों आकर्षण-मन्त्र लगता है या फिर भारत का रक्षा कवच प्रतीत होता है।[१]

"It is surely the secret mantra for luring all beings, full of herbs, gems and greatness with its hard and compact hill ranges. or perhaps it is the talisman for the protection of Bharat (India)."

हिमालय पर्वत की सुन्दरता मक्खन, अक्षत, दूध, मोती, शंख, चन्द्रमा, कपास ओर दही की धवलता की लक्ष्मी की मनोहर दिव्य, आयत तथा विशद एक हाट सी प्रतीत होती है और इतना ही नहीं, बल्कि इसके अन्य गुण भी विचित्रताओं से परिपूर्ण हैं। कवि कहता है-

सौन्दर्य के लोभीजन तीनों लोकों में जिसकी सदा कामना करते रहे हैं तथा आज भी जिसकी ढलानों, विशाल सरोवरों, घाटियों और हिमानी की सभी भद्रजन अत्यधिक इच्छा करते रहे हैं।[२]

इसकी सद्प्रेरणा से ही कवि जन कवित्व, शिल्पकार शिल्प, मुनिजन अनन्त मन्त्र, सहृदयजन प्रसाद तथा ज्ञानी-जन दर्शन प्राप्त करते हैं।

---

१. ***कूहा-*** *य औषधीभिर्मणिभिः प्रभावैः,*
पूर्णः समन्ताद् दृढ़बद्धबन्धः।
ध्रुवं समावर्जनमन्त्र आहो,
रक्षाकरण्डः खलु भारतस्य।।
(कूहा, श्लोक सं०- ६)

२. ***कूहा-*** *यस्मै वरिष्ठाय सदा त्रिलोक्यां*
सौन्दर्यलुब्धाः स्पृहयाम्बभूवुः।
यन्मेखलां स्फीतसरांसि सर्वे,
द्रोणीर्हिमानीः स्पृहयन्ति सन्तः।।
(कूहा, श्लोक सं०- १२)

इसकी सुन्दरता मनोहारी तीनों लोकों में श्रवणगोचर है। कवि इसकी प्रशंसा करते हुये कहता है-

इन्द्रनील मणि के द्रव जैसे नीले आकाश से हुई जाती जिसकी हिमराशि निरन्तर पुण्डरीक (श्वेतकमल) पर भ्रमरमाला तथा भगवान शंकर के कण्ठ में प्रसिद्ध उस कालिका (कलौंस या काली देवी) की रचना करती रहती है।[1]

"It's slow line bordering on the sapphire blue sky resembles a row of bees hemming a white lotus or the dark goddess Kali in the white neck of Lord Shiva (aiternatively the dark patch of poison in the white neck of Lord Shiva.)"

हिमालय पर्वत शिखर इतने उंचे हैं कि उसको देखकर दक्षिणात्य समुद्र अपनी गंभीरता को छोड़कर चंचल हो उठता है।जिसकी नतोन्नत, शुभ्र कान्ति से समन्वित तथा विशाल श्रृंगावलियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी चितेरे ने क्षीर सागर की दिव्य लहरों को चित्र में उतार दिया है।

सहृदय जन, जिसके आयामी एवं गूढ़ विन्यास को देखकर भ्रमवश यह कह उठते हैं कि यह आदि कवि वाल्मीकि की उरान्त तथा मूर्त पीड़ा की राशि है। इसकी सुन्दरता में वर्णित इस पद्य को देखिये-

जिसमें झरने उन रसस्यन्दी और मनोहर मधुर गीतों को गाते रहते हैं। जिनकी कि असंख्य प्राणी प्रशंसा करते हैं तथा जिनका गुफाओं के मुख अनुगान करते हैं।[2]

---

१. **कूहा-** *यस्येन्द्रनीलद्रवनीलखेन,*
स्पृष्टा हिमानी रचयत्यजसम।
मिलिन्दमालामिव पुण्डरीके,
तां कालिकां वापि महेशकण्ठे।।
(कूहा, श्लोक सं०- १४)

२. **कूहा-** *जीवैरसंख्येः कृतसाधुवादं*
गुहामुखैश्चाप्यनुगीयमानंमा।
गीतं रसस्यन्दि मनोभिरामः,
गायन्ति यस्मिन् मधुरं प्रपाताः।।
(कूहा, श्लोक सं०- १६)

जिनमें उनीदें वृक्षो की अक्षर पक्तियों से सुहावनी घाटियां खुले शास्त्रों सी प्रतीत होती है और जिसमें नदियों के प्रवाह स्फुटित होते सौन्दर्य-सूत्र से लगते हैं। कवि कहता है-

जिसमें (दिन में) सूर्य की किरणों तुषार में संक्रान्त होकर अद्‌भुत इन्द्रधनुषों की सृष्टि कर देती है तथा रात में चन्द्रमा की कला मंजुल नवीन श्वेत कमलों की उदग्र पक्तियों की सृष्टि करती है।[1]

"Reflected by it's white snow, the rays of sun break in to countless rainbows. simllarly, the rays of moon create as it were of rows of shining white lotuses."

जहां आकाश में वितान के नीचे पृथ्वी सोती है, जहां चैतन्य को निष्ठा प्राप्त होती है। जहां शान्ति मन्द स्वर में गीत गाती है। और जहां सर्ग केलियां करता रहता है। जिसकी शिखरावलियों पर एक राग से झुक जाता है तो दूसरी (पृथ्वी) प्रमोद से उठ जाती है और इस प्रकार धावा पृथ्वी परस्पर प्रगाढ़ रूप से मिल जाती है।

यहां पर हिमालय की शोभा के माध्यम से द्यावा पृथ्वी के मिलन की ओर संकेत किया गया है। आगे का वर्णन करते हुये कवि कहता है कि-

जिसका उठता हुआ ऊँचा वर्फीला शिखर नीले आकाश में धंसकर उन श्रीमती इन्दिरा गांधी का बार-बार स्मरण करा देता है। जिनके बालों में एक भाग जागर्ती सफेदी से युक्त था।[2]

---

१. ***कूहा-*** *क्रान्तास्तुषारे किरणाः खरांशो*
यस्मिन् सृजन्त्यद्‌भुतमिन्द्रचापान्।
कलास्तथेन्दोनवपुण्डरीक
रजीमुदग्रामिव राजमानाम्।।
(कूहा, श्लोक सं०-२१)

२. ***कूहा-*** *अत्युच्छ्रितं नीलनभोनिखातं,*
हैमं यदीयं शिखरं विरूढम्।
जाग्रत्सितच्छाय शिरोरुहाया,
मुहुर्मुहः स्मारयतीन्दिरायाः।।
(कूहा, श्लोक सं०- २५)

हिमालय की शोभा का वर्णन करने के उपरान्त कवि आगे का वर्णन इस प्रकार करते हैं -

उस (हिमालय) पर्वत पर मन के समान तीव्र गति वाले विमान पर बैठकर बहुत उंचाई से अपनी माता (श्रीमती इन्दिरा गांधी) की चिता भस्म विखेरकर श्री राजीव गांधी क्रमशः अपनी दुःख में डूबी राजधानी (दिल्ली) की ओर लौटने लगे।[१]

"After scattering the ashes of his mother from a plane at speeding at a height in the sky, Sri Rajiv Gandhi return to sorrowing Delhi (his head quarters)."

पार्वती के पिता हिमालय ने देशभक्ति से पवित्र इनकी अस्थियों और उज्जवल निष्ठाओं वाली इनकी चिता भस्म को गंगा के उद्भव स्थान ओर अपने दृढ़ अंक मे बड़ी भक्ति के साथ ग्रहण किया था।

इन्दिरा गांधी शुभ विचारों से ओत-प्रोत तथा निर्मल मन वाली महिला थीं। जब राजीव गांधी के द्वारा इन्दिरा गांधी की चिता भस्म हिमालय पर बिखेरी गयी तब शंकर भगवान ने पार्वती की उपस्थिति में उस भस्म को अनेक बार अपने मस्तक पर लगाया था। कवि कहता है -

जब इस साधु (पुत्र) ने यहां सिर झुकाकर अंतिम भावांजलि प्रदान की थी तब इसके मौन अधर ने मातृव्योगज़न्य व्यथा कथा व्यक्त वाणी में कह दी थी।[२] संवेग के रोके जाने पर भी असंख्य स्मृतियों से समुद्रभूत अकथनीय शोक द्वारा संभाला गया एक मोटा आंसू उनके कपोल पर गिरा।

---

१. ***कूहा-*** *तस्मिन् विमानेन मनोजवेन*
प्रोच्चै श्चिताभस्म वितीर्य मातुः।
प्रवर्तते स्म क्रमतो विषण्णां
राजीव गान्धी निजराजधानीम्।।
(कूहा, श्लोक सं०- २६)

२. ***कूहा-*** *भावांजलि पश्चिमदा साधु-*
यदिदादिशत प्रह्वशिरोधरोऽसौ।
अगादि मौनेन तराऽधरेज,
व्यथाकथा मातृवियोगजन्या।।
(कूहा, श्लोक सं०- २१)

तदन्तर मां की अस्थियों को प्रणाम करने के बाद प्रसन्नविभूति गिरिराजमाला और गंगा के स्रोत को देखकर इन्दिरा पुत्र राजीवगांधी वायुयान में आसन पर बैठ गये। तदन्तर एकान्त मिल जाने से चित्त के द्रुतिपरवश हो जाने से तथा विशेष रूप से मातृ वियोग की अनुभूति हो जाने से उनके मानस पहल पर कुछ सुने और देखें कथा-प्रसंग उभरने लगे। कवि कहता है-

जैसे प्रजा से उज्जवल कृति अथवा कृति से विशद कीर्ति या कीर्ति से खिलखिलाती प्रीति उत्पन्न होती है वैसे ही श्रीमती कमला नेहरू से इन्दिरा प्रियदर्शिनी उत्पन्न हुयी थी।[1]

"Like a good dead from knowledge, like to spotless renown from a good deed or like the humming pleasure from fame, Indira Gandhi was born from Kamla."

इन्दिरा जी की प्रशंसा करता हुआ कवि कहता है कि-

तीर्थराज प्रयाग में वह अपने पितामह पं०मोतीलाल नेहरू की पुण्यावली पिता पं०जवाहरलाल नेहरू की प्रभूत तपश्चर्याओं की विभूति तथा माता श्रीमती कमला नेहरू के गरिमामय यश की एक त्रिवेणी थी।

प्रयागराज के आनन्द भवन नामक प्रसन्न हृदय मेंदीप्त होती वह इन्दिरा बचपन में स्वतन्तत्रता की नीराजना आरती मंगल दीपिका सी प्रतीत होती थीं।[2]

बचपन में वह महात्मा गांधी का हाथ पकड़कर घूमती, उनसे ढेर सारे प्रश्न पूंछती तथा अपनी बुद्धि के वैभव से उन पवित्रतम महर्षि से अंहिसा मन्त्र का चयन करती रहतीं।

---

१. **कूहा-** *प्रज्ञासकाशात् कृतिरुज्ज्वलेव*
कृतेरुताहो विशदेव कीर्तिः।
कीर्तेरुत प्रीतिरिव क्वणन्ती,
जातेन्दिराऽऽसीतं कमलासकाशात्।।
(कूहा, श्लोक सं०- ३३)

२. **कूहा-** *प्रयागराजस्य हृदि प्रसन्न*
यानन्दवर्णे भवेन स्फुरन्ती।
साऽऽसीच्छिशुत्वे निजतन्त्रताया,
नीरजनामंगलदीपिकेव।। (कूहा, श्लोक सं०- ३५)

बाल्यकाल से ही वह अत्यन्त उज्जवल संस्कारों खान थीं। उनमें अदीनता निर्भयता, अंहिसा, क्षमा और दाक्षिण्य बुद्धियाँ विराजी थीं।उनके ताजे मृण्मय पात्र सरीखे सार्द्र बचपन में लगे राजनीति के संस्कार आगे चलकर उग्र तपस्या से जीवनपर्यन्त मंजुल चित्रों के रूप में दीप्त होते रहे।

वे विनीत किन्तु दुष्प्रधर्ष थीं, प्रियंवदा, वाग्मिनियों में श्रेष्ठ, पवित्र, स्थिर, मधुर, वदान्य, शास्त्र को प्रमाण मानने वाली, दृढ़ तथा दयार्द्र थीं।[1]

"She was humble and at the same time firm. she spoke kindly and she was a preeminent speaker she was pure, firm sweet generous and kind and guided by the authority of our great texts."

इन्दिरा जी के समान पृथ्वी पर कोई अनुरक्त प्रजावती ओर स्वाभिमानसे युक्त नहीं थी। वितत बुद्धि, उग्र उत्साह समृद्धि स्फीत स्मृति अब कहां दिखाई देगी। भारत के स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उन्होंने सदा अपनी बुद्धि द्वारा प्रधानमंत्री के पद पर आसीन अपेन पिता पं० नेहरू के सचिव पद को धारण किया।

कभी आवश्यक परामर्श देकर कभी उनकी क्रिया विधि देखकर सुविधा सम्पादन करती वे पिता की अवलम्ब यष्टि बन गई थीं।

इन्होंने (अर्थात् कानों ने) इनकी मधुर कीर्ति पहले सुनी है। इन्होने (अर्थात् आंखों ने) बाद में उन्हें देखा है-यह कहकर सम्पूण संसार अपने कानों की पहले और आंखों की बाद में प्रशंसा करता।[2]

---

१. ***कूहा-*** *आसीद् विनीताऽव च दुष्प्रधर्णा*
प्रियंवदाऽऽथ च वाग्मिनीनाम्।
शुचिः स्थिराऽथो मधुरा वदान्या,
शास्त्रैकचक्षुश्च दृढ़ा दयार्द्रा।।
(कूहा, श्लोक सं०- ४०)

२. ***कूहा-*** *पूर्व श्रुताऽस्याः कलकीर्तिरिभिः*
पश्चादमीभिश्च विलोकितऽसौ।
इति स्वकर्णान स्तुवति स्म पूर्व
मक्षीणि पश्चान्निखिलोऽपि लोकः।।
(कूहा, श्लोक सं०- ४४)

इन्दिरा जी सर्वगुण सम्पन्न महिला थीं। अतः कांग्रेस नामक संस्था ने जब उनको सिंहासनारूढ़ देखा तब वह अत्यन्त प्रसन्न हुयीं। श्री राजीवगांधी कहते हैं-

मेरे नाना (पं० नेहरू) ने अपनी पुत्री को उच्च पद पर प्रतिष्ठित देखकर तथा प्रसन्न होकर आनन्द सिक्त नेत्रों से स्नेह युक्त शब्दों से उनका स्वागत किया था।[१]

"My maternal grandfather (Pt.Nehru) welcomed her his eyes, wet with tears of joy and with words fill of joy and with wards full of affection after she (his daughter) occupied the high position as he was happy became of his."

गुणों की खान इन्दिरा मेरी पुत्री है, इसके प्रति मेरी प्रीति सर्वत्र प्रसिद्ध है। अब यदि मै इसकी प्रशंसा करूं तो पक्षपात लगता है, यदि नहीं तो गुणों की अपेक्षा होती है। वह कहते हैं -

इसकी चारित्र्य सम्पत्ति, निष्ठा, सहिष्णुता, क्रिया सम्पादन का सामर्थ्य तथा श्लाघनीय प्रकृति को देखकर मेरा मन कुछ गर्वीला हो उठा है।

कवि इन्दिरा जी की प्रशंसा करते हुये कहता है-

तदन्तर वे सक्रिय राजनीति के मंच पर ऐसे आरूढ़ हो गई जैसे आद्य शक्ति सिंह पर आरूढ़ हुयीं थीं। उनके द्वारा किये गये असाध्य और अद्भुत कार्यों की लोग आज भी स्तुति करते हैं।[२]

उन्होंने देश को नई राह से अवगत कराया। उन्होंने देश को उस मार्ग से चलाया जिसमें कृषि की प्रकर्षता आई, आर्थिक विकास हुआ, समाजवाद आया, दलितों का उद्धार हुआ। सब को समान अधिकार मिले तथा सुख प्राप्त हुआ।

---

१. ***कूहा-*** *मातामहो मे परिवीक्ष्य पुत्री*
मुच्चैः पदं प्राप्नुवतीं प्रसन्नः।
आनन्दसिक्तैनयनैश्चकार,
सुस्वागतं स्नेहभरैश्च शब्दैः।।
(कूहा, श्लोक सं० ४६)

२. ***कूहा-*** *अध्यास्त सा सक्रियराजनीति*
मंचं ततः सिंहमिवाद्यशक्तिः।
कर्मण्यसाध्यानि तथाद्भुतानि,
तया कृतान्यद्य जना गुणन्ति।।
(कूहा, श्लोक सं० ५०)

उन्होनें परिवार नियोजन के महत्व के विषयक लोगों को प्रेरणा दी। बड़ा परिवार लोगों को दुःख देता है, उसका नियोजन ही सुख का मूल है। संसार में विज्ञान-शक्ति का उदय मानव-कल्याण के लिये होना चाहिये, विनाश के लिये नहीं।[1]

" A large family is a cause of distress And controlled family is for happiness. May science and tecnology be developed for the good and not for the destruction of the world."

इस प्रकार मानव-कल्याण के लिये उन्होंने बहुत से ऐसे कार्य किये जो उन्हें जीवन में भाने वाले संकेतों से दूर कर सकें। उन्होंने कहा आयुधों की उद्धत परम्परा धीरे से मानव मूल को निगल जायेगी। अतः सम्पूर्ण संसार को इसकी स्पर्धा का त्याग कर देना चाहिये तथा सम्पूर्ण भूमि को एक नीव के रूप में देखना चाहिये।

उनके हृदय की क्षमा, आंखों की दूर-दृष्टि, दोनों हाथों की क्रिया एवं पराक्रम की शोभा, दोनों चरणों की गति तथा क्रियाविधि में दृढ़ता संसार में प्रसिद्ध है। कवि कहता है कि-

उन्होनें भारतवर्ष में लोगों को बीससूत्री कार्यक्रम की आनन्दप्रदायिनी माला प्रदान की। क्या संसार में आज भी आर्यभट्ट आदि उनकी विरुदावली नहीं पढ़ रहे हैं।[2]

---

१. ***कूहा-*** *दुनोति लोकं परिवाददैर्ध्य,*
नियोजनं तस्य भवेत्सुखाय।
वैज्ञानिकी शक्तिरुदेतु नित्यं,
शिवाय नो ध्वंसकृतेऽत्र लोके।।
(कूहा, श्लोक सं० ५६)

२. ***कूहा-*** *सा भारते विंशतिसूत्रमाला-*
मयच्छदानन्दकरीं जनेभ्यः।
किमार्यभट्टादिकमद्य तस्याः,
पठत्युदारां विरुदावलीं नो।।
(कूहा, श्लोक सं० ६०)

भारतवर्ष में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में इन्दिरा जी कीर्ति विख्यात हैं। अद्भुत दक्षिणी ध्रुव में तथा विशाल अन्तरिक्ष में वैज्ञानिकों के मण्डल उनकी शशि-शुभ्र कीर्ति का गान कर रहे हैं। इन्दिरा ने अपने जीवन के अनेक कष्टकारी दिनों को बड़े ही साहसपूर्वक झेला है। बचपन में ही वह अनेक दुःखों से तप्त हो गई थी। कहा भी गया है-

जो बचपन में अपनी माता के वियोग में, युवावस्थामें पहले अपने पति ओर बाद में पिता के विरह में तथा वृद्धावस्था में पुत्र (संजय गांधी) के वियोग में सहस्रधा टूट गई थीं। वे मुझे याद आ रही हैं।[१]

" I think of her who suffered a thousands pangs by the loss of her mother in childhood and the loss of her husband and father in the prime of her youth and the loss of her son in the old age."

देश के प्रति उनका प्रेम सच्चा था। तभी तो वह देशकी विखण्डता की बात भी कैसे सह सकती थीं। अतः कुटिल केशपाश वाली उन्होनें पंजाब में फैले शत्रुओं के जाल को तुरन्त ही काट डाला। वह कहा करतीं थीं-

यदि मैं अपने देश की सेवा करती हुयी मारी भी गयी तो मुझे अभिमान का अनुभव होगा। मै जानती हूं कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूंद देशोन्नति का कारण बनेगी।[२]

इस पद्य के माध्यम से इन्दिरा जी का देश के प्रति घनिष्ठ प्रेम परिलक्षित हो रहा है।

---

१. ***कूहा-*** *बाल्ये जनन्या विरहेण पत्युः,*
पितुश्च दूना नवयौवने या।
तां वार्धके पुत्र वियोगयोगात्,
सहस्रधा संप्रुहितां स्मरामि।।
(कूहा, श्लोक सं० ६२)

२. ***कूहा-*** *यदि स्वदेशं खलु सेवमाना,*
हता तदा स्यां विषयः स्मयस्य।
जाने मदीयं प्रतिबिन्दु रक्तं,
देशोन्नतेर्यास्यति कारणत्वम्।।
(कूहा, श्लोक सं० ६८)

इस प्रकार उड़ीसा में प्रसिद्ध उनकी वांगमाधुरी को कर्ण पुट से पीते लोग प्रसन्न हाकर आनन्द परम्परा को प्राप्त कर रहे थे। और अमृत के समुद्र में गोते लगा रहे थे। परन्तु ऐसा बहुत कम ही देखा जाता है। हर सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख ये प्रकृति का नियम है तभी तो।

लगता है लोगों को सुखी देखकर देवताओं क मन सुखी नहीं थे, इसिलिये उन्होंने यमराज को इन्हें अपने लोक में लिवा जाने लाने के लिये प्रेरित किया।[१]

"Seeing the world happy (with her) the minds of gods were evidently not happy. Perhaps because of this they prompted the god of deth to take her a way from this world."

जब देश के बाहर मै गया हुआ था, राष्ट्रपति जी भी नहीं थे, गृहमंत्री दिल्ली में नहीं थे और जो अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। वे भी यात्रा के प्रसंग से कहीं बाहर गये हुये थे। अवसर प्राप्त करके यमराज ने मन में अपना कार्य करने का विचार किया। मृत्यु रूपी नाटक के पात्र का प्रवेश कराकर मानों उससे प्रयोगातिशय ही कर दिया।

जैसे ही वे कुछ विश्वस्त लोगों क साथ आनन्दपूर्वक अपने निवास स्थान से कार्यालय की ओर जा रहीं थीं। उसी समय उनके समीपस्थ दो रक्षा पुरुषों ने मार्ग में आकर उन्हें गोलियों से मार डाला।

इस सन्दर्भ में सिद्ध कवि कहता है यह केवल प्राणी-वध ही नहीं था प्रत्युत यह सभ्यता का ही वध था। इनके साथ अपने भारतवर्ष में विश्वासघात का एक नया अवतार पैदा हो गया।[२]

---

१. **कूहा-** *परन्तु लोकान् सुखियोऽभिवीक्ष्य,*
मनांसि नासन् सुखभाञ्जि तेषाम्।
ततोऽनुदन्नन्तकमादितेया,
मन्ये समाहर्तुमिमां स्वलोके।।
(कूहा, श्लोक सं० ७०)

२. **कूहा-** *न केवलं प्राणिवधोऽयमासी–*
दासीद्बधोऽयं खलु सम्यतायाः।
अभूदथैवं किले भारते स्वे,
विश्वासघातस्य नवावतारः।
(कूहा, श्लोक सं० ७४)

जब रक्षा करने वाले क्रूरता को धारण कर भक्षक बन जाये तो इस संसार में प्रलय की स्थिति हो जाती है। कवि कहता है कि मुझे इस बात का दुःख है कि उनके रक्षा पुरुषो ने उन्हे विश्वासघात करके मारा। यदि पूजा का दीपक घर को जला डाले तो उससे लोगों को अवश्य ही शोक होता है।

ये तो सब विधि का विधान है अथवा दोनों रक्षा पुरूषों पर कलंक लगाकर देवता गण अपेन यत्न में सफल हो गये। उन्होंने स्वर्ग की शोभा बढ़ाने के लिये पृथ्वी का एक बहुत सुन्दर रत्न टुकड़े-टुकड़े कर दिया।[१]

"Or perhaps the gods succeded in their endea vour after giving a bad name to the security men, they have taken away a beatiful jewel from the world. perhaps to increase the splendour of the heavens."

इन्दिरा जी के विषय में कवि कहता है कि जिसने पृथ्वी से यथेष्ट अन्न दुहा था, दयार्द्र जो संसार मे सदा शान्ति की याचना करती थी, जो बड़े-बड़े शत्रुओं को रणभूमि में घेर लेती थी, जो शुभेच्छु सदा लोगों से मंगल प्रश्न करती रहती थीं तथा-

जो आप्तजनों से मानव धर्म का चयन करती थी, जो लोगो को हित की उदार बात बताती रहती थीं, जो अपने लोगों को देशानुसन्धान का अनुशासन करती थीं, जिसने शत्रु राष्ट्रों की प्रसन्नता को जीत लिया था।[२]

---

१. **कूहा-** *दत्वा भटाभ्यामथवा कलंक,*
मवन्ध्ययत्नास त्रिदशा अभूवन्।
स्वर्लोकशोभामभिवर्धितुं तै,
रछातं धरायाः कमनीयरत्नम्।।
(कूहा, श्लोक सं० ७६)

२. **कूहा-** *अवाचिनोन्मानवधर्ममाप्तान्,*
जनानुदारं हितमब्रवीद्या।
स्वीयानशाद्देशपरीष्टिमाद्यां,
विपक्षराष्ट्राण्यजयत् प्रसादान्।।
(कूहा, श्लोक सं० ७८)

इन्दिरा ही वह प्रथम महिला थीं जिन्होनें देश की प्रतिष्ठा को प्रकाशित किया, जो नगरों को विकास मार्ग पर ले आईं थीं, जिसने गांवों को राजमार्ग से मिला दिया था, जिसने नदियों से अमर प्रकाश मथ लिया था।

जो पृथ्वी पर वन्दनीय अहिंसा को ला रहीं थीं, जिसने देश के शत्रुओं को प्राण-दण्ड दिया था, जिसने चन्द्रमा की स्वच्छ द्युति को चुरा लिया था तथा जिसने क्रियाओं के परिपक्व परिणाम को प्राप्त किया था।[1]

इन्दिरा जी की प्रशंसा जितनी भी की जाये कम है परन्तु एक दिन ऐसा भी आया वह जिस पर विश्वास करती थीं उससे विघात प्राप्त करके वैराग्य वश स्वर्गलोक में चलीं गईं। इन्दिरा जी की मृत्यु पर शोक व्यक्त करते हुये कवि कहता है-

दुःख है कि भारतोद्यान की वह मनोज्ञ लता यम के कुटिल कटाक्षों द्वारा जला दी गयी और स्वर्गलोक में चली गयीं। उसकी गन्ध को अपना प्राण मानने वाले भ्रमर अब कहां जायें।[2]

"Alas! a beatiful creeper of the garden of Bharat has left us, being scorched by the cruel eyes of the Lord of Death. where would the bees, which once lived only by its fragrance, gonow."

परन्तु कहा गया है कि कुछ लोग मृत्यु के उपरान्त भी अपने शुभ कर्मों के द्वारा संसार में अमर बने रहते हैं। उन्हीं में से एक थीं इन्दिरा जी। उनकी एक अन्य पद्य के माध्यम से स्तुति करते हुये कवि कहता है-

---

१. ***कूहा-*** *वन्द्यामहिंसामवहद्धरित्री,*
मदण्डयद्देशरिपूनसून या।
कदाप्यमुष्णाद् द्युतिमिन्दुमच्छां,
क्रियाफलं याऽपचदिद्धपाकम्।।
(कूहा, श्लोक सं० ८०)

२. ***कूहा-*** *हा भारतोद्यानमनोज्ञवल्ली,*
प्लुष्टा कटाक्षैः कुटिलैर्यमस्य।
गता दिवं सम्प्रति चंचरीकाः,
क्व यान्तु तत्सौरभमात्रजीवा।।
(कूहा, श्लोक सं० ८२)

जब तक सूरज और चांद रहेगा, जब तक तारे, पृथ्वी और समुद्र रहेगें तब तक हे मां। पृथ्वी पर तुम्हारा तुषार और हार जैसा शुभ्र यश रहेगा।[१]

कुछ लोगों ने तो यह कहकर अपने प्राण त्याग दिये कि अब हमें न तो यह पृथ्वी, न शरीर, न प्राण, न स्वकीयजन और न ही परिषद्य अच्छे लगते हैं। कुछ लोग पानी में डूब कर मर गये, कुछ लोग आग में कूंद गये। कुछ लोग फांसी लगकर परलोक सिधार गये। कुछ लोग जिनका हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। लोग इन शब्दों मे उनकी स्तुति करने लगे। हम तो उन्हें ही धन्य समझते हैं जिनका मन दुःख को सहन नहीं कर सका।

जिस प्रकार मनुष्य इन्दिरा जी की मृत्युजनित दुःख को सहन नही कर पा रहे थे उसी प्रकार प्रकृति भी आंसू बहा रही थी।

नदियां रो रही थी, वृक्ष सन्तप्त हो रहे हैं, पृथ्वी को लज्जा आ रही है। पर्वत पिघल रहे हैं। दिशायें क्षीण हो रही हैं। तथा अपरिमित शोक-प्रखण्डों से महासमुद्र उन्निद्र हो उठे हैं।

परन्तु यह भी सत्य है कि मृत्यु तो वास्तव में अमरता के धाम का द्वारा है, विद्वान् लोग शरीर को विनाशशील मानते हैं। आत्मा के चले जाने पर जीव का यह शरीर पंच महाभूतों में मिल जाता है।

राजीव गांधी जब विमान में बैठे हुये थे तब वह सोचते हैं कि मेरी माता ने जिस अपार साहस औरअदीनता को अपने मन में बसाया था उसे परीक्षित और संस्कृत करके मृत्यु के समय भी धारज किये रखा था।[२]

---

१. **कूहा-** *यावद् रविस्तिष्ठति यावदिन्दु-*
र्यावच्च तारा धरणिश्च सिन्धुः।
तावद् यशः स्थास्यति ते धरायां,
तुषारहारावलिशुभ्रमम्ब।।

(कूहा, श्लोक सं० ८७)

२. **कूहा-** *आजीवनं साहसव्ययं यं,*
दैन्यात्ययं चाप्यकरोत् स्वचित्ते।
परीक्षितं संस्कृतमाश्रितं त-
मधत्त धृत्या निधनेऽपि माता।।

(कूहा, श्लोक सं० ९४)

वह हिमालय पर्वत से भी नित्य स्नेह रखतीं थीं तथा स्वयं को तुहिनाचल की स्वाभाविक बोध से पवित्र पुत्री मानतीं थीं। जब जब आत्मीय जन उनसे पूंछते कि आपकी मनोभिलषित निवास-भूमि कौन सी है। तब तब वे अपना मनोभिलाष व्यक्त करतीं कि मै हिमानी से महान् हिमालय पर्वत पर निवास करना चाहती हूं।

उनकी अभिलाषा को व्यक्त करते हुये कहते हैं कि कभी मृत्यु के बाद का प्रसंग चला तो इन्दिरा जी ने मुझसे आग्रहपूर्वक कहा था, बेटे मेरे प्राणों के लोकान्तर में चले जाने पर तुम मेरे अस्थि अवशेषों को हिमालय पर बिखरा देना।[1]

कवि कहता है कि हिमालय पर्वत शृंखलाओं परम्परा ही नहीं है प्रत्युत यह तो अत्यन्त उजले आदर्शों की परम्परा की मनोज्ञ प्रतिमा प्रतीत होती है। पर्वतों की दिव्य छटा लोगों को सत्य मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करती है। उत्कण्ठा से भरे शिखरों पर दिखायी देती विभूति तत्व बोध करा देती है।

एक अन्य पद्य के माध्यम से नगेन्द्र के संकेत को व्यक्त किया जा रहा है-

हे मनुष्यों! यह नगेन्द्र हमें कुछ ऐसे संकेत देता है कि इस विध्वंसशील शरीर में रहने वाला अमरतत्व असंभव को भी संभव बना देता है।[2]

इन्दिरा जी अनुराग में भर ऐसी-ऐसी प्रशंसाओं से हिमालय का गुणानुवाद किया करती थीं। ऐसा लगता है उन्होंने उत्तम व्यक्तियों की लीलाओं के खजाने की मूलभूत सम्पत्ति को उससे ही प्राप्त किया था।

---

१. ***कूहा-*** *लोकान्तरं गच्छति तात हंसे,*
किरेर्ममास्थीनि हिमालये त्वम्।
अन्त्येष्टिसंस्कारविधिप्रसंगे,
गान्धीन्दिरा मां बहुशो न्यागादीत्।।
(कूहा, श्लोक सं० ६८)

२. ***कूहा-*** *कायेऽत्र विध्वंसिनि संस्थितोऽसा-*
वात्माऽमरोऽसम्भवमानिसर्गात्।
करोत्यये सम्भविनं मनुष्या,
इतीव संकेतित नो नगेन्द्रः।।
(कूहा, श्लोक सं० १०३)

कवि कहता है कि उनकी हिम के देवता हिमालय में और गंगा के उत्स में समर्पित अस्थियां मेरे देश में स्वतन्त्रता देवी की रक्षा करके निमित्त वज्र वैदग्धी को प्राप्त हों स्वतन्त्रता की देवी के मधुर स्वरूप के सौभाग्य संवर्धन के लिये चूर्ण सदृश उनकी चिता भस्म भारतवर्ष की समग्रता और विभूति के लिये हो।

लोग पग से पग और मन से मन मिलाकर तथा मित्रता के साथ चलें। लोगों के विचार मन और चित्त में दृढ़ता आये और स्वदेश का समुत्कर्ष हो।[१]

हिंसा का विनाश हो, सदा के लिये सभी क्षुद्र स्वार्थ समाप्त हो जायें नित्य ही चारित्र्य सम्पत्ति का अभ्युदय हो, तथा सभी सम्प्रदाय परस्पर प्रसन्न रहें। सभी युवक कार्य करने वाले हों, देश में गुणात्मक वृद्धि हो, आहार का पोषण मिले, रोगों का विनाश हो तथा भारतवर्ष में परिवार नियोजन हो।

लोगों को पुरस्कार और दण्ड उनके कार्य के अनुसार मिलना चाहिये खेल और शिक्षा फले फूले तथा कार्यशीलों की श्रीवृद्धि हो।[२]

भारत में उत्पादन, समता, गांव, नगर, स्त्री, पुरुष, उद्योग तथा विकासकार्य सभी क्षेत्रों में समृद्धि हो। शिल्पकारों की दिव्य शिल्प रचनाये, लेखकों के मनभावन लेख तथा कलाकारों की ललित कलायें भारतवर्ष में सुन्दरता बनायें रखें

सुरक्षा प्राप्त करके राजनीति प्रसन्न हो, स्वस्थ होकर संस्कृतियां सजती संवरती रहें, दर्शन पद्धतियों में कोई रुकावट न आये और सभी धर्म उदार हों।

इस प्रकार से देश की समृद्धि के लिये प्रार्थना की गई है।

---

१. ***कूहा-*** *पदैः पदानां मनसां मनोभि–*
मैत्रीं समालम्ब्य चलन्तु लोका।
दाढर्य विचारेषु मनस्सु चित्ते,
लभेत निष्ठां जयतु स्वदेशः।।
(कूहा, श्लोक सं० १०६)

२. ***कूहा-*** *पुरस्कृतिर्दण्डविधिश्च पुंसां,*
कार्यानुरोधं कुरुतां सदैव।
क्रीडाश्च शिक्षाश्च लसन्तु नित्यं,
श्रीभारते नन्दतु कर्मिणां श्रीः।।
(कूहा, श्लोक सं० ११३)

इन्दिरा जी की मृत्यु से राष्ट्र किंकर्तव्यविमूढ़ और घबराया हुआ सा प्रतीत हो रहा था। परन्तु फिर भी उन्हें धैर्य रखना होगा।

एक अन्य श्लोक के माध्यम से कामना की गई है। कि प्रत्येक जन में एकता का बोध कराने वाली वे नवीन प्रतिभायें उत्पन्न हो जिनसे यहां प्रशंसनीय शान्ति हो तथा दिव्य रचनायें होती रहें।[1]

कवि कहता है कि राष्ट्र रूपी पद्म खण्ड पर जो निबिड पीड़ा की धुन्ध व्याप्त है, उसे उदित होता हुआ विवेक रूपी सूर्य की किरणों का प्रकर्ष तुरन्त काट डालें।[2]

इस प्रकार विचार करने में चतुर राजीव गांधी ने जब अपने विमान को राजधानी (दिल्ली) के समीप आते देखा तो अपने शोक पर नियंत्रण किया ताकि उत्कण्ठित लोगों से नमस्कार प्राप्त करते हुये बोध सम्पन्न, वे यान के पृथ्वी पर टिक जाने पर, धीरे से बाहर आ गये।

---

१. **कूहा-** *जने जने सा प्रतिभा नवीना,*
प्रकाशतामैक विधानकर्त्री।
याभिर्भवेच्छान्तिरिहानवद्या,
भवन्तु दिव्या रचनाः पुनस्ताः।।
(कूहा, श्लोक सं० ११८)

२. **कूहा-** *व्याप्तास्त्यकस्मादिहं राष्ट्रपद्म-*
षण्डें घना सम्प्रति यार्तिकूहा।
झटित्यिमं कृन्ततु कोडप्युदेष्यन्,
विवेकमार्तण्डकरप्रकर्षः।।
(कूहा, श्लोक सं० ११६)

भाषा शैली -

इस सरस काव्य की भाषा सुन्दर प्रासादिक, माधुर्य तथा ओजमय है। इसमें कवि ने इस प्रकार की भाव प्रधान शैली का वर्णन किया है कि मानव मन सहसा ही इस ओर आकृष्ट हो जाता है। हिमालय की नैसर्गिक सुन्दरता का वर्णन करते हुये कवि की लेखनी से जो शब्द रूपी अंकुर फूटे हैं। उससे मानव मन उसकी प्राकृतिक सुन्दरता की ओर आकृष्ट होता है।

प्रसादगुण का उदाहरण निम्न पद्य में दृष्टव्य है-

मातुः प्रणम्यास्थ्यशेषलेशान्,
प्रसन्नभूतिं गिरिराजमालाम्।
उत्सं च गाङ् परिवीक्ष्य मौन,
मुपाविशत् स्वासनमिन्दिराजः।।

(कूहा, श्लोक सं० ३१)

माधुर्य गुण - उदाहरण-

रिङ्तरङ्कटाच्छकटाक्षकम्रा
तटा द्रयुरोजाहितरम्यरूपा।
नद्यन्तरैः सार्धमतीव हृष्टा,
यदङ्णे कीडति जहनुकन्या।।

(कूहा, श्लोक सं० ५)

यहाँ पर रिङ्तरङ् आदि में ग के साथ ड्. का संयोग आदि माधुर्यगुण व्यंजक वर्ण है।

ओज गुण - उदाहरण -

धर्मान्धतां क्षुद्रतरान् विचारान्,
दरिद्रतां जातिगताँश्च दोषान्।
अभिद्रवन्तीमभयानदीनां,
स्मरामि तां मातरमात्मशक्तिम्।।

(कूहा, श्लोक सं० ६४)

छन्द -

कूहा इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति तथा अन्तिम पद्य वसन्ततिलका

छन्द में उपनिबद्ध है। इसके उदाहरण निम्नलिखित है।

इन्द्रवज्रा छन्द - उदाहरण -

मातामहो मे परिवीक्ष्य पुत्री,
मुच्चैः पदं प्राप्नुवती प्रसन्नः।
आनन्दसिक्तैर्नयनश्चकार,
सुस्वागतं स्नेभरैश्च शब्दैः।।

(कूहा, श्लोक सं० ४६)

इसके प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण, एवं दो गुरु हैं। यह इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर हैं। इसका लक्षण इस प्रकार है -

लक्षण -

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"

उपेन्द्रवज्रा - उदाहरण -

"एकान्तलाभाद् द्रुतिपारवश्याद,
वियोगसंवित्तिभराइ विशेषात्।
अथाविरासन् श्रुतदृष्टपूर्वा,
मनःपटे केऽपि कथा प्रसंगा।।"

(कूहा, श्लोक सं० ३२)

"उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ,

उक्त लक्षण के अनुसार इसके प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण तथा दो गुरु है। यह उपेन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते है।

उपजाति - उदाहरण -

"कायेऽत्र विध्वंसिनि संस्थितोऽसा-
वात्माऽमरोऽसम्भवमानिसगतिं।
करोत्यये सम्भविनं मनुष्या,
इतीव संकेतति नो नगेन्द्रः।।

(कूहा, श्लोक सं० १०३)

इसमें इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के दो-दो चरण विद्यमान हैं। अतः यह उपजाति छन्द है।

वसन्ततिलका - उदाहरण -

इत्थं विचारचतुरो निजराजधान्या,
आराद् विमानमभिवीक्ष्य निगृह्य शोकम्।
उत्कैर्जनैः कृतनमस्कृतिराप्तबोधो,
याने भुवस्पृशि शनैर्निरगच्छदस्मात्।।

(कूहा, श्लोक सं० १२०)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक टगण, एक भगण दो जगण और अन्त में दो वर्ण हैं। अतः यहां वसन्ततिलका छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में १४अक्षर हैं।

लक्षण- *"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"*

अलंकार -

कूहा में अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलंकारों की छटा बिखरी पड़ी है।

अनुप्रास अलंकार - लक्षण - अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषमेऽपि स्वरस्य यत्।

अनुप्रास वह शब्दालंकार है जिसमें स्वर की विषमता रहने पर भी शब्द में समानता रहती है। स्वरों में समानता रहे न रहे, परन्तु जहां अनेक व्यंजन एक से मिल जाते हैं। वहां अनुप्रास अलंकार है।

उदाहरण -

रिङ्तरङ्कटाच्छकटाक्षकम्रा
तटा द्रयुरोजाहितरम्यरूपा।
नद्यन्तरैः सार्धमतीव हृष्टा,
यदङ्णे कीडति जहनुकन्या।।

(कूहा, श्लोक सं० ५)

चंचल तरंग रूपी निर्मल कटाक्षों से सुन्दर, तटवर्ती पर्वत उरोजों से मनोहर रूप धारण करती प्रसन्न जहनु की कन्या जिसके आंगन में अन्य नदियों के साथ खेलती रहती है।

यहां पर ङ., गू आदि की पुनरावृत्ति हुयी है। अतः अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास अलंकार का लक्षण इस प्रकार है-

"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्"

उत्प्रेक्षा अलंकार - लक्षण - *"भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना"*

किसी प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना करने को उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण -

नतोन्नतता शुभ्रविभा विशाला,
शृंगावली यस्य विभाति नूनम्।
केनापि चित्रे लिखितास्तरंङाः,
क्षीराम्बुधेः कारुतरेण दिव्याः।।

(कूहा, श्लोक सं० १५)

जिसकी नतोन्नत, शुभ्र कान्ति से समन्वित तथा विशाल श्रृंगावलियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी क्षितेरे ने क्षीर सागर की दिव्य लहरों को चित्र में उतार दिया हो।

इसमें प्रस्तुत वस्तु की अप्रस्तुत के रूप में सम्भावना होने से उत्प्रेक्षा अलंकार है। उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण इस प्रकार है-

"भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना"

उपमा अलंकार - लक्षण - साम्यं वाच्य वैधर्म्य वाम्येक्य उपमा द्वयोः।

एक वाक्य में दो पदार्थों के वैधर्म्यरहित वाच्य सादृश्य को उपमा कहते हैं।

उदाहरण -

अध्यास्त सा सक्रियराजनीति-
मंचं ततः सिंहमिवाद्यशक्तिः।
कर्मण्यसाध्यानि तथाद्भुतानि,
तया कृतान्यद्य जना गृणन्ति।।

(कूहा, श्लोक सं० ५०)

तदन्तर वे सक्रिय राजनीति के मंच पर ऐसे आरूढ़ हो गईं जैसे आद्य

शक्ति सिंह पर आरूढ़ होती हैं। उनके द्वारा किये गये असाध्य और अद्भुत कार्यों की लोग आज भी स्तुति करते हैं।

इसमें इन्दिरा जी की आद्य शक्ति से समानता की जा रही है अतः उपमा अलंकार है। इसका लक्षण इस प्रकार है-

"साम्यं वाच्य वैधर्म्य वाम्येक्य उपमा द्वयोः।"

रसनिष्पत्ति -

इसमें करुण रस अंगी रस के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वीर एवं अद्भुत रस का भी यदा कदा प्रयोग हुआ है। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं-

करुण रस-

इत्यादिकं व्याहरतां जनानां
वाष्पाम्बुभिर्निःश्वसितैः प्रलापैः।
निमज्जयन् लोकमशेषमंङ्,
सहस्रधारं सरसि स्म शोकः।।

(कूहा, श्लोक सं० ८३)

इस प्रकार विलाप करते लोगों के आंसुओं, निःश्वासों और प्रलापों से सम्पूर्ण लोक को डुबाता हुआ शोक हजार धाराओं में बह निकला था।

इस पद्य में करुण रस है। इसका स्थायी भाव शोक है। अतः यहां पर करुण रस है।

वीर रस - उदाहरण -

वंङ्गान् स्वतन्त्रानकरोदलीन-
देशान् कदाचित् सम्मेलयत्सा।
तार्तीयविश्वस्य समुन्नतीनां,
गरीयसी सा किल वैजयन्ती।।

उन्होंने बंगलादेश को स्वतन्त्र करवाया और गुटनिरपेक्ष देशों को मिलाया। निःसंदेह तृतीय विश्व की उन्नति की वे गरिमामय पताका थीं।

यहां पर उत्साह स्थायी भाव, तथा विजेतव्य का आलम्बन, विजेतव्य व्यवहार पराक्रम आदि उद्दीपन विभाव, शौर्य आदि अनुभाव, आदि से परिपुष्ट वीर रस है।

अद्‌भुत रस -

स्थायी भाव आश्चर्य की अभिव्यक्ति होने से अद्योलिखित पद्य में भी निष्पत्ति हुयी हैं। यथा -

अध्यारस्त सा सक्रियराजनीति,
मंचं ततः सिंहमिवाद्यशक्तिः।
कर्मण्यसाध्यानि तथाद्‌भुतानि,
तया कृतान्यद्य जना गुणन्ति।।

(कूहा, श्लोक सं० ५०)

तदन्तर वे सक्रिय राजनीति के मंच पर ऐसे आरूढ़ हो गयीं जैसे मां शक्ति सिंह पर आरूढ़ हुयीं थीं। उनके द्वारा किये असाध्य और अद्‌भुत कार्यों की लोग आज भी स्तुति करते हैं।

इसमें विस्मय स्थायीभाव, आश्चर्यजन वस्तुस्वरूप आलम्बन, आश्चर्यजनक चेष्टा आदि उद्‌दीपन विभाव से परिपुष्ट होकर अद्‌भुत रस है।

प्रकृति चित्रण -

कूहा के रचयिता डॉ० उमाकान्त शुक्ल ने कृति में वर्ण्य-विषय के साथ प्रकृति का आलम्बन, उद्‌दीपन एवं सचेतन (मानवीकरण) रूप में यथास्थान प्रभावी चित्रण किया है। कवि ने प्रकृति का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। काव्य के प्रारम्भ में हिमालय की शोभा का वर्णन तो इसकी उत्कृष्टता को और भी बढ़ा रहा है -

द्रुतं वहन्त्यो विशदप्रवाहा,
नद्यो यदीनां करुणां गरन्ति।
दम्भोलिकोटिरपि दम्भयन्त्यः,
शिला मदीयं द्रढिमाननाहुः।।

(कूहा, श्लोक सं० ३)

निर्मल प्रवाह शीला द्रुत गति से बहती नदियां जिसकी कारुण्य वृत्ति का कथन करती हैं तथा वज्र के किनारों को मोथरा बना देने वाली शिलायें जिसकी दृढ़ता को बताती हैं।

एक अन्य उदाहरण में भी प्रकृति की छटा बिखेरी गयी है।

द्रष्टव्य है –

यत्रोद्गताः पुष्टिमिताश्चलन्त्यो
रुद्धाः समुत्प्लुत्य पुनः प्रयान्त्यः।
उत्तालतालैस्तरलैस्तरंङ्गै–
गयिन्तिनृत्यन्ति नरन्ति नयः।।

(कूहा, श्लोक सं० ४)

जहां उत्पन्न हुयीं, पुष्ट हुईं, बहती हुई, रोके जाने पर भी उचक कर फिर चल पड़ती नदियां तरल–तरंगों की तालियों से गाती हैं, नाचती हैं और बुल बुल ध्वनि करती रहती हैं।

हिमालय पर्वत अपनी शोभा के द्वारा ही नहीं बल्कि अपने गुणों के कारण भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र हैं। एक अन्य उदाहरण के माध्यम से इसकी गुणवत्ता प्रकट हो रही है –

यः औषधीभिर्मणिभिः प्रभावैः,
पूर्णः समन्ताद् दृढ़बद्धबन्धः।
ध्रुवं समावर्जनमन्त्र आहो,
रक्षाकरण्डः खलु भारतस्य।।

(कूहा, श्लोक सं० ६)

जो औषधियों, मणियों और प्रभावशीलता से परिपूर्ण तथा सब पकारसे दृढ़ता से बंधा मानो आकर्षण मन्त्र लगता है या फिर भारत का रक्षा करण्ड प्रतीत होता है।

कवि ने हिमालय पर्वत की जो अलौकिक छटा बिखेरी है। उससे इस काव्य की उत्कृष्टता और भी बढ़ जाती है। कहीं पर मक्खन, अक्षत, दूध, मोती, शंख, चन्द्रमा, कपास और दही की धवलता की लक्ष्मी की मनोहर, दिव्य, आयत तथा विशद एक हाट सी प्रतीत होती है तो कहीं अकेले धीर ओर महोज्जवल (हिमालय) द्वारा शोभित, नदियों के जाल रूपी पत्र रचनाओं से अलंकृत भारत भूमि निरन्तर धान्य समृद्धि से रोमांचित सी प्रतीत होती है।

एक अन्य पद्य के माध्यम से इसका वर्णन करते हुये कवि कहता है–

जीवैरसंख्यैः कृतसाधुवादं,

गुहामुखैश्चाप्यनुगीयमानम्।

गीतं रसस्यन्दि मनोभिरामं,

गायन्ति यस्मिन् मधुरं प्रपाताः।।

(कूहा, श्लोक सं० १६)

जिसमें झरने उन रसस्यन्दी और मनोहर मधुर गीतों को गाते रहते हैं। जिनकी कि असंख्य प्राणी प्रशंसा करते हैं तथा जिनका गुफाओं के मुख अनुगान करते हैं।

जिसमें उनीदे वृक्षों की अक्षर पंक्तियों से सुहावनी घाटियां खुले शास्त्रों सी प्रतीत होतीं हैं और जिसमें नदियों के प्रवाह स्फुटित होते सुन्दर सूत्र से लगते हैं एवं सूर्य की किरणें तुषार में संक्रान्त होकर अद्भुत इन्द्रधनुषों की पुष्टि कर देती हैं तथा चन्द्रमा की कला मंजुल नवीन खेत कमलों की उदग्र पक्तियों की सृष्टि कर देती हैं।

कवि ने इसमें प्राकृतिक दृश्यों में सजीवता एवं मनोहरता ला दी है जिसे पढ़कर मानव मन अनायास ही इसकी ओर आकृष्ट हो जाता है एक अन्य पद्य के माध्यम से हिमालय की उत्कृष्टता और भी सिद्ध हो रही है-

एका नमन्तीव विवृद्धरागात्,

परोन्नमन्तीव पुनः प्रमोदात्।

दिवस्पृथिव्यौ मिलतः प्रगाढं,

परस्परं यच्छिखरावलीषु।।

(कूहा, श्लोक सं० २४)

जिसकी शिखरावलियों पर एक (आकाश) राग से झुक जाता है तथा दूसरी (अर्थात् पृथ्वी) प्रमोद से ऊपर उठ जाती है और इस प्रकार द्यावा-पृथ्वी प्रगाढ़ रूप से मिल जाती है।

इस प्रकार द्यावा-पृथ्वी के मिलन ने एक अनोखी छटा बिखेरी है। परन्तु जहां पर प्रकृति इतनी मनोहर प्रतीत है वहीं पर इन्दिरा जी की मृत्यु पर आंसू भी बहाये हैं।

रुदन्ति नद्यः प्रतपन्ति वृक्षा,

जिहति भूर्भूमिधरा द्रवन्ति।

आशाः कृशाः शोकत्ववैरमेयै,

रुन्निद्रामेति महासमुद्रः।।

(कूहा, श्लोक सं० ६१)

नदियां रो रहीं हैं, वृक्ष सन्तप्त हो रहे हैं, पृथ्वी को लज्जा आ रही है। पर्वत पिघल रहे हैं, आशायें (दिशाऐं) क्षीण हो रही हैं तथा अपरिमित शोक प्रखण्डों से महासमुद्र उन्निद्र हो उठे हैं।

इस प्रकार कवि ने प्रकृति के दोनों ही रूपों को सजीवता से प्रस्तुत किया है।

समीक्षा -

इस प्रकार कूहा काव्य के आद्योपान्त अध्ययन से इस काव्य की उत्कृष्टता के विषय में कोई संशय नहीं रह जाता है। कवि ने अपनी लेखनी से इस काव्य की गुणवत्ता को और भी बढ़ा दिया है। जहां एक ओर इस काव्य में हिमालय की सुन्दरता को सजीव रूप में चित्रित किया गया है। वहीं दूसरी ओर इन्दिरा जी के जीवन, गुण, उनके द्वारा देश के लिये किये कार्य, उनकी निष्ठा, देशभक्ति एंव कर्मठता का परिचय मिलता है। इस काव्य के सर्वांगीण अध्ययन से हमें पता चलता है कि किस प्रकार उनके रक्षक ही उनके भक्षक बन गये और हमारे देश से एक महानतम विभूति विलुप्त हो गई।

काव्य में हिमालय की शोभा के वर्णन के अनन्तर कवि के द्वारा, राजीव गांधी के द्वारा अपनी माता की चिता भस्म बिखेरकर एवं वायुयान बैठकर समस्त बीते हुये क्षणों को याद करना आदि वर्णित है। किस प्रकार इन्दिरा जी की मृत्यु रूपी शोक को राजीव गांधी रोक न सके और संवेग से रोके जाने पर भी असंख्य स्मृतियों से समुदभूत अकथनीय शोक द्वारा संभाला गया आंसू उनके कपोल पर लुढ़क गया।

"Welled up by countless memories and handed down by intercribable sorrow, who flow get checked in his cheeks, a large tear drop flowed down his cheek."

इन्दिरा की प्रशंसा करते हुये कवि ठीक ही कहता है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी कमला नेहरू के गरिमामय यश की त्रिवेणी थीं। उनके गुणों की प्रशंसा में कवि यह अवधारणा सर्वथा तथ्यपूर्ण है कि अपने बाल्यकाल से ही वह उज्जवल संस्कारों की खान थीं।

केवल भारतवर्ष ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार इन्दिरा जी का आदर करता है लोग कहते हैं -

इन्होंने (अर्थात कानों ने) इनकी मधुर कीर्ति पहले सुनी और इन्होनें (अर्थात आंखों ने) बाद में उन्हें देखा है - यह कहकर सम्पूर्ण संसार अपने कानों की पहले और आंखों की बाद में प्रशंसा करता। उनके हृदय की क्षमा, आंखों की दूरदृष्टि, दोनों हाथों की क्रिया एवं पराक्रम की शोभा, दोनों चरणों की गति तथा क्रियाविधि में दृढ़ता संसार में प्रसिद्ध है -

एक महान भारतीय नारी के उत्कृष्टतम गुणों का वर्णन करते हुये कवि कहता है कि वह हमेशा ही लोगों के अन्दर आत्मविश्वास देखना चाहतीं थीं। वह लोगों को पग से पग मिलाकर चलते हुये देखना चाहतीं थीं।

परन्तु काल को कुछ और ही मंजूर था और अपने ही रक्षकों के हाथों ये विश्वासघात को प्राप्त हुयीं ये मृत्यु की गोद में समा गयीं। इनकी मृत्यु का समाचार सुनकर लोग अवसन्न रह गये।

समासतः 'कूहा' चरितात्मक शतककाव्य का श्रेष्ठ निंदर्शन है, जिसमें स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रभावी व्यक्तित्व की सुन्दर सरस अभिव्यक्ति हुयी है।

नवम अध्याय

इन्दिरा गाँधी पर आधृत अन्य प्रकीर्ण काव्यों का साहित्यिक अनुशीलन

नवम अध्याय
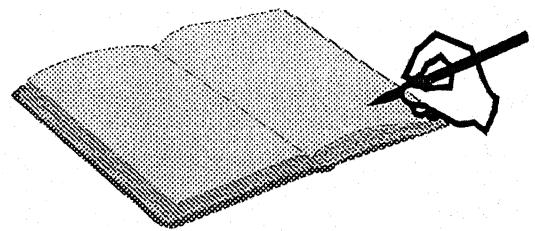
"इन्दिरा गांधी पर आधृत अन्य प्रकीर्ण काव्यों का साहित्यिक अनुशीलन"

"इन्दिरागान्धीचरितामृतम्"

विष्णुदत्त शर्मा का जीवन-परिचय -

विष्णुदत्त शर्मा का जन्म ५ जून १९३६ को मेरठ (उ०प्र०) में हुआ था। बचपन से ही विष्णुदत्त शर्मा प्रखर बुद्धि के थे। इन्होंने आचार्य, व्याकरण, साहित्य, दर्शन, ज्योतिष तथा एम.ए. की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। इनके गुरु ब्रह्मानन्द शुक्ल थे। ज्ञान ही मानव जीवन का परम उद्देश्य होना चाहिये। यह इनकी सारगर्भित प्रतिज्ञा थी। ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। विष्णुदत्त शर्मा ने भी अपने जीवन में ज्ञान को सर्वाधिक महत्व दिया। विष्णुदत्त शर्मा प्राध्यापक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष नानकचंद एंगलो संस्कृत स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेरठ (उ०प्र०) में रह चुके हैं।

व्यक्तित्व -

मानव के व्यक्तित्व की सम्पूर्ण शारीरिक विशेषताओं एवं कार्य करने की प्रणाली ही उसके व्यक्तित्व की द्योतक होती है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत जिनकी परिगणना होती है, उनमें प्रेरणायें, प्रवृतियां, अनुभवजन्य मानसिक दशायें, रुचि, दृष्टिकोंण विचार आदि प्रमुख हैं। यद्यपि व्यक्तित्व के पक्ष अनन्त हैं फिर भी तथ्यात्मक विभाजन में व्यक्तित्व तीन प्रकार का हो जाता है –

१. शारीरिक २. मानसिक ३. चारित्रिक

अगर मै विष्णुदत्त शर्मा के शारीरिक पक्ष की बात कहूं तो यह एक सुगठित शरीर के हष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे। इनकी मनःस्थिति अत्यन्त पवित्र विचारों से ओत-प्रोत थी और चरित्र बहुत ही उज्ज्वल था। इनके व्यक्तित्व का प्रत्येक पक्ष आकर्षक था। इन्होंने अपने मन में कभी भी क्षुद्रता एवं द्वेष को प्रवेश न करने दिया। यह साधारण जीवन बिताने में विश्वास रखते थे।

कृतित्व -

इनकी कृतियां इस प्रकार हैं –

१. इन्दिराविरुदम् -

इसमें इन्दिरा गांधी के गुणों एवं कार्यों की चर्चा की गयी है। कवि ने इस काव्य के माध्यम से इन्दिरा गांधी के व्यक्तित्व को और भी उज्जवल बनाने का प्रयास किया है। इसका प्रथम संस्करण १९८४ में विश्वनाथ प्रकाशन, ११० त्रिकुट थाना सदर (मेरठ) में प्रकाशित हुआ।

२. गुरुनानकदेवचरितम् -

इसमें गुरुनानकदेव का चरित वर्णित है। गुरुनानक देव के जीवन से सम्बन्धित अनेक कथाओं का वर्णन इसकी शोभा को और भी बढ़ा रहा है।

३. इन्दिरागांधीचरितामृतम् -

यह इन्दिरा गांधी चरित प्रधान काव्य है।

इन्दिरागांधीचरितामृतम् का वर्ण्य-विषय -

विष्णुदत्त शर्मा प्रणीत इन्दिरागांधीचरितामृतम् नामक काव्य में इन्दिरा जी का चरित वर्णित है। इस काव्य के माध्यम से कवि ने इन्दिरा जी के कार्यों एवं गुणों की प्रशंसा की है। व्यक्तिगत अनुभव, सगे सम्बन्धियों की संगति और जीवन की परिस्थितियां इन्दिरा के चरित्र-निर्माण के निर्णायक तत्व थे। इन्दिरा जी की उच्च सामाजिक स्थिति साधारण लोगों के सम्पर्क में आने से बाधक नहीं बनती थी। इन्दिरा जी सौन्दर्यशील शुचि आदि गुणों की लालिमा थीं। इसका वर्णन इस श्लोक के माध्यम से करते हुये कवि कहता है -

नारी समष्टि नमसीव नवेन्दु लेखा,
बाल्याल्जलाम नवयौवन शान्तिपूर्णा।
सौन्दर्यशील शुचितादि गुणै र्ललामा,
योग्या बभूव जनकादपि शोभना सा।।

(इन्दिरागांधीचरिमृतम्, श्लोक सं० १)

एक अन्य श्लोक के माध्यम से कवि कहता है -

तत्कालिकी त्वद्दिगताऽखिलराजविद्यां,
सैतादृशी खलु बभूव सुशोभमाना।
श्री शारदा स्वयमजस्य निवासगेहे,
नाशादनन्तरनवेऽत्र यथा विकासे।।

(इन्दिरागांधीचरितामृतम्, श्लोक सं० २)

इन्दिरा का स्वभाव क्रियाशील था, उनके लिये कोई भी छोटा पर व्यवहारिक कार्य सर्वकल्याण के बारे में निष्फल कल्पनाओं की अपेक्षा अधिक महत्व रखता था। उन्हें महज सुन्दर महिला नहीं कहा जा सकता था। वह उनकी विलक्षण आत्मीयता को अभिव्यक्त नहीं कर सकता था। उनकी सहज गरिमा उनके सौन्दर्य का लक्षण थी।

वह सदैव पिता के मार्ग पर चलीं, वह हमेशा सत्य बोलतीं थी। वह पिता के साथ युद्ध में स्वतन्त्रता के लिये लड़ी। इसी का वर्णन उक्त श्लोक के माध्यम से किया गया है –

पुत्राश्चरन्ति जनकस्य सदैव मार्ग,
सत्यं यदीह कथनं कथितं सुविज्ञैः।
तर्हीन्दरापि दलनाय कुशासनार्ति,
पित्रा सहामिलदहो शुभमुक्तियुद्धे।।

(इन्दिरागांधीचरितामृतम्, श्लोक सं० ३)

इस प्रकार जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोष का भारतवर्ष में जो स्थान है। वही स्थान इन्दिरा गांधी का भी है।

बापू जवाहरसुभाष महोजनानां,
महोजनानां यत्स्थानमस्ति खलु भारतवर्षदेशे।
स्थानं तदैव ललनेन्दिरयापि नूनं,
हस्तं गतं कृतहोऽपि तदुत्तरं वा।।

(इन्दिरागांधीचरितामृतम्, श्लोक सं० ५)

भाषा-शैली -

इस काव्य की भाषा प्रवाहमयी है। कवि ने सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण पद्यों के माध्यम से इन्दिरा गांधी जी के चरित में उत्कृष्टता ला दी है। इसकी भाषा प्रसादगुण युक्त, माधुर्यगुण युक्त एवं ओजगुण युक्त है।

प्रसादगुण– उदाहरण –

देवीन्दिरैव नहि पूज्यफिरोजगान्धी,
देव्या मनोज्ञमृदुजीवनवल्जुमोऽपि।
स्वातन्त्र्ययुद्धमथजत् मनसा धनैश्च,
देहेन चाखिलंललाम सुखैश्च भावैः।।

माधुर्यगुण - उदाहरण -

बापू जवाहरसुभाष महोजनानां,
यत्स्थानमस्ति खलु भारतवर्षदिशे।
स्थानं तदैव ललनेन्दिरयापि नूनं,
हस्तं गतं कृतहोऽपि तदुन्तरं वा।।

ओजगुण- उदाहरण -

नारी समष्टि नभसीव नवेन्दुलेखा,
बाल्याल्जलाम नवयौवनशान्तिपूर्णा।
सौन्दर्यशील शुचितादिगुणै र्ललामा,
योग्या बभूव जनकादपि शोभना सा।।

छन्द -

इस काव्य में वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग हुआ है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है-

वसन्ततिलका छन्द - उदाहरण-

तत्कालिकी त्वद्दिगताऽखिलराजविद्यां,
सैतादृशी खलु बभूव सुशोभमाना।
श्री शारदा स्वयमजस्य निवासगेहे,
नाशादान्तरनवेऽत्र यथा विकासे।।

अलंकार -

प्रस्तुत काव्य में उपमा एवं उत्प्रेक्षा अलंकार की छटा बिखरी हुयी है।

उपमा अलंकार - उदाहरण -

नारी समष्टि नमसीव नवेन्दु लेखा,
बाल्याल्जलाम नवयौवन शान्तिपूर्णा।
सौन्दर्यशील शुचितादि गुणै ललिमा,
योग्या बभूव जनकादपि शोभना सा।।

रसनिष्पत्ति -

इसमें वीररस का चित्रण किया गया है। अन्य रसों को भी कवि

ने इन्दिरागांधी चरितामृतम् में स्थान दिया है।

नारी समष्टि नमसीव नवेन्दु लेखा,
बाल्याल्जलाम नवयौवन शान्तिपूर्णा।
सौन्दर्यशील शुचितादि गुणै ललिमा,
योग्या बभूव जनकादपि शोभना सा।।

समीक्षा -

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि यह काव्य इन्दिरा गांधी के उत्कृष्ट गुणों को दर्शाता है। इस काव्य के माध्यम से कवि ने इन्दिरा गांधी के शोभाधायक गुणों को दर्शाया है। यह काव्य विष्णुदत्त शर्मा की प्रतिभा का परिचायक है। उन्होंने जिस प्रकार इस काव्य का सृजन किया है। वह इसको पढ़ने से ही पता चलता है।

शुद्धता प्रस्तुत कृति प्रवाहमयी भाषाकी प्रासादिकता, सरलता, प्राञ्जलता की दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कृति में काव्य सौष्ठव प्रत्येक पद्य में परिलक्षित होता है। जिसकी छन्दोऽलंकार योजना और सरनिष्पत्ति सहृदयहृदयपरक है। अतः विष्णुदत्त शर्मा की विवेच्य कृति का संस्कृत शतककाव्य में महत्वपूर्ण स्थान की सचमुच अधिकारिणी है।

"धातस्त्वया किं कृतम्"

उमाकान्त झां का जीवन-परिचय -

उमाकान्त झां संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि रत्न है। इनके जीवन पर दृष्टि डालते हुये हम सर्वप्रथम इनके शैशवकाल की ओर चलते हैं। ये बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्ति हैं। इनका लालन पालन उचित देखरेख में हुआ। उमाकान्त झां का जीवन अत्यन्त सुखमय बीता। इन्होंने बचपन में कठोर परिश्रम एवं लगन से अपने परिवार के लोगों का नाम ऊंचा किया। यह मेधावी छात्र थे। इन्होंने संस्कृत साहित्य का विशिष्ट रूप से अध्ययन किया एवं उसमें ख्याति प्राप्त की।

व्यक्तित्व -

इनका व्यक्तित्व बड़ा ही सरल एवं वाणी में मधुरता है। इनके मुखमण्डल का तेज इतना तीव्र है कि कोई भी व्यक्ति इनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहता। इनमें ईर्ष्या-द्वेष की लेशमात्र भी भावना नहीं है। उमाकान्त झां स्वभाव से बड़े विनम्र एवं सज्जन हैं।

कृतित्व -

इनके अनेक लेख प्रकाशित हुये हैं एवं इन्होंने कृतियां भी लिखी हैं। इनके द्वारा रचित धातस्त्वया किं कृतम् एक उत्कृष्टतम लेख है। इसमें इन्दिरा जी के महत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन किया गया है। इनकी लेखन शैली अद्भुत है। उमाकान्त झां में विद्वता के समस्त गुण परिलक्षित होते हैं। अतः इनके कृतियों के माध्यम से हमें इनकी दूरदर्शिता के दर्शन होते हैं। धातस्त्वया किं कृतम् अर्वचीन संस्कृतम् के माध्यम से १५ नवम्बर १९८५ में प्रकाशित किया गया था।

"धातस्त्वया किं कृतम्" का वर्ण्य-विषय -

प्रस्तुत लेख डॉ० उमाकान्त झा द्वारा लिखित है। इसमें उमाकान्त झा जी ने इन्दिरा गांधी के सामाजिक, राजनैतिक, रचनात्मक कार्यों का वर्णन करते हुये उनके गुणों की प्रशंसा की है। प्रस्तुत लेख अर्वाचीन संस्कृतम् के प्रथम अंक १५ नवम्बर १९८५ में प्रकाशित किया गया था। इन्दिरा गांधी की प्रशंसा करते हुये कवि कहता है कि मोतीलाल की पौत्री विविध गुणों से युक्त थी। राष्ट्र एवं जनहित के लिये सदा समर्पण भाव रखती थी। जो लोक की सिद्धि एवं भारतभूमि के चिन्तन में रत रहती थी। वह राष्ट्र की माता अपने बच्चों से विमुख होकर कहां चली गयी।[१]

कवि के हृदय मानों दुख आसुओं के रूप में उमड़ पड़ा है। उनकी मृत्यु से कवि ही नही अपितु समस्त संसार दुख के गहरे सागर में डूब गया। जिसने अपने जीवन भारत भूमि की सेवा में न्यौछावर कर दिया। उसी भारतवर्ष मेंउसे मृत्यु मिली। मानव जीवन में काई भी समस्या हो सभी समस्याओं के समाधानार्थ इन्होंने कार्य किये-

आसाम जो कि परम क्लेशपूर्ण जटिल समस्यासे युक्त था, पंजाब में क्रांति फैली हुयी थी। कश्मीर में भी निरन्तर जटिल एंव विशाल समस्यायें उत्पन्न हो रहीं थीं। आश्चर्य है इन्होने प्रतिदिन इन समस्याओं से निपटने के लिये प्रयत्न किया।[२]

---

१. *मौतीलालस्य पौत्री विविध गुणवती मुख्यनेत्री विधात्री।*
राष्ट्रस्यार्थं सदा या जनहितकरणे त्यक्तप्राणा प्रधाना।
याऽसील्लोकार्थसिद्धये भरतभुविरताचिन्तोदक्षा।
सा राष्ट्रस्यासस्य माता शिशुपनविमुखी गताकुत्र चाद्य।।
(धातस्त्वया किं कृतम्, श्लोक सं० १)

२. *आसामे या परमजटिला क्लेशपूर्ण समस्या,*
पंचावे या त्वजनि सहसा क्रान्दिदेका विशेषा।
काश्मीरे या सततजटिलाऽसीत समस्या विशाला
तामुद्रर्तुं प्रतिदिनमहो या यतन्ती सदाऽसीत्।।
(धातस्त्वया किं कृतम्, श्लोक सं० २)

इन्दिरा गांधी की मृत्यु से दिशायें शून्य हो गयीं। कवि कहता है कि वह सकल जगत की नेत्री सहृदया न जाने कहां लुप्त हो गयी।[1]

भारतवर्ष मानों इन्दिरा गांधी की मृत्यु से इतना क्षुब्ध हो गया कि बच्चे, वृद्ध, युवक समस्त जनमानस इन्दिरा जी की मृत्यु पर आंसू बहा रहा था। कवि इन सबका वर्णन करते हुये इस प्रकार कहता है।

संसार में हाहाकार मचा था लोगों के हृदय में करुणा एवं नेत्रों में आंसू व्याप्त थे। समस्त शिशु, युवक, प्रौढ़, वृद्ध, नारी सभी चिन्ता में डूबे थे। किस प्रकार दुष्टों ने देश की माता को कैसे मारा इस प्रकार समस्त विश्व में करुणा व्याप्त थी।[2]

इन्दिरा गांधी जिस प्रकार भारतवर्ष के लोगों के लिये स्नेहभाव रखती थीं। वैसे ही भारतवर्ष के लोग उनसे अत्यधिक प्रेमभाव रखते थे। लेकिन जब इन्दिरा जी की मृत्यु विषयक समाचार उनके कानों पड़ा तो मानों उनकी पीड़ा और बढ़ गयी और वह दुख के गहरे सागर में डूब गये। जिस मां ने उनके लिये इतना कुछ किया। वह ही उनसे बिछुड़ कर दूर चली गयी और कभी न लौटने के लिये। इन्दिरा जी ने देश को उन्नति के उस शिखर पर पहुंचाया जहां पर उन्हें वो सब कुछ प्राप्त हुआ जिसकी उन्हें चाह थी। मानव जीवन का पथ-पथ पर साथ देने वली वह पथप्रदर्शिका न जाने कहां विलुप्त हो गयी।

---

१. *हतश्री संजाता कुटिलविधि योगेन वसुधा,*
दिशा शून्या जाता दिवि समभवद्ध्वान्तपटलम्।
न जाने कुत्रास्ते सकलजननेत्री सहृदया,
हतेयं दुर्दुष्टेर्भरतेभुवि मुख्याद्य सहसा।।
(धातस्त्वया किं कृतम्, श्लोक सं० ३)

२. *लोका हा हा रुदन्त करुणरसभराः अश्रुपूर्णाश्चखिन्नाः,*
दृश्यन्ते व्यग्रचित्ताः शिशुयुवकजनाः प्रौढ़वृद्धाश्चनार्यः।
किं जातं कैश्च दुष्टेरियमतिसरलाः हाहता देशमाता,
चेत्थं कारुण्यपूर्ण जनरवजनितं व्याकुलं विश्वमेतत्।।
(धातस्त्वया किं कृतम्, श्लोक सं० ४)

इन्दिरा गांधी निरन्तर भारतीयों के लिये चिन्तन शील रहती थीं। नित्य नये नये विधान बनाती थीं जिससे भारतवर्ष उन्नतिशील बन सके। भारतवर्ष के हित में रत रहते हुये उन्होने जो कुछ भी भारतवर्ष के लिये किया। वह श्लाघनीय है। कवि उनकी प्रशंसा करते हुये कहता है

जो नित्य जनचिन्तन में दृढ़ता से रत रहती थीं जो स्वार्थ को छोड़कर हर्ष पूर्वक सेवा में लगी थीं वह आज देश की धात्री कहां चली गयी। वह भगवती इस लोक को छोड़कर चली गयी।[1]

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश को धन-धान्य से पूर्ण बनाने के अनेक प्रयत्न किये। उनके शासनकाल में देश ने प्रगति भी की। उनकी कीर्ति समस्त विश्व में फैली हुयी थी। कवि कहता है कि-

समस्त राष्ट्र की परिचालक, विश्व में अत्यन्त विचारशील प्रधानमंत्री के पद को त्यागकर वह राष्ट्रमाता कहां चली गयी।[2]

इन्दिरा जी को वैभव की प्राप्ति पर तनिक भी गर्व न था। साम्राज्य शक्तिशाली होने पर भी उन्हें दम्भ न था। वह सदैव लोकहित में लगी रहती थीं। इन्दिरा गांधी ने अपना जीवन भारतवर्ष के लिये समर्पित कर दिया था। इस प्रकार लोकहित में रत रहते हुये वह मृत्यु की शरण में चली गयीं।[3]

---

१. *या नित्य जनहिते दृढ़रता नेत्रीन्दिरा पूजिता,*
या स्वार्थ सततं विहाय बहुशः सेवामकीर्षीन्मुदा।
हा हा हन्त गता क्व चाद्य देशस्य धात्री परा,
हा हा चाद्य गता हि सा भगवती सन्त्यज्य लोकम् ध्रुवम्।।
(श्लोक सं० ६)

२. *समस्त राष्ट्रं परिचालयन्ती,*
विश्वस्यमध्ये अतिविचार शीला।
त्यक्त्वा गता साक्व प्रधानमन्त्री,
हा हा हतेयं खलु राष्ट्रमाता।।
(श्लोक सं० ८)

३. *प्राप्तयापि वैभवपदं न चकार गर्वम्,*
साम्राज्य शक्तिवलितापि न दम्भागात्।
सज्जा सदैव खलु लोकहिताय याऽसीत्,
श्रद्धांजलीनुपहरामि शमाय तस्याः।।
(श्लोक सं० १०)

भाषा-शैली -

उमाकान्त झा की भाषा विषयानुसारिणी है। उनकी शैली में भाषा और भाव का अद्‌भुत सामंजस्य है। इनकी विशद् वर्णन शक्ति अद्‌भुत है। ये प्रवाहयुक्त शोभा के साथ भी वर्णन कर सकते है और मार्मिक वेग के साथ भी। इनकी भाषा प्रसादगुण, माधुर्य एवं ओजगुण युक्त है। इनके निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

प्रसादगुण - उदाहरण -

समस्त राष्ट्रं परिचालयन्ती,
विश्वस्यमध्ये अतिविचार शीला।
त्यक्त्वा गता साक्व प्रधानमन्त्री,
हा हा हतेयं खलु राष्ट्रमाता।।

(श्लोक सं० ८)

माधुर्यगुण - उदाहरण -

विश्वऽस्मिन् या प्रचुरधरं भावपूर्ण मनोज्ञं,
सन्तेनेऽसौ जनहितकृते मोदपूर्ण विचारम्।
कीर्तिर्यस्या रुचिरधावला भासते विश्वलोके,
धन्या पूज्या सकलमनुजैन्दिरा हा हताया।।

(श्लोक सं० ७)

ओज गुण - उदाहरण -

आसामे या परमजटिला क्लेशपूर्ण समस्या,
पंञ्चांबे या त्वजनि सहसा क्रान्तिरेका विशेषा।
काश्मीरे या सततजटिलाऽसीत समस्या विशाला
तामुद्दर्तु प्रतिदिनमहो या यतन्ती सदाऽसीत्।।

(धातस्त्वया किं कृतम्, श्लोक सं० २)

छन्द -

इसमें क्रमशः स्रग्धरा, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडितम्, इन्द्रवज्रा तथा वसन्ततिलका छन्द हैं। इनके लक्षण तथा उदाहरण इस प्रकार हैं-

स्रग्धरा छन्द -

भ्रसैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण हों और तीन पद सात-सात अक्षरों पर विश्राम हों। उस छन्द को स्रग्धरा छन्द कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।

उदाहरण -

लोका हा हा रुदन्त करुणरसभराः अश्रुपूर्णाश्चखिन्नाः,
दृश्यन्ते व्यग्रचित्ताः शिशुयुवकजनाः प्रौढ़वृद्धाश्चनार्यः।
किं जातं कैश्च दुष्टेरियमतिसरलाः हा हता देशमाता,
चेत्थं कारुण्यपूर्ण जनरवजनितं व्याकुलं विश्वमेतत्।।

शिखरिणी छन्द - लक्षण -

"रसै रूद्रैश्छिन्ना यमन सभला गः शिखरिणी"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, भगण, नगण, सगण, रगण तथा अन्त में क्रमशः एक लघु और एक गुरू होता है और ६ तथा ११ वर्णों पर यति होता है, उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होते हैं।

उदाहरण -

हतश्री संजाता कुटिलविधि योगेन वसुधा,
दिशा शून्या जाता दिवि समभवद्धवान्तपटलम्।
न जाने कुत्रास्ते सकलजननेत्री सहृदया,
हतेयं दुर्दुष्टेर्भरतेभुवि मुख्याद्य सहसा।।

शार्दूलविक्रीडित छन्द - लक्षण -

"सूर्यावैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यें क्रमशः भगण, सगण, जगण, सगण और दो तगण तथा अन्त में एक गुरु हो तथा १२ तथा ७ अक्षरों पर विश्राम हो, उस छन्द को शार्दूलविक्रीडित कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में १९ अक्षर होते हैं।

उदाहरण -

नूनं ते करुणनैव नास्ति हृदये नो वा क्षमा दृश्यते,

सौजन्यस्य च का कथापि भवतः स्नेहस्य लेशो नते।

मन्ये त्वत्सविधे न कापि गणना धीरस्य वीरस्य वा,

येनेत्थं सहसेन्दिराद्य धातस्त्वया किं कृतम्।।

इन्द्रवज्रा छन्द - लक्षण -

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो तगण, एक जगण और दो गुरू होते हैं, वह इन्द्रवज्रा कहलाता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण -

समस्त राष्ट्रं परिचालयन्ती,

विश्वस्यमध्ये अतिविचार शीला।

त्यक्त्वा गता साक्च प्रधानमन्त्री,

हा हा हतेयं खलु राष्ट्रमाता।।

वसन्ततिलका छन्द - लक्षण -

"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौगः"

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण, और अन्त में दो गुरू वर्ण हों, उसे वसन्ततिलका छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में १४ अक्षर होते हैं।

उदाहरण -

प्राप्तयापि वैभवपदं न चकार गर्वम्,

साम्राज्य शक्तिवलितापि न दम्भागात्।

सज्जा सदैव खलु लोकहिताय याऽसीत्,

श्रद्धांजलीनुपहरामि शमाय तस्याः।।

रसनिष्पत्ति -

इसमें वीर एवं करुण रस का चित्रण किया गया है। इनके निम्नलिखित उदाहरण देखिये-

वीररस- उदाहरण -

आसामे या परमजटिला क्लेशपूर्ण समस्या,
पंञ्चाबे या त्वजनि सहसा क्रान्दिदेका विशेषा।
काश्मीरे या सततजटिलाऽसीत समस्या विशाला
तामुद्रर्तुप्रतिदिनमहो या यतन्ती सदाऽसीत्।।

करुण रस - उदाहरण -

लोका हा हा रुदन्त करुणरसभराः अश्रुपूर्णाश्चखिन्नाः,
दृश्यन्ते व्यग्रचित्ताः शिशुयुवकजनाः प्रौढ़वृद्धाश्चनार्यः।
किं जातं कैश्च दुष्टेरियमतिसरलाः हाहता देशमाता,
चेत्थं कारुण्यपूर्ण जनरवजनितं व्याकुलं विश्वमेतत्।।

समीक्षा -

प्रस्तुत लेख इन्दिरा जी के कार्यों का द्योतक है। इसके माध्यम से कवि इन्दिरा गांधी के व्यक्तित्व के विषय में प्रकाश डाल रहा है। इन्दिरा गांधी किस प्रकार भारत की समस्त समस्यायों का कुशलता से निवारण किया। भारतवर्ष की उन्नति के लिये उन्होने हर सम्भव प्रयास किया। इन्दिरा जी एक कर्मनिष्ठ महिला थीं। चाहें कितनी ही बड़ी विपत्ति क्यों न हो। वह बड़े ही धैर्य के साथ उस पर विचार करके उसे निपटाती थीं। वह स्वार्थ का परित्याग कर जनचिन्तन में लगी रहती थीं। कवि कहता है कि इन्दिरा गांधी की मृत्यु विषयक, समाचार को सुनकर समस्त भारतवर्ष में अशान्ति छा गई। लोग हाहाकार करने लगे। बच्चे, युवक और वृद्ध सभी लोग का हृदय करूणापूर्ण हो गया और सभी अपनी माता (श्रीमती इन्दिरा गांधी) की मृत्यु रूपी समाचार को सुनकर रो पड़े।

इस प्रकार हम कह सकते है कि एक तरफ यह लेख कर्मनिष्ठ इन्दिरागांधी के वीरता पूर्ण कार्यों को दर्शा रहा है तो दूसरी ओर इसमें लोग करुण-क्रन्दन भी वर्णित है।

"हन्तेन्दिरार्या सहसा प्रयाता"

हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का जीवन-परिचय -

संस्कृत साहित्य के विद्वान, डॉ० रेणापुरकर का जन्म १७ सितम्बर १९२४ को रेणापुर (लाटूर) में हुआ था। बचपन में ही इन्हें अध्ययन के प्रति विशेष रूचि थी और इसी रूचि ने आगे चलकर लेखन कार्य का रूप ले लिया। बचपन ही रेणापुरकर में विद्वतापूर्ण कार्य करने की क्षमता थ्ज्ञी। आपने शासकी महाविद्यालय, गुलवर्गा (कर्नाटक) में प्राचार्य के पद को सुशोभित किया। जहां पर इन्हें यथोच्चित आदर और सम्मान मिला। आपका निवास वसन्तराव पाटिल, मोहनलाल, समीप गुलवर्गा (कर्नाटक) में है। व्यक्तित्व रेणापुरकर जी का व्यक्तित्व बहुत ही भव्य था।

आप बड़े ही साधारण तरीके से जीवन व्यतीत करते थे। तृष्णा आदि का तो इनमें तनिक भी समावेश नहीं था। अहंकार तो इन्हें छू तक न पाया। हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के विशाल व्यक्तित्व को देखकर लोग उनसे प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकते थे। लोगों को यथोचित आदर सत्कार देना रेणापुरकर जी अपना पर कर्तव्य समझते थे। यह उनकी विशेषता थी। लेखन कार्य में रूचि रखनेवाले रेणापुरकर जी के प्रत्येक लेख़ में एक नयापन देखने को मिलता है। लोग स्वतः ही इसे पढ़कर भावुक हो जाते हैं। छोट-छोटे पद्यों के माध्यम से एक नया दिशा निर्देशन इनकी विशेषता थी। इनके द्वारा लिखे गये लेख मानव जीवन के प्रेरणास्रोत हैं।

कृतित्व -

इन्होंने अनेक लेख लिखे हैं जिनमें से 'हन्तेरिन्दरार्या सहसा प्रयाता' प्रमुख हैं। यह लेख इन्दिरा जी के धैर्य, अपूर्व साहस एवं उनके क्रियाकलापों का बड़ी उत्कृष्टता के साथ कवि ने वर्णन किया है।

'हन्तेरिन्दरार्या सहसा प्रयाता' वर्ण्य-विषय -

प्रस्तुत लेख इन्दिरा गांधी के अकस्मात निधन पर हरिश्चन्द्र रेणापुरकर द्वारा लिखा गया है। इन्दिरा गांधी की मृत्यु के समाचार कोश सुनकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में निस्तब्धता छा गई थी। देश की रक्षा करने वाली श्रीमती इन्दिरा गांधी के निज रक्षक ही उनके भक्षक बन गये। इन्दिरा गांधी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुये कवि का हृदय करूणा से भर जाता है। और वह इन्दिरा जी के अपूर्वसाहस पर प्रकाश डालते हुये कहता है कि -

वह अपूर्व धैर्य, अद्भुत शौर्य, साहस एवं पराक्रम की मूर्ति, निर्भीक एवं मनस्विनी संहसा ही विलुप्त हो गयीं।

"अपूर्व धैर्यद्भुतशौर्यमूर्तिरदम्यदुदीन्त पराक्मोर्मिः।
निःशके निर्भीकमनस्विनी हा हन्तेन्दिरा सहसा विलुप्ता।।"

जब समस्त देश भयावह स्थिति से जूझ रहा था। चारों ओर हाहाकार का वातावरण फैला था। अमेरिका पाकिस्तान को भयंकर अस्त्र दे रहा था जिससे पाकिस्तान और उत्पात मचाये था। इन्दिरा जी ने इस विकट परिस्थिति का बड़े साहस पूर्वक सामना किया। वह इस विकट स्थिति को देखकर तनिक भी विचलित नहीं हुयीं बल्कि ये उनके साहस और धैर्य का ही परिणाम था कि उन्होंने लोगों को एक सूत्र में बांधकर बंगाल को मुक्त कराया।

दरिद्र एवं बेरोजगार लोगों को उद्योग धन्धे उपलब्ध कराये। किसानों को कृषिके लिये विविध संसाधनों को जुटाया एवं भारतवर्ष में लोगों की समस्याओं का निवारण करने के लिये भरसक प्रयत्न किये।

उनकी कार्य करने की शक्ति विचित्र थी। कवि उनकी आश्चर्यचकित कर देने वाली शक्ति को अपने शब्दों मे व्यक्त करते हुये कहता है। कि अद्भुत बंगाल की मुक्ति के लिये युद्ध को देखकर एवं उनके अद्भुत शौर्य एवं धैर्य को देखकर समस्त संसार आश्चर्यचकित हो गया। -

"अत्यद्भुते बंगविमुक्तियुद्धे दृष्ट्वा यदीयाद्भुतशौर्यधैर्यम्।
समस्तविश्वं चकितं बभूव दुर्गेन्दिरा सां सहसा जगाम्।।"

इन्दिरा गांधी तीव्र एवं अलौकिक बुद्धि वाली महिला थीं। उन्होंने समस्त भारतवर्ष को ही नहीं अपितु समस्त संसार को अपने अलौकिक बुद्धि-वैभव से

चमत्कृत कर दिया। वह प्रत्येक कार्य को बहुत ही सोच-समझकर एवं सुरुचिपूर्ण तरीके से किया करती थीं। उनकी प्रशंसा करते हुये कवि कहता है कि वह उत्साह, यन्त्र और प्रभुशक्ति से परिपूर्ण चाणक्य नीति के समान कुशल थीं। भारतवर्ष के लिये सम्पूर्ण भाव रखने वाली वह इन्दिरा सहसा ही विलुप्त हो गयीं।

"उत्साहमन्त्र प्रभुशक्तिपूर्णा चाणक्यनीत्यां कुशला नयाजा।
समर्पिता भारतगौरवाय वर्चस्विनी हा सहसा विलुप्त।।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक वह लोगों की सहायता में लगीं रहीं। कवि कहता है कि दधीचि, गांधी, बुद्ध की भूमि पर ऐसे निष्ठुर कर्म भारतीय सभ्यता के लज्जास्पद था और जिससे भारतीय संस्कृति कलंकित हुयी। गोलियों के प्रहार से न केवल इन्दिरा गांधी के प्राणों का अन्त हुआ बल्कि भारतवर्ष में विपत्तियां और भी बढ़ गयीं भारतवर्ष को एक उज्ज्वल भविष्य प्रदान करने वाली इन्दिरा सहसा विलुप्त हो गयीं।

भाषा-शैली -

भाषा सरल, सरस तथा भावपूर्ण है। कवि की लेखनी से निकले हुये शब्द पाठक के मन में दुख उत्पन्न कर देते हैं। और पाठक इसे पढ़कर दुःख के अनन्त सागर में डूब जाता है। इसकी भाषा ओजगुण, माधुर्यगुण युक्त है। ओजगुण का उदाहरण इस प्रकार है-

अपूर्व धैर्यद्भुतशौर्यमूर्तिरदम्युदुदीन्त पराक्रमोर्मिः।
निःशके निर्भीकमनस्विनी हा हन्तेन्दिरा सहसा विलुप्ता।।

माधुर्यगुण - उदाहरण -

अत्यद्भुते बंगविमुक्तियुद्धे दृष्ट्वा यदीयाद्भुतशौर्यधैर्यम्।
समस्तविश्वं चकितं बभूव दुर्गेन्दिरा सां सहसा जगाम्।।

छन्दोलंकार योजना -

इसमें अधिकांशतयः उपजाति छन्द प्रयुक्त हुआ है। इसका लक्षण एवं उदाहरण इस प्रकार है।

लक्षण -

अनन्तरोदीरितलक्ष्य भाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्दिमेव नाम।।

उदाहरण -

अत्यद्भुते बंगविमुक्तियुद्धे,

दृष्ट्वा यदीयाद्भुतशौर्यधैर्यम्।

समस्तविश्वं चकितं बभूवं,

दुर्गेन्दिरा सां सहसा जगाम्।।

यहां इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के दो-दो चरण हैं अतः यहां उपजाति छन्द हैं। इसके प्रत्येक चरण में ११ अंक्षर है।

अलंकारों में अनुप्रास अलंकार की छटा देखने को मिलती है। इसका उदाहरण इस प्रकार है-

अपूर्व धैर्यद्भुतशौर्यमूर्तिरदम्यदुदीन्त पराक्रमोर्मिः।

निःशके निर्भीकमनस्विनी हा हन्तेन्दिरा सहसा प्रयाता।।

इसमें द् त् न् आदि व्यंजनों की पुनरावृत्ति हुयी है। अतः इसमें अनुप्रास अलंकार है।

रसनिष्पत्ति -

इसमें करुण एवं वीररस का चित्रण यथास्थान देखने को मिलता है।

वीररस - उदाहरण -

अत्यद्भुते बंगविमुक्तियुद्धे,

दृष्ट्वा यदीयाद्भुतशौर्यधैर्यम्।

समस्तविश्वं चकितं बभूवं,

दुर्गेन्दिरा सां सहसा जगाम्।।

करुण रस - उदाहरण -

उत्साहमन्त्र प्रभुशक्तिपूर्णा

चाणक्यनीत्यां कुशला नयाजा।

समर्पिता भारतगौरवाय

वर्चस्विनी हा सहसा विलुप्ता।।

समीक्षा -

प्रस्तुत लेख में कवि इन्दिरा जी की अकस्मात मृत्यु पर शोक प्रकट कर रहा है। अत्यन्त अद्भुत कार्यों को करने वाली, साहस, धैर्य की प्रतिमूर्ति इन्दिरा गांधी की मृत्यु पर कवि का शोक परिलक्षित हो रहा है। इन्दिरा जी, जो कि भारतवर्ष की प्रेरणादायी मां थीं उनके सहसा विलुप्त हो जाने पर कवि कहता है कि देश के ही कुछ क्रूर लोग जो कि रक्षक थे। उनके भक्षक बन गये और उन्हें मार डाला।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत लेख इन्दिरा जी की मृत्यु का द्योतक है।

"इन्दिराकीर्तिः"

डॉ0 हर्षनाथ मिश्र -

डॉ० हर्षनाथ मिश्र एक उत्कृष्ट कोटि के संस्कृत साहित्यकार है। इनकी गणना संस्कृत के उद्‌भट विद्वानों में की जाती है। डॉ० हर्षनाथ मिश्र बचपन से ही विद्या अध्ययन को विशेष महत्व देते आये हैं। उनके लिये शिक्षा सर्वोपरि रही है। वह शिक्षा जगत को विशेष महत्व देते हैं। उनका जीवन का अधिकांश समय विद्योपार्जन में व्यतीत हुआ। ये शिक्षा के प्रति उनका आकर्षण ही था कि उन्होंने साहित्य जगत में अपना स्थान बनाया। इन्होने अपना जीवन संस्कृत की सेवा में लगा दिया। डॉ० हर्षनाथ मिश्र शास्त्रचूड़ामणि प्राध्यापक श्री लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ, नई दिल्ली में हैं।

व्यक्तित्व -

डॉ० हर्षनाथ मिश्र के व्यक्तित्व में समस्त विशेषताओं का समावेश है। इनका व्यक्तित्व बड़ा ही आदर्शमय है। उन्होने अपने जीवन में ईर्ष्या आदि का समावेश न होने दिया। आपका मस्तिष्क ओजपूर्ण है। कोई भी इनसे एक बार मिल ले तो वह इन्हें भूलता नहीं है। इनके जीवन के शारीरिक एवं चारित्रिक दोनों ही पक्ष प्रबल हैं। इनके व्यक्तित्व की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है।

कृतित्व -

डॉ० हर्षनाथ मिश्र ने संस्कृत साहित्यजगत को अपनी लेखनी से सुवासित किया है। इनके द्वारा लिखे गये लेख इनकी बौद्धिक क्षमता के परिचायक हैं। 'इन्दिराकीर्तिः' इन्दिरा जी के यश की परिचायक है। यह इनका उत्कृष्ट लेख है। इसमें इन्दिरा जी के यश का गुणगान किया गया है। इन्दिरा गांधी ने अपने गुणों से समस्त जगत को अपनी तरफ कर लिया था। जिससे इनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी।

इन्दिराकीर्तिः

वर्ण्य-विषय -

इन्दिराकीर्तिः डॉ० हर्षनाथ मिश्र द्वारा लिखित एक सुन्दर लेख है। कहा जाता है कि परमात्मा कुछ भव्यआत्माओं के प्रति अत्युदार होकर उन्हें गुणानुरागी संवेदनशील तथा सर्वातिशायी वैशिष्ट्यों से भर देता है। उन्हीं में एक श्रीमती इन्दिरा गांधी थीं। वे बाल्यकाल से ही देश सेवा के लिये आतुर थीं। जिसके कारण उनके पितामह माता-पिता आदि तो थे ही साथ ही उनके स्वयं के स्वाध्याय से मिली जॉन ऑफ अर्क की देशभक्तिपूर्ण जीवनी ने भी उन्हें स्वदेश के लिये सम्पूर्ण समर्पण की सुस्थिर प्रेरणा दी थी।

जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्रचिन्तन से ओत-प्रोत रहता हो, उनकी सभी क्रियायें कुछ न कुछ विशेषताओं के लिये ही रहती थीं। उनकी प्रशस्ति में डॉ० हर्षनाथ मिश्र द्वारा रचित पद्य इस प्रकार हैं-

न्यायान्यायविवेकपाटव-गुणात् त्वं राजहंस सदा,
नीरक्षीरविवेक-लब्धयशसं नीत्याऽजयः कर्मणा।
मन्त्रे दर्शितबुद्धिवैभवकलौ ख्यातौ नृपाणां नये,
जातौ गीष्पतिभार्गवावापि च तो कीर्त्या च ते निष्प्रभौ।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १)

देशोऽयं तव हस्तयोः सुदृढयोः संस्थाप्य सर्व हितं,
निश्चिन्तः परितोषमैदतितरां दृष्ट्वोन्नतिं सर्वतः।
खाद्य राष्ट्रमिदं स्वतन्त्रमभवद् व्यापार ऋद्धिं गतः,
विश्वेऽभूद् यदिदं समोदृतमहो सर्वफलं त्वत्कृतम्।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० २)

प्रतिष्ठा याऽवाप्ता निखिल-भुवने भारतमही,
कृषौ लब्ध्वा वृद्धिं विविधविधवाणिज्यकृतिषु।
भवन्ती स्वालम्बाऽशन-वसनवैज्ञानिक विधौ,
यशस्तेऽदः काव्यं विभलभ्रमरं स्थास्यति सदा।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ३)

दीनानां देश एषोऽसुखित-बहुजनाः शोषिता मुष्टिमेयै,
र्मा जीवन्तो लभन्ते द्विरपि बहुधा भोजनं नात्र देशे।
वस्त्रैर्हीनाश्च शीते भवनविरहिता शिक्षया चापि हीना,
इत्थं चिन्तातिदूना सदयहृदया कार्यकर्त्री जय त्वम्।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ४)

मन्य एतत् स्वराष्ट्रं स्वतन्त्रं कृतं नेतृभिस्त्यागपूतैः स्वदेशप्रियैः।
किन्तु दैन्यादिदं मुक्तिमातन्वती कार्यमेकाऽकरोरिन्दिरे त्वं रमा।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ५)

इन्दिरे मन्दिरे ते हि भक्तिर्यथा मस्जिदे भावना सा च दृष्टा तथा।
या रतिनिर्मला तेऽत्र गिर्जागृहे सा गुरुद्वारके यज्ञवह्नौ समा।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ६)

न धर्मो न भाषा न भित्तिर्न वर्णो न जातिर्न लिङ्गं न वा वेशभूषा।
न वा प्रान्तवर्गो विभुक्तं प्रभुर्या, जयेद्दिव्यधीरिन्दिरा राष्ट्रनेत्री।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ७)

बंङ्देशस्त्वया कौर्यतो मोचितो जीवितः श्रीमुजीबंस्त्वयारक्षितः।
धान्यतः सैन्यतः सर्वसाहाय्यतो बंङ्देशस्त्वयाऽसौ प्रजातन्त्रितः।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ८)

आनन्दसौख्यसदनं जनकप्रदतं दत्तंत्वया जनहिताय वदान्य मत्या।
येन त्वदीयममलं सुयशोधरित्रयां राकेन्दुकान्तिरिव मोहतमो निहन्ति।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ९)

बेंङ राष्ट्रियतां गता नियमिता ग्राम्या तथा नागरी,
सम्पच्चैव समाजवाद रचनामार्गे चलन्त्या त्वया।
राष्ट्रे विश्वजनीन-सौख्यमवितुं दुःखच सार्वत्रिकं,
दूरीकर्तुमिमे समस्तविधयः ख्याताः प्रशस्ताश्च ते।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १०)

विकासशील देशानां साहाय्यं सर्वतोमुखम्।
यत्कृतं तेन नेत्री त्वं सर्वैरेकस्वरैः कृता।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० ११)

निर्बलानां च देशानां निरीहस्य जनस्य च।
बान्धवस्त्वं च माता त्वं वत्सलाऽभवः।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १२)

सर्वसंहारकास्त्राणां यमद्रंष्ट्राबलीयसाम्।
परमाण्वादिकानां ते निरोधे याऽस्ति भूमिका।।
सा जगद्रक्षणोपाया सम्प्रत्यपि नमस्तत्ने।
शब्दायते जगन्नेत्रि स्वरैस्ते निजरैः सह।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १३)

दत्त्वा स्वजीवनमहोसकलं च राष्ट्रं त्रातं हितस्य शकलीकरणाभिचारात्।
राष्ट्रस्य खण्डनविमोचन सत्प्रयासे देवि त्वया निजवपुर्हवनं व्यधायि।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १४)

स्वल्पेन कालेन तवेन्दिरे सुतो यद् राष्ट्रकार्यं व्यदधात् स संञ्जयः।
तद् भूयसा किं समयेन कोऽपि कर्तुं प्रभुर्दुर्विधिनां हतो हा।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १५)

राजीवो जीवताद् भक्त्या राष्ट्रस्यैष न कर्मणा।
त्वत्समः सर्वथा मन्त्री प्रधानो देशनायकः।।

(इन्दिराकीर्तिः, श्लोक सं० १६)

भाषा-शैली -

इसमें कवि ने भाव के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। इनकी भाषा मनोहारी है। इनके लेख में प्रसादगुण, माधुर्यगुण एवं ओजगुण सर्वत्र विद्यमान हैं एवं वैदर्भी के भी दर्शन होते हैं। इन्होंने भाषा को अपने रचना कौशल से उत्कृष्ट रूप प्रदान किया है।

प्रसादगुण- उदाहरण -

प्रतिष्ठा याऽवाप्ता निखिल-भुवने भारतमही,
कृषौ लब्ध्वा वृद्धिं विविधविधवाणिज्यकृतिषु।
भवन्ती स्वालम्बाऽशन-वसनवैज्ञानिक विधौ,
यशस्तेऽडरः काव्यं विलमयरं स्थास्यति सदा।।

इसमें प्रसादगुण एवं वैदर्भीरीति है।

माधुर्यगुण - उदाहरण -

आनन्दसौख्यसदनं जनकप्रदत्तं दत्तंत्वया जनहिताय वदान्य मत्या।

येन त्वदीयममलं सुयशोधरित्रियां शकेन्दुकान्तिरिव मोहतमो निहन्ति।।

प्रस्तुत पद्य में माधुर्यगुण के दर्शन होते हैं।

ओजगुण -

सर्वसंहारकास्त्राणां यमद्रंष्ट्राबलीयसाम्।

परमाण्वादिकानां ते निरोधे याऽस्ति भूमिका।।

सा जगद्रक्षणोपाया सम्प्रत्यपि नमस्तत्ने।

शब्दायते जगन्नेत्रि स्वरैस्ते निर्जरैः सह।।

इस पद्य में इन्दिरा गांधी के ओजमय स्वरुप का वर्णन किया गया है। इसमें ओजगुण है।

छन्द -

इस लेख में शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, मन्दाक्रान्ता आदि छन्दों का यथास्थान वर्णन किया गया है।

शार्दूलविक्रीडित छन्द - उदाहरण -

बेंङ राष्ट्रियतां गता नियमिता ग्राम्या तथा नागरी,

सम्पच्चैव समाजवाद रचनामार्गे चलन्त्या त्वया।

राष्ट्रे विश्वजनीन-सौख्यमवितुं दुःखंच सार्वत्रिकं,

दूरीकर्तुमिमे समस्तविधयः ख्माताः प्रशस्ताश्च ते।।

इस पद्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द है। जिसका लक्षण इस प्रकार है -

"सूर्याश्वैमसिजस्तताः सगुणः शार्दूलविक्रीडितम्"

शिखरिणी छन्द- उदाहरण -

दीनानां देश एषोऽसुखित-बहुजनाः शोषिता मुष्टिमेयै,

र्मा जीवन्तो लभन्ते द्विरपि बहुधा भोजनं नात्र देशे।

वस्त्रैर्हीनश्च शीते भवनविरहिता शिक्षया चापि हीना,

इत्थं चिन्तातिदूना सदयहृदया कार्यकर्त्री जय त्वम्।।

इस पद्य में शिखरिणी छन्द है जिसका लक्षण इस प्रकार है-

"भ्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्"

अलंकार -

साहित्यशास्त्र में अलंकार का महत्वपूर्ण स्थान है। महर्षि वेदव्यास ने अलंकारों से रहित सरस्वती को (कविता को) विधवा स्त्री के समान माना है। महाकवि दण्डी ने काव्य को शोभित करने वाले धर्मों को अलंकार कहा है। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुये डॉ० हर्षनाथ मिश्र ने अलंकारों को विशेष स्थान दिया है। इसमें अनुप्रास, उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

अनुप्रास अलंकार- उदाहरण-

मन्य एतत् स्वराष्ट्रं स्वतन्त्रं कृतं नेतृभिस्त्यागपूतैः स्वदेशप्रियैः।
किन्तु दैन्यादिदं मुक्तिमातन्वती कार्यमेकाऽकरोरिन्दिरे त्वं रमा।।

इसमें अनेक व्यंजनों की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है। जिसका लक्षण इस प्रकार है-

"अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्"

उपमा अलंकार - उदाहरण -

आनन्दसौख्यसदनं जनकप्रस्तं दत्तंत्वया जनहिताय वदान्य मत्या।
येन त्वदीयममलं सुयशोधरित्रियां राकेन्दुकान्तिरिव मोहतमो निहन्ति।।

इस पद्य में उपमा अलंकार है। जिसका लक्षण इस प्रकार है-

"साम्यं वाच्यमवैधर्म्य वाम्येक्य उपमा द्वयोः"

रसनिष्पत्ति -

इसमें ज्यादातर पद्यों में वीररस की पुष्टि हुयी है। जिनके माध्यम से इन्दिरा गांधी के शौर्य पर प्रकाश डाला गया है।

वीररस - उदाहरण -

१. *बंङ्देशस्यत्वया कौर्यतो मोचितो जीवितः श्रीमुजीबंस्त्वयारक्षितः।*
धान्यतः सैन्यतः सर्वसाहाय्यतो बंङ्देशस्त्वयाऽसौ प्रजातन्त्रितः।।

उदाहरण-

२. *सर्वसंहारकास्त्राणां यमद्रंष्ट्राबलीयसाम्।*
परमाण्वादिकानां ते निरोधे याऽस्ति भूमिका।।
सा जगद्रक्षणोपाया सम्प्रत्यपि नमस्तत्वे।
शब्दायते जगन्नेत्रि स्वरैस्ते निर्जरैः सह।।

समीक्षा -

इस लेख के माध्यम से इन्दिरा जी का राजनैतिक चरित्र प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने इन्दिरा गांधी के यश का जो गुणगान किया है। वह देखते ही बनता है। इन्दिरा जी का स्वभाव क्रियाशील था। उनके लिये कोई भी छोटा पर व्यवहारिक कार्य सर्वकल्याण के बारे में निष्फल कल्पनाओं की अपेक्षा अधिक महत्व रखता था। सुकर्ण को इस भावुकता को इन्दिरा आम आदमी में उनके विश्वास, राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति निष्ठा की भावात्मक अभिव्यक्ति मानती थीं। इन्दिरा गांधी यह मानकर कार्य करतीं थीं कि ''राजनीति संभावनाओं के उपयोग की कला है'' पर वह साथ ही निर्भीक राजनेता भी थीं, अपने देश के सच्चे हितों के लिये साहसपूर्ण, निर्णायक पग उठाने में समर्थ देशभक्त थीं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इन्दिरा गांधी में वे समस्त गुण विद्यमान थे जिसके कारण उन्होंने भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बनाई।

"इन्दिरा पुण्यस्मृतिः"

पं० रामदेव झां का जीवन-परिचय-

पं० रामदेव झा संस्कृत के विद्वान् हैं। इन्होंने संस्कृत साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। पं० रामदेव झां ने बचपन से ही अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। संस्कृत विषय के प्रति उनकी विशेष आसक्ति थी। बचपन से ही उनमें अनेक गुणों का समावेश था। आपने अपने बौद्धिक प्रतिभा के बल पर संस्कृत साहित्य जगत में अपना स्थान बनाया। पं० रामदेव झां सबको समानभाव से देखते थे। वह एक उत्कृष्ट व्याख्याता हैं।

व्यक्तित्व -

मनीषियों के व्यक्तित्व में जितनी भी विशेषतायें होती हैं। वह समस्त विशेषतायें इनके व्यक्तित्व में विद्यमान हैं। ये एक आदर्श व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। इनके जीवन का प्रत्येक पक्ष उत्कृष्ट है। इनके हृदय में कलुषता का तनिक भी समावेश नहीं है। वह सबको एक समान दृष्टि से देखते हैं। उनके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकते हैं।

कृतित्व -

पं० रामदेव झां का रचना कौशल विशिष्ट है। उनका संस्कृत साहित्य पर असाधारण अधिकार है। इनके लेखों के माध्यम से इनकी बौद्धिक क्षमता का पता चलता है। इन्दिरा जी की पुण्यस्मृतिः में लिखा गया लेख "इन्दिरापुण्यस्मृतिः" एक सुन्दरतम् लेख है। इस लेख को इन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर उत्कृष्टता प्रदान की है।

''इन्दिरापुण्यस्मृतिः'' वर्ण्य-विषय -

प्रस्तुत सुन्दरतम् लेख इन्दिरा जी की स्मृति में पं० रामदेव झां द्वारा रचित है इन्दिरा जी की प्रशंसा करते हुये डॉ० रामदेव झां ने अपने हृदय के उद्‌गारों को प्रकट किया है। उसके ऐश्वर्य एवं सौन्दर्य की प्रशंसा करता हुआ कवि कहता है-

ऐश्वर्य परमं यस्याः सौन्दर्य च मनोरमम्।
धैर्य धरागुणा धारं स्थैर्य हिमवतो यथा।।[1]

कवि कहता है कि इन्दिरा गांधी द्वितीय सृष्टि थीं। वह उदान्त चरित्र और राष्ट्रभक्त थीं।

इन्दिरा लोकमाता साऽद्वितीया सृष्टिसम्भवा।
संस्कृतोदात्तचरिता राष्ट्रशक्तिः शिवप्रियाः।।[2]

श्रीपतेः श्रीर्यथेन्द्राणी महेन्द्रस्य महीयसी।
प्रभा प्रभाकरस्येव तथासीत्तद्रुचिः शुचिः।।

इन्दिरा गांधी दीन-दुखियों की सहायता करने वाली एवं अत्यन्त विशाल कीर्ति से युक्त थीं। उन्होंने राजीव एवं संजय को उत्पन्न किया -

दीने दयार्द्री सुजने सुशीला,
विशालकीर्तिः सुमतिः प्रधाना।
आजीवनात्यन्तमृदुस्वभावा,
राजीवसंञ्जीव पराप्रसूतिः।।[3]

उन्होंने अपने बुद्धि के वैभव से समस्त भारतवर्ष को कृतार्थ किया। कवि कहता है -

पुण्यैः पुनीता विजया विनीता, प्रज्ञा समेता च कृतार्थयन्ती।
भा-भारता वाप्तयशोधरा सा, शुभा सदासीदुदयास्तकाले।।[4]

दिशास्वशेषासु गुणैरुदारैः, क्रियासु वागर्थसमानरूपैः।
विभेद-विध्वंस-विकारजातैर्यदीय संयोगपरा मनीषा।।[5]

इन्दिरा गांधी दिन और रात राष्ट्र की सेवा में तल्लीन रहती थीं। जो

कि दिवंगत हो गयीं हैं पर प्रकाश डालते हुये कवि कहता है-

मुक्ताश्रया मुहुरहर्निशि राष्ट्रसेवा,
स्वात्मानमत्र विनिवेद्य दिवंङ्ता या।
तामिन्दिरां सकललोकनुतां वरेण्या,
मौत्कण्ठ्यवाष्पकलया मनसा स्मरामि।।[6]

भाषा-शैली -

इसकी भाषा सरल एवं सरस है। इसमें प्रसादगुण एवं वैदर्भी रीति है। माधुर्यगुण भी प्रयुक्त किया गया है। कवि की शैली अत्यन्त मनोरम है। इसमें कहीं भी क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं मिलता है।

प्रसादगुण एवं वैदर्भी रीति युक्त एक उदाहरण देखिये -

पुण्यैः पुनीता विजया विनीता,
प्रज्ञा समेता च कृतार्थयन्ती।
भा-भारता वाप्तयशोधरा सा,
शुभा सदासीदुदयास्तकाले।।

माधुर्यगुण युक्त उदाहरण देखिये -

ऐश्वर्य परमं यस्याः सौन्दर्य च मनोरमम्।
धैर्य धरागुणा धारं स्थैर्य हिमवतो यथा।।

छन्द -

इस लेख में इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका उपजाति आदि छन्दों का वर्णन किया गया है -

इन्द्रवज्रा छन्द - उदाहरण -

दीने दयार्द्री सुजने सुशीला,
विशालकीर्तिः सुमतिः प्रधाना।
आजीवनात्यन्तमृदुस्वभावा,
राजीवसंज्ञ्जीव पराप्रसूतिः।।

इस पद्य में इन्द्रवज्रा छन्द है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण एक जगण एवं दो गुरु वर्ण हैं।

यह इन्द्रवज्रा छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में ११ वर्ण हैं।

वसन्ततिलका छन्द - उदाहरण -

मुक्ताश्रया मुहुरहर्निशि राष्ट्रसेवा,
स्वात्मानमत्र विनिवेद्य दिवङ्गता या।
तामिन्दिरां सकललोकनुतां वरेण्या,
मौत्कण्ठ्यवाष्पकलया मनसा स्मरामि।।

इस पद्य में वसन्ततिलका छन्द है। इसका लक्षण इस प्रकार है -

"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण हैं एवं इसके प्रत्येक चरण में १४ अक्षर हैं।

अलंकार -

इसमें अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है। जिससे इसकी शोभा में अभिवृद्धि हुयी है। अनुप्रास अलंकार युक्त एक उदाहरण देखिये-

ऐश्वर्य परमं यस्याः सौन्दर्य च मनोरमम्।
धैर्य धरागुणा धारं स्थैर्य हिमवतो यथा।।

रसनिष्पत्ति -

इसमें अद्भुत, करुण रस आदि का वर्णन किया गया है।

अद्भुत रस - उदाहरण -

इन्दिरा लोकमाता साऽद्वितीया सृष्टिसम्भवा।
संस्कृतोदात्तचरिता राष्ट्रशक्तिः शिवप्रियाः।।

करूण रस - उदाहरण -

मुक्ताश्रया मुहुरहर्निशि राष्ट्रसेवा,
स्वात्मानमत्र विनिवेद्य दिवङ्गता या।
तामिन्दिरां सकललोकनुतां वरेण्या,
मौत्कण्ठ्यवाष्पकलया मनसा स्मरामि।।

समीक्षा -

प्रस्तुत लेख इन्दिरा गांधी उदान्त चरित्र का द्योतक है। जिसे कवि ने "इन्दिरापुण्यस्मृतिः" के नाम से लिखा है। इस लेख में इन्दिरागांधी के गुणों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की गयी है एवं उनके दिवंगत हो जाने पर उनका स्मरण किया गया है।

उपसंहार
शोध निष्कर्षों का
निरूपण
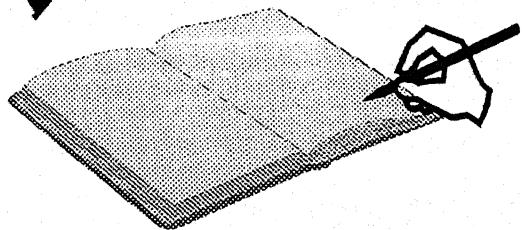
उपसंहार

- शोध निष्कर्षों का निरूपण -

शतककाव्य हमारे जीवन में मूल प्रेरणा के सुन्दर स्रोत हैं। समृद्ध शतककाव्य का स्वरूप बहुआयामी होकर लोकमानस की सुन्दर मीमांसा करता है। कुछ शतककाव्य देवस्तोत्रात्मक हैं तो कुछ श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रभृति राष्ट्रीय महापुरुषों के भव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व के निरुपक हैं। अनेक शतककाव्य राष्ट्रीयता पर आधारित स्वदेश प्रेम पर आधृत हैं। तो अनेक प्रकृति सौन्दर्यपरक। ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र में अनेक शतककाव्य नाना शैक्षिक विषयों से सम्बन्धित हैं तो अनेक शतककाव्य विभिन्न राष्ट्रों के वैशिष्ट्य का निरुपण करते हैं।

लोकजीवन के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नाना पक्षों पर भी विभिन्न शतककाव्यों की प्राचीनकाल तक सुन्दर रचना हुयी है। अनुसंधान के व्यापक क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की अन्य विधाओं पर तो पर्याप्त कार्य अनुसंधानकों द्वारा किया गया है, किन्तु इन्दिरा गांधी चरितात्मक अस्पृष्ट काव्य विधा पर कार्य करना ही मेरे शोधकार्य का परम् उद्देश्य है, जिसमें इससे सम्बन्धित अन्धकारग्रस्त अनेक महान रचनाकारों और उनकी उत्कृष्ट शतककाव्य सम्बन्धी रचनाओं को प्रकाश में ला सकें तथा संस्कृत साहित्य के अधूरे इतिहास का पुनरुत्थान आगे हो सके।

प्राचीनकाल से ही अद्यावधि विविध वर्ण्यविषयक शतककाव्यों की रचनायें प्राप्त होतीं हैं जिनमें लोकजीवन का बहुआयामी चारुचित्रण हुआ है। परिणामतः शतककाव्यों का सामान्य वर्गीकरण अथवा स्वरूप निर्धारण भी विभिन्न रूप से किया जा सकता है। कतिपय शतककाव्य स्तोत्रात्मक है तो कतिपय राष्ट्रीय महापुरुषों के चरित्र चित्रण से सम्बन्धित सरस शतककाव्य प्राप्त होते हैं।

प्रकृतिचित्रणपरक शतककाव्यों के अतिरिक्त शैक्षिक विषयों काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, शिक्षा, सदाचार आदि से सम्बन्धित शतककाव्य ग्रन्थ भी उल्लेखनीय है। कतिपय शतककाव्यों मै वैदेशिक राष्ट्रों यवद्वीप (जावा) बाली

आदि का अच्छा परिचय प्राप्त होता है। लोकजीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक स्तरीय महाकाव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

अर्वाचीन संस्कृत शतककाव्य के अन्तर्गत श्रीमती इन्दिरा गांधी पर आधृत शतककाव्यों का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। इस दृष्टि से शोध प्रबन्ध के *प्रथम अध्याय* में शतककाव्यों का वर्गीकरण करते हुये इनके स्वरुप को निर्धारित करने के साथ ही शतककाव्यों का वर्गीकरण एवं वैशिष्ट्य निरूपित किया गया है। स्तोत्रात्मक शतककाव्यों का प्रतिपाद्य विषय देवी देवताओं की स्तुतियां है। इन्हें ही स्तोत्रशतक साहित्य के नाम से जाना जाता है। संस्कृत कवियों ने लौकिक कल्याण के भाव से ओत प्रोत होकर दिव्य देवताओं की स्तुति में अनेक शतककाव्यों की रचना की जिनमें उपास्य देवता विशेष को ही आधार बनाकर उन्हीं के यशोगान में मुक्तक पद्यों में सुन्दर रसपेशल भव्यभाव व्यक्त किये। कवियों ने शिव-पार्वती, राम-सीता, हनुमान, कृष्ण-राधा, दुर्गा, स्थानीय लोक देवता तथा पुराण सम्बन्धी शतकों की संख्या अगणित है। कवियों ने देवता विशेष की दिव्याकृति, करुणामय स्वरूप तथा श्रृंगारी शतकों में कवि ने रमणी के नयन, मुख, नासिका, केश, कटाक्ष, वक्षोज, वटि, रोमावलि आदि अवयवों को ही विषय बनाकर काव्य की संरचना की है। कवि ने मर्यादित श्रृंगार का ही चित्रण किया है। जहां कहीं भाव-विभोर होकर वह लौकिक धरातल पर उतरने लगता है, अश्लीलता भी ला देता है, पर उनमें भी एक अपूर्व आनन्द एवं सौन्दर्य का समन्वित रूप पाया जाता है। श्रृंगारिक शतकों की श्रेणीं में इनकी भाषा अत्यन्त सरल एवं ललित है। भाषा श्रृंगार रचना के सर्वथा अनुरूप है।

नीति सम्बन्धी शतककाव्य समाज पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। इन शतकों में कवि ने प्रत्यक्ष तथा परोक्ष दोनों रूपों में शिक्षायें प्रदान की हैं। इन शतकों पर यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि समाज में प्रत्येक युग में यथार्थ दिशा प्रदान करने कार्य भारतीय मनीषी ही अपने काव्य के माध्यम से करते रहे। नीतिसम्बन्धी शतकों में उनका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महात्म्य, लोकप्रचलित धर्मशास्त्र, व्यंग्य, सामाजिक आत्मचरित, आचार्यचरित प्रधान, प्रकृतिऋतुपरक अलंकार काव्य महात्म्य सम्बन्धी शतकों का

परिगणन किया गया है।

राष्ट्रीयभावपरक शतककाव्य राष्ट्र के महापुरुषों की स्तुति में विरचित किये गये हैं। इन शतककाव्यों में देश के महान् पुरुषों के देश के लिये किये गये अनेक महत्वपूर्ण कार्यों, योगदान, शोकगीत आदि का यथावत् उल्लेख कवियों द्वारा किया गया है।

द्वितीय अध्याय इन्दिराकीर्तिशतकम् एवं प्रियदर्शिनीयम् में तीन खण्ड हैं। कीर्तिखण्ड, संघर्षखण्ड और महाप्रयाण खण्ड। कीर्तिखण्ड के पूर्व भाग में इन्दिरा गांधी के जन्म से लेकर, उनकी शिक्षा-दीक्षा, विवाह, स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने, कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनने, सूचना प्रसारण मंत्री बनने एवं उसके बाद प्रधानमंत्री बनने तक की मुख्य-मुख्य घटनाओं का वर्णन किया गया है। प्रधानमंत्री के रूप में श्रीमती इन्दिरा गांधी के कुशल नेतृत्व ने भारत के जनगणमन को मोहित कर लिया था। जनमानस इन्दिरा शासन से खुश क्यों थे? इसके भी कुछ ठोस कारण थे। इन्दिरा शासन में मंहगाई बहुत कम हो गयी थी, अपराध वृद्धि में गिरावट आई थी, धर्मभेद एवं जातिभेद का विरोध कम हो गया था। जनकल्याण से सम्बन्धित बीससूत्रीय कार्यक्रम, सदियों से पीड़ित किसानों को भूस्वामित्व प्रदान करना, बैंकों का राष्ट्रीयकरण जैसे अनेक कार्य इन्दिरा गांधी द्वारा किये गये थे। इस प्रकार इन्दिरा गांधी एक कुशल राजनेता थीं।

संघर्षखण्ड में इन्दिरा गांधी की प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। इन्दिरा गांधी ने आपातकाल की जो घोषणा की उसके प्रशासनिक दुरुपयोग से जनता को कष्टों को सहन करना पड़ा इससे इन्दिरा गांधी की निर्मल कीर्ति धूमिल हुई। इस खण्ड में इन्दिरा गांधी को विरोधियों से जूझते हुये बताया गया है। इन्दिरा गांधी के सत्ता से हट जाने पर उनके विरोधी दलों की साझा सरकार ने देश की बागडोर संभाली परन्तु देश की दशा बिगड़ गयी। इन्दिरा गांधी ने सतत् संघर्ष से विपक्षी दलों की पार्टी को अल्पकाल में भंग कर दिया।

महाप्रयाणखण्ड अत्यन्त संवेदनशील खण्ड है। इसमें इन्दिरा गांधी की दुःखद मृत्यु का वर्णन किया गया है। जैसे किसी आत्मीय की मृत्यु के समाचार को सुनकर व्यक्ति शोक के सागर में डूब जाता है वैसे ही कवि भी दुःख के गहरे

सागर में डूब गया। श्रीमती इन्दिरा गांधी के आकस्मिक निधन से पृथ्वी कांप उठी पशु-पक्षी सभी विलाप करने लगे। समस्त भारतवासी शोक संतप्त हो गये।

वास्तव में ये तीनों खण्ड महाकाव्य में आदर्श महान् मूल्यों पर आधारित जीवन के महान् मूल्य भी हैं। प्रियदर्शिनीयम् साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है।

तृतीय अध्याय इन्दिराविजयवैजयन्ती एवं इन्दिराप्रशस्तिशतकम् है। इस काव्य में इन्दिरा जी के शासनकाल की उपलब्धियों की चर्चा करते हुये उनसे दुराचरण हटाने की मांग की गई है। इन शतकाव्यों में इन्दिरा गांधी के ओजमय स्वरूप का चित्रण किया गया है। इन्दिरा गांधी साहसी, निर्भीक, धैर्यशालिनी एवं राजनीति में पारंगत थीं। उन्होंने जीवन में विजय प्राप्त की। साहित्यिक दृष्टि से यह शतककाव्य उत्कृष्ट शतककाव्य है।

इसी के अन्तर्गत इन्दिराजीवनम् महाकाव्य में डॉ० गोस्वामी बलभद्रप्रसाद शास्त्री ने इन्दिरा गांधी के जीवन पर प्रकाश डाला है। इसमें स्वातन्त्रयोत्तर भारत के विकास में इन्दिरा गांधी के बलिदान एवं योगदान की कथा उपनिबद्ध है। इस महाकाव्य के माध्यम से हमें इन्दिरा गांधी के देश के प्रति किये गये कार्यों का पता चलता है। यह महाकाव्य उदात्तभावों एवं जीवनदर्शन से परिपूर्ण हैं। इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व बड़ा ही विशाल था। उन्होनें अपना समस्त जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। इसकी भाषा प्रभावोत्पादक है।

चतुर्थ अध्याय "इन्दिरायशस्तिलकम्" में डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल ने इन्दिरा गांधी के गुणों पर प्रकाश डालते हुये उनकी राजनैतिक सफलताओं का उल्लेख किया गया है। इन्दिरा गांधी ने देश की दरिद्रता का निवारण, बंगलादेश का निर्माण तथा निर्धनता को दूर किया। पोखरण परमाणु परीक्षण, आर्यभट्ट आविष्कार, बीससूत्री कार्यक्रम का संचालन इन्हीं के शासनकाल में हुआ। वह विमल चारु चरित्र शुभविचारों वाली एवं सहृदया नारी रत्न थीं। इस काव्य की भाषा भाव के अनुरूप है। यह काव्य भी उत्कृष्ट कोटि का काव्य है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत श्री रामकृष्ण शास्त्री विरचित इन्दिराशतकम् पर प्रकाश डाला गया है एवं डॉ० रामाशीष पाण्डेय कृत इन्दिराशतकम् का विवेचन किया गया है। इन दोनों ही शतककाव्यों के माध्यम से हमें इन्दिरा

गांधी के गुणों एवं राजनैतिक जीवन का पता चलता है।

षष्ठ अध्याय में श्री विष्णुदत्त शर्मा प्रणीत इन्दिराविरुदम नामक काव्य में इन्दिरा गांधी के गुणों एवं कार्यों की स्तुति की गयी है। रचना कौशल की दृष्टि से यह काव्य भी महत्वपूर्ण काव्य है।

सप्तम अध्याय के अन्तर्गत इन्दिराप्रशस्तिशतकम् में शान्ति राठी ने इन्दिरा गांधी के गुणों की प्रशंसा की है। इसी अध्याय के अन्तर्गत अभागभारतम् काव्य के माध्यम से इन्दिरा गांधी की दुःखद मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया है।

अष्टम अध्याय ''कूहा'' काव्य के अन्तर्गत श्री राजीव गांधी द्वारा हिमालय की चोटी पर इन्दिरा गांधी के अस्थियों के विर्जन के समय राजीव गांधी द्वारा अपनी माता का भावपूर्ण स्मरण वर्णित है। यह उत्कृष्ट कोटि का काव्य है।

नवम अध्याय के अन्तर्गत इन्दिरागांधीचरितामृतम् हन्तेरिन्दार्या सहसा प्रयाता, धातस्त्वया किं कृतम्, इन्दिराकीर्तिः एवं इन्दिरापुण्यस्मृतिः में इन्दिरा गांधी विषयक अपने भिन्न-भिन्न विचार प्रकट किये हैं और ये सभी इन्दिरा गांधी के महान् चरित्र के परिचायक हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त शतककाव्यों के माध्यम से इन्दिरा गांधी विषयक जो भी सामाग्री उपलब्ध होती है। वह इन्दिरा गांधी के उत्कृष्ट चरित्र की परिचायक है। इन्दिरा गांधी वास्तव में उच्चकोटि की महिला थीं। उन्होंने अपना समस्त जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। उनके विशाल व्यक्तित्व की जितनी भी प्रशंसा की जाये वह कम है। उन्होंने अपनी बौद्धिक प्रकर्षता से भारत को एक नया स्वरूप प्रदान किया। भारतवर्ष ऊँचाई के शिखर पर पहुंचाया।

इन्दिरा गांधी देश के सदियों से चले आये पिछड़ेपन का अन्त करने, जनता की गरीबी को हटाने का सपना जीवन भर अपने हृदय में संजोये रहीं और उस स्वप्न को मूर्तरूप देने की चेष्टा करते हुये उन्होंने लम्बा और कठिन मार्ग तय किया। स्वतंत्र, एकजुट तथा प्रजातंत्रीय भारत के निर्माण हेतु वह अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहीं ताकि देश में साम्प्रदायिक द्वेष के लिये कोई स्थान न हो। और सभी भारतवासियों की एकजुट, स्वाधीन और शक्तिशाली

मातृभूमि महान् राष्ट्रीय आदर्शों से देदीप्यमान रहे।

उदात्त राजनीतिक एकता, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ईमानदारी और निष्कपटता के कारण उन्हें, भारतीय जनगण, संसार के सभी लोगों के बीच सम्मान और महान प्रतिष्ठा प्राप्त हुयी।

युवावस्था में उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता की खातिर और बाद में इस स्वतन्त्रता को मजबूत बनाने के लिये संघर्ष किया, परन्तु उनका दर्शन भारत तक ही सीमित नहीं था। वह संपूर्ण पृथ्वी को अपना घर मानतीं थीं। शान्ति के वातावरण में रहने और अपनी प्रतिभा को पूर्णतः उजागर करने के सभी राष्ट्रों के अधिकार के लिये वह अन्त तक संघर्ष करती रहीं। उत्पीड़ितों ओर अवमानितों के प्रति वह सहानुभूति रखती थीं और इसलिये उन्हें जनसाधारण का हार्दिक प्रेम प्राप्त हुआ।

एकीकृत तथा परस्पर निर्भर संसार में व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन में आस्था, राष्ट्रीय हितों के अलावाआम मानवीय विश्वव्यापी हितों कों देखने की क्षमता, विवेक बुद्धि का मानवतावाद से, राजनीतिक लक्ष्यों का सामाजिक नैतिकता से, आत्मिक मानकों का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से समन्वयन सारतः यही अपनी जनता, वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिये इन्दिरा गांधी का बौद्धिक तथा भाषी सन्देश है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन्दिरा गांधी पर आधृत शतककाव्य कला एवं भावपक्षीय साहित्यिक दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन काव्यों की भाषा मानव को अपनी ओर स्वतः ही आकृष्ट कर लेती हैं। संस्कृत साहित्य के आधुनिक कवियों ने शतककाव्यों के माध्यम से इन्दिरा गांधी को जो स्वरूप प्रस्तुत किया है वह अलौकिक है। इस प्रकार ये शतककाव्य इन्दिरा गांधी के उत्कृष्ट व्यक्तित्व के द्योतक हैं। अतः इन शतककाव्यों को संस्कृत कवियों ने अपने रचनाकौशल से उत्कृष्टता प्रदान की है।

निःसंदेह इन शतककाव्यों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा जगत् और शिक्षा पद्धति पुरस्कार प्राप्त कर शिक्षार्थियों को नवदिशा निर्देशन अवश्य प्राप्त होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इतिसिद्धम्

परिशिष्ट

सहायक (सन्दर्भ) ग्रन्थ सूची

(अ) आधार ग्रन्थ

ग्रन्थ का नाम	रचनाकार/सम्पादक/प्रकाशन	स्थान	वर्ष
विभूतिवन्दनास्तोत्रम्	(डॉ०श्रीधर भास्कर वर्णेकर)मन्दोर्मिमाला, नामक काव्य संग्रह में प्रकाशित	स्वाध्याय,मण्डल आनन्दाश्रम, पारड़ी	१९५६
भारतशतकम्	शास्त्री (महादेव),देवभाषा प्रकाशन,	दारागंज, प्रयाग	
भारतशतकम्	पाण्डेय (श्रीराम कैलाश), वाराणसेय संस्कृत संस्थान जगतगंज सी२७/६४ २२१००१	वाराणसी	१९८४
मातृभूलहरी	डा० वर्णेकर प्रणीत विवेकानन्दविजयम् नाटक में संकलित, अंक सप्तम, प्रकाशिका-विवेकानन्द शिलास्मारक समिति,	१२पिल्लेयार कोईल मार्ग टिप्लिकेन, मद्रास	५जनवरी १९७२
भाँति में भारतम्	डॉ० रमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद्	नईदिल्ली	
जय भारत भूमि	डॉ० (शुक्ल) रमाकान्त, देववाणी परिषद्	६वाणी विहार नईदिल्ली	१९८१
भारतशतकम्	डॉ० राजेन्द्र मिश्र, सर्वगन्धा पत्रिका में प्रकाशित अक्टूबर तथा नवम्बर अंक,	माईजी मन्दिर अशरफाबाद लखनऊ २२६००३	
शिवप्रतापविरुदावली	हजारी लाल शास्त्री, खण्डकाव्य में प्रकाशित मु०पो० घिलावड़ जिला-सोनीपत, हरियाणा, श्रावणी		२०३० विक्रम
शिवराजविजयम्	हजारी लाल शास्त्री, 'शिवप्रतापविरुदावली' नामक खण्डकाव्य में प्रकाशित, मु०पो० घिलावड़ जिला- सोनीपत,	हरियाणा	
स्वातन्त्र्यवीरशतकम्	डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर, ऊषा प्रकाशन,	जिला सूरत स्वाध्यायमण्डल पारड़ी	१९५८
शोकश्लोकशतकम्	बद्रीनाथ झाँ, स्थल विश्वेश्वरानन्द, वैदिक शोध संस्थान	साधुआश्रम (होशियारपुर)	१९५३
श्रीगान्धिचरितम्	ब्रह्मानन्द शुक्ल, शारदा सदन, ३८ राधाकृष्ण,	खुरजा,उ०प्र०	१९६६
गान्धिगौरवम्	डॉ० शुक्ल रमेशचन्द्र, संस्कृत परिषद्,	अलीगढ़	१९७९
जवाहरतरंगिणी	डॉ० वर्णेकर, श्रीधर भास्कर, वि०न० वाडेगाँवकरउद्यम कमर्शियल मुद्रणालय, वेंकट हायकोर्ट रोड,	नागपुर-१	१९५८
इन्दिराविजयवैजयन्ती *इन्दिराप्रशस्तिशतकम्*	श्रीहजारी लाल शास्त्री, मु०पो० घिलावड़ जिला-सोनीपत	हरियाणा	२६जनवरी १९७६

इन्दिराकीर्तिशतकम्-	श्रीकृष्ण सेमवाल, भारतीय भाषा संगम, नार्थ एवेन्यु	२१ नईदिल्ली	१६-११-१६७६
प्रियदर्शिनीयम् -	श्रीकृष्ण सेमवाल, प्रकाशक सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी	नई दिल्ली	
इन्दिरायशस्तिलकम्	डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल, शारदा सदन	मुजफ्फरनगर	१६७६
इन्दिराशतकम्	श्री रामकृष्ण शास्त्री, अव्यय, श्रीराम प्रकाश१२२	श्रीरघुनाथपुरम् जम्मू	१६८४
इन्दिराशतकम्	डॉ० रामाशीष पाण्डेय,		१६८६
इन्दिराविरुदम्	श्री विष्णुदत्त शर्मा, श्री विश्वनाथ प्रकाशन ११० निकट थाना, सदर मेरठ उ०प्र० प्रथम संस्करण		१६८४
इन्दिरागाँधीचरितामृतम्	श्री विष्णुदत्त शर्मा, श्री विश्वनाथ प्रकाशन ११० निकट थाना, सदर मेरठ उ०प्र० प्रथम संस्करण		१६८४
इन्दिराप्रशस्तिशतकम्	राठी शान्ति, प्रकाशक मदनलाल जैन	सोनीपत हरियाणा	
अभागभारतम्	श्री सुन्दरराज, देशवाणी परिषद्	दिल्ली	१६८५
कूहा	उमाकान्त शुक्ल	दिल्ली	१६८४
इन्दिरागाँधीचरितामृतम्	विष्णुदत्त शास्त्री		
श्रमगीता	डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर	नागपुर	१६७१

(ब) सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डॉ० कैलाश नाथ द्विवेदी	इटावा	१६७३
संस्कृत साहित्य का इतिहास	पं० बलदेव उपाध्याय	काशी	सं०२०३६
गुरुमहात्म्यशतकम्	डॉ० कैलाशनाथ द्विवेदी	कानपुर	१६७८
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० रामजी उपाध्याय,	इलाहाबाद	१६६६
आधुनिक संस्कृत साहित्य अनुशीलन	डॉ० रामजी उपाध्याय	वाराणसी	१६७६
अर्वाचीन संस्कृत साहित्य	डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर,	पूना	१६७८
आधुनिक संस्कृत साहित्य	डॉ० हीरालाल शुक्ल,	इलाहाबाद	१६६६
मॉडर्न संस्कृत साहित्य	वी० राघवन,	मद्रास	
ए न्यू हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	कृष्ण चैतन्या,	दिल्ली	१६६६
संस्कृत वाङ्मय कोष	श्रीधर भास्कर वर्णेकर,	कलकत्ता	१६८८

क्लासिक हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	कृष्णमाचारी,	दिल्ली /कलकत्ता	१६५६
संस्कृत कवि दर्शन	डॉ० भोला शंकर व्यास,	वाराणसी	१६६४
हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	ए.वी.कीथ, अनु डॉ० उदय भानुसिंह,	दिल्ली	१६६६
ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर	मैक्डानल,	दिल्ली	१६६६
ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर	वेवर, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण	कलकत्ता	
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इविहास	डॉ० कपिल देव द्विवेदी		
साहित्य सुवासः	सम्पादक-डॉ० राजेन्द्र मिश्र	दिल्ली	१६८२
एन0 आटोवायोग्राफी	पं० जवाहर लाल नेहरू	दिल्ली	१६५२
पिता के पत्र पुत्री के नाम	पं० जवाहर लाल नेहरू,	दिल्ली	१६५०
काव्यप्रकाश,	आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वेश्वर	वाराणसी	१६६५
काव्यप्रकाश	आचार्य मम्मट, स०डॉ० सत्यव्रत सिंह	वाराणसी	१६६३
काव्यमीमांसा	राजशेखर, सम्पादक, सी०डी०दत्त दलाल	बड़ौदा	१६३४
साहित्यदर्पण	आचार्य विश्वनाथ, स०डॉ० सत्यब्रत सिंह	वाराणसी	१६६७
काव्यालंकार सूत्राणि	आचार्य वामन, डॉ० बेचन झां	पटना	१६५०
काव्यानुप्रकाश	हेमचन्द्र, नैना सागर प्रेस	बम्बई	१६७४
काव्यादर्शः	आचार्य दण्डी	वाराणसी	१६५२
काव्यालंकार सूत्र	स०डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी	वाराणसी	१६७८
संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना	डॉ० हरिनारायाण दीक्षित	दिल्ली	१६८३
आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन	ग्रोवर तथा यशपाल	दिल्ली प्र०स०	
आधुनिक भारत	सुमित सरकार,	दिल्ली	२००१
संस्कृत कवियित्रियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० कैलाश नाथ	लखनऊ	१६६४
छन्दोऽलंकारमंजरी	डॉ० कैलाश नाथ द्विवेदी	कानपुर	१६७३
छन्दोमंजरी	सम्पादक, भोलाशंकर व्यास	वाराणसी	१६५३
वृत्तरत्नाकर	स० रक्षाकर दत्त	वाराणसी	१६५६
हमारे महापुरुष	डॉ० शिवकुमार	दिल्ली	२००१

(स) संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

शोधप्रभा	इन्दिरा गाँधी विशेषांक, सम्पादक, डॉ० मण्डन मिश्र	दिल्ली	१६८६
अर्वाचीन संस्कृतम्	श्रीमती इन्दिरा गाँधी, महाप्रयाण विशेषांक, सम्पादक, डॉ० रमाकान्त शुक्ल	देववाणी परिषद् दिल्ली	१६६३

भारतोदयम्	इन्दिरा गाँधी विशेषांक सम्पादक, गोपाल शास्त्री	हरिद्वार	१९८६
सागरिका	सम्पादक- डॉ० रामजी उपाध्याय, सागर	वाराणसी	
पारिजातम्	डॉ० प्रकाश मिश्र शास्त्री, प्रेमनगर	कानपुर	
गाण्डीवम्	सम्पादक , डॉ० राधेश्याम द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी		
स्वरमंगला	सम्पादक, डॉ० प्रभाकर शास्त्री, राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर		
संस्कृतमंजरी	इन्दिरा गाँधी श्रद्धांजलि अंक स०, डॉ० श्रीकृष्ण सेमवाल, दिल्ली		
सर्वगन्धा	सम्पादक, डॉ० वीरभद्र मिश्र,	लखनऊ	
संस्कृत संजीवनम्	स० डॉ० मिथलेश कुमारी मिश्रा,	पटना	
भारती	स० पं० जगदीश शर्मा, इन्दिरा गाँधी अंक,	जयपुर	
संस्कृतामृतम्	स० पं० रामरतन शास्त्री,	दिल्ली	
गुंजारवः	स० डॉ० देवीप्रसाद खण्डीकर,	अहमद नगर	

(द) कोषग्रन्थ

India who's who	INPA Publication New Delhi 20th Edition		१९८९-९०
भारतीय संस्कृत विद्वांसः	साहित्य अकादमी, संस्करण साहित्य अकादमी	दिल्ली	१९९१
Who is who of india writer Vol. I,II	साहित्य अकादमी	दिल्ली	१९९४
संस्कृत वाङ्मय कोष,	भारतीय भाषा परिषद्	कलकत्ता	१९८६
संस्कृत हिन्दी कोष	वामन शिवराम आपटे, दिल्ली पटना संस्करण		
शोध प्रभा	श्री लालबहादुर केन्द्रीय संस्कृत		
इन्दिरागाँधी	विद्यापीठ,	दिल्ली	